आगे से दाएँ

जहाँ रास्ते बदलते हैं, वहाँ ज़िंदगियाँ भी

विक्रम कुमार राय

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS

India | U.K.

Copyright © Vikram Kumar Ray 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-818-3

Cover design: Anuj
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: July 2026

ऊँ वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटी समप्रभ,
निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

अब अर्चना रोते हुए उस भारी पिस्तौल को अपने हाथो मे उठाती है, जिसे उठाने वक्त उसके हाथ थर–थराने लगे है। इसी बीच जय मरने से पहले सबको बचाने की एक अंतिम कोषिष करना चाहता है। वह झट से उठकर कैथा के सामने रखे बंदुक की तरफ लपकता है,, लेकिन कैथा उस बंदुक को उससे पहले अपनी तरफ लपक लेता है और दुसरी हाथ मे लिए बंदुक के बट से जय के सिर पर जोड़ से चोट कर देता है। इसके साथ ही अर्चना चिल्लाने लगती है और उसकी मामी उसे पकड़कर रोने लगती है। चोट के कारण जय का सिर चकराने लगता है और वो कुर्सी पर स्थिर होकर बैठ चुका है और फिर कैथा जय के सर पर बंदुके तान देता है। अब जय के सर से खुन की बुंदे टपकने लगी है। वो लाचार सा दिखने लगा है, वो कुछ भी करने से पहले सौ बार ये सोचने लगता है कि उसके किसी गलती के कारण यहां किसी की मौत ना हो जाए।

कैथा,जय से–बहुत मजा आता है ना तुझे दुसरे को चोट देने मे, तुझे ऐसा चोट दुंगा की मरने के बाद भी तु नही भुलेगा।

जय लाचार होकर उसे देखते हुए उसके बातो को सुन रहा होता है। कैथा अचानक से उसके सर को पकड़ कर टेबल पर पटक देता है और उसकी हथेली को टेबल पर रखकर उसमे

चाकू गार देता है जिससे जय तरपने लगता है। फिर उसके दुसरे हाथ को कुर्सी के पीछे की तरफ बांध देता है। अंत मे वे लोग उसकी हाथ की नषे काट देते है।

जय,अर्चना से–मार दो मुझे ,अब देर ना करो। अगर मेरी कोई निषानी तुम्हारे पास हो तो तुम उसे बचाकर

रखना।

अर्चना समझ चुकी है वो (जय) किस बारे मे बात कर रहा था।

कैथा,जय से–अब तु तो मरेगा ही, साथ–साथ ये दोनो (मामा,मामी) भी जायेंगे तुम्हारे साथ।

अर्चना,जय से–मुझे माफ करना।

जय,अर्चन से–तुम्हारी कोई गलती नही, अपना कर्म करो।

कैथा,अर्चना से–क्या तुम अपने होने वाले सनम को अपने हाथो से मुक्ति नही देना चाहोगी ? क्या चाहती हो ? कि उसे हम मुक्ति दे।

अब कुछ ही पलो मे कैथा ऐसी परिस्थिति क्रिएट कर देता है जिसे देखकर ऐसा लग रहा था कि कैथा अब या तब अर्चना के मामा–मामी को मार ही डालेगा। अब हेड बदमाष कैथा को अर्चना के मामा–मामी को मारने के लिए ईषारा करता है। यह देख,,,,, अब अचानक से अर्चना के हाथो से गोली चल चूकी होती है ,गोली लगने के बाद जय की धड़कने हमेषा के लिए बंद हो चुकी है और उसकी आंखे मानो अर्चना को ही देख रही हो। उसकी मौत देखने मे एकदम से अकारत सी लग रही है। उसकी मौत होने के बाद जैसे कैथा, मस्सो और उसके साथ आये उसके हेड बॉस को सुकुनं मिल गया हो। यह देख अर्चना बेहोष हो चुकी है, उसकी मामी उसके मामा को पकड़कर रो रही है। उसके मामा का दिमाग सन्न हो चुका है और वो कोई भी बात बोलने और सुनने के हालत मे नही है। माहौल एकदम से षांत हो चुका था। अर्चना होष मे आने के बाद फिर से बेहोष हो रही थी। अब कैथा और उसके साथी लोग जय का फोटो अपने मोबाईल मे खींचते है।

कैथा,मामा से–तो आपका आखिरी सवाल जो मेरे ख्याल से ये होना था कि आखिर इसे (जय) हमलोगो ने आपलोगो के घर मे आपलोगो के द्वारा ही क्यो मारवाया ? जवाब है – कि इसने (जय) अपने बसे हुए घर को फिर से बसाने के लिए किसी के बसने वाले घर को उजाड़ दिया और इसके (हेड बदमाष की ओर ईषारा करते हुए) साथ इसी तरह की घटना घटी, कितना मुष्किल होता है वो लम्हा जीना जब कभी गोद मे खेलने वाला बच्चा उसी गोद मे आखरी सांसे लेते हुए दम तोड़ दे। क्या कभी जीया है आपने उस लम्हे को ? तो यही था आपके आखिरी सवाल का जवाब।

अब तीनो लोग वहां से निकलते है और दरवाजे को बाहर से बंद कर देते है।

07 (सात) साल के बाद,,,,,,।

अब जेल के काल कोठरी मे इस भयावह सा सपना देखने के बाद सोई हुई अर्चना की अचानक से आंखे खुलती है।

आज के दिन,,,।

तो आज सूक्खी जो लगभग एक 06 साल का लड़का है, अपनी माँ अर्चना को फिर एक बार खुद के पास आने के लिए एवं सूक्खी अपने माँ के पास जाने एवं उससे लिपटने के लिए तरपते हुए जेल के अंदर पहुँचता है। जहां खिड़की के बाहर से सुक्खी अपनी माँ को देख रहा था, और उसकी माँ अपने बेटे को एक उम्मीद भरी नजरो से देख रही थी, कि कब वह जेल से निकले और अपने लाल को अपने सीने से लगाकर तब तक प्यार करते रहे जब तक उसका प्यार करने का मन करे। लेकिन वक्त पे किसका जोड़, जो वक्त के साथ नही चलता, वक्त उसे पीछे छोड़ ही देता है।

अर्चना सुक्खी से–तो कैसा है रे तु ?

सुक्खी अब मां–मां करते हुए रोते हुए अपनी मां को पुकार रहा है।

सुक्खी अर्चना से–मां कब निकलोगी बाहर ?

अर्चना सुक्खी से–(रोते हुए) हा आ जाउंगी। बस कुछ दिन और। चुप हो जाओ मत रोओ। मै बहुत ही जल्दी आ जाउंगी तुम्हारे पास।

सुक्खी अर्चना से–मुझे आपके बिना मन नही लगता है।

अर्चना सुक्खी से–अच्छे बच्चे रोते नही हैं। तुम क्यो रो रहे हो ? देखो मम्मा भी रो रही है। किनके साथ आये हो। मैने तुम्हे कितनी बार मना किया है, अकेले नही आने के लिए। सड़क पर कितनी गाड़िया चलती हैं। तुम्हे कुछ हो जायेगा तो हमारा क्या होगा। जब भी आना उनके (अंकेष) साथ आना। तो खाया तुमने कुछ।

सुक्खी अर्चना से–हां।

अर्चना सुक्खी से–तो पढ़ाई हो रही है अच्छे से।

सुक्खी अर्चना से–मुझे पढ़ाई मे मन नही लगता मां।

अर्चना सुक्खी से–ऐसे नही बोलते बेटे। तुझे मैने क्या सिखाया था ? भुल गया तु। रोना बंद करो और मजबुत बनो।

सुक्खी अर्चना से–मां, चलो ना घर मां।

अर्चना सुक्खी से–कुछ समय लगेगा मुझे यहा पर, तुम परेषान मत हो। मै एक दिन जरूर तुम्हारे पास आउंगी। दिल को छोटा मत करो। तुम्हे होषियार होना होगा। तु तो मेरा मजबुत बच्चा है रे, फिर क्यो ऐसे रो रहा है ?

अब मिलने की समय सीमा लगभग समाप्त हो चुकी हैं ।

महिला सिपाही अर्चना से–चलो तुम्हारा समय हो चुका हैं।

अर्चना सुक्खी से–तो, जाओ घर तुम।

सुक्खी अर्चना से–मत जाओ मां , रूको ना मां, मेरे पास।

अब अर्चना खुद रोते हुए सुक्खी को ईषारो मे जाने को कहती हैं। लेकिन सुक्खी खिड़की की लोहे की रड को पकड़े हुए रोकर अपनी मां को जाने से रोकना चाहता है।

अर्चना सुक्खी से–तुम चले जाओ, फिर मै जाती हुँ।

सुक्खी अर्चना से–मै नही जाउंगा मां।

अर्चना सुक्खी से–अच्छे बच्चे जिद नही करते। तु मम्मा से प्यार करता है तो अभी यहां से जाओ।

अब सुक्खी रोते हुए वहां से निकलता हैं और उसकी माँ जेल के उस भयानक दिखने वाले दरवाजे के पीछे अपने आँषुओ को छिपाते हुए फिर कुछ दिनो के लिए कैद हो जाती है, और सूक्खी फिर एक मायूस मन को लेकर अपने घर पिता (अंकेष) के पास लौट जाता है, और बिस्तर पर सो कर मन ही मन बस यही सोचता रहता है कि कब मेरी माँ जेल से निकलेगी और मुझसे मिलेगी। पिता के घर आने पर ,,,,,,,,,,,,,।

पिता –

अपने बेटे से– तो खाना खाया तुमने।

बेटे के तरफ से कोई भी जवाब नही मिलने पर,,,,,,

पिता– तो फिर तुम आज अपनी माँ से मिलने गए थे।

सूक्खी –हां,,,।

पिता– तो इसलिए मायूस हो। क्यो गए थे ?

सूक्खी –माँ के बिना मन नही लग रहा था।

पिता–वो तो नही लगेगा, पर लगाना पड़ेगा। जब माँ का जेल मे समय पूरा हो जायेगा तो वो खूद तुम्हे

मिल जायेगी। फिलहाल अभी ज्यादा मत सोचो, क्योंकि अभी ज्यादा सोच के कोई फायदा नही।

समय पर तुम्हे तुम्हारी माँ मिल जायेगी।

सूक्खी –माँ को लाईये ना पापा, जब मै आप दोनो के साथ रहुंगा तो कितना अच्छा लगेगा। मम्मी की

याद आ रही है , मम्मी कब आयेगी पापा।

पिता–बस करो। खाना खाओ और सो जाओ। आज कल देख रहा हुँ , ज्यादा ही तुम

परेषान हो रहे हो और कर भी रहे हो।

पिता जी खाना लेकर टेबल पर रखते है और कुर्सी पर बैठते हुए ,,,,,,,

पिता–आओ खाना खा लो। मैने तो तुम्हे कभी इसके लिए मना नही किया कि तुम अपनी माँ से नही

मिलो। जाकर मिल ही तो रहे हो। अब आओ मान भी जाओ, और खा लो।

अब सूक्खी आकर टेबल के पास बैठता है और खाना के तरफ देखते हुए ,,,,,

सूक्खी

अपने पिता से–मुझे खाने का मन नही कर रहा है पापा। माँ को क्या खाना मिलता होगा जेल मे पापा।

पिता–मुझे नही पता, अगली बार जाओगे तो खुद पुछ लेना।

सूक्खी–आप माँ को कब माफ करेंगे पापा।

पिता–ऐसी कोई गलती नही जिसे माफ नही किया जा सके, पर कुछ गलतियो पर माफी नही मिला करती है। चलो अब सोने का वक्त हो गया। अब कल के लिए कुछ रहने दो।

दूसरे दिन सवेरे सूक्खी जागता है और एक उदास मन से अपने स्कूल जाने की तैयारी मे लग जाता हैं। उसके पिता जी जगते है और उसके लिए कुछ खाने के लिए तैयार करते है और उसे पुकारते हुए

पिता,सूक्खी से–आओ नास्ता कर लो, और आज भी वहा जाकर अपना दिमाग मत खराब करना। मैने तुम्हे समझा दिया है ,समझा करो। वक्त आने पर सब कुछ ठिक हो जायेगा। मै मिलता हुं आज उसके (सूक्खी की माँ) वकील से, देखता हुं कोर्ट की कार्रवाई कहां तक पहुँची है।

अगले समय सूक्खी के पिता अंकेष अपने दफ्तर के काम निपटा कर कोर्ट पहुँचते है और वकील से रूबरू होते है–

अंकेष–नमस्ते।

वकील–नमस्ते ! कहिये।

अंकेष–बस आपही के षरण मे आये है कुछ बताईये जिससे दिल को तसल्ली मिल सकें। फिर बात करते है आगे।

वकील–सारी बाते तो आपको पता है। सच्चाई साबित हो जाने के बाद तो पूरी सजा काटनी ही पड़ेगी, फिर भी हम कोषिष मे है कि उसे (सूक्खी की माँ को) जमानत मिल जाये।

अंकेष–कैसी कोषिष कर रहे है आप कि कामयाब नही हो पा रहे हैं। अच्छे से कोषिष करते भी नही, और हमे करने से रोकते भी है।

वकील–आप जहाँ भी जाईये, जिस वकील के पास वो भी वही बात करेंगे जो हम आपसे कर रहे हैं। समय लगेगा पर परिणाम अच्छा ही मिलेगा।

अंकेष–देखिये महाषय, मेरा जो बच्चा है ना वो आज कल बहुत ज्यादा परेषान रहता है अपने माँ के कारण, जिस कारण मैं परेषान रहता हुँ , और मै चाहता हुँ की मेरी परेषानी जल्द से जल्द खत्म हो।

वकील–मै पुरी कोषिष कर रहा हुँ , आप चाहे तो पता कर सकते हैं।

अंकेष–फिर भी आप पहले से ज्यादा कोषिष जारी रखे वकील साहब। क्योंकि मेरा बच्चा जो है वो आज–कल स्कूल से निकलने के बाद खुद अकेले ही माँ से मिलने जेल के दरवाजे तक चले जाता हैं, और घर आकर हमें ताने पर ताने मारता है कि मै उसके माँ के लिए कुछ भी नही कर पा रहा हुँ।

वकील–बेषक आप बहुत कुछ कर रहे, जो दिख भी रहा हैं।

यह सूनकर अंकेष वापस अपने दफ्तर चला जाता है और षाम को दो घूंट लगाने के लिए रेस्टुरेन्ट पहुँचता है, और मन ही मन सोचता है कि किस चक्कर मे पड़ गए हैं समझ से परे है। और अचानक उसे याद आता है कि घर जाकर उसे यह भी देखना है कि काम वाली बाई आकर सूक्खी के लिए खाना बनाई या वो भी आज आयी होगी या नही। दो पैक लगाने के बाद अंकेष वापस अपने घर पहुँचता है। देखता है सूक्खी अपने घर मे नही है । फिर उसे अंकेष अपने पड़ोसी के यहां ढूंढता है और देखता है कि वो अपने

पड़ोसी के यहां के एक बच्चे के साथ खेल रहा है। अंकेष के जवाब देने पर सूक्खी उसके तरफ देखता है और खेल को खत्म करते हुए दोस्त को ईषारो मे कहते हुए की मै जा रहा हुं , और अपने पिता के साथ अपने घर आ जाता है। फिर घर मे,,,,,,

अंकेश– तो आज कैसा रहा स्कूल ?

सूक्खी– ठिक रहा पापा।

अंकेश–तो खाना खाना तुमने।

सूक्खी–नही पापा, सोचा आपके साथ ही खाउंगा।

अंकेष–अगर मुझे आने मे लेट हो जाता है तो तुम तबतक भुखे रह जाओगे।

सूक्खी–जी पापा , पर मै तो आपका इंतेजार कर रहा था। जैसा हर दिन करता हुं।

अंकेष–मेरे कहने का मतलब मुझे जब देर हो जाती है तब तुम खाना खा लिया करो ना। बेवजह तुम्हे खाने मे लेट हो जाती हैं। ठिक है चलो खाना खाओ, कल हमलोग चलेंगे कही घुमने के लिए। तो चलना है तुम्हे बताओ।

सूक्खी–मम्मी के पास।

यह सून सूक्खी के पिता थोड़े गूस्से हो जाते है,,,,,,फिर गूस्से को काबू करते हुए,,,,,,

अंकेश–नही बच्चे। वहां (जेल) नही जाएंगे। कल जाएंगे वाटर पार्क का मजा लेने के लिए, फिर उसके बाद एक अच्छे से होटेल मे जाकर खाना खायेंगे। सोचो कल कितना मजा आने वाला है।

अब अंकेष खाना निकालता है अपने लिए और सूक्खी के लिए। दोनो खाना खाते है ,,,,

अंकेष,सूक्खी से–मै आज वकील से मिला था। उसने कहा वे जल्द से जल्द कोई निदान निकालेंगे। फिर जल्द ही तुम्हारी माँ तुम्हारे पास होगी। अब दिमाग पे जोड़ कम डालो और आराम से खाना खाओ । फिर कल हमलोग चलेंगे घुमने।

वकील वाली बाते सूनकर सूक्खी को थोड़ा अच्छा लगता है, और वह अंदर ही अंदर खुष भी होता है, फिर चाव से वो खाना खाता है। खाना खाकर दोनो सो जाते है।फिर दूसरे दिन अंकेष सूक्खी के साथ वाटर पार्क

जाता है और दोनो मिलकर कुछ समय तक पानी मे ही नहाते रहते है। नहाने के बाद अंकेष अपने बेटे को कहता है कि अब चलना चाहिए, हमलोग काफी समय पानी मे रह चूके है। फिर वहा से निकलने के बाद वे लोग किसी होटेल मे जाकर खाते है। फिर अंकेष सूक्खी को घर ले जाता है । वहां जाने पर देखता है कि काम वाली बाई उसके घर की साफ–सफाई कर रही होती हैं।

अंकेष,काम

वाली बाई से–तो आप आ गए है तो इसका थोड़ा ध्यान रखिए, मै कही जाकर आता हुं।

बाई,सूक्खी से–तो आपने कुछ खाना खाया।

अंकेष–हां , इसने (सूक्खी) दिन का खाना खा लिया है। बस अब ये रात को ही खायेगा।

सूक्खी,पापा से–मै खा लुंगा पापा अपने से , अगर आपको आने मे लेट होगी तो।

अंकेष–ठिक है , अगर मुझे लेट हुआ तो तुम आंटी (परोस वाली आंटी) के पास चले जाना।

इतना कहते हुए अंकेष घर के बाहर चला जाता है और अपने एक दोस्त (मदन) को फोन करके रेस्टूरेन्ट मे बुलाता है और अपनी परेषानी को उसके सामने षेयर करते हुए दो–दो पैक लगाता है। दोस्त होने के नाते अंकेष पर मदन को थोड़ा गुस्सा आता है फिर,,,,,

मदन अंकेष से–तो तुम एक ऐसे चक्रव्यूह मे फंस गए हो जहा से निकलना मुष्किल ही नही नामुमकिन हैं। इसमे से जितना निकलने की कोषिष करोगे उतना ही फंसने की संभावना है। इसलिए दलदल मे ज्यादा हाथ पैर नही मारना चाहिए। तुम इस बच्चे को छोड़ भी नही सकते और उसकी मां को भी नही, छोड़ोगे तो उसकी माँ तुम्हे कही का नही छोड़ेगी। बच्चे को अच्छे से रखोगे तो उसकी माँ तुम्हे बाद मे अपनी जान से भी ज्यादा प्यार करेगी। क्योकि उसकी (सूक्खी) मां के साथ तो तुम लीगल तौर पर थे। फिर भी अगर उसके साथ नही रहना है तो इसमे उसकी सहमती जरूरी है। इसलिए कभी–कभी दूसरे की संपत्ति पर हाथ मारने से पहले उसके अंजाम के बारे मे सोच लेना चाहिए।

अंकेष,मदन से–समझ मे नही आ रहा की अगला कदम मै क्या चलू ? यहां दलदल ही नही , एक तरफ कुआं तो एक तरफ खाई नजर आ रहा हैं।

मदन,अंकेष से– मैने तुम्हे समझाया था। वैसी प्यार मोहब्बत मत करो, जिससे कई जिंदगीयां बर्बाद हो जाय। मैने तुमसे कहा था उसे (सूक्खी की मां) उसके पति से दूर मत करो, वरना उसका पति का गूस्सा उसे कही का नही छोड़ेगा, और जिसे सहन कर पाना मुष्किल होगा। हुआ वही जिसका डर था और जैसा तुम नही चाहते थे।

अंकेष,मदन से–अब बताओ हम क्या करे ? इंतेजार करके जिंदगी यू ही गुजार दे या ऐसा क्या करे कि वो जल्द से जल्द बाहर आ जाय।

मदन,अंकेष से– ऐसी कोई वजह तो हमे नजर नही आ रही है, जिससे वो जल्द से जल्द बाहर निकल सके। उसे बचाने वाला सिर्फ और सिर्फ एक ही आदमी था, पर अफसोस उसे भी तुमने कही का नही छोड़ा। बस ऐसे ही दो घुंट मारते रहो , और किए गए कर्म का प्रायष्चित करते रहो, और मै क्या कह सकता हुँ।

अंकेष,मदन से–मानता हुँ की सच करवा होता है, और तब से तुम करवा ही बोल रहे हो। तुम से इस तरह की बाते सूनने के लिए मै तुम्हे षराब नही पिलाता। तुमसे डिसकर्सन करता हुं ताकि कोई निष्कर्स निकल कर बाहर आ सकें।

मदन,अंकेष से–तो तुम क्या चाहते हो ? मै तुमसे वो काम करने को कहुं , जो तुम षायद करना ही नही चाहोगे।।

क्योंकि अंकेष को सूक्खी के मां से बहुत ही गहरा लगाव है , इसलिए षायद वो उससे किसी भी तरह के मदन के अलगाव वाली बातो पर ध्यान देने वाला नही है।

अंकेश,मदन से–तुम जैसा कहना चाह रहे हो , अगर ऐसा होता है तो मानो इतना करने के बाद सबकुछ खत्म हो जायेगा। हमें लगता है अब जो भी होगा उसके जेल से निकलने के बाद ही होगा।

मदन,अंकेष से–इधर कितने दिनो से उससे नही मिले हो।

अंकेष,मदन से–मै तो समय–समय पर उससे मिलता ही हुं , और जहां तक होता है उससे उसके दुःख –सुख को बाँट ही लेता हुं। पर वो हमसे हमारे बारे मे कम सूक्खी के बारे मे ज्यादा पुछती है, और जब मै उससे मिलता हुँ तो वो एक ही बात बोलती है कि सूक्खी को क्यो नही लाये और

कैसा है वो ? वगैरह–वगैरह। मेरे बारे मे तो वो बहुत कम ही पुछती है। उसे कैसे बताउ की एक बच्चे को मां के पास ले जाना आसान है , पर वहां से वापस लाना कितना मुष्किल हैं।

मदन,अंकेष से– किषन कन्हैया की कहानी तो बीच मजधार मे फंस कर रह गयी है। अब करें तो करे क्या ? समझ से परे हैं।

मदन,वेटर से– ऐ भाई इसके (अंकेष) बकवास से सारा चढा हुआ उतर गया , और दे दो एक।

फिर मंगाये हुए षराब को दोनो मिल कर पीते हैं।

मदन,अंकेष से–दिमाग पर ज्यादा जोड़ मत डालो। अब सिर्फ एक बात पर ही फोसक करो कि उसे (सूक्खी की माँ) जैसे हो जहाँ से हो कैसे छुड़ाना हैं। चाहे जहाँ जाना पड़े, जिसके सामने नाक रगड़रना पड़े, जितने रूपये खर्च करनी पड़े, चाहे जो पापड़ बेलना पड़े, कुछ भी करना पड़े कर, पर तु अपना टेंषन खत्म कर।

अंकेष,मदन से–साला ! माँ के पास जाता हुँ तो बच्चे के बारे मे पुछती है , और बच्चे के पास रहता हुँ तो माँ के बारे मे पुछता है। बताओ अब क्या करे ?

मदन,अंकेष से–कुछ मत करो, मै जो कहता हुँ सिर्फ वही करो। बोलो तो चलते है कल पुलिस वाले के पास। वहां उसे कुछ खिला कर अच्छे से पुछते है कि केष डायरी मे पुलिस के द्वारा क्या–क्या लिखा गया है और क्या –क्या लिखाया गया है, उस महाषय के द्वारा जिसे तुम्हारे कारण षायद कष्ट हुआ है।

अंकेष,मदन से–तुम भी तो उसे (सूक्खी की माँ) दिलो जान से चाहते थे और उसे लेकर रफू–चक्कर होने वाले थे, अगर मै उसे अपने लपेटे मे नही लेता तो।

मदन,अंकेष से–अच्छा हुआ मैने ऐसा नही किया, वरना तम्हारे जगह पर आज मै बैठा रहता और तुम मुझे एडवाईज दे रहे होते, और हमारे जैसा तुम हमें ज्ञान बाँट रहे होते। पर अभी भी बिगड़ा कुछ नही है, बस जरूरत है तो सिर्फ समेटने की। वो समेटना कैसे है ये सिर्फ और सिर्फ तुम्हारे स्व–विवेक पर निर्भर करता हैं।

अंकेष,मदन से–काष तुम ही उसे (सूक्खी की माँ) लेकर भाग जाते, तो आज हमें ये समय से पाला नही पड़ता।

मदन,अंकेष से–तुम्हारे इस बरबोले भोंकते हुए आवाज सूनकर हमारे दिमाग मे दो तरह की बाते पैदा हो रही है–एक यह कि तुम उससे (सूक्खी की माँ) सही मे प्यार करते भी थे या नही, और दुसरी ये कि तुम मेरे दोस्त कम दुष्मन ज्यादा लग रहे हो। क्योंकि इस तरह की बाते कोई दुष्मन दोस्त ही कर सकता है।

रात काफी ज्यादा हो चूकी है और रेस्टुरेन्ट बंद होने को है ये दोनो और इसके अलावे एक और कस्टमर को छोड़ कर सारे लोग जा चूके है और रेस्टुरेन्ट के मालिक भी इन दोनो टेबल के खाली होने का इंतेजार कर रहा है । दूसरे टेबल पर अकेला बैठा आदमी पीते – पीते इन दोनो की बाते सून–सून कर निंद मे जाने के कारण कुर्सी लेकर गिरता चला जाता है। यह सब देख कर अंत मे रेस्टुरेन्ट का मालिक अंत मे बचे इन तीन लोगो से कहता है– तो आज की इस रंगीन षाम को यही पर खत्म करते है और फिर आपलोगो को कल आने का निमंत्रण भी देते है। बुरा मत मानियेगा रात बहुत हो गयी है। ठिक है , अब आप लोग जाईये।

कुर्सी पर से गिरने वाला आदमी,

रेस्टुरेन्ट के मालिक से– कहां से ऐसे सब आदमी को उठाकर लाते है आप ,जो पीने वाले हरेक आदमी के नषा का मजा किरकिरा कर देता है, और तो और कुर्सी पर से भी गिरने को मजबुर कर देता हैं।

रेस्टुरेन्ट के मालिक– कल इन सबका पता तुम्हे बता देंगे, आज जाओ ।

रेस्टुरेन्ट के मालिक,

मदन और अंकेष से– और महाषय , आप लोग भी जाईये और सुकून दीजिए अपने दिलो दिमाग को।

इसके बाद ये लोग चुप–चाप, अपने–अपने घर को चले जाते है। निकलने के क्रम मे,,,

मदन,अंकेष से–तो कल कहां मिलोगे, पुलिस वाले से मिलने के लिए।

अंकेष,मदन से–अभी मैने डिसाईड नही किया है कि कल क्या करना है ? जो भी होगा कल बताते है।

मदन,अंकेष से– यहां अभी जितनी भी बाते हुई है, वो सारी दम वाली बाते थी । इसे मजाक मे मत लेना और ये मत सोचना की ये बाते नषे मे बोली गई हैं।

यह सारी बाते सूनते हुए अंकेष अपने घर की ओर चला जाता है और रास्ते मे देखता है कि कुछ लोग अपनी पत्नि के साथ टहलते हुए घर जा रहे होते है, जिन्हे देख अंकेष सूक्खी की मां के बारे मे सोचने लगता है, और मन ही मन मायूष होकर घर की ओर चल पड़ता हैं। घर पहुँचने पर ये देखता है कि काफी देर हो जाने के कारण सूक्खी सो गया था, किचन मे जाकर जूठे प्लेट देखकर अंकेष को यह लगता है कि सूक्खी ने षायद खाना खा लिया हैं। यह देख कर वो भी आराम से सो जाता हैं।

दूसरे दिन सूक्खी को स्कुल जाने के लिए जगाता है और सूक्खी के जगने पर उसे स्कुल के लिए तैयार करता है और स्कुल भेजने के बाद खुद तैयार होकर अपने काम पर जाता है और काम को जल्दी निपटा कर वो आज सुक्खी की माँ से मिलने के लिए जेल की ओर जाने के लिए निकल पड़ता हैं। आज लगभग एक सप्ताह के बाद अंकेष उससे मिलने वाला हैं। जेल के पास पहुंचने के बाद अंकेष जेल को बाहर से पुरी तरह अच्छे से निहारता है और सोचता है कि खुद के चलते तो मुझे इससे पाला नही पड़ा,लेकिन जिससे पाला पड़ा उसके कारण हमें इससे (जेल) पाला पर ही गया।

जेल के अंदर पहुंच कर अंकेष उससे मिलने के लिए उसका नाम लिखकर अब खिड़की के सामने इंतेजार कर रहा होता है। थोड़ी देर बाद देखता है कि दरवाजे के अंदर से सूक्खी की माँ उसके सामने धीरे–धीरे कदम बढाती हुई उसके पास खिड़की के उस पार पहुंच कर थम सी जाती है। दोनो की नजरे एक दूसरे से मिलती है ,उसे देखने के बाद अंकेष की धड़कने तेज सी हो गयी है और षायद सूक्खी की माँ का भी उधर उसी तरह का हाल हैं। जिसके चेहरे की रंगत उड़ सी गई है, बाल थोड़े उलझे से लग रहे है , आँखे जैसे बहुत सी बाते कहने के लिए बेकरार हो, चेहरे मायूषी की चादर से मानो ढक सी गई हो , उसके षरीर मानो बेजान सी हो गयी हो , कहने के लिए उसके पास बहुत सारी बाते हो पर ऐसा लग रहा है कि कह नही पा रही हो। उसकी इस तरह की हालत देख कर अंकेष को ना जाने उस पर कितना तरस आता है पर ये बाते वो उसके सामने बयां भी नही कर सकता।

अंकेष,अर्चना से– कैसी हो ? और इस तरह की हालत तुमने क्यो बना रखी हैं ?

अर्चना,अंकेष से–यहां पानी वाली खिचड़ी और जली हुई रोटी , सोने पर सिर्फ करबटे लेने की जगह , समय से पहले जागना और समय से पहले कोठरी मे बंद हो जाना ,इससे तुम क्या समझ रहे हो कि मै कैसे अपने आपको ठिक रख सकती हुँ। अगर जेल मे सबकुछ ठिक होता तो बाहर की दुनियाँ षायद और जालिम होती। कैसा है वो (सूक्खी),,,?

अंकेष–वो जैसा भी है ठिक है, तुम अपने बारे मे कुछ बताओ ।

अर्चना–मैने एक दोस्त बना लिया है यहां जेल मे, जिसे दिन भर अपने गिले–षिकवे सूनाती रहती हुँ। मै भी कितनी पागल हुँ , ये सब बात करते–करते मै तुम्हारा हाल–चाल पुछना तो भुल ही गई।

अंकेष– मत पुछो हमारा हाल ! क्योंकि मेरे दिल का हाल तुम्हारे दिल के हाल से जुड़ा है।

अर्चना–ऐसा मत कहो ! वरना तुम्हारा भी दिल का हाल बुरा रहने लगेगा।

अंकेष– वैसे तुम्हारे दोस्त का नाम क्या है ?

अर्चना–मै तो उसका नाम नही जानती , क्योंकि मैने उनसे पुछा ही नही।

अंकेष– खैर छोड़ो, बाकी सब ठिक हो जायेगा। ज्यादा परेषान होने की जरूरत नही हैं।

अर्चना–क्या करे ? हजारो की भीड़ मे कर्म लोगो को ढुंढ ही लेती है। ढुंढती ही नही और लोगो को एहसास भी कराती है कि आपने अतीत मे किस तरह के बीज बोए है। तुम परेषान मत होना हमलोग फिर पहले के जैसे साथ मे रहेंगे। अपना और उसका (सूक्खी) सब कुछ समय से कर रहे हो या नही , जैसे खाना , कपड़े ! तुम्हारे कपड़े तो बहुत गंदे हो चूके है।

अंकेष– हां , सिर्फ एक सप्ताह। पर उसे (सूक्खी) मै किसी भी तरह की तकलिफ नही होने दे रहा हुँ।

अर्चना– मै उसकी बात नही कर रही हुँ। मै सिर्फ और सिर्फ तुम्हारी बात कर रही हुँ , तुम अपना ख्याल रखोगे तो उसका भी ख्याल रह पाएगा। वैसे तुम कैसे हो ? हमारे बिना तुम कैसे रह पा रहे हो ?

अंकेष–रहने की तो चाहत नही थी अकेले, पर मजबूर हुँ।।

अर्चना–तुम्हारा हाल देख कर बहुत अफसोस हो रहा हैं। पर मै कर भी क्या सकती हुँ ? पर इतना है कि जब भी मिलुंगी तुम्हारी सारी तकलिफे कम हो जाए ऐसा कोषिष करूंगी।

अंकेष–बहुत हुआ । इस तरह की बाते बोल कर अब और ज्यादा तकलिफे मत दो। मै दो दिन पहले वकील से मिला था, वह पुरी कोषिष कर रहे हैं।

यह बाते सूनकर अर्चना सिर्फ ईषारो मे हां करती है , क्योकि वह अपने जमानत के बारे मे ज्यादा बात इसलिए नही करनी चाहती कि वह अंकेष से यह बात नही सूनना चाहती कि उसकी जमानत नही हो पा रही है , या जमानत होने मे समस्या हो रही हैं।

अंकेश–मैने उनसे कहा थोड़ी जल्दी करिये, नही तो मुझे दूसरे वकील का सहारा लेना पड़ेगा। फिर उसने कहा – ठिक है ठिक है ! मै थोड़ी तेजी लाता हुँ केष मे। मै बराबर वही वकील के टच मे हुँ , और तब तक रहुंगा जब तक तुम मेरे टच मे नही आ जाती हो।

अर्चना–जो भी करना आराम से करना, बहुत ज्यादा परेषान होने की जरूरत नही है। क्योंकि इस तरह के मामले मे समय तो लगता ही है ।

इसी दरमियां अंकेष देखता है कि बगल मे एक कैदी से उसके घर वाले और उसके वकील मिल रहे होते है– वकील कैदी के घर वालो से अंग्रेजी मे बात कर रहा होता है, यह देख अंकेष को लगता है की ये वकील षायद ऊपर की चीज लगता है। क्यो ना इससे इसके (अर्चना) रिहा होने के बारे मे बात किया जाए। पर अर्चना के सामने वह उससे बात नही करना चाहता। इन लोगो के बीच बात हो ही रही है इसी दरमियां वहां अंदर मे मौजूद,

महिला पुलिस

अर्चना से– मैडम आपका समय समाप्त हो गया। अब आप चलिए, जाईये अंदर।

अर्चना, अंकेष से–कमाल है , वैसे इस काल–कोठरी मे वक्त कटना नही, और जब किसी से दुःख बाँटने का वक्त मिलता है तो वक्त रूकता नही। ऊपर वाले को भी कोस़ कर क्या करू ? उन्होने वैसी ही दुनियां बनाई है जिसकी सबको जरूरत है, वैसी नही बनाई जो सिर्फ किसी एक को जरूरत हो। फिर आगे मिलेंगे तो बाते होंगी। पर मैने जो कहा उसपर ध्यान देना, मेरी चिंता बिल्कुल मत करना ,मै तो यहां ठिक हुँ।

यह बाते कहते हुए अर्चना अंदर जाने लगती है, उसे जाते हुए देख–

अंकेष–(थोड़े जोर से) तुम ठिक रहोगे तो हमलोग भी ठिक रहेंगे।

मुलाकातो का सिलसिला खत्म होने के बाद अंकेष तेजी से बाहर निकलता है और उस जाते हुए वकील के पास पहुँचता है–

अंकेष,वकील से– नमस्ते! क्या आप मेरा एक केष लेंगे।

वकील–क्यो तुमने अबतक कोई वकील नही किया है ?

अंकेष–क्या आप उसे (सूक्खी की माँ) जेल से छुड़ा सकते है ?

वकील–मै तुमसे तुम्हारी पत्नी को भी छुड़ा सकता हुँ। तुमने मेरा जबाव नही दिया।

अंकेष–मेरा जो वकील है वो अबतक नाकामयाब रहे है जमानत भी दिलाने मे।

वकील–वकील बदलने से केष को मोड़ा नही जा सकता है । इसके लिए तुम्हे गवाहो को तैयार करना होगा, वो भी हालातो से साथ–साथ। इतना बात अगर तुम हमारे ऑफिस मे करते तो तुम्हे हमारे फिस का 05 प्रतिषत चुकता करना पड़ता , और यहां तुमने मुझे फ्री मे बका दिया। फिर भी अगर सभी तरह से हार जाओ तो ये लो मेरा कार्ड (अपना आईडेन्टिटी कार्ड देते हुए) , फिर मिल लेना हमसे। इतना कहते हुए वकील अपने रास्ते और अंकेष अपने रास्ते निकल जाते हैं।

इसी समय सूक्खी अपने घर की पास वाली गली मे बैठकर कुछ बच्चे को खेलते हुए देख रहा होता है, जिन बच्चो के पैरेंट्स भी अपने बच्चे का खेल देख रहे होते हैं। खेलने वाले बच्चे इसे खेलने के लिए बुलाते है, पर सूक्खी द्वारा कोई प्रतिक्रिया नही देने के बाद एक पैरेंटस इसके उदासी को देखकर इसके पास आते है और इससे पुछते है– तुम क्यो नही खेल रहे हो ?

सूक्खी–क्योंकि मुझे खेलना पसंद नही है।

पैरेंटस–लेकिन बच्चे को तो खेल पसंद होता है। तुम्हे क्यो नही ? बोलो ।

सूक्खी के द्वारा किसी भी तरह का जवाब नही देने पर,,,,,,,,

पैरेंटस–कोई तकलिफ है बेटे।

पैरेंटस अब ईषारो –ईषारे मे बात करते है कि षायद इसे कोई परेषानी है। अब अचानक सूक्खी वहां से उठकर अपने घर की ओर चल पड़ता है।

अंकेष वहां से निकलकर सीधे ऑफिस पहुँचता है और अपने बाकी के जरूरी काम निपटाता है। फिर वहां से निकलकर मदन के साथ अंकेष उस पुलिस स्टेषन पहुँचता है , जहां से अर्चना के केष की डायरी लिखी जानी है।

पुलिस,अंकेष से–मुझे तो जो लिखना था वो लिख कर मैने भेज दिया। अब जो होगा वो कोर्ट से ही होगा । ये सब मामले को हमलोग ज्यादा देर नही रखते ,जो भी हो जैसे भी हो उसे निपटा कर भेज देते है। बाकी अब आप लोग आगे देख लिजिए।

अंकेष,पुलिस से–कोई ऐसी रिपोर्ट तो होगी जिसे आप लोग बाद मे भेजेंगे कोर्ट मे।

पुलिस–वो बाद मे देखेंगे। पर अभी पता नही।

अंकेष–बाद मे ही देंगे, तो सर एक बार हमलोगो को कोई रास्ता तो बताईये।

पुलिस–रास्ता बताने के लिए वकील है । जो तुम जैसे लोगो के लिए बैठे हुए है लाईन लगा कर।

मदन,पुलिस से–फिर भी SIR किसी भी तरह की कोई भी मदद अगर आपके तरफ से संभव हो तो।

पुलिस–मुझे तो ऐसी कोई बाते नजर नही आ रही है, फिर भी अगर ऐसा हुआ तो तुम्हे बुला लेंगे। अब अपने तसरिफ को फूर्सत दिजिए।

अंकेष–सर मेरा नंबर तो ले लिजिए।

पुलिस–हां नंबंर दे दीजिए। बताईये कितना नंबंर है आपका ।

अंकेष– 0000000000।

मदन,पुलिस से–धन्यवाद सर,,,! खाली – खाली मत समझिए सर, आपका भी ख्याल रखा जाएगा।

यहां ईषारो–ईषारो मे मदन के द्वारा पुलिस वाले को समझा दिया गया है कि आपको इसके बदले मेहनताना मिल जाएगा। फिर पुलिस वाले के द्वारा हाँ मे धन्यवाद दिया जाता हैं। इसके बाद दोनो आपस मे बात करते करते वहां से निकलते है।

मदन,अंकेष से– टेंषन मत लो , हमने पुलिस वाले को ईषारो मे समझा दिया है , वो जरूर हमें कोन्टैक करेगा।

अंकेश–कोई ऐसा समाधान निकालो जिससे मामला सलट सकें।

मदन–एक बात कहुं , अचानक मेरे दिमाग मे एक ख्याल आया है, पर थोड़ा पेचिदा है।

अंकेष–बोलो।

मदन–तुम उसके पहले आषिक को ये दिखाओ कि तुम उसे (अर्चना) छोड़ चूके हो , और किसी दूसरे मूरत के जाल मे फंस चुके हो।

अंकेष–षक्ल के हिसाब से तो बहुत गंदी बात कही तुमने। जो जरा भी हजम होने वाली नही हैं । मैने तुम्हे समाधान ढुंढने के बारे मे कहा है, ना की समस्या।

मदन–एक और विचार है हमारे मन मे ,कहो तो फिर मुहँ खोलू।

अंकेष–जरूरत नही है , फिर जहर ही उगलोगे।

मदन–कभी–कभी जहर फायदेमंद ही होता है, क्योकि वो अंदर के जहर को काटता हैं। मै ये कह रहा था कि तुम सूक्खी के पापा को ये जाकर कहो की वो अर्चना की जमानक करवा दे, बदले मे तुम उसे सूक्खी सौप दोगे।

अंकेष–(गुस्से में) क्या बकते हो तुम ? मार खाकर ही मानोगे क्या ? कि अपना जहर तुममे डाल दूं , फिर डसते रहना अपनी दिलरूबा को जाकर, समझे। साला दिमाग का दहीबारा, कबारा ,किरकिरा और साथ मे चिरचिरा भी कर दिया तुमने। ऐसा करने पर क्या अर्चना हमे क्या करेगी तुम्हे पता भी है ? फिर हमारे और उसके बीच क्या रह जायेगा , बता सकते हो।

मदन साईलेन्ट है और कुछ बोल नही रहा है। फिर गुस्से वाले माहौल को मदन बदलने की कोषिष करता है।

मदन,अंकेष से–क्यो ना हमलोग कही बैठकर कॉफी पीते है और वही कुछ सोचत है।

अंकेष का मुड पुरा खराब हो चुका है, वह कुछ नही बोल रहा है यह देख मदन उसके कंधे पर हाथ देकर उसे प्यार से कहता है, – चलो ना ,,,,। फिर दोनो कॉफि पीते है।

मदन,अंकेष से–ऐसा करते है,,,,,,,,,,

इतने मे ,,

अंकेष,मदन से–चुप रहो, सिर्फ मुहँ खोलो कॉफी पीने के लिए। (मुड मे आकर) तुम्हे अपने साथ लाता हुँ , ताकि तुम कुछ सही सुझाव या सही मदद कर सको। इसलिए नही कि तुम सारे मामले का नौ–चास कर दो , गलत मषवरा देकर।

मदन,अंकेष से–(दोनो हाथ उठाकर) सॉरी दोस्त, कॉफी का रूपया हम ही दे देंगे। अब षांत रहो। तुम बोलो अब क्या करना होगा।। किसी को उठवाना है किसी को धमकी देना है तो बोलो वो भी देते है। अब हम कुछ नही बोलेंगे।

अंकेष,मदन से–मै अर्चना के साथ अभी नही हुँ , इस बात की तकलिफ अभी उतनी नही है , तकलिफ इस बात से है कि सूक्खी जो एक छोटा सा बच्चा है , वह बेचारा काफी मायूष रहता है जो मुझसे देखा नही जाता हैं।

अंकेष षाम मे घर पहुँचता है, देखता है कि सुक्खी पढाई कर रहा होता है।

सुक्खी,अंकेष से–तो कल आप मुझे मम्मी से मिलाने जाएंगे ।

अंकेष मन ही मन सोचता है कि मेरे आने के साथ ही ये षूरू हो गया। अब इसे क्या जवाब दे।

अंकेष,सूक्खी से–चलेंगे दूसरे दिन पर कल नही। कल कुछ जरूरी काम है इसलिए।

सूक्खी–पर कल मुझे मम्मी से मिलना है, उसे मेरे बिना वहां मन नही लगता होगा। मै वहां उनसे मिलने जाउंगा तो उन्हे अच्छा लगेगा।

अंकेष–आज मै तुम्हारे मम्मी से मिलने गया था, वह ठिक है।

सूक्खी–तो आप मुझे क्यो नही ले गए आज।

अंकेष–आज मै बाहर –से–बाहर ही, यानी ऑफिस से ही निकल गया था तुम्हारी मम्मी के पास जाने के लिए।

इतने मे अंकेष और सूक्खी दोनो को अपने पड़ोस वाली आंटी के यहां से झगरा करने की आवाजे सूनाई देती हैं। यह सूनकर अंकेष कहता है–अब इसे क्या हुआ जो फिर लड़ाई षूरू कर दी। फिर अपने पति से उसे झगरा हुआ क्या ?

अंकेष,सूक्खी से–तुम्हे क्या लगता है ?

सुक्खी,अंकेष से–मैने आज देखा था कि अमृत को उसकी दादी डांट रही थी, फिर उसकी मां को भी उसकी दादी कुछ बोल रही थी जोर–जोर से।

अंकेष–तो ये मामला है। ये तो सभी घरो मे होता हैं। हमारे तुम्हारे अगल बगल सबके यहां। पर इसमे माहौल को गर्म करने की जरूरत नही

होनी चाहिए। लगता है उसके यहां बात बहुत ज्यादा बढ़ गयी हैं। तुम्हे क्या लगता हैं।

इतने मे अमृत के यहां से उसकी माँ की जोड़ से चिल्लाने की आवाज आती है, मतलब ऐसी आवाज जो ज्यादा खतरनाक सी लग रही थी। यह सूनने के बाद अंकेष और सूक्खी दोनो एक दुसरे को बड़ी हैरानी से देखते है और अपनी खिड़की से उसके घर तरफ झांकते है। अंकेष देखता है कि अमृत की माँ उसके पापा से चिल्ला–चिल्लाकर तू–तू मै–मै से अंगुली दिखाकर बात कर रही होती है और षायद हाथा–पाई भी हो चुकी थी या होने वाली ही थी । मामला गंभीर होते देख और पड़ोसी होने के नाते अंकेष सूक्खी के साथ अमृत के घर जल्दबाजी मे पहुँचता है । इन दोनो के पहुँचने के साथ वहां का माहौल पूरा तो नही, पर थोड़ा षांत हो जाता हैं।

अंकेष,अमृत के

पिता(केषव से)–क्या हुआ ? क्यो आप लोग ऐसा कर रहे है ?

केषव–आईये बैठिये।

अमृत की माँ (वंदना)

केषव से–समस्या मै पैदा नही करती हुँ , बल्कि समस्या को आप सुलझा नही सकते है।

अंकेष,अमृत की

माँ से– ठिक है, आप थोड़ा साईलेन्ट होईये। हम बात करते है इनसे (केषवा से)

अंकेष,केषव से–तो आप पहले षांत होईये ,(केषव सोफे पर बैठता है) तो बताईये क्या हुआ ? जो आप लोग इतने षांत माहौल को अषांत कर रहे है।

केषव,अंकेष से– अरे कोई भी प्रोब्लेम हो , हम जब षाम को घर आते है, आने के बाद जब हम स्थिर हो जाये या जब मेरा मुड ठिक हो तब घर की कोई बात करने या सूनने मे ठिक लगता है । लेकिन आने के साथ ना चाय ना कॉफि ना नास्ता, ना कोई हँसी या ना कोई प्यारी सी बाते, आने के साथ सिर्फ तकरार ही तकरार तो बताईये क्या होगा ?

अंकेष,केषव से–तब तो वही होगा जो अभी कुछ देर पहले यहां हो रहा था।

कुर्सी पर केषव की माँ बैठे—बैठे सभी बातो को षांति से सुन रही है साथ ही अमृत पर्दे के पीछे से पर्दे को थोड़ा मोड़ कर अपने पापा की डर से सारी बाते छिपकर सूनता हैं।

अमृत की माँ,

केषव से—बातो को उलझा क्यो रहे है, बता रहे है तो सही बाते बताईये। वरना मै ही बताती हुँ।

केषव, अमृत की

माँ से—अब तुम बताओगी, क्या सही क्या गलत है ?

अंकेष,केषव से—अच्छा—अच्छा ,षांत रहिए। षांत रहिएगा तब ही बात होगी, और आज आपलोग लड़ रहे है कल एक साथ ही रहिएगा।

अंकेष,अमृत की

माँ से—देखिये समस्या भी समाधान खोजती है, बसर्ते कोई इस बात को समझे तो। पति पत्नि का झगरा तो क्षण भर का होना चाहिए, और प्यार ज्यादा क्षणो के लिए। परिवार के किसी अंदरूनी बातो को किसी दूसरे को जानने की जरूरी नही है, और बताना भी नही चाहिए। अगर कोई ऐसी बाते है जो आप लोग हमें बता सकते है तो बताईये। तो इसका समाधान निकाले, वैसे तो आप लोग दोनो मिलकर ही खुद समाधान निकाल सकते है, इसमे किसी दूसरे की कोई जरूरत ही नही है।

सूक्खी अमृत के पास जाकर उससे कुछ खेलने या पढाई की बाते करने लगता हैं।

अंकेष,केषव की

माँ से— क्या हुआ माँ जी, आप इन दोनो को क्यो नही समझा रहे हैं।

केषव की माँ,

अंकेष से—हमें तो पता भी नही कि ये लोग लड़ क्यो रहे है ?

अंकेष—ओ अच्छ ! ये बात हैं , तब तो हमे भी इन दोनो से ज्यादा पुछ—ताछ नही करनी चाहिए, ताकि इन दोनो के बीच की बाते सिर्फ और सिर्फ यही लोग सुलझा सकते है। मै तो सिर्फ इन दोनो को षांत रहने के लिए कह सकता हुँ। क्या माँ जी ? गलत बोले तो बोलिए।

केषव की माँ,

अंकेष से– हां बेटा ? तुम बोले हो तो ठिक ही। पर इन दोनो को कौन समझाए। बहू को बोलती हुँ तो उसे बूरा लग जाता है और बेटे को बोलती हुँ तो वो मेरी बाते सूनता कम है और मुझे सूनाता ज्यादा हैं।

यह सारी बाते केषव की पत्नि बगैर षरीर हिलाए–डुलाए स्थिर होकर अपने नजर को नीचे झुकाकर और बगैर कुछ बोले सून रही होती हैं। अंकेष किसी भी तरह से वहां के माहौल को बदलना चाहता है।

अंकेश,अमृत से–तो तुम्हारा पढाई कैसा चल रहा अमृत ?

षायद अपने पापा के डर से अमृत कुछ भी बोलने के मुड मे नही हैं।

केषव,अमृत से–बोलो !

अमृत,अंकेष से–ठिक चल रहा है अंकल। मेरे स्कुल मे बहुत सारे दोस्त भी है। मेरे स्कुल मे पेंटिंग भी कराया जाता हैं। मेरी पेंटिंग मेरे टिचर को बहुत पसंद भी आती हैं।

केषव,अमृत से–पढाई कैसी चल रही है तुम्हारी, ये तुमने नही कहा।

अमृत,अंकेष से–वो तो अच्छी ही चल रही ेहै। पर उसमे गुड नही मिलता।

अंकेष,अमृत से–ओ सूनकर बिल्कुल अच्छा नही लगा। पर मेहनत करोगे तो जरूर गुड मिलेगा।

अंकेष,केषव

की माँ से–तो माँ जी, खाना खाया आपने।

केषव की माँ

अंकेष से–खाया तो नही है, पर उम्मीद भी नही लग रहा है कुछ मिलने का।

अमृत–मै आपको खाना खिलाउंगा दादी।

दादी–(दोनो हाथ जोड़ कर ऊपर देखते हुए) हे भगवान , हे प्रभू , हे माँ दुर्गे , जय माँ भवानी, कृपा है आपकी, की इतना सुन्दर पोता और उसके इतने सुन्दर विचार दिये आपने।

दादी,पोते से– कितने मिठे बोल है तुम्हारी।

अंकेष,केषव की

माँ से–बोल तो उसके मिठे है ही , लेकिन उसके प्रति आपका नजरिया भी अच्छ होना चाहिए था।

अचानक अब वहां तीन लोग आ धमकते है। दरवाजे की घंटी बजती है और केषव दरवाजा खोलता है, देखता है कि दरवाजे पर तीन लोग खड़े है –

तीनो ,केषव से–(एक साथ) नमस्ते।

केषव, तीनो से–कहिए।

पहला आदमी,केषव से–भाभी जी से बात हुई थी हमारी।

केषव,पहले आदमी से–किस बारे मे।

पहला आदमी–स्कुल के बारे मे ।

इधर ,,,,

अंकेष,अमृत

की माँ से–देखिये भाभी जी, अगर पति षाम को घर आता है तो उसे कुछ मत बोलिए, और जब सवेरा हो तो उसे कुछ भी कहने से रूकिये मत। लेकिन जो भी कहिए उसमे अपना प्यार और दुलार को मिलाकर कहिए। फिर देखिये महौल कुछ अलग सा होगा।

इधर दरवाजे पर,,,

केषव–अच्छा ! तो आप लोग ही है जो इस घर मे उथल–पुथल मचवा दिये हो। ऐसी क्या बात है आपके स्कुल मे, जो रात और दिन कुछ भी नही देख पा रहे है आप।

दूसरा आदमी,केषव से–असल मे मेरे स्कुल मे बहुत सारे फिचर्स है। जिससे बच्चो का भविष्य उज्ज्वल रहेगा हमेषा।

केषव,दूसरे आदमी से–(आराम से और प्यार से) जितना जल्दी हो सके यहां से धीरे–धीरे आराम से दबे पाव से बगैर आवाज किए निकल जाईये, ताकि हमारे घर वाले को ये भी पता ना चले कि कोई आया भी था या कोई अजनबी या पागल सिर्फ कॉल बेल बजाकर चला गया। नही तो इस एरिये से एक भी बच्चा नही मिलेगा तुम्हे तुम्हारे स्कुल ले जाने के लिए, और मेरा तो कभी नही।

यह बाते सूनकर ये तीनो लोग बगैर आगे कुछ बोले वहां से निकल जाते हैं। केषव जैसे ही आकर सोफे पर बैठता है और ,,,,

अंकेश,केषव से–तो आप लोग रात का डिनर करिये और हमें इजाजत दीजिए मै अपने बेटे के साथ जाने के लिए।

फिर अचानक से दरवाजे पर घंटी बजती है और आवाज सुनते ही केषव अपने सर पर हाथ रखकर–अब कौन है जिसे रात मे भी चैन नही हो रहा है, और आ जाते है हमारी नींद हराम करने के लिए। केषव दरवाजा खोलता है और सामने देखता है कि एक औरत अपने आदमी के साथ सामने खड़ी होकर मुस्कुरा रही हैं।

औरत,केषव से– नमस्ते।

केषव, औरत से–(बगैर कुछ पुछे) आईये।

वे लोग अंदर आते है यह देख

केषव की पत्नि

केषव से–ये कौन है ?

केषव–हमें क्या पता ? हमें लगा कि तुम्हारे कोई जानने वाले है।

केषव की पत्नि–इन्हे तो मै जानती भी नही ।

केषव–क्या ?

केषव की पत्नि– हां। बगैर ये जाने कि ये लोग हमे जानते है या नही, आपने दरवाजे से इन्हे अंदर कैसे आने दिया।

औरत,केषव से–घबराईये नही भाईसाहब, हमलोग एक कमरे की तलाष मे है। बहुत दिनो बाद हमलोग अपने एक रिलेषन के लोग के पास यहां आये थे पर उनके घर के दरवाजे पर ताला लगा है । इसलिए हमलोग एक या दो दिनो के लिए यही आस पास मे एक किराये पर कमरा खोज रहे है। अगर आप लोग इस बारे मे कुछ मदद करे तो बहुत मेहरबानी होगी।

वंदना,औरत से–तो उसे फोन कर लेते।

औरत,वंदना से–ये बात तो मै भी जानती हुँ ,पर उन्होने ये करने लायक भी नही छोड़ा। उनका नंबर नेटवर्क से बाहर हैं।

अंकेष,केषव से–ठिक है तो आप लोग इनके समस्या को थोड़ा देख लिजिए। मै यानी हमलोग (सूक्खी) चल रहे है फिलहाल यहां से। फिर अंकेष सूक्खी को आवाज देकर अपने साथ घर चलने को कहता हैं।

केषव,अंकेष से–अगर आपके नजर मे कोई कमरा कही खाली हो तो बाताईये।

अंकेष,केषव से–ना मेरे पास और ना ही मेरे नजर मे कोई कमरा हैं, जो इन लोगो के काम आ सके।

अंकेष सूक्खी को वहां से लेकर निकल जाता है। और जाते –जाते केषव को बाहर बुलाकर ,,,,

अंकेष,केषव से–तो थोड़ा आराम से ही अपनी पत्नि से निपटिये ! रहना आप लोगो को साथ मे ही है। एक बात और ये दोनो अजनबी को अगर कही कमरा दिलाने के बारे मे सोच रहे है तो पूरी जानकारी और जांच परख के ही आगे कुछ किजिएगा। क्योंकि जामान ,,,,,

सूक्खी,केषव से–खराब है।

अंकेष,केषव से–हां । एक बात और कि ये लोग इतने घरो को छोड़ कर आपके ही पास क्यो,,,?

केषव,अंकेष से–ऐसा कुछ लग रहा है तो, अभी इन दोनो को रास्त दिखाता हुँ।

अंकेष,केषव से–पर आराम से सच्चाई को जानकर। अगर सही मे उन लोगो को मदद की जरूरत हुई तो !

अंकेश,सूक्खी से– तो आज हमलोगो ने क्या सिखा ?

सूक्खी–यही कि किसी अंजान लोगो पर जल्दी भरोसा नही करना चाहिए। और पुरी तरह से सबकुछ जानने के बाद ही उनकी मदद करनी चाहिए।

अंकेष–गुड। तो चलो हमलोग सोने के लिए चलते है मजे से।

केषव के घर से निकल के बाद ये दोनो के सामने कुछ प्राकृतिक परिवेष है जो ऐसे है–कुछ लड़के है जो आपस मे बात करते हुए सड़क पर टहल रहे है, दो लोग अपने कुत्ते को सड़क पर टहला रहे है, एक पति पत्नि आपस मे बात करते हुए अपने घर के सामने टहल रहे है, एक खम्भे पर लगे लाईट बार –बार बंद हो रही है। मौसम गर्मी का होने के कारण हल्की –हल्की हवां चल रही है जो गर्मी मे सुकूनं देने वाली थी। कुछ दूर हो रहे षादी समारोह मे बजने वाले गाने की धीमी–धीमी आवाज आ रही थी।

दुसरे दिन स्कुल मे सूक्खी,,,,

मोहित,सूक्खी से–तो आज तुमने क्या खाना खाया, क्या तुम मेरे साथ लंच करोगे।

सूक्खी,मोहित से–मै तो लंच लेकर आया ही नही,

मोहित–कोई बात नही ,मेरा लंच तुम मेरे साथ करना। तुम आज कल इतने उदास क्यो रहते हो ?

सूक्खी–पता नही बस ऐसे मन नही लगता।

मोहित–क्या तुम मेरे साथ मेरे घर जाओगे, और वहां मेरी मां से मिलोगे। फिर हमलोग अपने घर मे मजे से खेलेंगे भी।

स्कुल से निकलने के बाद सूक्खी सीधे मोहित के साथ उसके घर चला जाता हैं। इधर अंकेष यह जानने के लिए की सूक्खी स्कुल से घर वापस आया कि नही अपने घर वाले नंबर पर फोन करता है, पर सूक्खी द्वारा फोन रिसिव नही करने पर अंकेष केषव के घर पर फोन करता है, पर उसके घर पर भी फोन रिसिव नही होने के कारण अंकेष सीधे सूक्खी को खोजने के लिए अपने घर के लिए निकलता हैं।

अब सूक्खी अपने दोस्त मोहित के साथ अपने घर आने के लिए निकलता है रास्ते मे,,,,,,

सूक्खी,मोहित से–मेरे पापा मुझे घर मे ढुंढ रहे होंगे।

मोहित,सूक्खी से–क्यो वे ऑफिस नही जाते है ? हां तुम्हारी माँ तुम्हे जरूर खोज रही होगी।

सूक्खी,मोहित से–नही मेरी माँ हमें नही खोजती, मेरे पापा ही खोजते है। क्योंकि वे हमें माँ से ज्यादा प्यार करते है।

मोहित,सूक्खी से–एक बात तुम्हे पता है मेरे पापा भी मुझे मेरी माँ से ज्यादा प्यार करते हैं, और माँ दुलारने के साथ–साथ पापा से ज्यादा मारती भी हैं। पता नही कौन हमें ज्यादा चाहते हैं। हम बच्चे लोगो की तो कोई वैल्यु ही नही , जब मन होता है माँ हमें बजा डालती हैं।

अंकेष इधर घर पहुँचने पर देखता है कि सूक्खी घर पर नही है, वो अचानत केषव के घर का दरवाजा खट–खटाता हैं। अंदर से आवाज आने पर सूक्खी के बारे मे पुछने पर वंदना– नही वो तो यहां आया ही नही। अंकेष वहां से निकलता है। जैसे ही वो अपने घर के सामने सड़क पर पहुँचता है देखता है कि सूक्खी अपने दोस्त मोहित के साथ घर की तरफ लौट कर आ रहा है। यह देख अंकेष को बड़ा सुकून सा महसूस होता है और ऐसा लगता है जैसे कोई खोई हुई चीज मिल गई हो। उन दोनो के अपने पास आने तक अंकेष स्थिर हो जाता है। उन दोनो के पास आने पर,,,,,

अंकेश,सूक्खी से–(बड़े आराम से) तो कहां गए थे तुम, और ये (मोहित) कौन है ?

सूक्खी–ये मेरा दोस्त है । मै स्कुल से निलकने के बाद इसके साथ इसके घर चला गया था। ये मेरा बहुत अच्छा दोस्त हैं।

अंकेष,सुक्खी से–और हम कौन है ? हमारे बारे मे कौन सोचेगा, ? जो आप हमे इतना परेषान करते है ,बातईये महाषय्। आप अभी इतने बड़े नही हुए है जो बिन बताए कही भी जा सकें, और वो भी सीधे स्कुल से निकल कर।

सूक्खी,अंकेष से– गलती हो गई।

अंकेष,सुक्खी से–आगे से अगर कही मन हो जाने का तो पहले घर आईये , फिर हमें बताईये और मेरे कहने के बाद ही कही जाईये। वरना आपकी मम्मी को अगर पता चल गया तो वो आपको डांटेगी और हमसे भी झगरा करेगी, और उस झगरे का असर ऐसा होगा की हमलोगो के अच्छे माहौल को खराब करके रख सकती हैं। तो क्या आप चाहते है ऐसा हो ?

मोहित,अंकेष से–ऐसा तो हम भी नही चाहते अंकल। ये ऐसा क्यो करेगा ? ऐसा तो ये बिल्कुल नही करेगा।

अंकेष,मोहित से–गुड।

अंकेष,सूक्खी से–तुम्हारा दोस्त तो काफी समझदार है।

अंकेष,मोहित से–तुम्हारा घर कहां है बच्चे ?

मोहित,अंकेष से–बस यही पास मे , पाँच गली छोड़ने के बाद। जहां पर गाय का दुध मिलता हैं।

अंकेष,मोहित से–अच्छा ठिक है , चलो तुम दोनो को कुछ फास्ट फुड खिलाता हुँ। इसके बाद तुम दोनो साथ मे खेलना घर पर।

अंकेष,सूक्खी से– तो तुम्हारा दोस्त कब तक रहेगा तुम्हारे साथ मे।

मोहित,अंकेष से–मै थोड़ी देर मे चला जाउंगा अंकल। पर अंकल , आंटी कहां है ?

अंकेष,सूक्खी से–क्यो तुमने इसे बताया नही ?

मोहित,अंकेष से–इसने तो सिर्फ यही बताया कि इसे आप बहुत प्यार करते हैं।

अंकेष,मोहित से–चलो ठिक है। तुम लोग घर पर इंजॉय करो , मै जरा ऑफिस होकर आता हुँ।

अंकेष पलटकर केषव के घर दरवाजे के तरफ देखता है और सोचता है कि कल से देख रहा हुँ कि दरवाजा बंद ही करके रखा हुआ हैं। अंकेष को

यह बात ज्यादा तो नही पर थोड़ा अजिब जरूर लगती हैं। फिर अंकेष अपने षांत दिमाग के साथ यह सोचते हुए निकलता है कि अगर सूक्खी को किसी भी प्रकार की कोई दिक्कत हो जाती है तो अर्चना हमें क्या – क्या कहेगी सोच कर भी डर लगता है। अंकेष ऑफिस पहुँचता है। फिर अपने को फ्रेस करने के लिए एक कप चाय पीता है और फिर से अपने काम मे लग जाता हैं। थोड़ी देर बाद अंकेष को वकील का कॉल आता है।

वकील–हां जी महाषय, तो क्या हाल है आपका ?

अंकेष–आपको तो पता है इस बेचारे दिल का हाल, और इंतेजार के साथ मजबूरी के अकेलेपन का बीतता हुआ लम्बे समय का काल। अपने मजबूरियो को कैसे बयां करे आपके सामने अपने टुटते हुए षब्दो से वकील साहब। कुछ कीजिए जल्दी, वरना समय नही लगता बदलने मे आदमी का चाल।

वकील–साँस नही लिए तो , जरा साँस ले लो। तो क्या अब मै बोलु।

अंकेष–हां जी कहिए। समस्या सूनाईयेगा या समाधान।

वकील–समस्या , जिसका समाधान हम करेंगे।

अंकेष–पक्का।

वकील–आपके नजर मे ये पक्का को क्या समझे हम।

अंकेष–तो किस तरह का समाधान करने वाले हो आप, मेरा कहने का मतलब है टोटल समाधान या क्षण भर की खुषी।

वकील–थोड़ी–थोड़ी खुषी से ही तो बड़ी खुषी के तरफ बढा जा सकता है। समझे। तारिख अगले 15 को है।

अंकेष–चलिए ! उम्मीदो को उड़ने के लिए पहले पंख फर–फराना भी जरूरी है। कुछ ज्यादा दिल को खुषी ना दिया आपने पर मन को थोड़ा सूगबूगाहट करने का मौका तो दिया।

वकील–ठिक है अभी रखता हुँ।

अंकेष–हाँ मै भी रख रहा हुँ , मिलता हुँ जल्द आपसे।

अब अंकेष यह सोचते हुए अपने काम निपटाता है कि चलो कम से कम तारिख तो मुकर्रर हुई, अब आगे कुछ बात बनेगी। अंकेष अपने काम निपटा कर मदन के पास पहुंचता है , पर जहां उसे रहना चाहिए वो वहां पर अंकेष को नही मिलता है, जिस कारण अंकेष के द्वारा वहां पता करने पर पता

लगता है कि वह आज घर से निकला ही नही। फिर अंकेष उसके घर पहुँचता हैं।

अंकेष,मदन से–तो तुम यहां विराजमान हो।

अपने बेड पर मदन के करवट लेने पर अंकेष देखता है कि उसके पुरे हाथो मे बैंडेज लगा हुआ हैं।

अंकेष–अरे ! ये क्या हुआ ?

मदन–वही जो अक्सर नही होना चाहिए, पर हो जाया करती हैं। क्या करें ? जितना सम्भलते है उतना ही मामला कभी–कभी ज्यादा बिगड़ सा जाता हैं।

अंकेष–ये हुआ कैसे ? अभी तो दो दिनो पहले तुम मेरे साथ ठिक–ठाक थे।

मदन–इसका मतलब क्या ? तुम्हारे साथ होने से हम अमर हो गए या कभी बिमार नही पड़ेंगे।

अंकेष–कब हुआ ये ?

मदन–कब होगा ,जब किस्मत साथ छोड़ती है , तब–तब ऐस हो जाता है। जब किस्मत मे ही हमलोगो का घसा हुआ है, तो क्या करे ?

अंकेष–देखकर बहुत दुख हुआ। पर कहां हुआ ये।

मदन– कहां होगा , वही हुआ जहां से (रेस्टुरेन्ट/बार) निकलने मे हमलोगो को हर दिन देर होती है।

अंकेष–बताओ तो तुम हमारे नही रहने पर इतने क्यो मदहोष हो जाते हो जो अपने हाथ तक तुड़वा लिए हो।

मदन–अरे यार , ऐसा नही है , मै तो उस दिन षराब को इस टुटे हुए हाथ मे भी नही लिया, और ऐसा नही किया , इसलिए षायद ऐसा हुआ।

अंकेष–अच्छा तो बिना लिए हुए ऐसा हुआ। तब तो बिल्कुल गलत हुआ तुम्हारे साथ मे , इसका मुझे अफसोस है और रहेगा भी।

इतने मे आंटी यानी मदन की मां इन दोनो के पास आती है और इन दोनो की बात सूनकर कुछ कहने ही वाली होती है कि इससे पहले अंकेष की नजर उस पर पड़ती है और फिर,,,,,,

अंकेष,आंटी से–कहिए आंटी कैसे है ? ठिक है।

आंटी –ठिक कैसे रहेगी। देख ही रहे हो , ये (मदन) सब लोग ठिक रहने दे तब तो हम ठिक रहे । ये (मदन) लोग ऐसा चाहते ही नही की हम ठिक रहे।

मदन,अपनी माँ से–अब क्या कलेजा फाड़ ही दोगी क्या ? कोई आपके यहां आया है तो उसका स्वागत करोगी चाय–नास्ता कराकर या अपने रोज के तकिए–कलाम से उसे भी वार्त्तालाप कराओगी।

माँ,मदन से–क्यो ये आज नया आया है यहां जो तुम इस तरह की बाते कर रहे हो। इसका अपना घर है कुछ भी माँग कर खा –पी सकता है और नही भी मांगेगा, तो मै तो इससे पुछूंगी ही।

मदन–यही तो आपको समझाने की कोषिि कर रहा हुँ कि ये आपकी सारी बाते जानता है जो आप इन्हे बोलेंगी या बोलने वाली हो।

अंकेष, मदन से–एक मिनट षांत रहो तुम । बोलने दो इन्हे (मदन की माँ) माँ है तुम्हारी , इसे फिक्र होती है तुम्हारी इसलिए ऐसे बोल रही है । नही बोलेगी तो समझते हो क्या होगा, फिर तुम, तुम नही रह जाओगे । तुम्हे पता है जिस बाग मे माली नही होते वह बाग जल्दी उजर जाते है। समझा करो।

माँ,मदन से– समझा कुछ । समझो इससे कि मै क्यो ऐसे कहती हुँ।

मदन,माँ से–तो मै क्या कह रहा हुँ आपसे।

अंकेष,आंटी से–हाँ ये कहां कुछ कह रहा है आपसे ,ये भी तो वही बोल रहा है जो आप इसे बोल रहे हैं।दोनो तो एक ही बात बोल रहे है फिर इसमे दिक्कत कहां है।

मदन,अंकेष से–हां सही है।

आंटी, दोनो से–तुम दोनो मिल कर अब मेरा दिमाग खराब मत करो। मै चाय ला रही हुँ।

अंकेष,मदन से–मै तुम्हारे पास क्या मकसद से आया और यहां के भरत मिलाप को देखकर कुछ कहा भी नही जा रहा है।

मदन–हुआ क्या सो ? जो ऐसे रामायण के कथा वाले दिन याद आ गए। क्या चीर हरण वाली कोई बात बोलना था क्या ?

अंकेष–ऐसा ही कुछ।

मदन–क्या ?

अंकेष–15 को तारिख है।

मदन–किसका।

अंकेष–किसका मतलब। उसका ,अर्चना का केष का तारिक।

मदन–आ ! हा ! जिसके लिए हमलोग रगड़ रहे थे काफी दिनो से। वकील खुद जागा या, किसी से जगवाये हो उसे।

अंकेष–खुद जागा है, मेरे जगाने पर, और अब हमें जगा रहा है।

इतने मे मदन की माँ चाय के साथ कुछ नमकिन लेकर आती है और अंकेष को चाय थमाती हुई–

माँ,मदन से–तो तु भी कुछ लोगे।

मदन–नही चाहिए कुछ , बस इसे (अंकेष) दे दो।

माँ–वो तो दे ही रही हुँ ,। तुम अपने गुस्से को थोड़ा षांत करो।

मदन–कमाल बात है, तिसरा महायुद्ध हमने तुम्ही से किया है क्या ? कभी तो षांत रहा करो।

इससे पहले ही आंटी कुछ बोले,,,,,

अंकेष–रहने दिजिए आंटी, चाय काफी अच्छा हैं और नमकिन तो ला–जवाब । अब इसे आराम करने दीजिए।

आंटी चली जाती हैं।

अंकेष,मदन से–तुम तो अब बिस्तर छोड़ नही सकते, अब हमें ही देखना पड़ेगा।

मदन,अंकेष से–फिर भी हम कोषिष करेंगे तम्हारी मदद के लिए। एक लड़का है ,जो मै तुम्हारे साथ लगा दुंगा, जो तुम्हारी मदद करेगा।

अंकेष,मदन से–मांस नही तो हंडी ही सही। ठिक है अपना ख्याल रखना, और हमपर ध्यान।

अब दूसरे दिन अंकेष अर्चना के पास पहुँचता है जेल के अंदर।

अंकेष,अर्चना से–कैसी हो ?

अर्चना,अंकेष से–ठिक हुँ , पर कुछ खास नही।

जी रही हुँ , पर समय गुजरता जा रहा है।

अंकेष,अर्चना से–समझ रहे है आपकी मजबुरी , हम ना समझे ऐसी बात नही ।

आपको अगर आपकी मंजिल तक नही पहुँचाये तो, हम भी मर्दो की जात नही ।।

अर्चना–खुद को इतने तकलिफो से क्यो बांध रहे है जी , ऐसे मरे जा रहे है और षर्मिंदगी से भी मार ही

दीजिये।

अंकेष–क्या करें ? दिल जो लगाया है आपसे , बगैर आपके साथ की हमें चैन ही नही आती। षुकून तब मिलेगी जब आप हमारे पास होंगे।

अर्चना –करें तो करे क्या ? किस्मत ही साथ छोड़ दे रही हैं। पकड़ के रखने की चीज तो है नही जो रखा जाय। अपने से आती है और अपने से ही चली जाती है।

अंकेष–जिसपर किसी का जोड़ नही उस पर उपर वाला का जोड़ पड़ता हैं, और जब पड़ता है तो बारिकी से पड़ता है। समाधान के तरफ एक पहला कदम, 15 को तारिख परा है। क्या – क्या हुआ था एक बार फिर हमें अच्छे से बताओ, ताकि हम वकिल को अच्छे से बता सके।

अर्चना–हमें डर लग रहा है कि हमें सजा ना हो जाय। फिर क्या होगा ? उसका (सूक्खी) और आपका। ऐसा लग रहा है मानो जल्दी से तारिख आने पर जल्दी से फैसला हमारे अगेन्स मे ना आ जाय। डर सा लग रहा है, मन बेचैन सा लग रहा हैं। यहां जेल मे भी माहौल कुछ ठिक– ठाक नही चल रहा है। एक काल–कोठरी मे षाम के पांच बजे ही हम बंद कर दिए जाते है, मानो जैसे भेड़–बकड़ियो की तरह। अगर इमरजेंसी हो तो वही षाम से रात तक गंदी हो चूकी जगह मे फिर से बैठ कर फ्रेस होना , सोच मे पर जाती हुँ कि फ्रेस हो रही हुँ या फिर से गंदा हो रही हुँ। पड़ोसी से भी बदतर यहां की महिला झगरा करती हैं। ऐसा लगता है जैसे किसी की जमीनं हरप कर बैठ गयी हुँ।

अंकेष–मै समझ रहा हुँ , यहां पर तुम्हारी दुखो को। इसके लिए मै यहां थोड़ा बंदोबस्त करता हुँ। ये तो पहले हो जाता पर तुमने ही तो मना कर दिया था।

अर्चना–सबेरे जगने के साथ ही बाथरूम जाने से लेकर दिन के खाना खाने, दोपहर को आराम करने और रात को खाकर सोने तक एक भागम–भाग की तरह दिन बीतता है।

अंकेष–ईन्ही परेषानी को खत्म करने के लिए तो हम लगे हुए है।

अर्चना–कुछ महिलाए तो ऐसे करती है जैसे मानो अगर उन सबका बस चले तो वो कितनो को नंगा करके खाली परिसर मे झारू लगवाये, और उसके बाद पोछा भी।

अंकेष–यहां तो इसी तरह महिलाए पहुँचती होगी ज्यादातर, मेरे कहने का मतलब है यहां पहुँचकर भी ऐसी कठरार बन जाती होगी।

अर्चना–मै तुम्हे परेषान करना नही चाहती हुँ , पर तुम्हे कुछ बोल लेने से मेरा मन हल्का सा लगता है।

अंकेष–सही है अपने से ही तो कुछ ना कुछ बोला जाता है। वरना अपना पराया मे क्या अंतर रह जायेगा।

तो मै तुमसे पुछ रहा था कि उस दिन के घटना के बारे मे कुछ कहो तो हम भी जाने और उस हिसाब से हमलोग प्लानिंग करेंगे।

पास मे खड़ी महिला,

पुलिस,अर्चना से–मैडम अपका समय समाप्त हुआ।

इतने मे अंकेष,,,

अंकेष,महिला पुलिस से–आज इसके (अर्चना) लिए स्पेषल समय है, मेरी बात हो गयी है आपके इंचार्ज से। आप पुछ सकते है।

अंकेष के इस तरह के कॉनफिडेन्स को देखकर महिला पुलिस थोडे देर के लिए षांत हो जाती है और इन दोनो के बातो को जारी रहने देती हैं।

अर्चना–हुआ वही जो होना था, पर मेरे साथ वो हो गया जो नही होना था।

अंकेष–वही तो होने और नही होने वाली बात हमें जानना हैं।

अर्चना–क्या बताय, वो मंजर याद करने का मन नही कर रहा। याद करने से एक डर सा लगता हैं, और बताने मे ऐसा लगता है कि मानो जैसे रूह़ सिहर सी उठती है। बहुत बेचैन करने वाला मंजर था उस दिन (अर्चना की सास के मरने के दिन) का, कोई नही जान रहा था कि ऐसा हो जायेगा। सब कुछ षांत था अचानक से मेरे पति मुझे कहने लगे की तुम मेरी माँ की हर बात क्यो नही मानती हो ? फिर मेरे सफाई देने पर मेरी सास हमदोनो के बीच मे आकर आग मे घी डालने की काम कर गई । बातो बात मे मेरी सास के द्वारा हमपर हाथ उठाया गया। जिस कारण मेरे द्वारा बचाव किया जाने लगा। जिसके बाद मामला और ज्यादा बढ जाने के कारण मेरे पति के

द्वारा मुझे जोर का एक थप्पड़ जड़ दिया गया। अब मै अपना आपा खो चुकी थी फिर मैने अपने सास को कुछ अपषब्द कह दिया । उसके बाद वो दुबारा मेरे तरफ मुझे मारने के लिए बढी, फिर क्या था मैने अपना बचाव किया और वह पास मे गिर गई। जिस कारण उसके सर के पीछे तरफ चोट लगने के कारण वो बेहोष हो गई । मै अपने को अपने पति से बचान के लिए रूम मे चली गई , अंदर से दरवाजा बंद करके मै खिड़की से देख रही थी, अब मेरा पति परेषान हो रहा था और वह हमारे दरवाजे और बाहर की तरफ बराबर देख रहा था, ताकि किधर से भी कोई आकर मदद करें। मै उस दिन चाह कर भी उसकी मदद नही कर सकी, क्योंकि हमें उससे काफी डर लग रहा था। उस दिन उसकी मदद ना कर पाने के लिए हमें हमेषा के लिए अफसोस रह जायेगा।

फिर उसके बाद उसने बाहर से किसी को बुलाकर उसे (सास) हॉस्प्टिल ले गया । फिर वो कब नही रही ये हमें नही पता। उसके हॉस्पिटल ले जाने के बाद मै चुपके से वहां से निकल गई। इसके बाद तुम्हे पता ही है। लेकिन दरवाजे के तरफ से एक दो लोग थे जो हमलोगो की सारी हरकतो को देख रहा था, पर ज्यादा देर वे लोग रूके नही या तो हमने उनलोगो को पुरी तरह देखा ही नही कि वे कौन लोग थे और कितने देर रूके।

अंकेष–वे लोग गवाह बन सकते है, अगर नाम पता हो तो।

अर्चना–क्या फायदा ? वे लोग तो उसके जान पहचान वाले होंगे ना।

अंकेष–उससे क्या फर्क पड़ता है ? उसके जानने वाले हो या मेरे जानने वाले ,वो तो वकिल का काम है कि उससे किस तरह के सवाल करने है।

अर्चना–तो ये काम कौन करेगा ?

अंकेष–वही करेगा जो तुम्हारे सामने तुम्हे दिख रहा है।

अर्चना–कैसे करोगे ,?

अंकेष–कोषिष करेंगे। जिससे भगवान भी मिलते है और इंसान भी। अब तुम्हे कोर्ट मे क्या बोलना है ये मै वकिल से पुछकर तुम्हे बताता हुँ।

अर्चना–हां हमें तो ऐसा ही बोलना पड़ेगा।

अंकेष–और हां, यहां के औरत से थोड़ा बचकर ही रहना । क्योकि वे यहां आकर ज्यादा खतरनाक हो जाती है ?

अर्चना–वो (सूक्खी) समय से स्कूल जा रहा है या नही।

अंकेष–हां बिल्कुल समय से ही जा रहा है।

अंकेष अब वहां से चलता है उसे वापस,,जाते हुए देख,,,,
अर्चना,अंकेष से–अपना ख्याल रखना, और उसका (सूक्खी) भी ।

पीछे मुड़कर अंकेष कुछ पल के लिए रूकता हैं।
अंकेष–हां जंरूर।

इतना कहते हुए अंकेष वहां से निकल जाता है।

इधर वापस जेल मे अंदर आने पर अर्चना के साथ सोने वाली उसकी नई दोस्त रूबी जो उसके बगल मे सोती है , उसके पास मे आकर बैठती है । वही बगल मे कुछ और महिला कैदी अपना झुंड बनाकर पंचेती कर चर–चर कर रही है, जिसमे से एक कैदी का नाम षालिनी है। षालिनी अर्चना को आकर बैठते देखती है , और दोनो अर्चना और रूबी को उपर से नीचे तक निहारती हैं । तब तक ये दोनो आपस मे कुछ बाते षुरू कर चुकी होती है–जैसे,,,,

रूबी–हो गयी मुलाकात। कौन आया था जो ?

अर्चना–अंकेष।

रूबी–उसे तुम्हारे बिना मन नही लगता है लेकिन।

अर्चना–ऐसा नही है , बस कुछ पुछने आया था ।

रूबी–तो तुमने बताया।

अर्चना–क्या बताती ? कुछ समझ मे नही आ रहा था। पर जो समझ मे आया बता दी।

रूबी–तुमने सभी कुछ सही तो बताया ना उसे। क्योंकि उसे सब बाते जानने की जरूरत होगी, जो तुम्हे
यहां से निकालने मे षायद काम आवे।

इतने मे षलिनी,,,,, जिससे अर्चना की बनती नही है इसलिए आज षालिनी अर्चना से टक्कर लेने के मुड मे है–क्योकि षालिनी से मुलाकात करने जेल मे कोई नही आता, क्योंकि उसका जो पति है वो भी किसी जेल मे है, इसलिए वो हमेषा टषन मे रहती है।

षालिनी,अर्चना से–तो आज कल तेरा यार बहुत आ रहा है तुझसे मिलने को । मेरे बारे मे भी उसे बोल की वो मेरी भी जमानत करवा दे। फिर उसे जो चाहिए मै दे दुंगी।

अर्चना–मत देना उसे कुछ , क्योकि उसे देने के लिए मै हुँ ही, और अपने पागलपन को जरा षांत करो।

यह बात सूनकर षालिनी अब तैस मे आ जाती है।

षालिनी –क्यो हमें कोई मिलने नही आता तो हम पागल नही हुए तो कौन होगा ? तुम ! वैसे भी यह पागलखाना नही , जेल है मेरी नई नवेली फुलझरी । वैसे सीरियस होकर तुमने क्या उगा दिया यहां पर, जिससे हमलोग अपने को खुष रख सके। हमें खुष करने का कोई और तरिका हो तो बताओ। मै तैयार हुँ।

यह बात सून कर वहां षालिनी के पास बैठी उसकी दो–तीन सहेली मुस्कुराने लगती हैं।

अर्चना–नही तो हमने तुम्हारा कुछ लिया है और ना ही तुम्हारे साथ कुछ किया है ? नफरत करके तुम्हारा

कोई फायदा नही होने वाला हमसे । अगर दोस्त बनाओगे तो तुम्हारा नुकसान भी नही है।

षालिनी –(अकड़कर) तो क्या कर सकती हो तुम मेरा ?

रूबी,षालिनी से–षांति रख, मै बैठी हुँ इसके साथ ना ।

षालिनी,रूबी से–तो उसे गोद मे बिठा ले।

रूबी,षालिनी से–(पंच दिखाते हुए) दूंगी एक रख के, तो धरी के धरी रह जाओगी। फिर अपने से उठ नही

पाओगी, दूसरे का सहारा लेना पर सकता है, खड़े होने के लिए। समझ रही हो ना मै क्या

कहना चाह रही हुँ।।

अर्चना,रूबी से–कुछ दिनो से इसे (षालिनी) देख रही हुँ ,ये कुछ ज्यादा ही बरबराने लगती है मुझे देखकर।

षालिनी,अर्चना से–तो क्या करोगी तुम मुझे ?, केष करके जेल भेजोगी।

अर्चना–ये मत सोचो की क्या कर सकती हुँ , ये सोचो की यहां से निकलने के बाद तुम्हे क्या फायदा

पहुँचा सकती हुँ।

ये बात सूनते ही षालिनी जमिन पर थुकते हुए ,,,थू,,,,,,,

षालिनी,अर्चना से–बहुत देखे तुम्हारे जैसे भला करने वाले लोगो को, यहां से निकलने के बाद कौन किसे

देखता है और कौन मिलने आता है, हमें बताने चले हैं।

अर्चना–हमें देख कर तुम इतनी भड़कती क्यो हो ? ये बात हमे समझ नही आती।

षालिनी की सहेली–समझने के लिए दिमाग चाहिए, वो तेरे पास हैं।

इतने मे एक तीसरी उम्रदराज महिला कैदी जिसका नाम कलबंती है ,इन सबो से–ओ राजकुमारियो जरा अपना बोल बंद कर, क्योंकि मै खुली आँखो से सो कर सपना देखने वाली हुँ , अब किसी ने अगर तु के बाद मै किया ना, तो सोच लेना हम हम'' नही होंगे , समझें। सबकी झंड झार दुंगी मै और जो मन किया वो फाड़ दुंगी, चाहे जहां फटे और जहां तक फटे। लहजे मे रहा करो तो फासले से रूबरू रहोगे। वरना हमारी नजदीकिया तुम सब को परेषान कर सकती है। किसी को अब अलग से नही बोलुंगी। अपने – आपको जेलर की सगी समझने लगी है–

उम्रदराज महिला कैदी

षालिनी से–सून बे षालिनी के सखी ,अपनी चोच यहां पे कम घसा कर, वरना तेरी चोच अपनी चिमटे से

खींच लुंगी। फिर चुचलाओगी कम और मिमियाओगी ज्यादा। दूसरे को तेवर कम दिखाया कर,

अगर प्रषासन की तरफ से मुझे यहां अषांति फैलने के कारण बुलाया गया तो समझ लेना

, तेरे इस टोली को मै बारिकी से टटोलुंगी। जिसमे ताल भी मेरा होगा और नृत्य भी मेरा, और

तुम लोग सिर्फ भजन करना।

अंकेश अब सीधे ऑफिस पहुँचता है– वहां पहुँच कर अंकेष मदन को फोन करता है।

अंकेष,मदन से–हां मेरी एक बात सुनो,

मदन–सून रहा हूँ, बस तुम्हे कहने की देर है।

अंकेष–एक गवाह का पता चला है, जो अर्चना के पति के घर के बगल का ही है।

मदन–कैसा गवाह ? और इससे क्या करवाना है ?

अंकेष–ये वहां उस समय मौजुद था जिस समय अर्चना के साथ उसके घर मे मारपिट हुई थी और उसकी

सास का निधन हो गया था।

मदन–तो वह किसके जान पहचान का है।

अंकेष–षायद उसके पति का।

मदन–तो फिर उससे तुम्हारा क्या फायदा।

अंकेष–अरे तुम सब फायदा–फायदा ही करते हो , कभी बिना फायदा लिए हुए अच्छे भविष्य के बारे मे

भी तो सोचो ।

मदन–गर्म मत हो यार अब। यहां वैसे गर्मी बहुत है, जिससे दिमाग का कबाब बन रहा है।

अंकेश–तो आज षाम मे हमलोग चलेंगे उसके (अर्चना) पति सुकेष के पड़ोसी के पास ।

मदन–इस हाथ टुटे हुए आदमी को कहां लेकर जाएगा ।

अंकेष–चलो फिर उसे ही भेज देना , जिसे तुम भेजने वाले थे। अगर वो तुझसे ज्यादा बरबोला है तो मत ही भेजना। मै खुद ही झेल लुंगा।

मदन–अरे वो मदद करेगा अच्छे से तुम्हारी, संतो नाम है उसका।

अंकेष–नाम का भी कैरेक्टर पर बहुत असर पड़ता है , और इसका नाम ही ऐसा है तो ये कैसा होगा तेरा

आदमी।

मदन–ये मेरा नही, अपनी औरत का आदमी है, देख लेना।

इधर अब स्कूल से निकलकर सूक्खी अर्चना से मिलने जेल के दरवाजे पर पहुँच चुका है, अंदर पहुँचने पर वो उस टेबल के पास कुर्सी पर बैठे पुलिस वाले के पास पहुँचता है जहां कैदी से मिलने के लिए कैदी का नाम और खुद का नाम लिखाया जाता है, सूक्खी के द्वारा अर्चना का नाम लिखाने पर वहां बैठे पुलिस वाले की बात सूक्खी सेः–

पुलिसवाला,सूक्खी से–इस नाम के कैदी से तो कोई मिल चुका हैं आज , अब तुम आज इनसे तो नही मिल सकते। (सर नही के लिए हिलाकर)

सूक्खी,पुलिसवाले से–इनसे मिलने तो कोई नही आता।

पुलिसवाला,सूक्खी से–क्यो ? तुम्हारे पापा तो आते है।

सूक्खी,पुलिसवाले से–पर उन्होने तो ऐसा कुछ नही कहा था कि वो आज मिलने आयेंगे मम्मी से।

पुलिसवाला रजिस्टर मे देखकर जान चुका है कि आज अंकेष नाम का आदमी अर्चना से मिलने आया था और मिलकर गया है।

पुलिसवाला,सूक्खी से–क्या तुम्हारे पिता जी का नाम अंकेष है ?

सूक्खी–हां, मेरे पिता जी का नाम वही है जो आपने बताया।

पुलिसवाला–तो बताओ हमें कैसे मालुम ?

सूक्खी–क्योंकि उसका नाम आपने रजिस्टर पर देखा है।

पुलिसवाला–इसलिए कि वे (अंकेष) यहां आये थे।

अब सूक्खी अपनी माँ से नही मिल पाने वाली कारण को जान कर हैरान हो जाता है और पुलिसवाले को बगैर मिलने की जिद़ और परेषान किए वापस लौटने का मन बनाता हैं।

सूक्खी–आये थे अंकल माँ से मिलने के लिए ,पर आपने मिलने ही नही दिया।

पुलिसवाला–क्या करे बच्चे ? एक दिन मे एक ही बार मिलने दिया जाता है। नियम तो नियम है, मै क्या

कर सकता हुँ ?

यह बात सूनकर सूक्खी वापस बगैर अपनी माँ से मिले ही लौटने लगता हैं। उसे जाते हुए देख कुछ पलो के बाद पुलिसवाले को लगता है कि इसे आज इसके माँ से मिला देना चाहिए, क्योंकि बच्चा मायुष हो गया है। फिर पुलिसवाला उसे आवाज देकर पास बुलाता है ,सूक्खी के पास आने पर,,,,

पुलिसवाला –देखो बच्चे आज मै तुम्हे मिला देता हुँ तुम्हारी माँ से , लेकिन आज के बाद ऐसा नही करना।

किस दिन किसे मिलने आना है ये तुम और तुम्हारे पापा पहले ही डिसाईड कर लेना।

सूक्खी–ठिक है अंकल।

पुलिसवाले–जाओ मिल लो।

फिर पुलिस वाला अर्चना के नाम की पर्ची अंदर भिजवाता है और सूक्खी अंदर कैदी से मिलने वाली खिड़की पर पहुँचता है , फिर उत्साह भरी नजरो से अपनी माँ का इंतेजार करने लगता है,,जेल के अंदर अर्चना पेड़ के नीचे अपनी सहेली रूबी के साथ बैठकर कुछ बात कर रही होती है।

अर्चना,रूबी से—ये लोग (षालिनी और उसकी सहेली) हमलोगो को इतना परेषान क्यो करती है, ? ऐसा

लगता है कि हमलोग इसके जमीन जायदाद हड़फ लिए है और इन लोगो को बेदखल कर

दिए है।

रूबी,अर्चना से—हमें तो लगता है कि इन सब के माँ को तुम्हारे बाप ने छोड़ दिया है। खैर छोड़ो , यहां ये

सब तो चलता रहेगा। ज्यादा दिमाग पर जोड़ मत डालो। खुली हवा मे साँस लो और

दिमाग तक ऑक्सिजन पहुँचने दो।

तभी एक महिला पुलिस के द्वारा अर्चना का नाम पुकारा जाता है। तभी,,,,,

रूबी,अर्चना से—अब कौन आया जो तुमको परेषान कर रही हैं ये पुलिसवाली साली,,,,,,,

यह सून,,,,,,,,

अर्चना,रूबी से—अब अंकेष को क्या हुआ ? जो वो दुबारा हमसे मिलने आ गया। जाकर देखती हुँ।

अब वो जल्दी से मिलने वाली खिड़की के पास पहुँचती है, देखती है कि सूक्खी उससे मिलने आया है। सूक्खी को देख अर्चना की आँखे नम सी हो जाती है , पर उसके अंतरात्मा मे सूक्खी को देखकर षांति का एहसास भी होता है।

अर्चना,सूक्खी से—कैसा है रे तु ? अकेले आया है, फिर आज तुझे डाटेंगे वो (अंकेष) ।

सूक्खी—पर उन्हे (अंकेष) मत बताना । कैसी हो माँ ?

अर्चना—ठिक हुँ , तु कैसा है ?

सूक्खी—मै ठिक हुँ माँ, तुम कब बाहर आओगी , मुझे अच्छा नही लगता घर मे अकेले ।

अर्चना–मुझे भी तो यहां अच्छा नही लगता तुम्हारे बिना, मेरे बच्चे। फिर भी मै उम्मीद मे हुँ कि कब मै यहां

से निकलू और तुम्हारे पास आ जाऊ। पर तुम अकेले मत आया करो , हमे डर लगता है , कही

सड़क पर आने जाने मे तुम्हे चोट–चपेट ना लग जाय।

सूक्खी–मै ठिक से चला जाता हुँ माँ।

अर्चना–पर हमें कैसे पता चले कि तु सही से घर पहुँच गया।

सूक्खी–माँ मै पिछली बार अच्छे से चला गया तब तो इस बार फिर आया हुँ।

अर्चना–बहुत बात बनाता है रे तु , स्कूल बराबर जा रहे हो कि नही।

सूक्खी–आज स्कुल से ही आया हुँ माँ।

अर्चना–फिर खाना तो नही खाया होगा तुमने।

सूक्खी–सबेरे खाया था, फिर खा लुंगा।

अर्चना–अब तुम उनके (अंकेष) साथ आना , अकेले मत आना । वरना तुझे पिटाई लगेगी समझे।

सूक्खी–ठिक है माँ , पर तुम पहले बाहर तो आओ। कब आओगी ?

इतनी सारी बाते सूनकर अब अर्चना के आँखो मे आँसू भर आते है और अब वो बोलने के बजाय सर हिलाकर ईषारो मे बात करने लगती है।

सूक्खी–माँ आपने खाना खाया।

अब अर्चना अच्छे से सूक्खी को जवाब नही दे पा रही है, क्योंकि उसके आँखो से अब आंसू रूकते नही है। फिर अर्चना अपने आंसू पोछती है और ,,,,,,

अर्चना–बेटे समय से खाना खाया करना और समय से सोना , अच्छे से रहना । क्योंकि तुम्हे अभी उनके (अंकेष) अलावे कोई और देखने वाला नही हैं। तुम अपना ख्याल रखा करो, क्योकि मै तुम्हारे बारे मे सोचकर ही यहां ज्यादा परेषान रहती हुँ। क्या मानोगे ना मेरी बात !

सूक्खी–हां मानूंगा।

अर्चना–सही मे ! झुठ तो नही बोल रहो हो।

सूक्खी–आपका बेटा झुठ नही बोलता है माँ।

अर्चना–ठिक है, गुड। वो (अंकेष) कोषिष कर रहे है हमें बाहर लाने के लिए।

सूक्खी–उनसे (अंकेष) जब कुछ पुछता हुँ तो वे ठिक से बताते भी नही।

अर्चना–वो (अंकेष) परेषान रहते है हमें लेकर , इसलिए तुम्हे सबकुछ नही बताते होंगे, फिर भी मै उसने

बोलुंगी की तुम्हे अच्छे से समझाये।

इतने मे महिला पुलिस समय देखकर अर्चना के तरफ देखते हुए,,,,,,

महिला पुलिस,

अर्चना से– मैम आपका ,,,,,,,,,

इनते मे ,

अर्चना– समझ गई , समय समाप्त हो गया ।

सर हिलाकर महिला पुलिस :– हां

अर्चना सूक्खी से–तो अब अच्छे से जाना घर , तुम्हे कुछ हो जायेगा तो मम्मा बहुत रोएगी पता है ना तुम्हे।

सूक्खी–हां (अपने लटके हुए चेहरे के साथ)।

अर्चना–ठिक है अब जाओ।

अब एक मायूस और हताष भरी नजरो से दोनो एक दुसरे को देखते हुए अर्चना वहां से जेल के अंदर और सूक्खी कैदी से मिलने वाले कमरे से बाहर निकलता है। फिर उस पुलिस वाले को ,जिसने सूक्खी को उसकी माँ से मिलने दिया उसके पास जाकर ,,,,,,,,,

सूक्खी,पुलिस वाले से–थैंक्यु अंकल ।

पुलिसवाला,सूक्खी से–खुष रहो बच्चे। तो हो गई मुलाकत ।

सूक्खी,पुलिसवाले से– हां अंकल हो गई , पर उसने (अंदर की महिला पुलिस) बहुत जल्दी ही माँ को अंदर

भेज दिया।

पुलिसवाला,सूक्खी से–वो तो भेजेंगे ही , क्योंकि वो तो उनका काम है । नही तो ज्यादा लोगो की भीड़

लग जायेगी। फिर कोई किसी से नही मिल पायेगा। ठिक है अब तुम जा सकते हो।

सूक्खी,पुलिसवाले से–ठिक है जाता हुँ , फिर मै आउंगा और आप माँ से मिला दिजिएगा।

पुलिसवाला,सूक्खी से–हां ! मैने जो कहा, वैसा ही करना तो मिलने मे कोई दिक्कत नही होगी।.

अब सुक्खी वहां से कुछ गुनगुनाते हुए निकलकर अपने घर को जाता है , फिर रास्ते मे सूक्खी रास्तो के बीचो–बीच मस्ती मे गुनगुनाते हुए जा रहा होता है। उसके पिछे से आते हुए एक साईकल वाला बुढा आदमी जा रहा होता है ,और देखता है कि सूक्खी षायद सड़क पर लापरवाही से चल रहा होता है।

बुढा आदमी,

सुक्खी से– बाबू जरा बच के , जरा सभल के , धीरे चलो पर , जरा बगल से । आगे भी देखो और पीछे

भी देखो , पर देखो जरा संभल के । वो देखो (पीछे से आती गाड़ी दिखाते हुए) आ रही

गाड़ी से जरा बचके ।

सूक्खी उसे बूढे आदमी के बातो मे लगभग खो सा जाता हैं, और सोचने लगता है ये आदमी हमें ऐसे क्यो बोल रहा है । षायद ये कोई पागल तो नही। पर पीछे से आर रहे गाड़ी पा सूखी का ध्यान बिल्कुल नही जाता और तो और सूक्खी अब अचानक उसके बातो को सूनते –सूनते रास्तो के बीचो–बीच आ जाता है, फिर,,,,,

बुढा आदमी,

सुक्खी से–(जोड़ से,चिल्लाकर) अरे बच्चे पीछे गाड़ी आ रही है।

यह देख सूक्खी पीछे पलट कर देखता है और गाड़ी देखकर खुद को बगल करता है। फिर उसे बुढे आदमी के बातो पर यकिन होता है कि ये पागल नही , ये सही ही बोल रहे थे कि सड़क पर सम्भल कर चलनी चाहिए। अब सूक्खी अपने सर हिलाकर उस बुढे आदमी को सही का ईषारा करता है । फिर वो आदमी सूक्खी को अपने हाथो से ईषारा करते हुए अपने साईकल से आगे बढ जाता है। सूक्खी अब मन–ही–मन सोचता है कि आज गाड़ी से टकराते–टकराते बच गए।

इधर जेल मे अर्चना उसी जगह पर वापस जाकर बैठती है जहां ये थोड़ी दे पहले रूबी के साथ बैठ कर अपने वर्त्तमान को कोष रही थी। वहां पर रूबी पहले से मौजूद हैं।

रूबी,अर्चना से– तो अब कौन आया था ?

अर्चना,रूबी से–मेरा बच्चा था।

रूबी,अर्चना से–वाह ! बच्चे को मन नही लगता है तुम्हारे बिना। क्या बात है ? वो तो अकेले आ जाता है,

वो अकेले ही आया था क्या ?

अर्चना–हां , वो कई बार से अकेले ही आ रहा है।

रूबी– काष उसका बाप भी तुम्हे इसी तरह चाहता तो कितना अच्छा होता।

पर रूबी यहां पर अर्चना के लाईफ की सही घटना से अंजान है और अर्चना ने भी उसे सभी सही जानकारी नही दी है कि उसके पति और अर्चना के बीच कितना प्यार था, और दोनो मे से कौन किससे ज्यादा प्यार करता था, अर्चना रूबी को अंकेष के बारे मे यह बाते बताई हुई है कि अंकेष को वह अपने षादी के बाद से जानती है, जब से उसका उसके पति सूकेष से झगरा का सिलसिला षुरू हुआ, तब से वह अंकेष के करीब आ गई। पर असलियत कुछ और ही हैं। बात करते–करते अर्चना अब वही पर पेड़ की छाया मे बैठे–बैठे लेट जाती है। उसे देख रूबी भी लेट जाती है। फिर अर्चना हल्की सी आँखे बंद करके करवटे बदलने लगती है। यह देखते हुए,,,,,,,,,

रूबी,अर्चना से–कितने भी करवटे बदल लो , समय तो समय से ही कटेगा। चाहे आँखे बंद करके रखो या

खोल के।

अर्चना,रूबी से–समय जितना भी हमें आँखे क्यो ना दिखा ले , समय को समय से तो बितना ही पड़ेगा।

अगर समय मे दम है तो वो रूक के दिखाय, बोलो ! होगा ऐसा। या तुम उसे रोक सकती

हो।

रूबी,अर्चना से– उसे तो कोई नही रोक सकता । फिर मै कैसे रोकू।

अर्चना,रूबी से–मै भी वही कह रही हुँ ,जो रूक नही सकता और जिसे कोई रोक नही सकता, फिर उसके

बारे मे क्या कहना ?

रूबी,अर्चना से– फिर उसके बारे मे हमलोग क्यो षर्त लगा रहे है, और यहां षर्त लगाकर कौन क्या हारने

वाला है ? हमलोग तो सबकुछ हार कर यहां आये है।

अचानक ये दोनो देखती है कि उसी कैम्पस मे दो महिला कैदी आपस मे तु–तु ,मै–मै कर रही है। मामला ये है कि एक पहली महिला कैदी पहले से वहां कपड़े धो रही है और दूसरी वहां जाकर नहाना षुरू करती है, फिर नहाते वक्त षरीर मे लगने वाले साबुन का झाग दुसरे महिला कैदी पर पड़ने के कारण एक दूसरे मे तीखी नोक–झोक हो जाती है। फिर दोनो आपस मे लड़ाई षुरू कर देते हैं।

पहली,दुसरे से–कायदे मे नही रहोगी तो ,फायदे मे भी नही रहोगी।

दूसरी,पहली से–क्यो इतने आराम से सहलाते हुए साबुन तुझे लगा दू क्या ? खुद लगा रही हुँ तो तुम्हे इतनी जलन, कि बर्दाष्त भी ना हो।

पहली,दुसरे से–काहे ! उस दिन का भजन किर्तन भुल गई तु , जो ये सड़क छाप वाली बंजारन पीस बदरंग जवानी, जिसमे ना दिखते हुए भी सब कुछ दिख रहा हो , जो षायद दिखने लायक भी नही रह गई है ,उसपे चॉव पे चॉव दे मार रही हो। (चिल्लाते हुए) सब कुछ तो झड़ गए तुम्हारे।

उन दोनो की ये बाते सूनकर अर्चना और रूबी दोनो हँसने लगते है। फिर मामला तुल पकड़ने लगता है।

दूसरी,पहली से–झड़ तो तु भी गई हो, और ऐसी–वैसी नही झड़ी ! पतझड़ मे जैसे पेड़ के सारे पत्ते झड़ने

के बाद सिर्फ डाल ही डाल नजर आते है ना, बिल्कुल उसी तरह तु नजर आ रही है। बगैर

मांस वाला हड्डी। जो आगे–पीछे उपर से नीचे तक प्लेन ही प्लेन हैं।

फिर क्या था पहली वाली ने अपने हाथो मे पकड़े धोने वाले कपड़े को उठा के एक दे मारती है दूसरी को और दोनो मे हाथा–पाई षुरू हो जाती है और माहौल पूरा गर्म हो जाता हैं।

रूबी,अर्चना से–चलो पूरा नही तो थोड़ा ही सही , टाईम पास तो हो रहा है ।

अब कुछ महिला कैदी उन दोनो के बीच के झगरे को छुड़ाने मे लग जाती है, इसी बीच,,,,

दूसरी,पहली से–तेरे को तो ऐसी तोरूंगी , जो तेरी हड्‌डी भी आवाज नही करेगी, और तु जमीन पर रेंगने

लगेगी। साली सूखे हुए पेड़ की लटकी हुई टहनी , तेरा तो आज कल्याण करूंगी।

पहली,दूसरी से–पहले अपने इस मनहुस चेहरे का तो कल्याण कर , ताकि तुझे देखकर दूसरे का दिन

खराब ना हो। साली अपने पति को मार कर आयी है तु मनहुस बेहुद्‌दी साली।

दूसरी,पहली से–और तु तो साली गोल्ड मेडल जीत के आयी है , बेसर्मी, बेहाया बद्‌तमिज औरत। चोर कही की, साली चोरी करते हुए पकड़ाई तु, और हमे मनहुस कहती है । मर्डर करके आयी हुँ मर्डर। अब तेरा मर्डर करूंगी , वो भी आज रात को , होषियार रहना तु हमसे।

इतने मे कलबंती आती है उसे आते देख इन दोनो के अलावे बीच बचाव करने वाले सारे महिला कैदी अब षांत हो जाते है और इन दोनो को छोड़ भी देते है। ये कलबंती वही है जिसे जेल मे अषांति फैलने के कारण जेलर के द्वारा बुलाया जाता है और फटकारा भी जाता है , क्योकि पुराने कैदी होने के कारण जेल प्रषासन के द्वारा इन्हे कैदियो के बीच होने वाले झगड़ो को सूलझाने के लिए सहमती दी गई हैं।

कलबंती,दोनो से–क्या बे जवानी के अंतिम चरण वाले फवकते सोले,जो बुझ गई है या जल रही है पता भी

नही, और तुम लोगो कि ये घीसी हुई हड्‌डी जो मांस छोड़ रही है उसपर इतना क्यो जोड़

दे रही हो । थोड़ा तो बख्ष दो खुद को ताकि ये झुलती हुई तुम्हारी ये बदन की चमरिया

को आराम मिल सके। वरना ये कही जमीन पर गिर ना जाय।

अब कलबंती दूसरी महिला कैदी का बाल पकड़ती है ,,,,,,,

कलबंती,दूसरी से–क्या मेरी प्रेम–मोहब्बत वाली बाते उस दिन तुम सबो को नही सूनाई दी थी, जो मैने

बड़े ही अच्छे से मधुरता पुर्वक प्रेम रस मे बातो को भिगो कर कही थी। जैसे एक प्रेमी

अपनी प्रेमिका से कहता है,बताओ! (यह सारी बाते सभी कैदी षांत होकर सून लेती है।)

अब कलबंती पहली कैदी के पास जाती है, पर उसे कुछ नही करती है, बस उसे कुछ पलो तक देखती रहती है,,,,,,,,,उसे सामने देख पहली कैदी की नजरे झुक जाती है, फिर कुछ पलो के बाद बगैर कलबंती के कुछ बोले ही,,,,,,

पहलीकैदी,कलबंती से–पहले ये (दूसरी कैदी) घसने आयी थी , जिस कारण चिंगारी भड़की। वरना मै

तो बरफ के समान ठंड होकर एक जगह जमे रहकर अपना काम कर रही थी, मेरी

कपड़े भी इसने फाड़ दी। देखिये (जिस कपड़े को वो साफ कर रही थी उस कपड़े

को दिखाते हुए)

अब कलबंती अपनी जुबान को गति देती है, और अपने स्वर को फिर से तेज करती है,,,,

कलबंती,पहलीकैदी से–मै तुम्हारे उम्र का लिहाज करती हुँ , और अब तो लिहाज कर–कर के थक गई हुँ। समझ मे नही आता कि तेरा क्या करू ? करू की छोड़ दू। कही तुमलोगो की ये बुझती हुई जवानी उबाल तो नही मार रही है। अगर ऐस है तो मेरे पास उपाय है, जो मै कर सकती हुँ। तुमलोग और यहां पर सब लोग सबकुछ खोलकर सून लो अगर किसी ने बगैर कोई बात के किसी से कुछ भी जड़ी मोल लिया और कुछ भी झंड किया तो सोच लेना उसे मै अपने हाथो से झंडुबाम लगाउंगी,पर उसके पहले दौड़ा–दौड़ा कर दर्द दुंगी।

पहलीकैदी,कलबंती से–गलती किसी का और सूने कोई और , षुरूआत उसने की थी।

कलबंती–फिर तुने क्या किया ? तुने भी वही किया जो उसने किया । खेल चल रहा है क्या कोई एक

षुरूआत करेगा ही करेगा।

कलबंती,दोनो महिला कैदी से–तुम दोनो सौतीन चल मेरे यार (जेलर) के पास।

ये दोनो को कलबंती लेकर जेलर के पास पहुँचती है।

जेलर,कलबंती से–हां जी , बोलो।

कलबंती,जेलर से–ये दोनो जरा आपस मे चिपक गई थी , सोची किसी और से आपको पता चले इससे

पहले मै ही जाकर अपको आप–बीती से रूबरू करा दूं।

जेलर,कलबंती से–हां मैने आवाज सूनी थी, इनलोगो की और साथ मे तुम्हारी भी। मै थोड़ी देर बाद तुम

लोगो को बुलाता हुँ। अभी वापस जाओ।

यह बाते सुनते ही ये तीनो उसके चैम्बर से निकलकर वापस हो जाते है ,जाते वक्त,,,,

कलबंती, दोनो से–सब सही सही बताना उन्हे (जेलर) ,वरना तुम दोनो को हिसाब से दुंगी मैं। फिर ना बोल सकोगी ना चिल्ला सकोगी। फैसला तुम लोगो के हाथ मे हैं , खुद करोगी या हम से करवाओगी।

अर्चना,रूबी से–बाप रे बाप , यहां तो सब पहुँचे हुए हांके हुए डायन है जो सब घाटो का पानी पीकर आये

है।

रूबी,अर्चना से–और यहां इस घाट पर खुद दूसरे को पानी पीने नही दे रही है।

अर्चना,रूबी से–कोई कम नही है यहां पर ,ऐसा लगता है जैसे हमलोग मानो षिकारियो के बीच आ गए है , और अब ना तब हमलोगो का षिकार होने वाला है ,या कभी ना कभी हो जाएगा।

रूबी,अर्चना से–घबरा मत , तुम्हारा षिकार नही हेगा और ना ही हम होने देंगे। वैसे मर्डर करके

आने वाली से यहां कम लोग ही बात करते हैं।

समय रात के आठ बज के कुछ ज्यादा होने को है। अब षाम को अंकेष और संतो ये दोनो सुकेष के घर के आस–पास मडराने लगते है फिर उसके बाद ये लोग पास के एक बुढिया जो अपने घर के सामने बैठकर बच्चो का खेल देख रही है उसके सामने जाते है।

संतो–तो दादी एक ग्लास पानी मिलेगी।

बुढिया–कहां से आ रहे हो बेटे ?

संतो–बहुत दुर से हमलोग चल के आ रहे है दादी जी ,और इसे (अंकेष) बहुत जोर की प्यास लगी है।

अगर कृपा करके थोड़ा पानी मिल जाता तो आपके लंबी उम्र की दुआं करेंगे हमलोग।

दादी अम्मा–क्यों ? पानी पिलाउंगी तब दुआ दोगे , ऐसे नही ।

संतो –अरे दादी आप तो गुस्सा हो गए। आपकी उम्र काफी लंबी चौरी होने वाली है, और आपकी मुस्कान

तो बिना दांतो के काफी अच्छी लग रही है।

दादी,संतो से–तुम्हे पानी ही पीना है ना , देती हुँ।

दादी अम्मा पानी लाने जाती है ,,,,,,

संतो,अंकेष से–ये दादी अम्मा तो अपने आपको मिस इंडिया समझने लगी है।

अंकेष–अपने समय मे ये मिस इंडिया होगी, ऐसा लगता हैं।

दादी अम्मा पानी लेकर आती है , और इन दोनो को देती है ।

अंकेष,संतो से–(दादी अम्मा को सूनाकर) बताओ आज कल की बहुए कैसी –कैसी आती है जो अपने ही

सास को मार भी सकती हैं, और उस बात का उसे जरा भी अफसोस नही होता है। कैसी विडम्बना

है समय की।

दादी अम्मा,संतो से–किसकी बात कर रहे हो तुमलोग ?

संतो,अंकेष से–किसकी बात कर रहे है हमलोग ?

अंकेष,दादी अम्मा से–वही जो अपनी सास को मार मारकर घर से निकल कर भाग गई थी । जिसका एक

छोटा बच्चा भी है जो अभी जेल मे है । उस जैसे को जेल मे तो रहनी ही चाहिए।

बहु के नाम पर ये लोग तो कलंक है।

अर्चना के बारे मे इस तरह ही बाते सूनकर दादी अम्मा को रहा नही जाता है फिर ,,,,,

दादी अम्मा,अंकेष से–कम बोलो बेटे, जो जानते हो वही बोलो, और जो नही जानते हो उसके बारे मे जान

कर बोलो या मत बोलो।

अंकेष,दादी से–ऐसा लगता है आप बहुत जानते है उसके बारे मे । जो हमे इस तरह से लैक्चर दे रहें है।

दादी,अंकेष से–मै उतनी पढी तो नही हुँ, पर माहौल को थोड़ा समझती हुँ।

संतो,अंकेष से–(ईषारो–ईषारो मे) लगता है गाड़ी पटरी पर है।

अंकेष,संतो से–चलने दो पटरी पर ही , इसी गति मे।

अंकेष,दादी से–माहौल मतलब ।

दादी,अंकेष से–मतलब ! ये कि वे सब ठिक ठाक से ही तो रहते ही थे। नई–नई षादि हुई थी, दोनो पति–पत्नि मे मेल जोल था। पर अचानक से क्या होने लगा उस घर मे की सब बिगड़ सा गया। सास बहुँ मे पुरा बनाव नही था, धीरे–धीरे उनके बीच खटपट होने लगी। वो कुछ कहती और बहुँ कुछ कहती। फिर षाम मे बेटा आता तो माँ की सूनता और बहुँ की नही ,जो हरेक बेटे को करना पड़ता है।

संतो,दादी से–नेटवर्क तगड़ा है दादी आपका। बहुत कुछ जानती है आप इस मुहल्ले के लोगो के बारे मे।

दादी,संतो से–एक दो बार तो उसके पति ने उसे बहुत मारा था , मै जब कभी उसके घर के सामने से

गुजरती और उन दोनो मे लड़ाई होती तो उसके पति के द्वारा उसे मारने वाली आवाज आती। मैने

कभी उसकी रोने की आवाज भी सूनी थी। पर अंद्रुनी बाते कोई नही जानता की अंत समय मे क्या

हुआ होगा।

अंकेष,दादी से–पर जिस दिन झगरा हुआ था उस दिन तो बहुत सारे लोग उसके घर इकठ्ठा हुए थे,

झगरे के बिच बचाव के लिए।

दादी,अंकेष से–झगरा होने तक तो कम लोग थे, झगरा हो जाने के बाद ज्यादा लोग जमा हुए थे।

अंकेश,दादी से–तो जो लोग वहां थे वे लोग माहौल को क्यो षांत नही कर सके।

दादी,अंकेष से–अब ये बात तो कमल ही बता पायेगा, क्योकि वही उस दिन गाड़ी के पीछ–पीछे तेजी से

भाग रहा था, और सूकेष को जल्द से जल्द हॉस्पिटल जाने के बार मे कह रहा था। षायद वो भी

उस दिन हॉस्पिटल गया था।

संतो,दादी से–वही जो सूनता कम और बोलता ज्यादा है, और लोगो की पंचेती करते रहता है।

दादी, संतो से–नही ,नही वो नही ! वो जो रेडियो टी0 वी0 ठिक करता है, उधर (अपने दाए ओर हाथ दिखाकर) दूकान है उसकी । बड़ा ही स्थिर आदमी है वो और लोगो का भला भी करत है।

अंकेष,दादी से–(इत्मिनान से) पर मैने तो आज तक उसे किसी का भला करते नही देखा। वो भी कभी करता होगा तो अपनी ही लालच से करता होगा।

संतो,दादी से–मतलब वो सभी का भला करता है या सिर्फ उसी का भला किया था,जिसने खुद का भला नही किया।।

दादी,अंकेष से–कम बोलो। तुम लोग ज्यादा नही जानते तो मत बोलो । तुम लोगो को पानी भी देकर मैने अपना ही समय बर्बाद किया। समझ नही आता कोई किसी का भला भी करता है और लोग उसे ना जाने क्या–क्या कहने लग जाते है।

अंकेष,दादी से–ले ली ना बात अपने दिल पे आपने दादी।

अंकेष,संतो से–बोल तुझे किधर से काटू जो खून ना निकले , क्योंकि मुझे खून देखकर डर सा लगता है।

खामखां तुमने दादी का मुड खराब कर दिया।

संतो,अंकेष से–अरे मैने तो सच कहा उसके (कमल) बारे मे। दूकान बंद करके वह कहां–कहां जाता है ये भी मुझे पता हैं।

संतो,दादी से–क्या दादी मैने सही कहा ना, ये आपको भी पता होगा कि वो दुकान बंद करके कहां–कहां जाता है।

अंकेश,संतो से–अब खून पीओगे क्या दादी जी का ? थोड़ा तरस खाओ उनपर। उम्र देख रहो हो उनके, अब कितना बकाओगे उसे।

दादी,अंकेष से–ये बात तो इसने (संतो) सही कहा। वो जाता है दूकान बंद करके,कभी–कभी कई दिनो तक मे लिए।

अंकेष,दादी से–जाता होगा, इससे हमे क्या ? उसकी दूकान है उसका काम है , उसकी मर्जी है।

अंकेष,संतो से–तो चलो , अब क्या दादी से चाय पीने का इरादा है क्या ?

अब ये लोग थोड़ी दूर आगे तक जाते है और यह पता लगाने की कोषिष करते है कि ये कमल कौन है और इसकी दूकान कहां है। कुछ दूर आगे बढने पर संतो के द्वारा एक आदमी से कमल के बारे मे पुछे जाने पर,,,,,,,,,,,,,

संतो,आदमी से–भाई साहब ये कमल महाषय कहां मिलेंगे ? बता सकते है आप ।

आदमी–कौन कमल के बारे मे पुछ रहे है आप ?

संतो – कितने कमल को आप जानते है ?

आदमी–बस एक को ।

संतो –फिर आपने कहां कौन कमल ? कमल तो एक ही है, तो आप उसे जानते होंगे।

आदमी–हां उधर (बुढी अम्मा की तरफ ईषारा करते हुए) उसे देख रहे है।

अंकेष,उस आदमी से–हां देख रहे है , बोलिए ना।

आदमी,अंकेष से–वही तो है कमल की माँ।

अंकेष,उस आदमी से–अच्छा ! तो वहां कमल खिला है, और वही है कमल की माँ। ठिक है भाई साहब

बहुत–बहुत धन्यवाद आपका।

फिर अंकेष और मदन चार कदम वापस होते है,,,,,,,,

अंकेष,संतो से–तो हमलोग अभी तक क्या सोच रहे थे, कि हमने उन्हे (दादी अम्मा) अपने चुपरी – चपरी

बातो से बझा लिया। पर सही बात तो यह हुई कि दादी सही मे हमलागो की दादी

निकली।

संतो,अंकेष से–रूको–रूको (अंकेष को रोकते हुए) थोड़ा सोच लो कि वहां जाकर बोलना क्या है ? और

पुछना है तो क्या पुछना है ?

अंकेष,संतो से–अब उससे (दादी अम्मा) कुछ नही पुछना है ,थोड़ी देर इंतेजार कर लेते है कमल का। फिर

उससे मिलकर बात करने से षायद कुछ पता चले।

अब ये लोग कुछ दुकानदार से कमल के दुकान के बारे मे पुछते है, फिर पता चलने पर ये दोनो कमल के दुकान पर पहुँचते है। कमल जो एक अधेड़ उम्र का आदमी है जिसकी उम्र लगभग 45 साल होगी । कद थोड़ा लम्बा है और षरीर थोड़ा पतला है ,जो थोड़ा बरबोला किस्म का हैं।

मदन,कमल से–तो क्या–क्या ठिक करते है आप ?

कमल, संतो से–आपका खराब क्या हुआ है ?

संतो,कमल से–हमलोग एक पुराने सी टी0 भी0 का कुछ सामान खोज रहे है ,बताया गया है आपके

पास मिल सकता है।

कमल,अंकेष से–मॉडल ।

अंकेष,कमल से–मॉडल का नाम है , सूकेष की पत्नि अर्चना।

कमल ये बाते सूनकर थोड़ा चौक सा जाता है और दोनो को बड़े ही अचरज भरी नजरो से देखने लगता हैं।

संतो,अंकेष से–अरे यार ! थोड़ा बात तो आगे बढने देते । बगैर कुछ सोचे समझे, बगैर हिले–मिले कुछ भी

कही भी आवाज लगा देते हो । बगैर सूर और ताल के।

कमल,अंकेष से–क्या कहना है उन सब (अर्चना, उसके पति और उसकी सास) के बारे मे। मै कुछ समझा

नही।

अंकेष,कमल से–तो आप अपने सोने जैसे किमती समय का पाँच मिनट हमे देंगे।

कमल,अंकेष से–अभी तक हम आपके बातो को अच्छी तरह से नही समझ पाए है कि आप लोग है कौन ?

और क्या पता करने आये है ?

अब अंदर ही अंदर कमल ये सोचने लगता है कि कही ये लोग पुलिस वाले तो नही , फिर सोचता है कि पुलिस वाले हमारे पास क्यो आयेंगे और हमारा उससे क्या वास्ता।

संतो,कमल से–ज्यादा परेषान होने की कोई जरूरत नही है , बस पाँच मिनट से थोड़ा ज्यादा भी लग

सकता हैं।

कमल,अंकेष से–(सरलता से) जो बात है यही पर कहिए। बोलिए क्या बात है ? सबसे पहले आप लोग

अपना परिचय दीजिए। उनसब को कैसे जानते है ? आपलोग कौन है ? और हमसे क्या

चाहते है ?

अंकेष,कमल से–आपके गोली जैसे दागते हुए सवाल पर सवाल! आपको भले ही कॉनफिडेन्स दे रहा होगा,

पर हमें आपके सवाल ज्यादा पसन्द नही हैं पर आप अपने जगह पर बिल्कुल सही है।

कमल,दोनो से–बोलिए ! मुझे और भी कुछ काम हैं।

दुकान के बाहर से ही अंकेष और संतो इषारो इषारो मे यह मान लेते है कि अब कमल से यही पर इसी वक्त ही सारी बाते करनी होगी जिसकी जरूरी हमें है। फिर क्या अब अतीत मे गुम और खोए हुए अनकही बातो का सिलसिला षुरू हो जाता हैः–

अंकेष,कमल से–तो कोई बेगुनाह को आपकी मदद की जरूरत आ पड़ी है। जो बहुत ही कष्ट मे है।

कमल समझ चुका है कि ये षायद सूकेष की पत्नि अर्चना के बारे मे बात कर रहा है।

कमल,अंकेष से–हां वो तो जेल मे है , अब मै क्या कर सकता हुँ उसके लिए।

अंकेष,कमल से–मतलब उस समय कर सकते थे।

कमल–किस समय।

अंकेष–जब वो जेल जा रही थी।

कमल–मै उस समय क्या करता ? और उस समय मेरा उससे क्या वास्ता था ?

अंकेष–मान लिजिए वैसी किसी महिला को आप भी उतने अच्छे से जानते है और हम भी उन्हे अच्छे से ही जानते है और सही मे वो भी अच्छी

है। फिर हम उसके बारे मे फेसबुक पर गलत पोस्ट डाले और आपको कोमेंट करने का मौका मिले तो आप क्या लिखेंगे।

कमल–यही की बेवजह रायता मत फैलाईये। किसी कि जिंदगी बर्बाद हो सकती हैं।

अंकेष–अब ठिक है , अब आप मेरा सवाल का जवाब दे सकते हैं। तो बताईये आप उसे (अर्चना) कैसे

जानते है और उस दिन के बारे मे थोड़ी जानकारी चाहिए आपसे।

कमल–पर अब तक आपने अपना परिचय नही दिया है।

अंकेष–बताता हुँ ,अब तो सब कुछ बताना ही तो है, फिर क्यो आपको सस्पेंस मे रखे। हमलोग उसके वकील के तरफ से आये है, यानी अर्चना जी के वकील के तरफ से । क्योंकि अर्चना जी जो है , वो लम्बे समय के लिए अंदर जाने वाली है। लेकिन उसका कहना है कि वो बेगुनाह है और उसके पति ने जानबुझ कर उसके साथ गलत किया,अर्चना को अपनी सास के हत्या के जुर्म मे अंदर करवा के।

कमल,अंकेष से–हां तो इसमे मै क्या कर सकता हुँ ?

अंकेष,कमल से–हमें पता चला है कि आप उस दिन यानी उस समय जब अर्चना की सास अर्चना को मार रही थी ,यानी जब दोनो मे हाथा–पाई हो रही थी तो आप वहा मौजूद थे।

कमल,अंकेष से–ये सारी बेहुदी बाते तुम लोगो को बताई किसने, जो आ गए यहां फर फराने । वहां तो बहुत सारे आदमी थे पर मै ही क्यो ?

अब अचानक कमल को याद आता है कि कही उसकी माँ ने तो यह उल्टी नही की है इन लोगो के सामने ,अगर ऐसा है तो मेरी माँ के बारे मे इन लोगो को किसने बताया होगा, या हो सकता है मेरी माँ से ही इन लोगो ने जाकर पुछी होगी। क्योकि वो तो अपने साथ बहुत सारा समय लेकर बैठी रहती है दरवाजे पर।

संतो,कमल से–यानी आप थे !

कमल,संतो से–थे या नही थे, क्या फर्क पड़ता है ?

अंकेष,कमल से–पड़ता है महाषय ,पड़ता है। आप ये बताईये की आप सुकेष को कैसे जानते है ?

कमल,अंकेष से–एक पड़ोसी दूसरे पड़ोसी को कैसे जानता है ? यानी एक मुहल्ले वाले लोग उसी मुहल्ले मे रहने वाले दूसरे लोगो को कैसे जानेंगे।

संतो,कमल से–जैसे लंगोटिया यार एक दूसरे को जानते है, उसी तरह जानेंगे और क्या ?

कमल,अंकेष से–तुम्हारी इस सवाल का जवाब तो इसके (संतो) पास है ही फिर मुझसे क्यो पुछ रहे हो ?

अंकेष,कमल से–सवाल ये नही है कि जवाब किसके पास है, सवाल ये है कि जवाब दिया किसने ।

कमल,अकेष से–जिंदगी झंड करे रख दी थी उसने (अर्चना) अपने पति का ।

अंकेष,कमल से–आपको ऐसा क्यो लगता है कि अर्चना ने ही झंड किया , उसका पति भी तो झंड कर

सकता है।

कमल,अंकेष से–हमें ऐसा नही लगता है ।

अंकेष,कमल से–फिर अर्चना के बारे मे ऐसा क्यो लगा है ?

संतो,कमल से–कभी–कभी जैसा बताया जाता है वैसा होता नही, और जैसा होता है वैसा बताया नही

जाता।

अंकेष,कमल से–फिर हमलोग बताए गए बातो पर ही बिना तर्क के विष्वास कर लेते है, और जाने अंजाने

मे सही गलत को नही जान पाते।

संतो,कमल से–और इससे कुछ जिंदगिया बर्बाद हो जाया करती हैं।

समय गुजरते गुजरते काफी गुजर चुकी है और सूक्खी के खाना खाकर सोने का भी समय जो होने वाला है वो बार–बार अंकेष को याद दिला रहा है कि अब सूक्खी के पास जाना पड़ेगा और देखना पड़ेगा कि वह क्या कर रहा है ?

इतने मे संतो की धड़कने तेज हो जाती है और उसका सिर चकराने लगता है , वो पास पड़े कुर्सी पर धम के मारे बैठ सा जाता है और यह देख अंकेष और कमल दोनो अचरज करने लगते हैं। फिर अंकेष संतो को जाकर

पकड़ता है कि कही वह जमीन पर ना गिर जाए और उसे चोट ना लग जाए। इन सारी घटनाओ को कमल बैचेन होकर देखता रहता है ।।

अंकेष,संतो से–क्या परेषानी हो रही है तुम्हे ?

संतो–बस अचानक से चक्कर आ गया और आँखो के सामने अंधेरा छाने लगा। बहुत कमजोरी सा लग

रहा है।

कमल अपने दुकान मे रखे पानी की बोतल लाकर संतो की तरफ बढाता है,,,,

कमल,संतो से–लो पानी पी लो।

संतो,कमल से–यहां पास मे षराब की दुकान है।

संतो की यह बात सूनकर अंकेष और कमल दोनो ही उसको देखने लगते हैं।

अंकेष,संतो से–क्या बक रहो हो ? कही तुमने षराब नही पी है इसलिए तो चक्कन नही आ रही है।

कमल,अंकेष से–तुम बोलोगे क्या, इसे देखकर तो ऐसा लग ही रहा है। ले जाओ ले जाओ इसे, ले जा दो घुंट दिला दो । वरना कही देर ना हो जाए।

अंकेष,कमल से–तु रहने दे भाई , नही चाहिए तेरी सहमति ।

संतो,कमल से–तु हौसला रख मुझे कुछ नही होगा । ये अलार्म था कि अब मेरे पीने का समय हो चुका है।

अंकेष,संतो से–ऐसा है तो साथ मे लेकर घुमा करो और अलार्म बजने के पहले पी लिया करो।

कमल,अंकेष से–कहां से लाए हो इसे पहली मुलाकात लग रही है तुम दोनो की। क्योंकि तुम इसके बारे मे

ज्यादा नही जान रहे हो ऐसा लगता है।

अंकेश,कमल से–आप सूकेष के बारे मे कितना जानते है , पता है आपको।

कमल,अंकेष से–तो उसकी पत्नि बराबर उससे लोहा लेती थी , कारण कुछ अंदर की बात रही होगी , इस बारे मे हमें कुछ खास पता नही है। पर उस दिन मै जब उसके घर के सामने से गुजर रहा था तो उसके यहां हो

रहे झगरे को सूनकर मै रूक गया और उससे (सूकेष) जान पहचान होने के नाते मै और मेरे ही जैसे उसके कुछ और पड़ोसी वहा इकठ्ठा हो गए।

इस तरह बात हो ही रही थी कि कमल सूकेष को अपनी दुकान की ओर आते देखता है फिर,,,,,,,,,

कमल,अंकेष से–तो सुकेष आ रहा है, तुमलोग रूकोगे या जाओगे।

यह बाते सूनकर दोनो सड़क की ओर देखते है कि किधर से सुकेष आ रहा है और यह दोनो की भी नजर सुकेष पर पड़ती है और दोनो हरबरा जाते है ।

कमल,अंकेष से–रूक जाओ उससे भी कुछ पुछ लेना ।

अंकेष,कमल से–तो आप हमारा मजाक उड़ा रहे है, क्योंकि हम आपके पास मदद मांगने आये है इसलिए। पहले आप से अच्छे से पुछ लुंगा फिर उससे रूबरू होंगे बाद मे। सोचिएगा एक बेगुनाह के साथ–साथ एक माँ भी जेल मे बंद है। जितने सवाल के जवाब आपने दिए है उतनी पार्टी मेरी तरफ से, और अगले हर सवाल पर हर बार पार्टी।

इतना कह कर ये लोग चल पड़ते है, फिर पीछे से कमल,,,,,

कमल,अंकेष से– मिलो कल षाम मे गीतांजली गीत गजल मे ।

अब इसके बाद जिधर से सुकेष आ रहा होता है उसके विपरीत दिषा से ये लोग वहां से निकल जाते हैं।

संतो,अंकेष से–चलो भागते हुए भुत का कुछ भी सही । ना सही तो वही सही।

अंकेष,संतो से–तुम कब होगे सही। मै अपनी प्रोब्लेम से तुम्हे लाया हुँ ,अब तुम ही एक प्रोब्लेम बन जाओगो

तो मै किस–किस प्रोब्लेम का सोल्यूसन ढुंढता रहुंगा। मदन को तु कैसे जानता है। उसे भी

लेकिन अच्छे–अच्छे लोगो से जान पहचान है, मानना पड़ेगा।

संतो,अंकेष से–वो मेरा जीजा है।

अंकेष,संतो से–क्या ? उसकी तो षादी ही नही हुई है , तो फिर ये जीजा –साला।

संतो,अंकेष से–कहानी कुछ खास लम्बी भी नही है, पर अभी टाईम भी नही है।

अंकेष,संतो से–रास्ते भर क्या गुंगा बन के जाएगा।

इधर अब कमल के दूकान के सामने से सुकेष गुजरता है पर कमल उसे दूकान की ओर नही आते देख आवाज लगाता है–

कमल,सुकेष से–क्या बात है समस्या का समाधान नही हुअ अबतक ?

सुकेष,कमल से–इस तरह के समस्या के समाधान के बारे मे सोचना अपने आपको खुद बेवकूफ मान लेने

के जैसा है। जैसे चाहे कुछ भी हो, हम जितने कुछ भी झेल रहे हो उसे कुछ नही मानकर

अपने आप मे ना चाहते हुए भी खुष रहना।

कमल,सुकेष से–कही मै तुम्हे दुख तो नही पहुंचा रहा ,इस तरह की बाते करके।

सुकेष,कमल से–क्यो तुम मेरी पत्नि हो क्या ? जो सुकुन कम और सवाल ज्यादा देती है ,और उसके

सवाल का जवाब उसके हिसाब से ना दिया गया तो उसे पागलपन का दौड़ा पड़ने लग

जाता है। गलत बाते भी उसे अच्छे से बोलो तो वो मुस्कुराने लगती हैं, गजब का

किड़ा रेंगता है इन लोगो के दिमाग मे यार। कहां से आते है ये किड़े और क्या इन्ही

लोगो के लिए आते है।

सुकेष की इस तरह की परेषानी को देखते हुए कमल को लगता है कि सच मे सुकेष को परेषानी हुई होगी । फिर भी अर्चना के लिए अंकेष की परेषानी को देखते हुए कमल धीरे–धीरे अपनी बातो को आगे बढाता हैं।

कमल,सुकेष से–क्या करोगे ? गुस्सा गर्म कोयले के समान होता है,जो दूसरे पर फेकने से पहले खुद को

ही जलाता हैं।

सुकेष,कमल से–हाँ इसे नियती मानो या किस्मत । दोनो ही मेरे साथ घटी है, चाहे वो अच्छी हो या बुरी।

कमल,सुकेष से–तेरे बातो से टपकते हुए दर्द भरी रस को मै समझ रहा हुँ। इस चढते हुए उम्र के पड़ाव मे

ही तुम्हारे साथ ऐसा होना था। ऐसा होते देख दु:ख होता है।

इधर,,,,,,

संतो,अंकेष से–जब तक पीउंगा नही तब तक कहने मे मजा नही आएगा। वो देखो (षराब की

दूकान अंकेष को दिखाते हुए) पहले वहां चलते है, फिर बात होगी।

दोनो वाईन षॉप पर जाकर कुर्सी पर बैठते है, पर कुछ पलो तक अंकेष के द्वारा षराब का आर्डर नही देने पर संतो अंदर ही अदर परेषान सा होने लगता है,,,,,,,,फिर,,,,,,,,,,

संतो,अंकेष से–मुझे अब जीने का मन नही कर रहा है।

अंकेष,संतो से–(चौकते हुए) , क्यो क्या हुआ ?

संतो,अंकेष से–क्योंकि मुझे पीने का मन कर रहा है।

अंकेष,संतो से–ओ मै तो डर ही गया, मुझे लगा तुम आत्म हत्या करने ही वाले हो।

अब अंकेष और संतो दो–दो घूँट लगाते है और अपने षाम को रंगीन करते है।

अंकेष,संतो से–तुम नही बताओगे तो मै मदन से ही पुछ लेता हूँ।

संतो,अंकेष से–(बड़े ही सरलता से) ऐसा मत करो ! मत करो ऐसा। जिससे हो जाए लोगो का जैसा–

तैसा। तुमने इस तरह से मुझे डरा दिया कि,अगर तुम मुझे अभी काटोगे तो षायद खुन नही

निकलेगा। मेरी मजबुरी तुम्हे समझनी होगी ,अभी तत्काल।

अंकेष,संतो से–क्यो तुझे लटका रहा हुँ फाँसी पर क्या ? लतिफे पर लतिफे छोड़े जा रहा तू। क्या बात है

तु खुष हो रहा है या नाराज मै समझ नही पा रहा हुँ। ठिक है तुमसे मै बाद मे निपटुंगा,

आज चलते है।

अब दोनो अपने–अपने घर के तरफ लौटते है, रास्ते मे अंकेष सूक्खी के बारे मे सोचते हुए घर पहुँचता है । देखता है कि सूक्खी सो चूका था, पर टी0 भी0 चल ही रही थी, कुछ खिड़कियाँ खुली हुई थी। सूक्खी करवटे लेकर सो रहा था मानो उसे नींद नही आ रही हो और वो सोने की कोषिष कर रहा था। कुछ खाने की प्लेटे बिस्तर पर पड़ी हुई थी। अब ये सब देख अंकेष बारी–बारी से उसके सारे अधुरे काम को सलटाता है– जैसे टी0 भी0

और खिड़कियाँ बंद करता है, बिस्तर पर पड़े खाने के प्लेटो को हटाता है और खुद खाना खाकर अपने परेषानियो को सोचते हुए सो जाता है। फिर सवेरे,,,,,,,,

अंकेष,सूक्खी से–तो तुमने रात को खाना खाया था।

सूक्खी– हां खाया था , पर आप कल लेट हो गए थे पापा।

अंकेष–हां कल मै कुछ जरूरी काम मे लगा हुआ था जो षायद आज पुरा होने वाला है।

सूक्खी–आप मम्मी से मिलने गए थे कल।

अंकेष–हाँ ! पर मैने तो तुम्हे बताया नही।

सूक्खी–पर मुझे पता है।

अंकेष–तुम्हे ऐसे पता है या सच मे पता है।

सूक्खी–अब से आप जब भी मम्मी से मिलने के लिए जायेंगे तो हमें भी लेकर जाईएगा।

अंकेष–बेटे मुझे अचानक से काम आ जाता है उनसे (अर्चना) मिलने की इसलिए मुझे अचानक से जाना

पड़ता है, और फिर ऑफिस भी सम्भालना पड़ता है। मै अगर फ्री रहता हुँ , तो आपको तो लेकर

जाता ही हुँ। क्या तुम गए थे मम्मी से मिलने के लिए।

सूक्खी–(सर हाँ मे हिलाकर) हां।

यह बाते सूनकर अंकेष थोड़ा परेषान हो जाता है, क्योंकि अकेले सूक्खी को जाने आने मे खतरा हो सकता है या कोई और परेषानी हो सकती है। जिस कारण अभी वाली परेषानी के साथ–साथ अलग से सब परेषान हो सकते है।

अंकेश–मैने तो तुम्हे मना किया था , अकेले जाने के लिए मम्मी के पास। तुम्हे पता भी है कि तुम जो जाते

हो उसमे कितने रिस्क हो सकते है।

सूक्खी–हां खतरा तो है पापा,, मेरे पीछे–पीछे एक गाड़ी बड़ी तेजी से आ रही थी और बगल से गुजर गई।

इस तरह की ये बाते सूनकर अंकेष को थोड़ा गुस्सा आ जाता है और सूक्खी से,,,,,

अंकेष–(गुस्से मे पर धीरे से) तुम क्या चाहते हो कि तुम्हारी मम्मी जेल मे परेषान रहे। यह जानकर कि

तुम्हे कोई परेषानी हो गई है।

सूक्खी–नही पापा,,,,।

अंकेष–क्या नही पापा ? हां पापा। पापा, पापा। अब तुम्हे जब मम्मी के पास जाना होगा मुझे एक दिन

पहले बता देना प्यारे, फिर हमलोग साथ चलेंगे। अब जो मै जाउंगा तुम्हारी मम्मी से मिलने के लिए

तो देखना वो मुझे डांटेंगी जरूर। तुम क्या चाहते हो मै तुम्हारी मम्मी से डांट खा लु ,तुम्हे ये अच्छा

लगेगा।

सूक्खी–नही पापा।

अंकेष–या बेटे ! हां बेटे ! ना बेटे ऐसा ना कर बेटे ! समझा कर बेटे।

इधर सवेरे –सवेरे जेल मे अर्चना के साथ–साथ सारे कैदियो को कोठरी से बाहर निकाल दिया जाता है और रोज की तरह उन सभी को कोई ना कोई काम थमा दिया जाता है –अर्चना को आज सब्जी धोने का काम मिला है , जिसे करते समय वो अपने पुराने दिनो को याद कर रही है कि कैसे वो जब अपने घर मे अंकेष के साथ रहती थी तो वो किस तरह से अंकेष के साथ मिलकर कभी–कभी खाना बनाया करती थी।

रूबी,अर्चना से–तो आज तेरे हाथो की बनाई हुई खाऐंगे तेरे दुष्मन।

अर्चना,रूबी से–अब क्या करे ? दुष्मन हो या दोस्त उसे जिंदा रखने के लिए खिलाना तो पड़ेगा ही।

मछली चिकन और मटन ना ही सही ,पर आलु ही सही। घर मे ना खिलाए किसी दुष्मन

को तो क्या हुआ इतने बड़े काल–कोठरी मे तो खिलाने का सौभाग्य मिल रहा है

षायद इससे भी थोड़ खराब ग्रह जो चल रहा है, वो कम हो।

आज षाम को गीतांजली गीत गजल मे सिर्फ अंकेष और कमल की मुलाकात होने वाली है । कैसी होती है मुलाकात आईये जानते हैः–तो वहां पर कमल पहले से ही जाकर बैठा हुआ है और समय के अनुसार अंकेष का

इंतेजार कर रहा होता हैं, पर इस दरमियां वो किसी भी तरह के ऑर्डर नही देता है। यह देख कर वहां पर मौजूद वो वेटर जो रोज कमल के षराब का ऑर्डर लेता है वो उसे देखकर थोड़े देर के लिए सोचता है कि आज ये महाषय एकदम से षांत क्यो बैठा है। यह देखकर वो कमल के पास आता है :–

वेटर–तो आपके लिए क्या लाऊ ?

कमल–अभी थोड़ा सब्र करो,मेरा दोस्त आने वाला है ,फिर मै आर्डर देता हुँ।

वेटर–ठिक है तो मै रूक जाता हुँ ।

कमल–यहां मत रूको ,जाकर कोई दूसरा काम करो।

अब थोड़ी देर मे एक ऐसा आदमी वहां पहुँचता है जो कमल के जान पहचान का रहता है, जिसका कमल के पास कुछ हिसाब बाकी रह गया था षायद पहले कभी। अब कमल की नजरे उस पर पड़ती है और कमल अपनी नजरे उससे चुराकर दूसरे तरफ ले जाता है और कोषिष करता है कि वो आदमी कमल को ना देख पाए। पर ऐसा हो नही पाता है। दूसरे टेबल वाली कुर्सी पर बैठे उस आदमी की नजरे कमल पर पड़ती है, जिसके बाद वो आदमी जिसका नाम–काजल है कमल के पास पहुँचता हैः–

काजल,कमल से–तो कितने भी नजरे चुरा लो हमसे , ये नज़रे ऐसी चीज है कि हमसे मिल ही जाएगी।

जहां नही चाहिएगा, वहां हमें ही पाईएगा।। तो क्या हुआ मेरी टी0भी0 का रूपया जिसे

तुमने बेच भी दिया पर हमारे रूपये आज तक नही दिए तुमने।

कमल,काजल से–असल मे ,,,,,,,

काजल–फिर बहाना , नही चलेगा।

कमल–असल मे मेरी बात तो सूनो ।

काजल– जब भी मै तुम्हारे दुकान पर जाता हुँ , तुम कोई ना कोई बहाना बनाकर निकल जाते हो। आज

मै कोई बहाना सूनने वाला नही हुँ।

कमल–नही सूनोगे तो क्या करू मै ? नही सूनोगे तो जानोगे कैसे।

काजल–सूनने के बाद क्या मेरे रूपये मिल जाएंगे।

कमल–वो तो नही मिलने वाले है अभी। पर मिल जाऐंगे।

काजल–चाहु तो तुमसे दो घंटे मे रूपये निकाल लु , लेकिन अभी तक तुम्हारा आदर कर रहे है तो इसे

मेरी प्यार मोहब्बत वाली धमकी ना समझिये जनाब। अगर तुम्हारे मन मे किसी भी तरह की कोई

लालच नही है तो फिर तुम हमसे मिलने से क्यो कतराते हो ? कर्ज लेकर भागने वाले

आदमी की तरह।

कमल–तुमसे मिलने से मै क्यो कतराने लगा ?

काजल–इसका जवाब तो तुम्हारे ही पास बेहतर होगा।

कमल–तुम्हारे कोई सवाल और जवाब मेरे पास नही है , बस तुम्हारे रूपये तब मिल जाएंगे जब तक उससे रूपये मुझे नही मिल जाते जिससे मैने तुम्हारी टी0भी0 बेची है।

काजल–कब ?

कमल–ये नही पता ।

ये बात सूनकर अब काजल को थोड़ा गुस्सा आ जाता है फिर,,,,,,

काजल,कमल से–तुम अपने रेडियो टी0भी0 का झोल–झाल हमसे ही झरवाओगे क्या ? ज्यादा समय भी

नही लगेगा हमें झारने मे समझा देता हु, समझ जाओ। समझ गए ना, तुम्हे समझाने के

लिए ही इतना समझा रहे है। वरना समझाने मे हमलोगो को इतना समय भी नही लगता।

अब इतने मे वेटर आता है और ,,,,,,

वेटर,कमल से–तो क्या लाए आपके लिए सर,,,,।

कमल,वेटर से–थोड़े देर बाद बुलाता हुँ।

काजल,कमल से–तो तुमने अब तक कोई आर्डर नही दिया। क्या बात है ? तुम तो मेरे से पहले से यहां

हो। किसी का इंतेजार तो नही कर रहे हो, अगर तकलिफ हो तो हट जाउ।

इतने मे वहां अंकेष पहुँचता है और कमल के साथ बैठे काजल को देखता है जिसे अंकेष नही पहचान रहा होता है। यह देख कमल,,,,,,

कमल,काजल से–तुमसे मै बाद मे बात करूंगा। अभी कृप्या करके जाओ।

काजल समझ जाता है कि कमल अंकेष का ही इंतेजार कर रहा होता है, इससे पहले की काजल कमल से कुछ बोले अंकेष के एकदम पास आ जाने के कारण वो कुछ नही बोल पाता है और वही बैठे षांत रह जाता है, पर अंकेष को यह लगता है काजल कमल के साथ ही आया है। अंकेष उन दोनो के टेबल के पास पहुँचता है फिर बड़े आराम से,,,,,,,

अंकेष,दोनो से–तो व्हाट्स ग्रुप मे चैटिंग स्टार्ट है।

अंकेष,कमल से–हेलो !

अंकेष,काजल से–हेलो !

अंकेष,कमल से–(बड़े अदब से) तो आप लोगो ने कुछ ऑर्डर दिया या नही।

काजल,अंकेष से–बस देने ही वाले थे कि आप आ गए, और हमलोग भी अभी ही आए है।

अब अंकेष वेटर को बुलाता है,,,वेटर इन लोगो के पास आने वक्त सोचता है कि षायद इसी का इंतेजार हो रहा था अब ऑर्डर मिल जाएगा। खामखां दो बार परेषान कर दिया इन कमबख्तो ने।

अंकेष,वेटर से–ऑर्डर लो इन लोगो से।

वेटर,अंकेष से–मै तो,,,,,,,

इतने मे कमल,,,,,,

कमल,वेटर से–हां तो कुछ फास्ट फूड जो मै लेता हुँ और दो पुरी बोतल जो मै,,,,,

काजल,वेटर से–जो ये लेते है, और कुछ स्टार्टअप भी लेते आना।

अंकेष,कमल से–तो बताईये जो आप कल नही बता सके थे। सॉरी ये तो पुछना ही भुल गया कि ये (काजल की ओर ईषारा करते हुए) कौन है ?

यहां पर कमल अंकेष से कोई भी बाते खुल कर काजल के कारण नही कर सकता, क्योंकि वह कुछ रूपयो की भी डिमांड यहां अंकेष से करने वाला है। इससे पहले कि अंकेष और कुछ बोले,,,,,

कमल,अंकेष से–इनसे मिलिए हमारे एक दोस्त है सूकेष, ये उनके दोस्त है। अचानक हमे इनसे मुलाकात हो गई यहां पर । जब मै आपका इंतेजार कर रहा था।

सुकेष का नाम सुनकर मामले को अंकेष भांप लेता है और फिर समझदारी दिखाते हुए इधर उधर की बाते करने लगता है।

अंकेष,कमल से–तो हमारे सामान की तैयारी कैसी चल रही है। वो समय से ठिक होकर मिल तो जाएगी

ना मुझे।

कमल,अंकेष से–हां जरूर ! उसी मे लगने वाले कुछ सामान जो खरिदने है ,इसिलिए तो आपको बुलाए

है। बस यहां से चलकर उसे खरीद लेंगे।

काजल,कमल से–ओ ! तो नया कस्टमर । तो इनका सामान ठिक हो जाएगा ,या बेचना पड़ेगा। बेचने के

बाद इसे रूपये मिल जाऐंगे ना।

काजल यहां सोचता है कि यहां पर कमल का थोड़ा छिछा–लेदर करता हुँ। फिर अपने–आप को रोकते हुए सोचता है कि थोड़ा इनका पी लेते है फिर आगे बात का बबंडर करते है। काजल के इधर उधर देखते ही कमल अपने हाथ के ईषारो से अंकेष को इसके (काजल) जाने तक षांत रहने को कहता है।

कमल,काजल से–क्यो बातो को लंबा खिंच रहा हैं, खिंच तो लिया जहां तक खिंचना था।

काजल,कमल से–बातो का क्या ? वो तो बदलते रहते है।

अंकेष,कमल से–ये भाई साहब कौन सी सामान की बात कर रहे है। आपने इसका कोई सामान पहले बेचा

है क्या ?

इतने मे वेटर भर के दो बोतल के साथ कुछ फास्ट फुड लेकर आता है ।

कमल,काजल से–चल खोल , तु ही खोल ले आज।

काजल,कमल से–चलो तिजोरी नही, षराब ही सही , कुछ तो बोला आपने खोलने को।

फिर तीनो का ग्लास लगता है और तीनो पहली पैक लगाते है ,,,,,,फिर,,,,,

अंकेष,काजल से–(बड़े ही सरलता से) बुरा ना माने तो आप कुछ समय के लिए हमदोनो को खाली छोड़
सकते है।

काजल,अंकेष से–इतने प्यार से बोलिएगा तो हम षायद दुनियां छोड़ दे, और आप महफिल छोड़ने की बात
करते है। चलिए छोड़ देते है।

अंकेष,काजल से–आप बुरा मान गए , बुरा मत मानिये ।

काजल,अंकेष से–बुरा तो मै इसके (कमल) भी बातो का नही मानता हुँ ,पर ये फिर भी बहुत कुछ कह देता
है।

कमल (मन ही मन) ये साला कहा से पल्ले पड़ गया , इससे अच्छा तो कुत्ता है जो एक बार कांट के छोड़ देता है। पर ये तो साला काटे पे काटे जा रहा है।

अब काजल षराब की बोतल को लेकर उस टेबल से हटकर दूसरे टेबल पर जाकर बैठता तो है, पर उसका ध्यान इन्ही दोनो के तरफ रहता है।

अंकेष,कमल से–तो बताईये ! जहां कल खत्म किए थे वहां से।

कमल,अंकेष से–हाँ ! बताते है , बताते है। कल तुमसे बात करके हमें अच्छा लगा, वो भी तुम्हारे जाने के
बाद। फिर मैने सोचा की अगर मै किसी के बारे मे कुछ नही जानता , तो किसी को बचाने के बारे मे कुछ बोलना पड़े तो क्या दिक्कत है ? मैने खुद को समझाया इस बारे मे, फिर मै समझा कि कल तुम्हे मिलकर तुम्हारे परेषानियो पर चर्चा करेंगे, और ये सब बाते मैने अपने दिमाग मे तब लाया जब मैने सुकेष से जान बुझ कर झगरा किया, कि मेरे लिए उसके पास कितनी हमदर्दी है ये जानने के लिए। फिर क्या था ? उसके सामने सारे भरास को निकाल कर मैने खुद को तुम्हारी मदद के लिए तैयार कर लिया।

यह सारी बाते सूनकर अंकेष धीरे–धीरे उसके सामने ताली बजाते हुए मुस्कुराने लगता है। फिर कमल भी मुस्कुराते हुए दूर बैठे काजल को देखता है , पर काजल अभी पीने मे मसगुल है।

कमल,अंकेष से–हां तो मै चाहता हुँ उसकी (अर्चना) मदद करने के लिए । बताओ क्या करना पड़ेगा ?

अंकेष,कमल से–बस आपको यही बताना है कि सुकेष की माँ अपने–आप जमीन पर गिर गई थी , जिस कारण उसके सर मे चोट लग गई ,और वो बेहोष हो गई। उससे पहले ही अर्चना डर के मारे अपने रूम मे चली गई थी ताकि उसे उसके पति और सास मिलकर मार ना दे , और वो ये सब अपने खिड़की से देख रही थी। उसे सुकेष हॉस्पिटल ले गया तब तक उसके षरीर मे प्राण थे।

कमल,अंकेष से–बाप रे बाप समझ मे नही आ रहा है कि वो (अर्चना) गुनाहगार है या बेगुनाह। पर उसकी (सुकेष)

मां मर गई और उसके बदले मै उसके ही खिलाफ ऐसा कहुँ तो उसे (सुकेष)

कैसा लगेगा ? वो

दोस्त है मेरा।

अंकेष,कमल से–एक तरफ दोस्त है जो बाहर आजाद घुम रहा है , दुसरी तरफ एक माँ जो जेल मे बंद है

और अपने बच्चे के लिए तरप रही है। जो होने का वो तो हो गया, चाहे वो सही हो या

गलत। या हो सकता है अर्चना के साथ ही गलत हुआ हो और वो बेवजह सजा काट रही

है।

कमल,अंकेष से–हां बात तो सही है (झट से) पर मै इसके लिए रूपये लुंगा वो भी ज्यादा।

अंकेष,कमल से–ओ ! (लंबी सांस लेते हुए) ठिक है।

इतने मे अब वहां एक और आदमी का आगमन होता है, वो है सुकेष का ! जो पहले से अंकेष को जानता है और ये दोनो कमल और काजल को तो सुकेष पहले से पहचान ही रहा होता हैं। यहा पर कमल के लिए घबराने की बात ये है वो यहां पर अंकेष के साथ है जो सुकेष के पत्नि को चाहने वाला उसका प्रियतम है। और एक औरत का दो प्रियतम हो और दोनो के बीच क्या मनोदषा होती है ये इन दोनो को ही पता है। सुकेष को देख कर कमल

उससे नजर ना मिले इस कारण मुँह फेर लेता है, ताकि वो उसे देख ना पाए। ईधर,,,,

कमल,अंकेष से–अब कोई बात नही हो सकती ।

अंकेष,कमल से–क्यो ?

कमल,अंकेष से–(सुकेष की तरफ ईषारा करते हुए) पर अभी उधर मत देखना, मेरे दांए और तुम अपने बांए तरफ सुकेष है।

यह बाते सूनते ही अंकेष चौक सा जाता है कि ये यहां कैसे ? मन–ही–मन यह सोचता है कि कही ये कमल ने तो उसे यहां नही बुला लिया है, हमे ढिला करवाने के लिए। फिर दोनो अपने मुँह को खोलते है सिर्फ षराब पीने कि लिए।

इधर सुकेष अंकेष को देख लेता है फिर उसके इर्द–गिर्द नजर दौराने पर देखता है कि उसके सामने कमल भी बैठा हुआ हैं। फिर अचानक से उसे पीछले दिन षाम की एक झलक याद आती है, जब वह कमल के दुकान के सामने से गुजर रहा होता है तो दुर से उसे अंकेष जैसे आदमी का ढाँचा दिखाई दिया था उसे पीछे से देखकर। लेकिन इस बात पर उसने गौर नही किया। पर अब यहां दोनो को देखकर ऐसा लगता है कि षायद कल कमल के दुकान पर से जो जा रहा था वह अंकेष ही था।

यह बाते सुकेष के पाले नही पड़ती है, और अपने दिमाग पर जोर डालने से पहले सुकेष दो –चार पैक लगाता है फिर अपने दिमाग की सोचने समझने वाली क्षमता को खो कर यह जानते हुए कि कल बीते षाम को उसका कमल से झगरा हुआ है, वो कमल अंकेष के टेबल की तरफ बढता है। उसे अपनी तरफ आते देख कमल के मानो चढते हुए षराब का नषा उतरने सा लगता है।

कमल,अंकेष से–ईधर ही आ रहा है वो (सुकेष) सोच लो तुम्हे क्या बोलना है ?

अब सुकेष उसके सामने जाकर बैठता है।

सुकेष,कमल से–तो यहां क्या कर रहे हो ?

कमल,सुकेष से–तुम क्या कर रहे हो ?

सुकेष,कमल से–मै तो षराब पीने आया हुँ ।

कमल,सुकेष से–मै भी तो यही करने आया हुँ।

सुकेष,कमल से–और ये (अंकेष) क्या कर रहा है ?

कमल,सुकेष से–ये भी षायद पीने ही आया होगा।

कमल,अंकेष से–क्या ?

सुकेष,कमल से–(गंभीरता पुर्वक) वो तो ठिक है, पर ये तुम्हारे साथ यहां कर क्या रहा है ?

अब कमल के पास मानो कहने के लिए कुछ भी नही था,,,,उस पल को वह लंबा खींचते हुए ,,,,,,,

कमल,सुकेष से–हां ये बात सोचने वाली है कि ये (अंकेष) यहां क्या कर रहा है ? पर जैसे तुम मेरे साथ नही आये , वैसे ही ये मेरे साथ नही आया। जैसे तु यहां आकर बैठ गया , ठिक उसी तरह ये आकर मेरे सामने बैठ गया जैसे अभी तु बैठा है।

काजल इन सब को साथ देखकर –

ना जाने किस गली मुहल्ले से गुजरने लगे है लोग,

जमीं को छोड़ हवा मे बसने लगे है लोग।

करने चले थे अपने को आबाद यहां,

पर होकर बर्बाद भी खुद पर हँसने लगे है लोग।

आकर बैठे है यहां ऐसे मानो ,

जैसे कोई किताब लिखने लगे।

पढने वाले की लाईने क्या लगी,

और बस अपना धंधा बदलने लगे।।

कमल–(मन ही मन) कमी तो बस इसी की रह गई थी। आ तु भी आ ही जा। सुकेष काजल को देखता है और उसे थोड़ा अचरज होता है।

सुकेष–काजल से–अरे !

काजल,सुकेष से–कैसे है भाई साहब सुकेष।

सुकेष,काजल से–ठिक हुँ , पर बड़े दिनो के बाद दिख रहे हो।

काजल,सुकेष से–दिख तो रहा हुँ ना। इसके जैसा (कमल) गायब तो नही होता हुँ।

सुकेष,काजल से–इसके जैसा गायब ! समझा नही , थोड़ा समझाव अपना समय देकर।

काजल,सुकेष से–ये महाषय जो है ना, जिनसे आपने हमारी मुलाकात करायी थी ,कुछ सामानो को बेचवाने

के लिए। याद है आपको।

सुकेष,काजल से–हां वो तो याद है, हुआ क्या जो ?

काजल,सुकेष से–हुआ वही जो होते–होते हो जाता है। जो षायद होना ही नही चाहिए। (हाथ से रूपये

का ईषारा करते हुए)।

सुकेष,कमल से–क्या कह रहा है ये (काजल) ? क्या रख लिया है तुमने इसका ?

काजल,सुकेष से–वो तो भाईसाहब ये महाषय (कमल) अचानक से यहां भेट हो गए, इस भाईसाहब (अंकेष)

के साथ। वरना इनका तो दर्षन दुर्लभ होने लगा था।

सुकेष,काजल से– क्या ?

अब सुकेष कमल के तरफ देखता है ।

सुकेष,कमल से–पर तुमने तो कहा कि तुम इसे नही जानते ।

काजल,सुकेष से–पर इसने (कमल) तो कहा कि ये इसे (अंकेष) जानता है। पर आपको ये ऐसा क्यो कह

रहा है कि ये इसे (अंकेष) नही जानता है ?

सुकेष,कमल से–यहां तो लग रहा है इस षांत सी दिखने वाली महफिल मे कुछ जाल सी बुनी जा रही है।

जो दिखाई नही दे रही है, पर फँसाने के लिए पर्याप्त है।

सुकेष,काजल से–तुम्हारी क्या राय है इस बारे मे ?

काजल,सुकेष से–राय यही है कि आप अगर दोनो को जानते है पर एक दुसरे के लिए नही जानते और

आपको जानकर ही ये दोनो एक दुसरे को जानते है तो आईना ,बस आईने के जैसा साफ

है।

सुकेष,कमल से–तो वक्त जाते जाते मामला समझ मे आ रहा है और हमारे यहां आते आते मामला तुम्हारे

हाथो से जा रहा है।

अब सुकेष अपनी बेसब्री के बांध को तोड़ते हुए यह जानने कि कोषिष करता है ये अंकेष आखिर हमारे पुराने जान पहचान वाले मि़त्र के साथ कर क्या रहा है।

सुकेष,अंकेष से–यहां होना ही तुम्हारे लिए अचरज कि बात है और इसके (कमल) साथ होना तो मानो षेर

और उसके जिंदा षिकार के एक साथ होने के बराबर है।

अंकेष,सुकेष से–(गले को साफ करते हुए आत्मविष्वास से) तुम्हे ऐसा लगा कैसे ? ये (कमल) कौन है तुम

इसे कैसे जानते हो और तुम्हारे हिसाब से ये हमें कैसे जानता है ? ये सब बातो से मेरा

कोई लेना–देना नही है। मामला यही है कि हम यहां इस टेबल के पास इस कुर्सी पर

इसके सामने बैठे ही क्यो है ?

काजल,अंकेष से–पर थोड़ी देर पहले तुम तो इससे (कमल) कोई सामान के बारे मे बात कर रहे थे। और

बाते षायद इतनी महत्त्वपुर्ण थी जैसे मानो कोई सुन ना ले, और अगर कोई सुन ले तो

उसे आप बोले रहे थे कि थोड़ी दूर जाकर बैठिये।

सुकेष,कमल से–ये सब क्या है मेरे भाई ? तुम बोल रहे हो तुम इसे (अंकेष) नही जानते ,ये (अंकेष) बोल रहा है ये तुम्हे नही जानता , और ये (काजल) कह रहा है तुम दोनो एक दुसरे को जानते हो।

सुकेष,अंकेष से–तो बताओ कौन किसे जानता है और कौन किसे नही जानता ?

अंकेष,सुकेष से–कोई किसी को नही जानता ,अगर जानता भी है तो पहले से ही जानता होगा, पर मै यहां

पर किसी को पहले से नही जानता, और क्या फर्क पड़ता है कि कौन किसे जानता है

और कौन किसे नही जानता ? समझदारी इसी मे है कि हमलोग षराब का मजा ले। ये

भुल कर की कल आपने किसे देखा और कहां देखा।

अब वह रेस्टुरेन्ट के दरवाजे पर से किसी के बोलने कि आवाज आती है।

संतो,गेटमेन से–तो अभी अंदर मे मेला लगा हुआ है या सन्नाटा पसरा हुआ है।

गेटमेन–अभी मत जाईये अंदर लोचा फँसा हुआ है।

संतो–उससे हमको क्या ? मै अलग से पीउंगा या जिसे खोजने मै आया हुँ, वो अगर मिल गया, तो तुझे

बकसिस देकर करोड़ पति बना दुंगा।

अब बात करने वाले लोगो मे एक आवाज संतो की होती है जिसकी आवास अंकेष के कानो तक आ के उसे डिस्टर्ब किए बिना रूकने का नाम नही ले रही है। इसी तरह कुछ हाल कमल का भी होता है, क्योंकि वो संतो को पहचानता है और संतो उसे यहां पर अंकेष के साथ देखने पर बगैर रूके अगर कल वाली बाते षुरू कर दे तो यहां पर सुकेष का यकीन सबुतो मे बदल जाएगा। यह होते देख अंकेष और कमल एक दुसरे को बराबर डर कर देख रहे होते है। संतो की आवाज इन दोनो के लिए षायद जान–पहचान वाली होती है। फिर अंकेष का ध्यान उस ओर जाता है, और पलट कर देखता है कि गेट पर जो आदमी आने की कोषिष कर रहा है , वो और कोई नही बल्की संतो है। अब यहां मामला और गंभीर होने वाला क्योकि ,,,,

अंकेष,(मन ही मन) अब ये किधर से आ गया सुंघते हुए ।

कमल–(मन ही मन) अंकेष अगर इसे छोड़ के आया था तो ये यहां आया ही क्यो ?

संतो,कमल से–अच्छा हुआ कल जो आपने आते–आते यहां का पता दे दिया था। वरना हम तो पड़े होते

कही आसमान के नीचे। बगैर यहां का मजा लिए हुए। क्योंकि ये हमें यहां लेकर आये नही।

सभी लोगो जैसे–सुकेष,काजल अंकेष को अब संतो सर हिलाकर अभिवादन करता है और एक खाली कुर्सी

को खींच कर इन लोगो के सामने बैठता है।

संतो,अंकेष से–क्या ? स्वास्थ्य ने हमारा थोड़ा साथ क्या छोड़ा, उससे पहले तो आपने हमे छोड़ने का

मन बना लिया। मैने आपका इंतेजार किया था, पर आप आये नही।

संतो यहां अपने से कुछ बोलकर गलती ना कर दे, इससे पहले अंकेष बातो–बातो मे उसे स्थिर रखने की कोषिष करता है।

अंकेष,संतो से–इनसे (सुकेष) मिलिए , ये (कमल) इन्हे (सुकेष) जानते है ,और ये (काजल) इनके जान

पहचान के है।

संतो,कमल से–सबको यहां बुलाया गया है या अचानक होने वाला कोई इत्तेफाक है ये।

अब सुकेष को यहां के माहौल को देखकर उसे जो षक हो रहा था वो अब उसे सच लगने लगा है। वो इसलिए कि यहां अकेष जो उसकी पत्नि अर्चना का प्रियतम है वह कमल के साथ गुप्त–गू कर रहा होता है। फिर उसके आने से ही माहौल अचानक से षांत क्यो हो जाता है ।

सुकेष,कमल से–तो क्या मिटिंग होने वाली थी तुमलोगो की ? और अब ये (संतो) कौन है ?

कमल,सुकेष से–इसे (संतो) मै नही जानता ! ये इसके (अंकेष) जान पहचान का होगा षायद।

सुकेष,कमल से–फिर ये तुम्हे कल की बाते क्यो बता रहा है ? कि तुम पता बता कर आये थे।

कमल,सुकेष से–ये मुझे नही पता कि ये क्या कह रहा है ? और ये मुझे कैसे जानता है ?

काजल,सुकेष से–भाईसाहब ! भाईसाहब कुछ तो लोचाझंड है यहां पर ,जिसका मोर्चा तैयार होने वाला था।

ऐसा लग रहा है हमलोग कबाब मे हड्डी नही, कबाब मे काँटे बने हुए है। जो खाने से

पहले ही गड़ने लगे है।

सुकेष,कमल से–जो बात है कहो , कि क्या बात है ?

कमल,सुकेष से–बात ये है हम षराब पी लिए और हमें अब चलना चाहिए।

सुकेष,कमल से–दोस्ती दुष्मनी मे बदलने मे काफी देर नही लगती।

कमल,सुकेष से–पर दुष्मनी को दोस्ती मे बदलने मे देर लगती है। कुछ भी बोलने से पहले सोचा कर ,

और दूसरो के बहकाबे मे खुद को आने से रोका कर। तुम लोगो को और कुछ पीने के

लिए चाहिए तो बोलो।

सुकेष,कमल से–पर इसे (अंकेष) और इसे (संतो) हमारे टेबल पर से हटाओ।

कमल,सुकेष से–हम ही लोग हट जाते है ,क्योंकि ये (अंकेष) यहां पहले से बैठा हुआ था।

सुकेष,कमल से–ये आदमी जो तुम्हारे लिए अजनबी है, अचानक इसपर इतनी मेहरबानी क्यो ? तुम कितना

छिपा रहे हो और कितना बता रहे हो , हम कितना समझ पा रहे है और कितना हमें समझा

रहे हो, ये सब सर के उपर से (सर के ऊपर हाथो का ईषारा करते हुए) गंगा यमुना के

जैसा बह रहा है।

कमल,सुकेष से–तुम तो लगे चाल का चरित्तर निकालने।

कमल,अंकेष से–तो ठिक है भाईयो (अंकेष,संतो) आप लोग उस टेबल पर जाईये। फिर अगर इत्तेफाक

होगी तो फिर मुलाकात होगी। बातो ही बातो मे कुछ और बात होगी।

अब बगैर कुछ बोले ही अंकेष अपनी जगह बदलता है और उसके साथ–साथ संतो भी अंकेष के साथ दूसरी जगह पर जाकर बैठता है। अब एक टेबल पर सुकेष,कमल और काजल है। दूसरे पर सिर्फ अंकेष और संतो है।

सुकेष,कमल से–तुमसे क्या बात करे क्या ना करे ? समझ मे नही आ रहा है । छोड़ो समझ मे आयेगा तो

बाद मे करेंगे।

कमल वेटर को षराब लाने के लिए ईषारा करता है।

काजल,सुकेष से–तो मेरे बारे मे भी षराब पर थोड़ी चर्चा हो जाय।

सुकेष,कमल से–हाँ तो इसके रूपये तुमने क्यो नही चुकता किए ? तुम्हारा फोन पे काम नही कर रहा है

क्या ?

कमल,सुकेष से–वो तो काम कर रहा है , पर लास्ट समय जो मैने तुम्हे ना चाहते हुए रूपये दिए थे तब

से ही बाईलेन्स '0' (जीरो) है। मैने तो बातो से इसके रूपये चुकता कर ही दिए, सिर्फ रूपयो से

रूपया चुकता नही कर पाए है, वो भी कर देंगे। बसर्ते रूपया वहां से मिले तो जहां इसका

सामान खपाया गया है। क्योंकि उसने हमें नही दिया, हमने इसे नही दिया, और इसने

षायद किसी को नही दिया।

अब सुकेष जोड़ से वेटर को पुकारता है जो मोबाइल चला रहा होता है :– ऐ सोषल मिडिया तेरे मालिक का षक्ल देखने के लिए यहां बैठे है क्या ? देगा या दू तुझे आकर एक । फिर वेटर षराब की एक बोतल लेकर आता है और काजल पैक लगाता है फिर तीनो पीने लगते है। अब सुकेष के गुस्से को देखकर उसे कमल और काजल अभी कुछ बोलना ठिक नही समझता है और कमल काजल को भी ईषारो मे षांत रहने को कहता है।

सुकेष,दोनो को सुनाकर– (नजर झुकाकर) तो मेरा दोस्त, मेरे प्यारे दुष्मन के साथ है। वो दुष्मन जिसके

हाथो मे किसी कातिल का हाथ है। समय से समय को समझ जाओ तो समय

अच्छा चलता है। वरना हम समय से पीछे हो जाते है।

काजल,सुकेष से–सही और बिल्कुल सही कहा आपने । समय तो सबसे बड़ा है।

काजल,कमल से–क्या ? मैने ठिक कहा ना।

अब कमल के तरफ से कोई प्रतिक्रिया नही मिलने पर काजल बातो को वापस ले लेता है।

कमल,काजल से–अभी फिलहाल पीने पर ध्यान दो।

ईधर ईषारो मे संता भी अंकेष के मर्जी के बिना ही एक बोतल षराब मंगाता है और दो ग्लास मे पैक लगाता है। यह देख अंकेष थोड़ा भरक जाता है ,क्योंकि यहां उसके कमल से होने वाली बाते जो होते होते रह जाती है। थोड़ी उसकी गलती से तो थोड़ी संतो की गलती से।

अंकेष,संतो से–दुनियाँ मे पीने के लिए आये हो या जीने के लिए। तुम्हे तो हमने नही बुलाया था यहां पर।

संतो,अंकेष से–हमें लगा आप हमें कहना भुल गए है।

अंकेष,संतो से–हम क्यो भुले अगर तुम्हे साथ लाना हो तो ?

संतो,अंकेष से–ठिक है षराब पीजिए ,फिर देखिए दिमाग कैसे खुलता है आपका ? क्या हुआ आज बात

नही हुई तो, कल हो जाएगी उसमे क्या ? समस्या, समस्या तक ठिक है जब वो दिमाग को

जकड़ने लगे तो इंसान को सजग हो जाना चाहिए। वरना हम खुद अपने दिमाग को छति

पहुचाने लगते है।

अब अंकेष सोचता है कि सही मे अगर आज बात नही हो पाई तो इसमे कोई घबराने की बात नही है आगे फिर कोषिष किया जायेगा। वैसे भी कमल पटरी पर आ ही गया है मानो तो, बस उसे सुकेष से छुप–छुपाकर कही दुसरे जगह ले जाकर भरत मिलाप करना होगा। फिर पड़े ग्लास मे लगे पैक को झट से उठाकर पी लेता है।

अगले दिन जो 15 वीं तारिख है ,आज अर्चना दिन मे कोर्ट पहुँचने वाली है। सबेरे सबेरे अंकेष सोचता है कि क्यो ना एक बार फिर कमल के पास जाकर उसे आज तैयार कर ही लेते है गवाही के लिए। बस यही सोचकर वो अपने घर से निकलता है तभी,,,,,,,,

अंकेष,सूक्खी से–तो तुम आज तैयार रहना दस बजे। हमलोग जायेंगे आज तुम्हारी माँ से मिलने के लिए

कोर्ट मे। क्योंकि आज वो कोर्ट मे पेषी के लिए आने वाली है।

सूक्खी,अंकेष से–तो आज मम्मा घर आ जायेगी ना।

अंकेष,सूक्खी से–मम्मा घर आ जाये, इसलिए वो कोर्ट आने वाली है। अगर जज साहब उन्हे बोलेंगे घर

आने के लिए तो वो आ जायेगी।

सूक्खी,अंकेष से–जज साहब बोलेंगे तब , ऐसे वो क्यो नही आ सकती ।

अंकेष,सूक्खी से–ऐसे वो नही आ सकती जब तक उसे जज साहब बोलेंगे नही । तुम नास्ता करो और

होमवर्क करलो फिर मै आता हुँ।

अंकेष तेजी से कमल के घर के पास सुकेष के नजरो से खुद को बचते–बचाते पहुँचता है। लेकिन पहले उसके दुकान पर जाता है वहां देखता है कि वहा उसके दुकान पर ताला लटका हुआ है यह देखकर अंकेष थोड़ा परेषान हो जाता है फिर वो उसके घर की तरफ बढता है और यह भी सोचता है कि कही उसका सामना सुकेष से ना हो जाए। कमल के दरवाजे के पास पहुँचने पर उसकी माँ भी आज दरवाजे पर नही बैठी हुई है। वो दरवाता खटखटाता है, अंदर से आवाज आती है– रूकिये ! दरवाजा खोलने से पहले कमल कि पत्नि (उर्मिला) यह कहते हुए बाहर निकलती है कि कौन बड़े दिनो के बाद दरवाजा पीट रहा है। फिर कमल की पत्नि दरवाजा खोलती है। सामने अंकेष को देखती है, और उसके दिमाग मे सन्न से एक बात आती है कि इस आदमी (अंकेष) को षायद उसने पहले कही ना कही देखा है, और अंकेष के साथ भी कुछ इसी तरह का हाल है।

उर्मिला,अंकेष से–कहिए।

अंकेष,उर्मिला से–कमल जी है।

उर्मिला,अंकेष से–नही है। षायद मै आपको पहचान रही हुँ ,और आप ।

अंकेष,उर्मिला से–षायद आप कमल की पत्नि हो,,,,,,,

उर्मिला,अंकेष से–वो तो मैं हुँ। मुझे कौन रोक सकता है, ऐसा नही होने से। इससे पहले हम कही या किसी के यहां षादी या किसी फंक्षन मे मिले भी

है, क्योंकि आपको देख कर ऐसा लगता है मानो कुछ पुरानी यादे ताजी सी हो गयी है।

पर यादे कौन सी है ये समझ मे नही आ रही है।

क्योंकि अंकेष थोड़ी जल्दी मे है और वह इन सब बातो मे नही फंसना चाहता है इसलिस,,,,,,

अंकेष,उर्मिला से–ऐसी कोई बाते मेरी समझ मे नही आ रही रही है। वो (कमल) कहां गए है आप बता

सकते हैं।

उर्मिला,अंकेष से–जिस दिन वो हमे बता के जाए कि वो कहां जा रहे है वैसी खुषी किसी–किसी दिन

मिलती है। आज ये खुषी हमें नही मिली है। खुषी मिलती तो तुमसे बाँटती भी।

अंकेष,उर्मिला से–कुछ तो पता होगा कि इस समय वो कहां–कहां जा सकते है।

उर्मिला,अंकेष से–आप हरबराये हुए है, वरना मै आपको बोलती कुछ देर रूक कर उनका इंतेजार करने के

लिए।

अंकेष,उर्मिला से–बहुत जरूरी काम था उनसे । रहने दीजिए बाद मे आता हुँ।

अब अंकेष जाने लगता है।

उर्मिला,अंकेष से–कोई जरूरी काम था तो बता दीजिए, मै बता दुंगी उससे। षायद वो अपने दुकान पर

होंगे।

फिर अंकेष अपने घर पहुँचता है और सूक्खी को लेकर सीधे कोर्ट जाता है। जहां कुछ काले कोर्ट वाले वकीलो के साथ–साथ कैदियो के कुछ अपने लोगो की भीड़ है, जो उन्हे छुड़ाने कोर्ट आये है। कुछ लोग है जो बैठे–बैठे यह सोच रहे है कि उसका आदमी आज भी षायद जेल से छुटेगा या नही। कुछ पुलिस वाले कैदियो को लेकर कोर्ट के अंदर पहुँच रहे हैं। कुछ कैदियो वाली गाड़िया जो धीरे–धीरे कैदियो को लेकर पहुँच रही है। कोर्ट पहुँचन के बाद लोगो की भीड़ मे सूक्खी की नजरे अपनी माँ को यहां वहां ढुंढ रही है, की किधर से उसकी माँ आये और वो अपनी माँ से जा कर लिपट जाये। वो ये भी सोच रहा है कि वो आज अपनी मां को लेकर घर ही चला जाएगा। कुछ महिला कैदियो मे सूक्खी की अपनी मां को खोजने की तलाष जारी है। अंकेष का भी कुछ इसी तरह का हाल है, उसकी आँखे भी कही ना कही अर्चना को ढुंढ रही है, पर जेल से कैदी को लेकर निकलने वाली कुछ गाड़ी ही अभी तक कोर्ट पहुँची है, जिसमे अर्चना नही हैं, पर उसका इंतेजार लगातार जारी है।

ईधर अर्चना कोर्ट जाने के लिए गाड़ी मे सवार हो चुकी हैं, पर आज उसकी कोई साथी कैदी की तारिख नही होने के कारण वो अपने ग्रुप मे अकेली सफर कर रही है, बाकी कुछ और कैदी हैं उस गाड़ी मे पर इसके जान–पहचान की नही होने के कारण ये गुमसुम बैठी हुई है। गाड़ी मे कुछ महिला सिपाही है जो सारी महिला कैदियो को देखकर बारी–बारी से अपना –अपना विचार एक दूसरे महिला सिपाही के सामने प्रकट कर रही है।

अब कोर्ट मे,,,,,,

सूक्खी,अंकेष से–तो माँ कहां मिलेगी , पापा।

अंकेष,सूक्खी से– आ रही है वो, कुछ देर मे पहुँच ही जायेगी।

अंकेष वकील के पास पहुँचता हैं।

अंकेष,वकील से–तो मै आ गया।

वकील–तो आप ही की जमानत करा दुं क्या ?

अंकेष–नही वो (अर्चना) आ रही है।

वकील–बताईगा वो आयेगी तो। मैने सारे कागजात तैयार कर लिए है। कोई गवाह मे बारे मे हमारे बीच

बाते हुई थी, उसका नाम दे सकते है तो बताईये। उसका नाम आज दर्ज करवाना पड़ेगा। वो

आयेगा कब।

अंकेष– अंत समय मे एक रोषनी नजर आयी थी। इसलिए पुरी कोषिष कर रहे है, क्योंकि

उसने (अर्चना) अभी–अभी मुझे बताई है कि एक व्यक्ति था जो उस समय सारी घटना को

देख रहा था ,और मैने आपको कब बताया जब उसने मुझे बताया। वो भी दो दिन पहले।

वकील–कोषिष करो कि गवाह का नाम दर्ज हो जाय।

अंकेष–वो तो आप कीजिएगा ना।

वकील–हाँ मै ही करूंगा, पर तुम्हे तत्पर रहना होगा। समझ रहे हो ना मै क्या कहना चाह रहा हुँ।

अंकेष–आप तो ये बात हमेषा से कहते आ रहे है और आगे भी यही कहिएगा। आपकी झोली को हम भर

देंगे।

वकील–हम वकील मानिये तो मोबाईल के रिंग टोन जैसे है, जैसे–जैसे रूपया डालिएगा वैसे–वैसे बजेगा।

मानते है इस बात को।

सूक्खी,वकील से–मेरी मम्मी कब आयेगी वकील अंकल घर।

वकील,अंकेष से–ये (सूक्खी के बारे मे) उसी (अर्चना) का लड़का है।

अंकेष,सूक्खी से–(सुक्खी को गोद मे उठाते हुए) हां जी, यही तो वह लड़का है जो अपनी माँ को जेल से छुड़ाने के लिए लगातार कोषिष

कर रहा है।

वकील,सूक्खी से–आ जायेगी। तो इस प्यारे बच्चे का नाम क्या है।

सूक्खी–मेरा नाम सूक्खी हैं।

वकील–अच्छा ! तो कोषिष करेंगे की तुम हमेषा सुखी रहो।

वकील,अंकेष से–तो आप लोग वहां बैठिये , वो (अर्चना) आयेगी तो बताईये हमें। तब तक हम दुसरा कुछ

काम कर लेते है।

यह बाते सूनकर अंकेष और सूक्खी पास के बेंच पर जाकर बैठते है, और षुरू होता है अर्चना के आने का इंतेजार। थोड़ी देर बाद अर्चना कैदी वाहन से नीचे उतरती है, उसके हाथो मे हथकड़ी लगी होती है जिसकी रस्सी एक महिला सिपाहे अपने हाथो मे पकड़े हैं। इस तरह अर्चना दुसरी बार कोर्ट मे पहुँची है और वो अपने हाथो मे लगे हथकड़ी को पाकर अपने–आप मे षर्मषार है और यह सोचकर परेषान है कि अगर सूक्खी , अंकेष और हमारे जान पहचान वाले कोई भी लोग इस तरह हमें यहां देखेंगे तो उस समय मेरी नजरे क्या उनसे आँखे मिला पायेंगी। अपने पुराने दिनो को कोसते हुए दुखी होकर अपने नजरो को झुकाकर आगे बढती हुई अर्चना का सामना सूक्खी और अंकेष से होता हैः– अर्चना देखती है कि सूक्खी उसके तरफ दौड़ता हुआ आ रहा है। क्योंकि अर्चना के देखने से पहले ही सूक्खी की नजर उसपर पर चुकी थी। सूक्खी अपनी माँ मे पास जाकर इस कदर उसके कमर पकड़ कर लिपट जाता है मानो उसे पहली मरतवां ये पता चला हो की ये उसकी माँ है जो उससे जन्म के बाद आज पहली बार ही मिल रही हो। सूक्खी ना अपने माँ को छोड़ता है और ना ही उसे एक कदम आगे की ओर बढने देता है। माँ बेटे की इस तरह का प्यार देखकर महिला सिपाही भी कुछ देर अपने आप को स्थिर कर लेती है और स्नेह भरी नजरो से दोनो को देखने लगती है। अंकेष भी दोनो के पास पीछे से पहुँच चुका है और सूक्खी के पीठ पर हाथ रखकर सहलाने लगता है और अर्चना के हाथो को पकड़ कर थोड़े प्यार भरे नजरो से उसके हाल को जानने की कोषिष

करता है। अर्चना के पास बहुत सारी बाते अंकेष से मिलकर कहने के लिए है, जिसे वो अपने मन मे दबाये हुए है और उसके साथ कुछ पल गुजारने के लिए बेताब है पर वो समय के सामने मजबुर है। ईषारो–ईषारो मे दोनो एक दूसरे के हाल को समझ चुके है। अर्चना सूक्खी को अपने गोद मे ले लेती है और फिर अपने कदम को आगे की ओर बढाती है ,और उसे चुमना लगातार जारी रखती है। इस दरमियां सूक्खी अपनी माँ से कुछ भी बात नही करके लिपटा ही रह जाता है। अंकेष वहां से हटकर वकील के पास जाकर उसे अर्चना के आने की जानकारी देता है। दबे कदमो को लेकर फिर अंकेष अर्चना के पास पहुँचता है और बार–बार उससे नजरे मिलाकर ना जाने क्या–क्या कहने की असफल कोषिष करता रहता है पर समय पर किसका जोर है वो तो अपने रफ्तार मे चल रहा था और अर्चना भी समय के साथ चलते–चलते जज साहब वाले हॉल मे पहुँचती है। तब किसी दुसरे लोगो के केष की सूनवाई चल रही थी। सभी लोग जज साहब की बातो को ध्यान से सुन रहे थे, जो कठघरे मे खड़े एक दोषी से बात कर रहे थे–

जज,दोषी से–तो तुमने गलती करने से पहले ये बात नही सोची की तुम्हारे साथ कानून के हिसाब से क्या होने वाला है, और यहां खड़े होकर सफाई दे रहे हो कि मै बेगुनाह हुँ।

दोषी–मैने अपने भाई को नही मारा है,उसे उसकी पत्नि के कारण चोट लगी है।

जज–तो तुम्हारा भाई तुम पर क्यो आरोप लगा रहा है कि तुम्ही ने उसे मारकर घायल किया है। ये बात तुम्हारा भाई आकर कहेगा कि इसमे तुम्हारी गलती नही है।

दोषी का वकील,जज से–वो अभी दिमागी रूप से मरीज है।

जज,दोषी से–क्यो ? इतना मारा तुमने अपने भाई को।

दोषी,जज से–मैने नही मारा उसे, वो पहले से दिमागी रूप से परेषान है,जिस कारण से झगरा हुआ। वो

वैसा ही है ,इसलिए ऐसा हुआ।

जज,दोषी से–तो उसकी ईलाज क्यो नही कराई ? जो मामला यहां तक पहुँच गया।

दोषी,जज से–मै उसका ईलाज कैसे कराउंगा ,? मै तो उस समय जेल मे था।

जज,दोषी से–(आष्चर्य से) जेल मे थे । जेल मे क्यो थे ?

दोषी,जज से–क्योंकि मेरे भाई ने मुझे जेल भिजवा दिया था, और मेरे सारे सम्पत्ति को वो हड़पना चाहता था इसलिए मुझ पर जान से मारने का आरोप लगाकर वो मुझे झुठे केष मे फंसाकर अंदर करवा दिया।

जज,दोषी से–इसलिए तुमने उसे इतना मारा की उसकी दिमागी हालत ही खराब कर दी।

दोषी,जज से–वो बार–बार ऐसा करता है कि मै जेल मे ही रहुँ।

दोषी का वकील,जज से–ये (दोषी) कुछ दिन पहले ही जेल से बेगुनाह साबित होकर निकला है।

जज,दोषी से–तुम्हारी सम्पत्ति वो क्यो लेना चाहता है ? तुम्हारी षादि हुई ।

दोषी,जज से–हां । पर पत्नी चली गयी छोड़ के।

जज,दोषी से–क्यो ?

दोषी,जज से–मेरे भाई और भाभी ने उसे भगा दिया। ताकि उसे हिस्सा ना मिल सके।

जज–उसके चाहने से तुम्हारी पत्नी क्यो भाग गई ?

दोषी–वो लोग हमसे उसका (पत्नी से) झगरा करवाते थे।

जज गुस्साते हुए,,,,,,

जज,दोषी से–सही मे तुम ही लोगो के लिए जेल बना है, तुम उसी मे रहने के काबिल हो। क्राईम वाली

मूवी बहुत ज्यादा देखते हो या कॉमेडी वाली। या तो तुम हमें बेवकुफ बना रहे हो या कॉमेडी

करके खुद को बचाना चाह रहे हो। पर इस बार तो तुम्हे जमानत मिलने वाली है नही।

जज,दोषी के भाई के वकील से–अगली तारिख मै एक सप्ताह के बाद का रखता हुँ ,यानी इस महिने की 23 तारिख को, और इस दिन आपका मोवक्किल यानी इस महापुरूष के भाई को भी बुलाईये। इसके साथ अब वो भी जेल जायेगा। हां एक बात और उसकी दिमागी हालत ठिक नही है, तो उससे संबंधित सारे प्रिपकेष्पन जो डॉक्टर ने लिखे होंगे वो भी। साथ ही साथ इनके (दोषी) भाई का पैतृक सम्पत्ति का ब्योरा।

अब दोषी व्यक्ति जज के सामने अपने दोनो हाथ जोड़कर अपने मन को हल्का करके षांत हो जाता है।

जज,दोषी से–जाईये तब तक जेल की हवा मे साँस लीजिए।

जज,अपने पेषकार से–अगली फाईल रखिये। मै पाँच मिनट का ब्रेक लेता हुँ।

जज अपने कुर्सी पर से खरा होकर वॉष रूम के लिए जाते है और ईधर सरकारी पेषकार जोड़ से आवाज पुकारता है–केष नंबर 168/वर्ष 2022 अर्चना प्रिया बनाम सुकेष मजूमदार।

अर्चना सूक्खी को गोद मे लिए हुए कुर्सी पे बैठी हुई है और अपना नाम सुनकर वो कठघरे मे जाने के लिए तैयार है ,पर अर्चना को सूक्खी छोड़ना नही चाहता है। महिला सिपाही सूक्खी को अपने गोद मे लेकर उसे अंकेष को देना चाहती है पर वो बहुत ही व्यवस्थित रूप से अपनी मां को पकड़े हुए कहता है – मै अपनी माँ को नही छोरूंगा। अर्चना,सूक्खी से–थोड़ी देर के लिए जाओ पापा के पास।

सूक्खी,अर्चना से–नही मै आपको नही छोरूंगा। बस घर चलिए।

अर्चना,सूक्खी से–हां हम तुम्हारे साथ ही चलेंगे। उसी के लिए तो जज साहब बुलाये है।

सूक्खी,अर्चना से–आप फिर झुठ बोल रहे है। आज फिर आप नही जायेंगे मेरे साथ।

अर्चना,सूक्खी से–(जज के कुर्सी के तरफ सूक्खी को दिखाते हुए) वो उस पर जो बैठेंगे, वही आज बतायेंगे

की हमें घर जाना है तुम्हारे साथ। अब ना चाहते हुए भी सूक्खी अपनी माँ को छोड़ते हुए बगल मे खड़े अंकेष के पास सर झुकाकर चला जाता है।

कोर्ट रूम मे उपस्थित सारे लोग यह घटना को देख रहे है और यहां सुकेष का वकील भी अर्चना को सजा दिलाने के लिए अपने सबुतो और तर्क को समेटे तैयार बैठे है। जज आकर अपने कुर्सी पर बैठते है और अगली केष की सूनवाई षुरू करते है।

जज,अर्चना के वकील से–षुरू किजिए।

अर्चना का वकील,जज से–ये जो कठघरे मे महिला (अर्चना) खड़ी है , उसपर इसके पति ने अपने माँ की हत्या करने

का आरोप लगाया है। जो कि सरासर गलत है। क्योंकि जिस समय इनकी सास यानी

इनके पति की माँ इसके साथ बाता–बाती कर रही थी और इसे इसके पति से थप्पड़

मारवा रही थी तो यह अपने खुद बचने के लिए अपने कमरे मे बंद हो गई। फिर खिड़की

से यह अपने पति और अपने सास को, जो भी हो जबाव दे रही थी। उसी दरमियां इनकी

सास अपना आपा खोकर जोड़–जोड़ से चिल्लाने लगी और किसी चिज से टकराने के

कारण वो पीछे की ओर सिर के बल गिर गई। जिस कारण उनके सिर मे गहरी चोट लगी

और वो बेहोष हो गयी।

जज,सुकेष के वकील से–हां आप कहिये।

सुकेष का वकील,जज से– इनके (अर्चना) पति जो इस केष के आँखो देखा गवाह है। उन्होने अपनी पत्नी

यानी इनपर (अर्चना) आरोप लगाया है कि इन्होने ही अपनी सास को इतनी

जोड़ से धक्का मारकर जमीन पर गिराया कि वो दुबारा खड़ी नही हो सकी और

उसके सर पर चोट लगने के कारण वो उसी वक्त मर चुकी थी।

जज,सुकेष के वकील से–तो इसके पति ने इसे रोका क्यो नही ? उसके कोषिष करने से तो मामले को

टाला जा सकता था।

सुकेश का वकील,जज से–वो बीच–बचाव कर ही रहा था , इसी दरमियां जब इसे (अर्चना) मौका मिला तो इसने उसे (सुकेष की माँ को) जोड़ से धक्का मार दिया, और बुढे आदमी को अगर जोड़ से कोई धक्का मारता है तो क्या होगा यह आप भी महसूस कर सकते है।

जज,सुकेश के वकील से–तो इनका (अर्चना) पति कहां है ?

सुकेश का वकील,जज से–वो आज नही आ पाये है।

जज–उन्हे तो रहना था आज। अगर वो किसी पर आरोप लगा रहे है तो इसके लिए उसे कोर्ट मे रहना था पर वो नही है तो केष की सुनवाई कैसे संभव है।

जज,अर्चना से–तो आपको कुछ कहना है तो कह सकते है। आराम से कहिए , पुरा मौका मिलेगा आपको।

अब अर्चना की धड़कने एकदम से धक–धक करने लगती है और वो अब क्या बोलेगी उसे खुद भी नही पता है और ना ही उसे वकील ने कुछ बताया ही है कि क्या बोलना है। फिर वो कुछ ही पलो मे अपने आपको स्थिर कर लेती है और –

अर्चना,जज से–मेरी सास मेरे पति से मुझे मरवाना चाहती थी। क्योंकि उसके सभी ईषारो पर मै नही नाच

सकती थी। और उसकी बातो को लेकर मेरा पति मेरी कोई बाते नही सूनता था। जो काम

हमसे नही होने वाला रहता था वो काम भी हमसे करवाना चाहती थी। जैसे सभी लोग खाना खायेंगे तब हमे खाना होगा, जब तक घर का कोई आदमी अगर भुखा है तो हमें भी भुखा रहना होगा। अगर अपने तरफ से मै कुछ भी सफाई देती तो मेरे पति से मुझे मार लगवाती थी। मै अपने पसंद के कपड़े नही पहन सकती थी, और ना ही सवेरे 06 बजे के बाद तक सो सकती थी । चाहे मेरी तबियत ही क्यो ना खराब हो। फिर भी कोम्प्रramाईज करके जिंदगी गुजार रही थी। लेकिन एक दिन तो मेरी सास ने हद ही कर दी।

जज,अर्चना से–क्या ?

अर्चना,जज से– उसने (सास) बातो–बातो मे कहा कि सांसे भी मेरी मर्जी से लेनी पड़ेगी। तब मैने सोचा कि बर्दाष्त करना भी एक प्रकार का गुनाह है। फिर मैने ठान लिया की अब बर्दाष्त नह करूंगी। जो सही है वो करूंगी और जो गलत है उसका विरोध करूंगी और ऐसा मैने किया, जिस दिन ऐसा किया उस दिन तो मेरा पति और मेरी सास दोनो मुझे मारने पर उतारू हो गए। ऐसा लग रहा था कि वे हमे मार ही देंगे। तब मै अपनी जान बचाने के लिए अपने कमरे मे चली गयी।

जज,अर्चना से–उसके बाद क्या हुआ ?

अर्चना,जज से–उसके बाद मेरे वकील साहब ने जो बताई, ठिक वैसा ही हुआ।

अर्चना का वकील,अचना से–तो आप ये बता सकते है कि ये सारी घटनाये वहां पर कोई देख भी रहा था।

अर्चना,अपने वकील से–हां ! कई सारे लोग इकठ्ठा हो गए थे।

अर्चना का वकील,जज से–ये बाते गौर करने वाली है, उस समय की वहां कई सारे लोग जमा होकर ये मामले को देख रहे थे। पर पुलिस ने इनमे से किसी के ब्यान पर ध्यान ना देकर सिर्फ और सिर्फ इसके (अर्चना) पति के द्वारा लगाए गए आरोपो को सही मान कर इसे गिरफ्तार कर लिया। लेकिन पुलिस अबतक कोई पुख्ता सबुत नही जुटा पाई है।

सुकेष का वकील,जज से–मै बताता हुँ , पुलिस अपना काम कर रही है ,और वो सबुत जुटा रही है। जिससे ये साबित हो सके की अर्चना प्रिया ने आवेष मे आकर अपनी सास को मार डाला।

अर्चना का वकील,जज से–तो मै कह रहा था वहां पर वारदात के वक्त मौजूद लोगो मे से एक व्यक्ति गवाही देने के लिए तैयार है कि वहां असल मे क्या–क्या हुआ था, और इनके सास को किसी ने मारा या वो खुद अपनी विनाष वाली बुद्धि के कारण काल के गाल मे समा गयी। गवाह का नाम रजिस्टर्ड करने के लिए मैने पेज 32 के कॉलम को भर दिया है और अनुरोध पत्र के पारा 03 मे इसका उल्लेख भी कर दिया है।

गवाह वाली बाते सूनकर वहां इस केष से संबंधित सभी लोग चौकन्ने हो जाते है और सुकेष का वकील भी आष्चर्य करने लगता है कि सारे लोगो को तो सुकेष ने अपने अंदर कर लिया था कि कोई भी गवाह इस केष के लिए तैयार नही होगा, पर ये कैसे हुआ ?

अर्चना का वकील जज से–एक अनुरोध है आपसे की ये गवाह का नाम ना लिया जाय यहां पर लोगो के सामने। वरना हो सकता है उसे डर–धमका कर गवाही देने से रोक दिया जाय। वो अगली तिथि को जब आप तारिख दीजिएगा तो वो हाजिर हो जाएगा।

जज,सुकेष के वकील से–आपको कुछ कहना है, और पुलिस की डायरी अभी तक पुरी होकर क्यो नही आयी है।

सुकेश का वकील,जज से–वो तो हुजूर कानून का काम है। बस मेरा यही कहना है कि वारदात के वक्त वहां पर मुख्य रूप से तीन ही लोग थे ।

एक माँ, दूसरा उसका बेट और तीसरी अर्चना प्रिया। इन तीनो मे एक जिनकी हत्या हुई, दूसरा उसका बेटा तो उसे मार नही सकता। उसके अलावे सिर्फ एक ही व्यक्ति बचती है जो आरोपी इस वक्त कठघरे मे खड़ी है, वो है उसकी बहु। जिसने अभी –अभी बयान दिया है कि वो अपने सास के नियम कायदो से तंग आ गई थी और वो इन सबो के लिए अपने सास का विरोध करना षुरू कर दी थी।

अर्चना का वकील,सुकेष के वकील से–अगर गलत काम के लिए कोई विरोध करे तो इसमे गलती ही क्या

है ?

सुकेष का वकील, अर्चना के वकील से–इसका मतलब ये नही है कि आप किसी की हत्या कर दे और उसे

घटना का रूप देने लगे।

अर्चना का वकील–यहां हत्या और घटना की बात तो आप कह रहे है। मेरे मोवक्किल और मैने तो ऐसी बाते कभी नही की । मैने तो बस ये कहा कि मेरी मोवक्किल ने अपनी जान बचाने के लिए खुद को अपने कमरे मे कैद कर लिया। जो हर कोई करता है ,आप भी रहते तो यही करते, और आपको ये पता होना चाहिए कि सुकेष की माँ का यानी इस मोहतरमां की सास की मौत हॉस्पिटल पहुँचने के कुछ पल पहले ही हुई। जबकि इसके घर से यानी वारदात के जगह से हॉस्पिटल जाने मे कम से कम तो आधे घंटे लगते है। इससे स्पष्ट है कि जब झरप हुई तब उनका देहांत नही हुआ। वो खुद गिरि वो बेहोष हुई जिसके बाद उसे हॉस्पिटल ले जाया गया ।

जज,सुकेष के वकील से–आपके तरफ से कोई गवाह है जो इस सारी घटनाओ को बारिकी से बता सके,

बगैर इसके (अर्चना) पति के अलावे, कि ये (अर्चना) गुनेहगार है। ताकि कोर्ट संटुष्ट हो

सके इस बात के लिए की मरने वाले को जानबुझ कर मारा गया है, ना कि वो

अपने गलती से मरी है। फार्मुला तो आपको याद है ना सौ गुनाहगार और एक

बेगुनाह वाली। आप समझ रहे है ! मै आपको क्या समझाना चाह रहा हुँ, और

समझेंगे क्यो नही ? आप इतने अनुभवी लोग जो है।

सुकेश का वकीज,जज से–हुजुर।

जज,सारे लोगो से– तो केष के लिए आवष्यक साक्ष्यो और गवाहो के मद्देनजर मै केष की अगली सूनवाई की तारिख अगली माह के 19 तारिख को निर्धारित करता हुँ, और आपलोगो से अनुरोध करता हुँ कि केष से संबंधित सारे गवाहो और कागजात के साथ अगली तारिख को उपस्थित होंगे। कोर्ट केष से रिलेटिव पुलिस को वारदात के समय की सारी गतिविधियो का बारिकी से विवरणी बनाकर तथा आरोपी के विरूद्ध जो भी सबूत हो उसकी रिपोर्ट अगली तारिख से पुर्व कोर्ट मे पेष करने का आदेष देती है। जिसमे एफ0 आई0 आर0 की कॉपी से लेकर पोस्टमार्टम तक की सारी आवष्यक कागजात सम्मिलित होनी चाहिए। अगला केष,,,,।

अब अर्चना कठगरे से निकलती और सूक्खी को फिर से गोद मे ले लेती है और अंकेष को बड़े ही हताष भरे नजरो से देखती है उसके करीब जाती है और बात करते करते दोनो बाहर निकलते है । पीछे से अर्चना के वकील साहब अंकेष को जवाब देते है,,,,,फिर चलते–चलते,,,,,

वकील,अंकेष से–देखिए अगर गवाह नही लाईयेगा तो सजा मुक्करर भी हो सकती है,फिर लम्बा चक्कर मे

फंस सकते है। फिर हाई कोर्ट और सुप्रिम कोर्ट करना पड़ेगा, परेषान हो जाईयेगा।

जिसका नाम आपने गवाह मे दिया है वो विष्वासी तो है ना। या पाला झाड़ कर भागने

वाला तो नही है।

अर्चना यह बात सूनकर अब अंकेष का चेहरा देखने लगती है और सोचने लगती है कि अंकेष अब किसके पीछे पड़ा है गवाही के लिए, हमे इसने बताया नही। अंकेष अर्चना के चेहरे को देखकर समझ जाता है कि अर्चना इस बारे मे जानना चाहती है।

अंकेष,अर्चना से–मै इस बारे मे तुम्हे बताना चाह रहा था। लेकिन वो (कमल) आया ही नही ,इसलिए मैने

तुम्हे नही बताया।

अर्चना,अंकेष से–किसकी बात कर रहे हो तुम ?

अंकेष,अर्चना से–है एक तुम्हारे उसका (सुकेष) पड़ोसी ही। वो तैयार हो गया था उस दिन की सारी घटना को सही–सही बताने के लिए।

अर्चना,अंकेष से–फिर क्या हुआ ? और क्या नाम है उसका ?

अंकेष,अर्चना से–तुम जानती होगी , कमल नाम है उसका ।

अर्चना,अंकेष से–उसे तुमने कैसे ढुंढा ?

अंकेष,अर्चना से–तुम जानती हो उसे !

अर्चना,अंकेष से–नही, षायद वो जानता होगा।

अंकेष,अर्चना से–हां वो जानता है तुम्हे।

अर्चना,अंकेष से–तो वो कमल कैसे उसके (सुकेष) सामने सही बाते यहां आकर कहेगा।

अंकेष,अर्चना से–वो सब तुम सोचना छोड़ दो, उसी सब बातो का तोड़ निकालने के लिए हम लगे हुए है।

अर्चना का वकील,अंकेष से–तो आप लोग बाते कीजिए, हम चलते है, जाते समय हमसे मिल के ही

जाईयेगा।

अंकेष ईषारो मे उसे हां मे जवाब देता है और यह देख कर वकील आगे बढ जाता है।

अर्चना,अंकेष से–हमे लगता है कि हमें सजा काटनी पड़ेगी। क्योंकि वहां (अर्चना के पति का घर) कोई ऐसा हमे नजर नही आया कि हमारे बारे मे वहां की सारी सही बाते कोई यहां कोर्ट मे आके बता सके।

अंकेष,अर्चना से–दिमाग मे जो बाते लाओगी, दिमाग उसी को पुरा करने मे जुट जाता है। ये बाते तुम्हे भी पता होगी षायद।

अर्चना,अंकेष से–अब क्या हम अपने आप को भी झुठ बोलने लगे।

अंकेष,अर्चना से–बोलना पड़ेगा, इसके (सूक्खी के सर पर अंकेष हाथ फेरते हुए) लिए। अगर तुम सही हो तो टुट कर भी जुट जाओगी। बस हिम्मत को बनाये रखना, और जब भी मन बैचेन होने लगे तो इस बच्चे (सूक्खी) को जरूर याद करना, की कोई है जो तुम्हारे आने का इतेजार कर रहा है। यह एक ऐसा वक्त है जो तुम्हे हर वक्त तोड़ने की कोषिष करेगा। तुम्हारे दिमाग मे हरेक तरह के गलत बातो को भरेगा , जिससे तुम अपना संतुलन खो दो । अगर ऐसा हुआ तो मानो कोर्ट मे तुम उसके वकील के

सवालो का सही जवाब नही दे पाओगी तो तुम सही होते हुए भी हार जाओगी। जिस कोषिष मे वह (सुकेष) लगा हुआ है।

अंकेष की इतनी सी बाते सुनकर अर्चना सूक्खी को गोद मे लिए हुए उसे और जोड़ से पकड़ कर धीरे–धीरे रोने लगती है, फिर उसकी आँखो से छलकते हुए आंषु जमीन पर गिरकर गहरे निषान बनाने लगते है जो अंकेष के साथ–साथ उसके साथ मे खड़ी महिला सिपाही भी देख रही होती है। यह सारी बाते सूनकर सूक्खी को अब लगने लगा है कि माँ आज भी षायद घर नही जा पायेगी। फिर भी वह अपनी माँ को छोड़ना नही चाहता है। अब समय है सूक्खी को अपने से अगल करके अंकेष के हवाले करने का। जैसे ही अर्चना सुक्खी को अंकेष के गोद मे देने के लिए अंकेष को ईषारा करती है और उसे सुक्खी को देने की कोषिष करती है यह महसूस करते ही सूक्खी जोड़ से रोने लगता है,,,,,

सुक्खी,अर्चना से–मै भी जाउंगा जेल, आपके साथ।

अर्चना,सूक्खी से–जिद नही करते बेटे, मुझे जाना ही पड़ेगा। फिर तुम आना हमसे जेल मे मिलने के लिए। मै तुम्हारे पापा को कह देती हुँ वो लेकर आयेंगे तुम्हे। मत रोओ, कितना रोते हो तुम। तुम तो कितने बहादुर थे, फिर अब ऐसा क्यो करने लगे। तुम तो मम्मा की हरेक बाते मानते थे फिर अब क्या हुआ ?

सूक्खी,अर्चना से–पापा मुझे रोज नही ले जाते तुमसे मिलाने के लिए। मुझे घर मे अकेले मन नही लगता, मेरे साथ कोई खेलता है तो सब तुम्हारे बारे मे पुछते है, और किसी से झगरा होता है तो मै घर आकर किसी से कह भी नही पाता हुँ। मुझे रातो को नींद नही आती है आपके बिना, और सारे बच्चे अपने मम्मी मे साथ अपने घर मे रहते है।

अर्चना,सूक्खी से–बहादुर बच्चे ऐसे कमजोर करने वाली बाते नही बोला करते। कमजोरी को कभी –कभी छुपाना पड़ता है। वरना तुम खुद कमजोर पर जाओगे।

ये सारी बातो को आराम से सूनने के बाद बड़े ही आराम से महिला सिपाही ,,,,,

अर्चना से–सुनिये ! आगे हमें भी जवाब देना पड़ता है। आप लोग जल्दी कीजिए,दुसरे कैदी को भी लाना हैं।

महिला सिपाही,अंकेष से–आप , आप बच्चे को लिजिए। वो तो रोयेगा ही, आप उसे लिजिए जल्दी से और उसे समझाईये कि वो फिर अपने माँ से आकर मिल सकता है।

महिला सिपाही,सूक्खी से–आओ बाबू ,मेरे पास आओ मै तुम्हे फिर से तुम्हारी मम्मी के पास ले चलुंगी।

महिला सिपाही ,दोनो से–आप लोग चलते–चलते बात कीजिए , ताकि गाड़ी के पास भी पहुँच सके।

अब ना चाहते हुए भी अर्चना और अंकेष के कदम आगे बढने को मजबुर है और अर्चना सूक्खी को छोड़ने के लिए भी। अर्चना और अंकेष की नजरे एक दुसरे पर टिकी है जो हट नही रही है और समय लगातार बीतता जा रहा है। अंकेष चाहता है कि काष कुछ पल हमलोग साथ मे गुजारते तो दिल को थोड़ा सुकून मिले, पर ऐसा हो नही पा रहा है। करे तो करे क्या और लड़े तो लड़े किससे यहां पर अंकेष भी अंदर से लाचार सा दिखाई दे रहा है। फिर भी ये मौका नही गवाने का अंकेष कोई कसर नही छोड़ना चाहता है और फिर,,,,,

अंकेष,महिला सिपाही से–तो कोई उपाय है , जो हमलोग वहां बेंच पर बैठकर कुछ बाते कर ले अकेले मे।

महिला सिपाही–यहां सिर्फ बात ही कर सकते है आप लोग, और कुछ नही, वो अब भी कर रहे है।

अंकेष–(प्रार्थना पुर्वक अनुरोध) फिर भी कुछ समय अलग मे बैठकर, अगर आपकी इजाजत हो तो।

महिला सिपाही–बस पाँच मिनट। पर वहां तो मै भी रहुंगी।

ठ

अंकेष के इस तरह के लगाव को जानबुझ कर भी अर्चना मना नही कर पा रही है यह जानते हुए कि उसके हाथो मे लगी हथकड़ी के षर्म को उसे झेलना पड़ रहा है। अब दोनो पास के ही एक बेंच पर जाकर बैठते है सूक्खी अब भी अर्चना के गोद मे ही चिपका हुआ है और अब कुछ पल उसे अर्चना भी अपने गोद मे ही रखना चाहती है।

अंकेष,अर्चना से–एक दिन हमलोग जरूर साथ मे रहेंगे। उस समय ये पाँच मिनट किसी से मांगने की जरूरत नही होगी। मै वैसी ही कोषिष मे लगा हुँ।

अर्चना,अंकेष से–(सर हां मे हिलाते हुए) , हां ! पर तुम भी मेरे लिए बहुत परेषान हो चुके हो। अब कितना परेषान होगे। मैने तो गलती ऐसी की नही है जिसकी सजा मै भुगत रही हुँ और साथ मे तुम भी। सबसे ज्यादा तो मेरा ये बच्चा। इसकी (सूक्खी) क्या गलती है जो ये हमारे पास रह नही सकता।

अंकेष,अर्चना से–किसी की कोई गलती नही है, बस कुछ दिनो की परेषानी है जो हमेषा नही रहेगी। क्योंकि कोई भी चीजे स्थायी नही होती। तो और कुछ बताओ ये सब कुछ से हटकर, जो तुम्हे भी अच्छा लगे और हमें भी।

अर्चना,अंकेष से–समझ मे नही आता क्या बोलू और कहां से षुरू करू ? पिछले बार हमलोग कब हँसे थे ये भी नही याद है।

अंकेष,अर्चना से–वो बाते याद मत करो ना, जो याद करने का मन ना करे और जिसे याद करने पर फिर से भुल जाने का मन करता हो। वैसे कुछ याद करो जिससे अभी के समय को जीया जा सके।

अर्चना,अंकेष से–बहुत खुष थी मै, जब उसके (सुकेष) पास से तुम्हारे पास रहने आयी थी। फिर तुमने कहा उसे पुरी तरह छोड़कर ही आना ठिक रहेगा। फिर मै तुम्हारी बात मानकर उसके पास चली गई। अगर नही जाती तो मामला बहुत पहले ही खत्म हो गया रहता। ऐसी नौबत ही नही आती। ना मै वापस जाती और ना ही मेरे साथ ऐसा होता ,और ना तुम परेषान होते।

अंकेष,अर्चना से–तुम इस तरह की बात करोगी तो मै बाहर से तुम्हारे लिए क्या कर पाउंगा जो। अगर

कुछ कर भी रहे है तो इस तरह की बातो से दिमागी संतुलन खराब हो सकता है।

अर्चना,अंकेष से–अब तुम्हारी परेषानी को कौन समझने वाला है हमारे सिवाय।

अंकेष,अर्चना से–अभी मेरी परेषानी छोड़ो तुम अपनी देखो और सकारात्मक सोचो। क्योंकि हम जैसा सोचते

है वैसा कर भी सकते है। कमल अगर पुरी तरह तैयार हो जाता है तो उसे मै तुम्हारे पास

लेकर आउंगा, उसे तुम सारी बाते सही – सही बताना । फिर उसे उसी तरह से तैयार

किया जाएगा।

अर्चना,अंकेष से–उससे पुछकर तुमने गवाही मे उसका (कमल) नाम दिए हो।

अंकेष,अर्चना से–हां तो और !बगैर किसी के ईजाजत से उसे गवाह बनाकर क्या फायदा? वो आयेगा कभी।

अर्चना,अंकेष से–तो क्या वो आज आने वाला था ?

अंकेष,अंर्चना से–अरे क्या बताये ?कभी –कभी जैसे वर्षो मे लगने वाला ग्रहण का संयोग एक ही दिन एक ही समय पर होता है ना , उस दिन (बीयर बार मे) ठिक वैसा ही हुआ मेरे साथ। जब उससे बात करने के लिए उसके बताए जगह पर गया तो।

अर्चना,अंकेष से–कहां डांसबार या बीयरबार या और कोई पीने वाली जगह पर जहां कमल ने उसे (सुकेष)

भी बुलाया होगा।

अंकेश,अर्चना से–था तो बीयरबार ही पर वो (सुकेष) तो वहां अचानक से पहुँचा था।

अर्चना,अंकेष से–फिर कमल ने तुम्हे सेम टाईम मे ही क्यो बुलाया ? जिस समय वो (सुकेष) वहां आ

सकता था।

अंकेष,अर्चना से–पर वो तो वहां अचानक से आया था।

अर्चना,अंकेष से–तुम कमल से आज मिलो हो ! और कमल उसे (सुकेष) वर्षो से जानता है,षायद। तो फिर

वो तुम्हारी क्यो सूने और मदद के लिए सोचेगा भी क्यो ?

अंकेष,अर्चना से–षायद मै पहले गया उसके पास इसलिए।

अर्चना,अंकेष से–मेरा तो कहना हैं पुरी तहकीकात करके उसे तैयार करना, हमें लगता है की कही वो

(कमल) पीछे ना हट जाय।

अंकेश,अर्चना से–ऐसा नही होगा ,अगर ऐसा हुआ तो और भी कई रास्ते है। बोलने का तो मन नही कर

रहा है ,पर अब तुम्हे जाना होगा गाड़ी मे।

महिला सिपाही,अंकेष से–तो हो गया आपका !

अंकेष,महिला सिपाही से–हां ज्यादा तो नही पर थोड़ी बात जरूर हुई, जो जरूरी थी।

अब अर्चना सूक्खी को अपने गोद मे लिए खड़े होकर अंकेष के साथ–साथ गाड़ी की ओर बढती है। साथ मे महिला सिपाही भी है जो हथकड़ी की रस्सी पकड़े हुए साथ मे चल रही है। गाड़ी के पास पहुँचने पर अब अर्चना सूक्खी को अपने गोद से अंकेष को देने के लिए तैयार है,,,,,

अर्चना,अंकेष से–इसे अभी तुम्हारी देख–रेख की जरूरत है।

सूक्खी अपने माँ को छोड़ना नही चाह रहा हैं, अब अर्चना थोड़ा बल पुर्वक सूक्खी को जबरदस्ती अपने षरीर से छुड़ाते हुए अंकेष को थमाती हुई गाड़ी पर चढ जाती है। सूक्खी अब जोड़ से रोने लगता है और अंकेष के गोद से उतरकर उस कैदी वाली गाड़ी पर भी चढने की कोषिष करने लगता है। फिर अंकेष उसे जोर से पकरकर अपने गोद मे ले लेता है,,,,,,,,

अंकेष,सूक्खी से–तो अगली बार तुम्हे आने का मौका नही मिलेगा , सोच लो।

सूक्खी,अंकेष से–नही –नही, मुझे मम्मा के पास जाना है।

ये सारी हरकतो को देख अर्चना के आँखो से आँषु निकलने लगते है। अब गाड़ी का दरवाजा बन्द हो चुका है सूक्खी लगातार रोये जा रहा है। अर्चन अंकेष से इषारो मे सूक्खी को ले जाने को कहती है। फिर अंकेष सूक्खी को कस के पकड़ कर अपने साथ लेकर उस जगर से वकील के पास पहुँचता है।

फिर मन–ही–मन अर्चना अपने आँषू बहाते हुए सोचती है–जिंदगी मे क्या मिलता है और कितना मिलता है ये तो सब को पता है, पर जो मिल के भी ना मिलेगा ये हम कैसे जान पाएंगे ? जो उसे रोक सके।

अंकेष वकील के पास पहुँचकर उसे कुछ रूपये देता है फिर वकील उसे इषारो मे कुछ पल रूकने को कहता है।

वकील,अंकेष से–तो अगली बार उसे (कमल) पुरी कोषिष करना है लाने के लिए। वो जैसे ही आपसे मिलेगा,उसे मेरे पास जरूर लेकर आईयेगा। बाकी उसे सब कुछ समझा देंगे, और हमारे सामने वाले जो वकील साहब है वो भी पुरी कोषिष के साथ उस दिन मैदान मे उतरेंगे। इसलिए ध्यान रहे गवाह इधर उधर भटक ना पाए। उसे कुछ चीनी की चासनी भी चटानी पड़े

तो चटाते रहना । वैसे इस सब बातो का तुम्हे पहले से ज्ञान तो होगा ही , कि कैसे किसे क्या करना है।

अंकेष,वकील से—अगर वो आकर गवाही दे देता है तो केष का रूख क्या होगा।

वकील,अंकेष से—बहुत हद तक तुम्हारी वो पत्नी षक के दायरे से बाहर हो जायेगी। बस तुम्हारे गवाह को तो दो बाते बतानी है कि मरने वाली खुद अपने से गिरी है और हॉसिपिटल मे जाकर ही उन्होने अंतिम सांसे ली। बस वो गवाह वही का होना चाहिए, और उस दिन वो कही नही गया हो और उस समय वो वहां पर ही मौजूद था ये वो अपने आत्मविष्वास से बता सके।

अब अंकेष वहां से सूक्खी के साथ घर लौटता है। रास्ते मे अंकेष सूक्खी को एक रेस्टुरेन्ट ले जाकर उसे उसके मन पसंद के फास्ट फुड खिलाता है।

अंकेष,सूक्खी से—परेषान मत हो बच्चे एक दिन ऐसा आयेगा जो हमलोग तीनो यानी तुम ,तुम्हारी मम्मी और मैं यहां पर साथ मिलकर खाना खायेंगे।

सूक्खी बगैर कुछ बोले धीरे से खाते हुए सारी बाते सून रहा होता है। फिर सूक्खी की नजरे पास के टेबल की कुर्सी पर बैठने वाली एक फैमिली पर पड़ती है। जहां एक माँ अपने बच्चे को गोद लिए हुए आती है और साथ मे उसके एक आदमी भी है जो षायद उसका पति रहा होगा। बच्चे का उम्र सूक्खी से काफी कम है, लेकिन वो उसे अपने नजरिये से देखता है और उसे खुद के लिए महसूस करने की कोषिष करता है। इस पल को अंकेष भी देख रहा होता है और सूक्खी की भावना को समझ रहा होता है। फिर षाम को अंकेष घर पहुँचकर सूक्खी को सुलाता है और खुद अपने सर पर हाथो को रखकर यह सोचते हुए कि अब कमल को कैसे अपने पाले मे किया जाय जो गवाही अच्छी तरह से हो सके तो अर्चना बाहर आये, सो जाता है।

उसी दिन अब सुकेष का वकील सुकेष से फोन पर बात करता है।

वकील,सुकेष से—तो आपके केष के सिलसिले मे आपसे कुछ बाते करनी है, तो आपको आना पड़ेगा। केष

दायर करके ऐसे छोड़ देने से मजा नही आ रहा है केष लड़ने मे। आप इस दफा क्यो नही आये कोर्ट मे ?

सुकेष,वकील से—तो हमने तो आपसे बात की थी, और आपको सारी बाते बता दी थी।

वकील,सुकेष से—वो सब तो ठिक है पर आपको समय को एडजेस्ट करके कोर्ट आना ही पड़ेगा। क्योंकि

आपने ही केष किया है ना और आपके बारे मे जज साहब पुछ लेते है तो मैनेज करने मे

पहुत परेषानी हो जाती है।

सुकेष,वकील से—तो कब मिलू आपसे ?

वकील,सुकेष से—आप कल रेसिडेन्स पर मिलिए सबेरे 09 से पहले या षाम को 08 के बाद।

सूकेष,वकील से—हां ठिक है ,मै सोच ही रहा था आपसे मिलने के लिए। और आपने मिलने के बारे मे कह

ही दिया।

वकील,सुकेष से—ओ हम सोचे तब आप सोचे, पहले क्यो नही सोचते है ? आपका एक केष है और हमारे पास बहुत सारे केष है, तो आपके केष के बारे मे आपको कर्मठ और लगनषील होना पड़ेगा ना।

सुकेष,वकील से—वकील साहब ! आपके बातो से हम सहमत है,और रहे भी क्यो ना ? आप इंसाफ

दिलाते है सभी को जो।

वकील,सुकेष से—आपके तरफ का कोई है जो उसके (अर्चना) तरफ से गवाही देने वाला है।

यह सूनकर सुकेष आष्चर्य मे पड़ जाता हैं।

सुकेष,वकील से—क्या ?

वकील,सुकेष से—जी हाँ महाषय। इस बारे मे भी थोड़ा पता करते आईयेगा।

सुकेष,वकील से—क्या नाम है उसका ?

वकील,सुकेष से—ये हमे भी नही पता। ये उस दिन ही पता चलेगा ,जिस दिन अगली तारिख है।

सुकेष,वकील से—मै मिलता हुँ आपसे।

सुकेष,वकील से—हां जरूर मिलिए।

अब ये बाते सूनकर सुकेष का ध्यान चौतरफा चलने लगता है फिर सोचता है— कौन है वो जिसे मै जानता हुँ और वो हमें नही जानता। इसका पता कैसे लगेगा कि कौन है जो उसका (अर्चना) हमदर्द बनने चला है। फिर

अब किसपर उसने (अर्चना) मोहिनी मंत्र चलाया, या कही उसका यार तो नही जो कोई रचना रच रहा है हमारे ईद्र–गिद्र। फिर अचानक से कमल को लेकर सुकेष का ध्यान कमल के तरफ जाता है और सामने बैठे कमल से, जो उस वक्त सुकेष के सामने उसके कम्पनी के ऑफिस मे ही किसी काम के सिलसिले मे बैठा हुआ है। सुकेष का कमल को लेकर इस बारे मे यकिन तो नही है पर षक है। जो कुछ समय बाद यकिन मे बदलने वाला है। सुकेष के द्वारा वकील से बात करने की सारी गतिविधी को कमल ध्यान से सूर रहा था, और वो समझ ही चुका था कि ये सारी बाते मेरे बारे मे ही कही जा रही थी। अब कमल करे तो करे क्या और जाये तो जाये कैसे यहां से जल्दी। फिर भी दोनो एक दुसरे को लेकर हुई षक और बातो को नजर अंदाज करते है।

सुकेष,कमल से–तो ऐसा कोई कैसे कर सकता है ? और कौन हो सकता है,जो उसके (अर्चना) गुनाहो को

ढकने के लिए गवाही देने के लिए तैयार है।

कमल,सुकेष से–क्यो ? क्या हुआ ? वो केष अभी तक बंद नही हुआ है, तुम्हारी गुलाबो का।

सुकेष,कमल से–बंद होने से मतलब नही है, मतलब है ऐसा होना ही नही चाहिए था। बस मामला अंजाम

तक पहुँच जाये यही काफी है। लेकिन जो हो गया सो हो गया ,पर अब ऐसा नही होना

चाहिए था। अगर वो ऐसी घिनौनी चाल चल के भी बड़ी हो गयी तो सोचो हमारा और

हमारे समाज का क्या होगा।

कमल,सुकेष से–अब वो ऐसा क्या करने वाली है। जो तुम परेषान से हो रहे हो।

सुकेष,कमल से–हमारी तरफ का कोई है जो उसका बचाव करना चाह रहा है। क्या तुम्हे इस बारे मे पता

है।

कमल,सुकेष से–क्या बात कर रहे हो ? इस बारे मे तो मै तुमसे बात करना चाह रहा था।

सुकेष,कमल से–हमसे बात करना चाह रहे थे ,क्या बात करना चाह रहे थे ? जरा बताओ हमे। हम भी तो

जाने वो मोती जो हम ढुंढ रहे है वो कहां छिपा हुआ है।

अब कमल ये सोच मे पड़ जाता है कि कही सुकेष हमारे पर उंगली ना उठा दे, अगर ये हमारी तरफ उंगली उठाता है तो हमे ना चाहते हुए भी सब कुछ सही–सही बताना पड़ेगा। क्या मन मे आया की इसके पास चले आये। अब इसलिए वो बातो को तोड़–मरोड़कर सुकेष के सामने रखना चाह रहा है।

कमल,सुकेष से–अरे बेवकुफ दोस्त मेरे ! मै तो यही बात तुमसे जानने की कोषिष कर रहा था और कर

रहा हुँ उस दिन से इस दिन तक।

सुकेष,कमल से–तुम कहना क्या चाह रहे हो ?

कमल,सुकेष से–तुम पहले कहो ,जो कहना चाह रहे हो।

सुकेष,कमल से–हमे ऐसा क्यो लग रहा है कि मै जो तुम्हे बताने वाला हुँ , वो तुम्हे पहले से पता है।

कमल,सुकेष से–मै तुम्हारे पास आकर बैठा हुँ, इसका मतलब ये नही कि तुम कुछ भी हमें पहनाने लगो।

तुम्हे ये बाते याद रखकर चलना चाहिए कि तुम्हारे घर के अंदर से लेकर बाहर तक के

सारे तकलिफो मे मैने तुम्हे कही ना कही किसी ना किसी प्रकार से मदद किया है।

सुकेष,कमल से– बस ! पता है हमें ! (थोड़ा स्थिर होके) । मै थोड़ा परेषान हुँ , अपने वकील से

बात करके।

कमल,सुकेष से–हां तो क्या हुआ ?

सुकेष,कमल से–तो क्या हुआ ? उसने (अर्चना) मुझे इतना परेषान किया और मेरे तरफ का कोई उसके

पक्ष मे गवाही देता है तो सोचो मेरा क्या होगा ? चलो ये सब बात छोड़ो बगैर गुस्सा

हुए ये बात बताओ कि तुम उस दिन उससे (अंकेष) अचानक से मिले या उसने तुम्हे या

तुमने उसे बुलाया था। क्योंकि वो तुमसे मिलता है उसके बाद कोर्ट मे बहस होती है, हमे

कोर्ट मे खोजा जाता है उसके बाद वकील के द्वारा कहा जाता है कि कोई हमारी तरफ

का आदमी है जो गवाही देने वाला है। तो कैसे ना बुझता हुआ आग धधकने लगेगा।।

कमल,सुकेष से–तुम्हारी माँ के जाने का गम हमे पता है। इसका तुम्हे कितना दुख हुआ है ये भी हमे पता

है। अब अंदर की बाते तो मै ज्यादा नही जानता की तुम्हारे घर मे उस समय क्या

सिचुएषन रही होगी। पर जो भी हुआ एकदम से अच्छा नही हुआ। तो मै कह रहा था कि

तेरे यार (अर्चना) का यार (अंकेष) इसी सब बातो के लिए मेरे आगे पीछे चक्कर काट रहा है। पर मैने

अबतक हां नही किया हैं।

अब सारे माजरे को सुकेष समझ चुका होता है, कि गवाहो वाली बाते इसके ही ईर्द–गिर्द घुम रही है।

सुकेष,कमल से–और तुम्हारा नाम भी गवाही के लिए चला गया। बगैर हां ना किए ही।

कमल,सुकेष से–अब ये बात मुझे नही पता। हमें जितना पता था मैने कह डाली। लेकिन एक बात हमेषा

अपने ध्यान मे रखना कि जिसका कोई नही होता है उसका ऊपर वाला होता है।

सुकेष,कमल से–अगर ये बाते हमे उस दिन पता होती तो धोता उसे उस दिन वही टेबल पर लिटा कर।

कमल मन–ही–मन सोचता है अचानक से ये कौन सा धर्म संकट मे पड़ गया मै।

कमल,सुकेष से–तो दे देना चाहिए वही पर , मै तो सोच रहा था कोई किसी को दे। पर किसी ने किसी

को कुछ नही दिया। ये कैसा दोस्ताना रवैया है तुम लोगो का।

सुकेष,कमल से–कोई किसी को दे, मतलब वो (अंकेष) भी मुझे दे सकता था क्या ?

कमल,सुकेष से–कहने का मतलब मै भी उसे दे सकता था, दो–चार भौकसा।

सुकेष,कमल से–तो तुम अब क्या करने वाले हो ?

कमल,सुकेष से–वही जो तुम करवाने वाले हो।

सुकेष,कमल से–मै क्या करवाने वाला हुँ ?

कमल,सुकेष से–तुम क्या करवाने वाले हो ? ये तुम नही कहोगे तो क्या मै कहुँगा कि तुम क्या करवाने

वाले हो ?

सुकेष,कमल से–वही सोच रहा हुँ कि अब मै क्या करू ?

कमल,सुकेष से–सोचो ! नही तो अगला कुछ कर जाएगा।

अब सुकेष इधर उधर अपने नजरो को घुमाता हुआ अपनी आँखे बन्द कर लेता है कुछ पलो के लिए। फिर आँखे खोल कर,,,,,,

सुकेष,कमल से–तुम फिलहाल अभी गवाही देने के बारे मे सोचना भी मत।

कमल,सुकेष से–अगर नोटिस आ गयी तो। तब तो जाना पड़ेगा।

सुकेष,कमल से–वो हम देख लेंगे। अच्छा ये बताओ अगर मै इस बारे मे तुमसे नही पुछता तो क्या तुम

बाताते हमें आकर।

कमल,सुकेष से–कमाल करते हो, फिर कौन आया है यहां पर ? और तुम्हे बता कौन रहा है ? हाय रे

बेवकूफ दोस्त ? तो मै चलु।

सुकेष,कमल से–(ईषारो मे) हां । मै मिलुंगा तुमसे।

अब कमल वहां से निकल कर अपने कुछ काम के लिए कही और चला जाता है।

जेल मे पहुँचने पर उसी दिन रात को ईधर अर्चना एकदम से खामोष है और रात मे जेल की काल कोठरी मे कैद होकर अपने सर पर हाथो को रखकर और खुले आँखे से छोटे से खिड़की के बाहर लगातर देख रही है। पास मे सोयी उसकी पहचान वाली महिला कैदी रूबी उसे बार–बार देखती है और,,,,,,

रूबी,अर्चना से–तो आज का समाचार क्या रहा ? कुछ भी नया हुआ या वही हुआ जो सब बार होता

है, हाजिरी लगा के चले आने का।

अर्चना का मन काफी मायूष है।

अर्चना,रूबी से–(अपने षरीर को थोड़ा सा हिलाकर करवटे लेते हुए) कुछ ही सही पर तसल्ली तो

मिलती ही है । वो पुरी कोषिष कर रहा है। उसने (अंकेष) मुझे गलत सोचने के लिए भी

मना किया है, और बातो की एनर्जी तो वो भरपुर देता है। चाहे तुम डूब ही क्यो ना रहे हो

? वो बातो से भरपुर कोषिष करेगा तुम्हे बचाने की। पर अफसोस कि हम अपने ही चिंता

मे खोए है।

रूबी,अर्चना से–समुंद्र मे जब तुफान के बीच मे नैया चलती है तो देखी है वो कैसे–कैसे डोलती है, ठिक

उसी तरह तु बिल्कुल डोल रही है, पर संतुलन बनाये रखना ,जब तक तुफान ठंड ना पर

जाये। तेरा कलेजा का छिलका कैसा है वो जो तुझे मम्मी–मम्मी करके पुकारता रहता है।

अर्चना,रूबी से–उसी की याद तो हमें खाये जा रही है, जो दिन होने पर रात का इंतेजार करती हुँ और

रात होने पर दिन का।

रूबी,अर्चना से–तुझे तो कोई पुछने वाला भी है, मेरी तो ये उम्मीद भी खत्म होती जा रही है। पर मुझे

संतावना देने वाला भी कोई नही है।

अगले दिन नई सबेरा इन सबो के लिए कुछ ना कुछ सोचने वाली सुबह के साथ आती है। जैसे सुक्खी मायुष होकर स्कुल जाने के लिए अपने पीठ पर सबेरे–सबेरे किताबो का बोझ डाले हुए मुँह लटकाये हुए घर से निकलकर बस का इंतेजार कर रहा होता है। अंकेष यह सोच रहा है कि वह कमल से कैसे मिल के उससे सारी बाते बता कर उसे गवाही देने के लिए राजी करे। कमल यह सोच रहा है कि एक उसका दोस्त सुकेष है जिसे वो

अर्से से जान रहा है जिसके खिलाफ उसे जाने मे अजीब सा लग रहा है, दुसरी तरफ उसकी बीबी अर्चना जो जेल मे सजा काट रही है उस गुनाह के लिए जो षायद उसने किया ही नही। सुकेष यह भांज मे लगा हुआ है कि ये कमल का कोई ठिकाना नही ,वो गवाही ना दे इसके लिए उसे क्या करना होगा ? अगर ये उल्टा सीधा कुछ बक देगा तो वो (अर्चना) बाहर हो जायेगी। जेल मे अर्चना सबेरे–सबेरे काल कोठरी से निकलकर धुप मे अपने षरीर को सेक रही होती है।

षाम के समय मे किसी गली मे अचानक से कमल के सामने संतो आ जाता है।

संतो,कमल से–गलती से ही सही, पर सही समय मे आपके दर्षन के सौभाग्य हमे प्राप्त हुए है।

कमल,संतो से–(मुस्कुराता हुआ) दर्षन हुए है तो कुछ माँग लो।

संतो,कमल से–तो डील फाईनल होते–होते रह गयी थी उस दिन, या कुछ हुआ था मेरे जाने से पहले।

कमल,संतो से–चरम सीमा पर पहुँचते–पहुँचते रह गए।

संतो,कमल से–हमें भी लगा कुछ ऐसा होने वाला था, पर हो नही सका। पर अब तो हमलोग अकेले है,

कुछ हो सकता है तो बोलो मिटिंग कन्फर्म करे क्या ?

कमल,संतो से–मुझे इन सब झलफर की बदहजमी वाली बातो मे नही पड़ना है।

संतो,कमल से–पर हमलोगो मे बात तो हुई , और डिल फाईनल भी हुई थी।

कमल,संतो से–तुमसे मैने कौन –सा डील फाईनल कर लिया जो एग्रीमेन्ट लिए घुम रहे हो।

अब कमल आगे बढने ही वाला होता है कि,,,,,,

संतो,कमल से–पहले आप अपने पैरो को स्थिर करिये।

अब कमल रूक जाता है।

संतो,कमल से–अब अपने दिमाग को भी।

कमल,संतो से–दिमाग को क्या ?

संतो,कमल से–मतलब ! दिमाग को भी स्थिर कीजिए, और चलिए कही बैठकर बात करते है।

कमल,संतो से–तुम इतने परेषान क्यो हो ? वो (अंकेष,अर्चना) तुम्हारा कुछ लगता है क्या ?

संतो,कमल से–हां ये हुई ना अधेरो वाली बात। तो मै इसलिए परेषान हुँ , क्योंकि मुझे हायर किया गया है

इस काम को मैनेज करवाकर पुरा करवाने के लिए।

कमल,संतो से–ये षब्द मैने कभी सूना नही।

संतो,कमल से–मैने भी बहुत सारे षब्द नही सूने , पर अंदाजा लगा लेता हुँ कि उसके मायने क्या है ?

चलिये बताता हुँ, सोचिये कि आप को किसी ने कोई काम सौपा है और आप उसे पुरा

करने के लिए बचनबद्ध हो ,भले ही आपने इसके लिए कोई रूपये लिए हो या कोई और

लालच से इसे पुरा करना चाह रहे हो।

कमल,संतो से–तो तू लालची है, और मुझे सर्टिफिकेट बाँट रहे हो।

अब दोनो साथ–साथ चलने लगते है जिधर कमल जाने वाला होता है।

कमल,संतो से–देखो तुम लोग जो जैसा कह रहे हो , उससे मेरी दोस्त से दोस्ती खत्म हो सकती है।

संतो,कमल से–दोस्ती खत्म हो जाये तो मिल जायेगी , जिंदगी खत्म होने पर तो नही मिलेगी। आप इस

बारे मे सोचिए विचारिये और फिर हमें बताईये। क्योंकि आपने हमारे दिलो मे उम्मीद जगाई

थी उस दिन।

इतनी बाते सूनने के बाद कमल यह सोचने पर मजबुर हो जाता है कि अब क्या करे ?

संतो,कमल से–कहिये तो आज षाम मे मिटिंग मदिरा के साथ फिक्स करू या कोई और मसाले के साथ।

क्योंकि एक औरत के लिए ना सही, पर एक माँ के लिए तो आपको सोचना ही पड़ेगा।

कमल,संतो से–ठिक है देखता हुँ आज षाम को, सोच के बताता हुँ।

संतो,कमल से–अब तो षाम से रात हो चली है ,तो कहां बैठना है ?

कमल,संतो से–जहां उस दिन मिले थे उसके सामने वाले स्वर्ग के दरवाजे मे , आधे घंटे बाद।

संतो,कमल से–मेरे लिए इससे अच्छी बात और क्या हो सकती ?

अब संतो वहां से एकदम से खुष होकर निकलता है यह सोचते हुए कि चलो यही बहाने षराब पीने का तो फिर से मौका मिला अंकेष के खर्चे पर। अब संतो अंकेष को फोन करके कमल के बताये हुए षराब के रेस्टुरेन्ट मे पहुँचता है। तीनो कुर्सी पर बैठे है। अंकेष के ऑर्डर के बाद षराब की कुछ बोतले और कुछ खाने की चीजे उनलोगो के टेबल पर वेटर के द्वारा रख दी जाती हैं। कुछ पल सभी लोग षांत है और संतो अपनी नजरे इधर–उधर करके कमल के मुड को देखता है और फिर अंकेष को देखता है और उसे इषारा करता है बात षुरूआत करने की, इससे पहले कि अंकेष कुछ बोले फिर अचानक से,,,,,,,,,,,

कमल,अंकेष से–तो क्यो कैसे और कबसे तुम हमसे मिलने की कोषिष लिए बैठे हो ? पुरे माजरे को मेरे

सामने अच्छे से उगलो ! कुछ भी ना छुटे।

संतो,कमल से–जैसे कुत्ते उगलते है।

यह बात सूनकर अंकेष संतो की तरफ थोड़े गुस्से भरे नजरो से देखता है।

अंकेष,संतो से–तु सुलझाने आता है या उलझाने लाता है हमलोगो को ।

संतो,अंकेष से–स्थिर से बात कीजिए, सब मामला सुलझ जायेगा। मेरा काम तो आप दोनो को मिलाना, और

ष्षराब का मजा उठाना है, पर मै कोषिष कर रहा हुँ आप दोनो के लिए।

अंकेष,कमल से–तो उस दिन जो हमारी बाते हुई थी उसके बाद से षुरू करता हुँ। जिस दिन आपसे

पहली मुलाकात हुई, ठिक उससे एक दिन पहले ही आपके बारे मे मुझे पता चला, कि एक

आप जैसे लोग कही है जो हम जैसे किसी कि मदद हो सकती है। उस दिन से ही

कोषिष मे लगे है पर मुकाम हासिल नही हो पाई है।

कमल,अंकेष से–तुम हमसे जो चाहते हो वो मै फिलहाल नही कर सकता। क्योकि तुम सही–सही से हमें

कुछ नही बता रहो हो। जिससे तुम्हारा ही समय बर्बाद हो सकता है। जैसे वो अर्चना अपने पति के साथ रहते हुए तुम्हारे इतने नजदीक क्यो थी ? उसे छोड़ वो तुम्हारे पास क्यो जाना चाहती थी ? क्यो उसके घरो मे रोज झगरा हुआ करता था ? क्यो उसकी सास उसे या वो अपनी सास को मारना चाह रही थी। सबसे महत्त्वपुर्ण बात कि तुम्हारा उसके जिंदगी मे कैसे आगमन हुआ ?

संतो,कमल से–ये सब बाते आप जान कर क्या करेंगे ? आप बस थोड़ा मदद कर दीजिए और बोलिए

आपको कितना चाहिए।

कमल,संतो से–तुम तो केवल मिटिंग फिक्स करवाने आये हो ना ,अब मुझे इससे (अंकेष) बात करने दो।

और इसे मुझसे।

अब अंकेष को अपने–आप मे मानो ऐसा लगने लगता है जैसे उँट आया हो पहाड़ के नीचे या षेर अब सुलह करना चाह रहा हो। अब वो कहे तो कहे क्या और सोचे तो सोचे क्या ? बात ना ही उगलते बनता है और ना ही निगलते।

अंकेष,कमल से–क्या आप मुझसे और कुछ पुछ सकते है इसके अलावे ?

कमल,अंकेष से–बस इतना ही। इसका ही जवाब दे दो। फिर तुम्हारे बारे मे सोचेंगे। सोच समझकर बोलना

बरखुद्दार, बातो मे सच्चाई झलकनी चाहिए।

अब ना चाहते हुए भी अंकेष को अपने लिए ना सही पर अर्चना और सुक्खी के लिए तो बोलना ही पड़ेगा। क्योंकि यहां एक नही तीन लोगो की अमुल्य जीवन का सवाल है। जिसे हर संभव अंतिम तक बचाने कि कोषिष करना है उसे।

अब अंकेष फ्लेष बैक के दरवाजे खटखटाता है और वो अपने सुनहरे पलो और अर्चना की कसक भरी जिंदगी को बारिकी से बताने के लिए अपने दिल को तैयार करता हैः–

तो मै अपने बहन की षादी की कार्ड लेकर अपने जान पहचान वाले रिष्तेदार के यहां जा रहा था ,जिसके यहां मै पहले कभी नही गया था। उस जगह पर पहुँचने पर मै उनके घर का पता ढुंढ ही रहा था कि उस जगह

दो–चार लफंगे लोग खड़े थे ,तो मैने सोचा कि क्यो ना इनसे उनके घर का पता पुछ लिया जाय।

पीछे फ्लेष बैक मे,,,,

अंकेष,पहले व्यक्ति से–तो यहां राधे ष्याम जी का घर किधर से जान होगा।

पहला व्यक्ति,अंकेष से–कौन राधे ष्याम जी। यहां तो इस तरह के नाम वाले दो तीन लोग है। आप किसकी बात

कर रहे है।

अंकेष,पहले व्यक्ति से–मै राधे ष्याम प्रोफ्रेसर जी की बात कर रहा हुँ।

पहला व्यक्ति,अंकेष से–अच्छा तो आप मास्टर जी की बात कर रहे है। षादि का निमंत्रण लेकर आये है।

अंकेष,पहले व्यक्ति से–हां।

पहला व्यक्ति,अंकेष से–**ठिक है आगे से दाँये ले लीजिए।**

अब वत्तर्मान मे ,

अंकेष,कमल से–तो उसी दिन मेरे जिंदगी का एक नया अध्याय षुरू होने वाला था। जो आज इस मुकाम

पर पहुँच चुका हुँ।

संतो,अंकेष से–ऐसा क्या हुआ था उस दिन जो इतने तिलमिला रहे है ? और धीरे–धीरे बता रहे है।

अंकेष,कमल से–**उस दिन मुझे दाँऐ नही बाँऐ जाना था। क्योंकि उस सामने से आते हुए आदमी**

ने मेरे दाँऐ को अपना दाँया समझते हुए दाँए (आगे से दाँए) बोला और मैनें मेरे दाँऐ को अपना दाँऐ समझ के आगे दाँये वाली गली मे मुड़ गया। जबकी मुझे उस दिन बाँए मुड़ना था।

संतो,अंकेष से–क्या ? अगर बाँये के जगह दाँये ही चले गए तो क्या हुआ जो तुम इस पतझर और उदासी

वाली जिंदगी जीने को मजबूर हो गए।

कमल,अंकेष से–सच्चाई तो तुने अभी से ही झाड़ना षुरू कर दिया। मजा आ रहा है धीरे–धीरे बोल।

अब अंकेष फिर से फ्लेष बैक के दरवाजे खटखटाता है:–

तो जैसे ही मैं बाँए के जगह दाँये वाली गली मे गया तो पहले–पहले मेरी नजरे अर्चना पर पड़ी। वह थोड़ी–थोड़ी सहमी हुई सी थी, उसके सामने उसका पति था जो उसे बराबर डाँटे जा रहा था। उसका बेटा जो अब मुझे पापा–पापा कहके पुकारता है वो कभी अपने माँ को पकड़ता तो कभी अपने बाप को समझाने की कोषिष कर रहा था। पर उस दिन झगरा किस कारण से उन दोनो के बीच हुआ ये बात आज तक हमे अर्चना ने नही बताई ।

कमल,अंकेष से–तुमने उससे पुछा।

अंकेष,कमल से–हां एक से दो बार पुछा, पर अर्चना ने टाल दिया। वो षायद बताना नही चाह रही थी।

कमल,अंकेष से–फिर क्या हुआ ?

अंकेष,कमल से–हुआ वही जो नही होना था, पर नियती के कारण हो जाया करती है। मै बराबर उसे (अर्चना) देखे जा रहा था कि उसे किस तरह से उसका पति उसे बातो का चोट दिये जा रहा था। वो भी बीच–बीच मे अपने पति को बराबर से चोट पर चोट दे रही थी , फिर अचानक से उसके पति ने उसे जोड़ से एक थप्पड़ जड़ दिया और फिर उसके बाद एक और फिर एक और इस तरह कई थप्पर जड़ने के बाद उसका पति षांत एकदम से षांत होता दिखाई दे रहा था। मानो वो कोई बड़ा काम करके स्थिर हुआ हो। हमे लगा उसे (अर्चना) कोई आदमी जो उसे नही पहचानता था उसे लुट रहा था, पर बच्चे को देख कर ऐसा नही लग रहा था। फिर मानव का मानवता पर से विष्वास ना उठ जाये, इसके लिए मैने मानवता को जीवित रखने के लिए हिम्मत करते हुए उनलोगो के तरफ अपनी कदम बढाते हुए उनके पास पहुँचा। ,,,,,,

अब वहां घटित हुए वाक्य को अंकेष परत–दर–परत सभी को बताता है कि वहां अंकेष के द्वारा उन लोगो से क्या बाते हुई। घटना दिन के उस वक्त की है जब लगभग षाम के बाद रात होने वाली होती है।

अंकेष,सुकेष से–क्यो मार रहे हो इसे (अर्चना)।

सुकेस,अंकेष से–चल आगे बढो।

अंकेष,सुकेष से–मै तो बस यही पुछ रहा हुँ कि इसे यहां पर अकेले मे मार क्यो रहो हो ? जिसके साथ एक छोटा बच्चा है।

सुकेष,अंकेष से–वो मेरा बच्चा है। तुम जा के अपने बच्चे को सम्भालो और मै अपने बच्चे को सम्भाल रहा हुँ ।

हुँ।

अंकेष,सुकेष से–तो परिवार–बच्चे को कोई इस तरह सड़क पर सम्भलता है क्या ?

अर्चना,अंकेष से–ये (सुकेष) सम्भाल नही रहा है, ये विनाष के रास्ते पर चढ रहा है।

सुकेष,अर्चना से–तु चल आज घर, तुझे तो घर पर समझाता हुँ।

अर्चना,सुकेष से–समझाईये आप अपनी माँ को , मै अब कुछ सुनने से रही ।

सुकेष,अर्चना से–विनाष के बारे मे कहना आसान है, पर जब वो लोगो के सामने आती है और खुद पर

बितती है तो मानो पैरो तले जमीन ही नही पाताल भी गायब हो जाती है।

अर्चना लगातार उसके बातो को नजरअंदाज किए जा रही थी और वो सुकेष के गुस्से से बचकर वहां से किसी तरह निकलकर अपने मायके जाना चाह रही है या किसी और रिष्तेदार के यहां। इन सब बातो को मै बड़े ही हैरानी के साथ सुन रहा था। जैसे ही अर्चना अपने पति सुकेष को छोड़कर अपने बच्चे के साथ वहां से निकलने के लिए आगे कदम बढाती है तब सुकेष उसे धक्के मारकर जमीन पर गिरा देता है और उसे मारने के तरिके तलाषने लगता है। फिर मैने सुकेष को जोड़ से धक्के मारकर उसे पीछे की तरफ धकेल दिया और उसे धमकाने लगा।

अंकेष,सुकेष से–एक औरत पर हाथ उठाना गलत काम ही नही बल्कि अपराध भी है, अगर औरत की तरफ से

कोई लगती ना हो तो। अगर गलती भी हो तो आप उसे समझा सकते है, बगैर मारने के ।

कितने भी युद्ध हो जाती है ,चाहे वो विष्वयुद्ध हो या गृहयुद्ध पर वो सुलझती बातो से ही

है। इसलिए बातो से मेटर को उलझाईये मत कोषिष किजिए उसे सुलझाने का। (सारी

बाते सुकेष जमीन पर लेटा–लेटा सुनता है) ।

फिर सुकेष जमीन पर से उठने की कोषिष कर ही रहा था और इससे पहले कि वो उठे अर्चना वहां से जा चुकी थी । साथ ही साथ मुझे इस बात

का डर लग रहा था कि कही वो अर्चना को अकेला पाकर मार ना दे। इसलिए मै जानबुझ कर कुछ पलो तक उसे पकड़े रख। पर अपनी पत्नि के प्रति उसकी आँखो मे उस जैसी बेरहमी मैने षायद ही कही देखी होगी। उसे जाते देख अब सुकेष उठकर मेरा कॉलर पकर लेता है। फिर वो हमे छोड़ने का नाम नही ले रहा था, तब ना चाहते हुए भी मजबुर होकर मेरी उससे हाथा–पाई होने लगी। अंत मे दोनो लोग एक दुसरे का पुरजोर स्वागत करते रहे और जब दोनो थक गए तब दोनो एक सिगरेट की दुकान पर जाकर एक साथ सिगरेट पीकर उसके कस को धुँए मे उड़ाने लगे। क्योंकि माहौल कुछ अगल ही बनता जा रहा था जो बनने वाला नही था ? अक्सर ऐसा होता नही है जो उस दिन मेरे साथ हुआ। हमदोनो मे झगरा होने के बाद उसने (सुकेष) ही मुझसे कहा कि चलो सिगरेट पीते है। अपने ही रूपये से उसने सिगरेट पीलाया।

अब इस समय सुकेष यह सोचकर थोड़ा षांत है कि अंकेष ने आज उसे किसी की हत्या करने से रोक दिया। पर सुकेष यहां मायुष भी है और बहुत सारे गुस्से को अपने अंदर दबाये भी हुए है। वो अंकेष पर गुस्सा भी है और उसके बीच–बचाव को अच्छा भी समझ रहा है।

सुकेष,अंकेष से–तो इस गली से कोई आता जाता नही ,तुम ईधर से कहा जा रहे थे।

अंकेष,सुकेष से– (गुस्से मे) बेवजह कोई कही नही जाता है ,हरेक चीज की वजह होती है। मै अपने

रिलेटिव के यहा जा रहा था।

सुकेष,अंकेष से–किसके यहां ?

अंकेष,सुकेष से–है मेरे एक जान पहचान , जो दुर के है पर अपने जैसे लगते है।

वर्त्तमान मे ,,,,

अंकेष,कमल से–उसके सिगरेट पीने–पीलाने की बात मेरे दिमाग को खराब कर रही थी, ऐसा लग रहा था

जैसे उसके अंदर मेरे प्रति कोई साजिष बराबर हरकत कर रही थी। फिर मै अपने

रिलेटिव राधे ष्याम जी के घर की ओर आगे बढा, कुछ पलो बाद पीछे–पीछे सुकेष भी

चला आ रहा था, पर उसके मन मे हमारे लिए चल क्या रहा था यह हमे पता नही

था। उसे लगा की मै जानना चाह रहा हुँ कि वो मेरे पीछे क्यो आ रहा है ? ,,,,,,,,

अब अंकेष फिर से फ्लेष बैक के दरवाजे खटखटाता हैः–

सुकेष,अंकेष से–(दूर से जोड़ से) मेरा भी घर उसी तरफ है ।

फिर वो दुसरी गली की ओर मुड़ जाता है।

यह बात सुनने के बाद हमे लगा कि वो मेरा पीछा नही कर रहा है। पर हमें क्या पता था कि उसके पिता का नाम भी राधे ष्याम जी है, जिनके यहां हमे निमंत्रण कार्ड लेकर जाना है। बाद मे ये भी पता चला कि उस राधे ष्याम जी के यहां हमे नही जाना था, बल्कि दूसरे राधेष्याम जी के यहां जाना था। मैं तेजी से उनके घर पहुँच कर उनके दरवाजे खटखटाने लगा जैसे ही दरवाजा खुला मै चौक सा गया। क्योंकि दरवाजे के अंदर कोई और नही अर्चना खड़ी थी।

वर्त्तमान मे,,,,,,,,

कमल और संतो,अंकेष से– (एक साथ) क्या ?

संतो,अंकेष से–पर वो तो चली गयी थी अपने पति को छोड़कर ।

अंकेष,संतो से–हां चली तो गयी थी, पर ये बताके नही गयी कि कहां जा रही है ?

कमल,अंकेष से–क्यो बता के जाती ,, तभी वो तेरी दिलरूबा थी क्या ?

संतो,कमल से–हां बात तो सही पर उस वक्त तो दूसरी मुलाकात थी।

संतो,अंकेष से–तो आगे क्या हुआ ?

अंकेष,कमल से–मेरा तो डर के मारे षरीर थरथराने लगा,मै सोच मे पड़ गया कि अगर इसका ये मायके है,

तो कोई बात नही ,पर ससुराल हुआ तो इसका पति भी यहां आयेगा ,तो फिर षायद मै' मै

ना रहूँ। ऐस लग रहा था मानो पल मे कुछ मेरे साथ बड़ा होने वाला है जो मेरे लिए

हानिकारक हो। मै अचंभित था। उसे लगा कि मै षायद उसका पीछा कर रहा था यह

सोचकर की उसका पति से उसका झगड़ा होने पर मेरे द्वारा उसे बचाया गया, जिसका मै

उससे सहानुभुति पाना चाह रहा था।

<u>अब अंकेष फिर से फ्लेष बैक के दरवाजे खटखटाता हैः–</u>

अर्चना,अंकेष से– आप यहां।

अंकेष,अर्चना से–हां हमे अभी तो यहां नही होना चाहिए, उस हिसाब से जो कुछ समय पहले आपके साथ

घटा जो नही घटना चाहिए। षायद ये उन्ही का घर है ,राधेष्याम जी का । क्या ?

अर्चना,अंकेष से–घर तो उनका ही है पर वो है नही। आपको जो भी बोलना है जल्दी कहिये और अभी

फिलहाल आप यहां से चले जाईये। क्योंकि उसके (सुकेष) आने से पहले मै ये दरवाजा

बंद कर लुंगी और सबेरे तक खोलुंगी भी नही ।

वर्त्तमान मे ,,,,

अंकेष,संतो से– उसके (अर्चना) सारे सस्पेंस को मै जल्द से जल्द खत्म करना चाह रहा था। इसलिए मैने

बगैर देरी किए उसे (अर्चना) निमंत्रण कार्ड के बारे मे कहकर सारी बाते बता दी ।

अंकेष,कमल से–मेरे हाथो मे षादि का कार्ड देख कर वो मेरे घर के बारे मे पुछने लगी। मैने अपना घर का

पता बताया तो उसने (अर्चना) कहा कि उस जगह तो हमारे ससूर जी के कोई सगे–

संबंधी नही है षायद, फिर भी मै ये कार्ड रख लेती हुँ। वो मुझसे ज्यादा से ज्यादा

बात करना चाह रही थी पर वो षायद सुकेष के डर से सोच रही थी कि मै ज्यादा देर

वहां ना रूकू।

<u>अब अंकेष फिर से फ्लेष बैक के दरवाजे खटखटाता हैः–</u>

अर्चना,अंकेष से–बहुत–बहुत धन्यवाद आपका उस समय के लिए। आप ना आते तो वो (सुकेष) षायद मार

कर अधमरा कर ही देता।

अंकेष,अर्चना से–वो , आपका पति फिर आकर यहां आपको मार सकता है।

अर्चना,अंकेष से–नही वो (अर्चना का पति) यहां मुझे नही मार सकता, क्योकि यहां पर मेरे कुछ रूम मे और

हॉल मे कैमरे लगे हुए है।

अंकेष,अर्चना से–ये आपका मायके है या ससुराल।

अर्चना,अंकेष से–ससुराल।

अंदर से उसकी सास की अवाज आती है जो अपनी बहु से कहती है :–आज उसे (सुकेष) घर के अंदर आने नही दोगी क्या ? आने दोगी तब तो आगे बात होगी।

वर्त्तमान मे ,,,,

अंकेष,कमल से–मै समझ गया था कि अपनी सास से अर्चना ने सारी बाते कह दी थी, या नही भी कही

होगी क्योंकि उसका उसके सास से रिष्ते अच्छे नही थे। अर्चना ने उसे सारी बाते बता भी

दी होगी तो उसके सास के बातो से लग रहा था कि इस घटना से उसे उतना कोई फर्क

नही पड़ा। ऐसा लग रहा था उसके घर का माहौल कुछ ठिक नही चल रहा। अंदर से

उसकी सास बोल रही थी या कोई और, ये हमने जानने की कोषिष भी नही की।

वर्त्तमान मे,,,,,,

संतो,अंकेष से–तो उसके पति को पता था कि उसकी पत्नि वहां से भाग कर उसके घर ही गयी है।

अंकेश,संतो से–नही ये बात हमे नही पता था।

कमल,अंकेष से–तो तुम दोनो मे बात आगे कैसे बढी ? ये बात पर प्रकाष डालो।

अंकेष,कमल से–मै बता रहा हुँ ! मै वही बिन्दु पर आ रहा हुँ ,स्टेप बाई स्टेप।

अब अंकेष फिर से फ्लैष बैक के दरवाजे खटखटाता हैः–

मै उसे सारी बाते बता कर उसे कार्ड थमा कर उसे (अर्चना) उसके ससुर राधेष्याम के साथ अपनी बहन के षादि मे आने के लिए बोल कर मैं वापस लौट गया, जल्दी से यह सोचकर की कही वो उसका पति सुकेष ना आ जाये। घर आने पर पता चला की मै गलत राधेष्याम जी के यहां षादि का कार्ड देकर आ गया हुँ। फिर भी मै षादि मे उन लोगो के आने का इंतेजार कर रहा था। वे लोग तो नही आये पर कुछ दिनो बाद अर्चना का फोन जरूर आया।

वर्त्तमान मे,,,,,

अंकेष,कमल से–मेरा नम्बर कार्ड पर था।

<u>फ्लैष बैक,,,,,,।</u>

अर्चना,अंकेष से–(फोन पर) ससुर जी ने कहा की आप गलत जगह पर कार्ड देकर चले गए थे। आप

लोगो को हमारे ससुर जी जानते तक नही।

अंकेष,अर्चना से–कोई बात नही अगर निमंत्रण मिल गया था तो आ ही जाते। जान पहचान ना थी तो हो

जाता ।आपके पति से आपका सुलह हुआ या नही , या बात और आगे तो नही बढ गई।

उस दिन मामला षांत हुआ था या आगे भी कुछ और हुआ था।

अर्चना,अंकेष से–ना ही पुछिये तो बेहतर है। बगैर गहराई जाने सम्रुंद मे उतरियेगा तो डुब जाईयेगा।

अंकेष,अर्चना से–पहली बार तो बिना नापे उतरना ही पड़ेगा। चाहे गहराई कितनी भी हो।

अर्चना,अंकेष से–ठिक है आपकी मर्जी, जैसे उतरियेगा वैसे चढना पड़ेगा। तैरना भी पर सकता है। पर हो

सकता है तैरना ही पड़ेगा।

अंकेष,अर्चना से–तो बताईये मेरे सवाल का जवाब, कि आपके पति किस तरह से आपके साथ विहेव कर

रहे है।

अर्चना,अंकेष से–क्या बताये ? बस अपना–पन महसूस नही होता है उनके साथ। सिर्फ मतलब से मतलब है

उनका, बाकी बस आप झेलते रहे। वैसे आप ये सब जानने के लिए इतने इंट्रेस्टेड क्यो

है?

अंकेष,अर्चना से–ये बाते तो आपको पता होना चाहिए कि हम इतने इंट्रेस्टेड क्यो है ? हम आपके खतरे के

बारे मे सोच कर भयभित है कि आप अकेले अपने पति से कैसे सामना करेंगे जब वो

आपसे लड़ाई करते है या करेंगे।

अर्चना,अंकेष से–इस तरह के सिचुएषान को फेस करने के लिए मेरे पास उसकी (सुकेष) एक कमजोरी है,

जिससे मै उसकी पतली वाली नब्ज को दबाये रखती हुँ।

अंकेष,अर्चना से–पर उस दिन देखकर हमें ऐसा बिल्कुल नही लगा ।

अर्चना,अंकेष से–लगने लायक तो उसमे ऐसा कुछ है ही नही ।

अंकेष,अर्चना से–आपके बातो से हमें कुछ समझ मे नही आ रहा है कि आप हमें समझाना क्या चाह रही

है। आपको ये भी सोचना चाहिए कि हम कुछ समझ भी पा रहे है या नही।

अर्चना,अंकेष से–छोड़िये इन सब बातो को, बस हमें जो कहना था हमने कह दिया।

वर्त्तमान मे,.....

अंकेष,कमल से–उसने फोन रख दिया और हमारी उतनी ही बात हुई। पर संयोग से कुछ ही दिनो बाद वो

मार्केट मे अपने बच्चे के साथ हमें मिली। तब से हमारी और उसकी नजदिकियाँ बढने

लगी। उस दिन उसके साथ मै हर वो जगह गया जहां वो जाना चाह रही थी। फिर

उसके बाद मॉल फिर रेस्टुरेन्ट, पार्क, डिजनीलैंड यहां तक कि मूवी तक को हमने नही

छोड़ा । मेरे साथ उसे अच्छा लगने लगा, फिर हमलोग किसी ना किसी बहाने मिलने

लगे। कभी–कभी वो अपने बच्चे को छोड़कर ही आती थी, फिर हमें भी उसके साथ अच्छा

लगने लगा। बस हमलोग सिर्फ मिलते ही थे इससे आगे हमलोगो मे कभी भी किसी प्रकार

का एटैच नही हुआ। फिर एक दिन उसके पति के साथ उसका झगड़ा क्या हुआ,

वो मेरे पास चले आई अपने बच्चे के साथ रहने के लिए अचानक से ये सब देख कर मै

तो परेषान हो गया,,,।

अतीत मे अंकेष,,,,,,,,,,

अंकेष,अर्चना से–इसके लिए अभी मै तैयार नही है। तुम्हे अभी फिलहाल रूकना पड़ेगा और अपने पति के

साथ कुछ दिन और झेलना पड़ेगा। इस बारे मे तुमने हमें कभी बताया भी नही कि अगर

तुम अपने पति के साथ नही रहोगी तो तुम हमारे साथ रहोगी।

अर्चना,अंकेष से–(गंभीरता से) मै अब उसे इससे ज्यादा नही झेल सकती। तुम्हारा क्या कहना है ? बोलो।

अगर ऐसा नही चाहते तो कुछ दिन मै यहां रहुँगी और उसके बाद खुद अपना ठिकाना

बना लुंगी।

अंकेष,अर्चना से–आखिर ऐसा हुआ क्या जो तुम इतने जल्दी इतने बड़े निर्णय लेने के लिए तैयार हो गए।

अर्चना,अंकेष से–क्या करे जो होना रहता है वो तो होकर ही रहता है ,और जो नही होना रहता है वो

होकर भी कुछ होने जैसा नही लगता है। ऐसा लगता है जैसे मानो सारे समस्याओ के

दरवाजे खुल गए हो मेरे लिए। छोटी–छोटी बातो पर हमारी सफाई देने से पहले

वो(सुकेष) मुझे थप्पड़ खींच देता है। वो सोचता है कि मै उसके घर की दासी बनकर रह

जाऊ। जब वो मुझे मारता है तो उसकी माँ बड़े आराम से उसे कहती है–बस अब मारना

छोड़ दो। जैसे वो हमे मारकर हमपर उपकार कर रहा हो।

अंकेष,अर्चना से–ऐसा होने का रिजन क्या है ?

अर्चना,अंकेष से–वो इसलिए कि वो जो सोचे, उससे पहले ही मै उसे उसके सामने पुरा करके रख दुँ।

जो सिर्फ भगवान से ही हो सकता है मुझसे नही। वो जब घर से जाये,जब घर आये कुछ

भी करे जिसमे मेरी कोई रोक टोक नही होनी चाहिए। जिसके लिए आप सबकुछ छोड़

चुके हो वही आपको अपना के जैसा ना देखे तो सोचो जरा कि आप क्या जिंदगी जी रहे

है।

अंकेष,अर्चना से–मिस अंडरस्टैंडिंग।

वर्त्तमान मे,,,,,,,

अब षाम के बाद रात होने को है, सुकेष इधर अपने वकील के बुलावे के अनुसार उससे मिलने उसके घर वाले केबिन मे पहुँचता है। वकील अपने घर के अंदर है और सुकेष कुछ पल वकील का इंतेजार करता है। फिर वकील साहब आकर अपने कुर्सी पर बैठते है।

वकील,सुकेष से–तो कैसे है ?

सुकेष,वकील से–अच्छा।

वकील–तो केष ओपेन हो चुका है, उसने एक गवाह का भी बन्दोबस्त कर लिया है। अगर आप कोम्प्रमाईज

चाहते हो तो ठिक है, नही तो उस गवाह से बात करिये।

सुकेष–मै ऐसा क्यो चाहुंगा।

वकील–क्योंकि गवाह आपको करीब से जानने वाला ही कोई है।

सुकेष–हमे षक है कि वो हमारे जान पहचान का ही है।

वकील–होगा ही , आपका पड़ोसी भी हो सकता है।

सुकेष–वो मेरा दोस्त ही है।

वकील–तो बात किजिए उससे , और रोकिए उसे। वरना आपका पक्ष कमजोर पर जायेगा। अर्चना को सजा

हो ये तो चाह रहे है ना आप।

सुकेष–मेरे बगैर चाहे ऐसा होता क्या ?

वकील–तो अपने दोस्त को मेरे पास लाईये ,अगर उसे कोई बरगला रहा है तो मै उसे फ्रेस करूंगा। एक

महत्वपुर्ण बात और कि आप अपने अलावे एक और गवाह का नाम हमे दीजिए जो उस दिन के

घटनाओ को आपके हिसाब से कोर्ट मे बता सके। उसे मेरे पास लेकर आईये उसे मै समझाउंगा

कि कैसे विरोधी वकील के सवालो का जवाब देना है। वरना उलझ जायेगा डर कर। अब आप

बताईये, कोई सवाल हो तो।

सुकेष–मुझे हर हालत मे उसे (अर्चना) आजाद नही होने देना है।

वकील–तो ठिक है मैने जैसा कहा वैसा करिये। वैसा नही कर सकते है तो जैसा चाह रहे है उसके लिए

अपने हिसाब से कुछ कीजिए, पर कीजिए जरूर।

अब वकील से मिलने उनका कोई दुसरा क्लाईन्ट दीपेस आता है, जिसे वकील ईषारो मे बैठने के लिए कहता है। अब सुकेष वहां से जाने के लिए वकील से इजाजत लेता है फिर,,,,,,

वकील,सुकेष से–रूकिये चाय पीकर जाईयेगा।

वकील टेबल पर पड़े CALL BELL को दबाकर अपने सहयोगी को बुलाकर चाय के बारे मे कहता है।

वकील,दीपेस से–तो आपने वो काम किया जो हमने कहा था।

दीपेस,वकील से–कोषिष मे लगे है पर बात नही बन रही है।

वकील,दीपेस से–कोई बात नही है बात हम बना देंगे। उसी काम के लिए तो हमारे पास आते है सब

लोग। तो वो मान क्यो नही रहे है ?

दीपेस,वकील से–उसकी मर्जी , अभी उसका समय है। अभी उसका सिक्का चल रहा है और हमारा कोई

सुनने वाला नही। घर के सारे लोगो को अभी वही घुमा रहा है।

वकील,दीपेस से–तो आपने अपनी तरफ से कोषिष कर लिया ना। बाद मे वो ये नही ना कहेंगे कि आपने

उसे नही कहा या समझौता करने कि कोषिष नही की। रहने दिजिए इसका तोड़ है मेरे

पास और जोड़ भी।

वकील,सुकेष से–ये दीपेस जी है, ये बेचारे अपने लोगो से ही परेषान है, यानी अपने घर वालो से। ये घर

को जोड़ रहे है और इनके लोग घर तोड़ रहे है।

अब जब वकील दीपेस के बारे मे उन्हे बोल रहे है तो सुकेष भी सोचता है कुछ उसके बारे मे वो भी पुछ ले।

सुकेष,वकील से–वैसे मामला है क्या इनका ?

वकील,सुकेष से–बेचारे अपने पैतृक सम्पत्ति को बचाने को लेकर परेषान से है, और इनके भाई लोग नही

चाहते की वो सम्पत्ति बचे।

सुकेष,दीपेस से–तो आप अपने भाईयो के सम्पत्ति को खरीद सकते है।

वकील,सुकेष से–तो वो लोग इसे बेच कहां रहे है ! इसी बात का तो बखेड़ा चल रहा है। आपको क्या

लगा ये बात हमने इसे नही बताई होगी। ये बेचारे हरेक उपाय करके थक चुके है, तब

जाकर न्यायालय का दरवाजा खटखटाने के लिए मजबुर हुए है, हमारे माध्यम से।

सुकेष,वकील से– हरेक जगह हरेक तरह की परेषानिया है , पर किसी के पास ज्यादा और किसी के पास

कम।

चाय आता है और तीनो के सामने चाय की कपे रखी जाती है। सभी लोग चाय पीते है, चाय पीते–पीते,,,,,,,,,,

दीपेष,वकील से–तो क्या SIR अभी तत्काल हमे कोई राहत मिल सकती है।

वकील,दीपेस से–हां कोषिष हमारा ये रहेगा कि किसी से बेचने के पहले वो आपसे सहमती लेंगे, क्योंकि आप उसे खरिदना चाहते है तो पहला अधिकार आपका बनता है, अपने होने के नाते, नही तो अंत मे पड़ोसी होने के नाते। आपके द्वारा कोर्ट मे मैने ये अर्जी लगवाई है कि आप अपने पैतृक

सम्पत्तियो को जो आपके भाई के हिस्से कि है उसे पहले खरिदने का अधिकार आपके पास होना चाहिए।

दीपेस,वकील से–षुक्रिया !

इन दोनो की लंबी बातचीत को देखते हुए,,,,,,

सुकेष,वकील से–तो मुझे इजाजत दिजिए, मै चलता हुँ।

वकील,सुकेष से–हां ठिक है , आप जा सकते है।

अब सुकेष वहां से निकल कर अपना मुड बनाने के लिए षराब वाले रेस्टुरेन्ट मे जाकर षराब पीना षुरू करता है जहां कुछ दिन पहले उसे कमल मिला था।

इधर अपने घर पर सुक्खी सोते हुए अपने बिस्तर पर से गिर जाता है और रोता भी नही यह सोचकर की रोने के बाद उसे दुलार प्यार करके चुप कौन करायेगा। फिर नीचे मे ही करवटे मारता अपने पापा के आने का इंतेजार करके–करते सोने की कोषिष कर रहा है। घड़ी टिक–टिक करती हुई अपना समय बदल रहा है, हवाए खिड़की से होती हुई उसे छुकर दुसरे खिड़की से बाहर निकल जा रही है। पड़ोसी के घर के झगरे की आने वाली आवाज जो उसके कानो तक पहुँच रही है, जिसे वो बार–बार नजर अंदाज करता जाता है। किसी भी गाड़ी की आवाज सुनकर वो यह सोचने लगता है कि उसके पापा आ गए है।

वर्त्तमान मे रेस्टुरेन्ट,,,,,जहां कमल,अंकेष और संतो बैठा हुआ है।

अंकेष,कमल से–फिर किसी तरह उसे (अर्चना) षांत करके समझाकर स्थिर करते हुए दुसरे दिन मै उसे घर भेजने

मे कामयाब रहा ये कहकर कि कुछ दिनो बाद हमलोग एक साथ हो जायेंगें। उस रात

हमलोग पहली बार साथ मे रहे थे।

कमल,अंकेष से–तो तुमने उसका औरत होने का फायदा उठा लिया।

अंकेष,कमल से–क्या करे ? हुस्न की चक्की मे तो बड़े–बड़े पीस जाते है, पर मै तो चलते हुए चक्की मे

गिर चुका था।

कमल,अंकेष से–इसका मतलब है कि तुम्हारे आषियाने का सह पाकर वो अपने पति के आषियाने को

छोड़ना चाह रही थी।

संतो अपनी चुप्पी तोड़ते हुए,,,,,

संतो,कमल से–इसकी बातो से तो ऐसा नही लगा। वो (अर्चना) तो षुरू से ही अपने पति से खुष नही थी,

बस उसे किसी ऐसे सख्स का सहारा चाहिए था जो उसे इस बुरे सपने से बाहर निकाल

सके। क्योंकि अगर सफर मे साथी अच्छा हो तो कई लोग मंजिल के आने का या वहां

पहुँचने का इंतेजार भी नही करते। बस सफर का ही मजा लेते है। उसने (अर्चना) षायद

इसमे (अंकेष) कुछ ऐसा ही देखा होगा।

कमल,अंकेष से–तुम लोग इतनी गलती करके किस मुँह से यहां मेरे पास आये । तुम्हे ऐसा क्यो लगा कि

मै अपने लंगोटिये यार जिसके वाईफ वाले लाईफ को तुम लोगो ने झ' से झाग लगाकर

झ' से झंड कर दिये हो। फिर भी हम तुम्हारा साथ दे।

अंकेश,कमल से–अगर ये सारी बाते मै आपको नही बताता तो आप जानते , कभी नही जानते । क्योंकि ये

सब बाते उसके पति को भी पता नही होगी। वरना वो हमारे पास से दुबारा जाने पर

कभी उस घर मे नही रह पाती । ऐसा मै इसलिए कह रहा हुँ, क्योंकि आपने कहा था

षब्दो से सच्चाई झलकनी चाहिए।

कमल,अंकेष से–तुमने सच्चाई को नही झलकाया, बल्कि उसकी बारिष करवा दी। इतना सच भी नही

बोलना चाहिए कि काम ही खराब हो जाए।

अंकेष,कमल से–काम खराब ना हो इसलिए तो सारी सच्चाई आपके कहने पर मैने उगल के रख दी।

मैने कभी उसे (अर्चना) अपने पति को छोड़ने के लिए नही कहा।

कमल,अंकेष से–पर पति को छोड़ने वाली बीज तो डाल दी तुमने।

अंकेष,कमल से–नही ! मैने तो समझाकर उसे उसके घर ही भेजा था। फिर भी वो दोबारा से मेरे पास आ

गई। क्योंकि वो अपने पति से खुष नही थी वो मेरा सहारा चाहती थी मैने तो बस उसकी

मदद की ,अगर नही करता तो कोई और करता, पर मौका मुझे मिला ये करने का तो मैने

कर दिया। बुरे समय मे किसी की मदद करना कोई बुरा काम नही है मेरे ख्याल से।

संतो,अंकेष से–सांस लीजिए भाई। अभी बहुत जीना है आपको।

अंकेष,कमल से–तो यही है मेरी सच्चाई उसके और मेरे बीच नजदीकियाँ बढने की। यहां आपको सही

गलत नही देखनी है बस और बस न्याय करनी है। एक बच्चे और उसके माँ के लिए।

कमल,अंकेष से–बस तुमने कहा ना, न्याय। मै सच्चाई के साथ न्याय करूंगा। पर तुम जो उसे (अर्चना)

बचाने के लिए इतना कर रहे हो, पर तुम्हारे करार के हिसाब से तो तुम उसे कुछ दिनो मे

छोड़ के अपना एक अलग जहाँ बसाने वाले हो ।

अंकेष,कमल से–बसा भी लुंगा तो सुकुन से रहुँगा, यह सोचकर की किसी का कितना भला किया मैने।

संतो,अंकेष से–कही ऐसा तो नही की आपसे नजदिकियाँ बढने के कारण ही वो जेल मे है।

अंकेष,संतो से–ऐसा ही है। उसके सास के मरने तक या मरने के बाद भी वो जेल नही गई थी, लेकिन

कहते है ना होनी हाथ पकड़कर करवाता है। उसके (अर्चना) साथ ऐसा ही कुछ हुआ है।

सास के मरने के बाद उसे स्थिर रहना चाहिए। लेकिन उसने ऐसा नही किया, किया वही

जो उसे नही करना चाहिए था। लगी वो अपने पति को झटके पर झटका देने के लिए। मेरे

पास नही आकर वो अपने मायके या कही और चली जाती ।

अंकेष,कमल से–तो षायद ना मै आपके पास होता और ना आप मेरे सामने बैठे होते। ये बात सही है कि मैने उससे करार किया है , पर ये उसके लगाव पर डिपेन्ड करेगा कि

हम उसके साथ रहे या ना रहे , वो बाद कि बात है । अभी जरूरी है उसे न्याय और न्याय

दिलाने की।

कमल,अंकेष से–फिर उसके पति से ये देखा नही गया कि वो (अर्चना) किसी और के धुन मे नांच रही है

और उसने (सुकेष) अपनी पत्नि पर ही माँ की मौत का इल्जाम लगा दिया।

अंकेष,कमल से–अगर वो (अर्चना) उसी दिन ही , जिस दिन उसके घर मे उसके सास के साथ वो हादसा

हुआ, नही आती तो आज वो वहां नही होती जहां वो है। उसे कुछ दिन बाद मेरे पास

आना था, यानी और कही जाना था। (यह बात कहते हुए अंकेष अपने सर पर हाथ फेरने

लगता है)।

संतो,कमल से–'''आप हमारे नही हुए तो कोई बात नही, पर किसी और के होईयेगा तो जीना मुष्किल कर

देंगे'''' ,वही बात हुई।

कमल,अंकेष से–अपने पति के साथ नही रही तो कोई बात नही ,पर पति को छोड़कर किसी और के साथ

रहिएगा तो पति हो या पत्नि ये सितम कोई बर्दाष्त नही करेगा।

संतो,कमल से–इस बारे मे तो आप बहुत ही जानकार लगते है।

कमल,संतो से–जानकारी है तब तो तुम लोग इतना उगले, वरना बातो का बतन्गर बनता रहता और कारवा

चलता रहता।। बोतलो के झनकार के बीच ना जाने क्या–क्या गाना बजता रहता।

अंकेष,कमल से–तो अब आप कहिए, किस मती से, किस चाल से और किस चतुराई से चलना पड़ेगा। जो

हमारे नही तो आपके हाथो और किसी का उ़द्धार हो जाय।

संतो,कमल से–इसने (अंकेष) तो अपना दुखड़ा सूना दिया, अब आप अपना फैसला फैलाईये। ताकि हमलोग

उससे रूबरू हो सके और दुःख की इस घड़ी मे सुख का आनंद ले सके ये (अंकेष) बेचारा।

कमाल की बात है अगर इसके साथ ये घटना ना होता तो आपके होने का महत्त्व ही ना

पता चलता ।

कमल,संतो से–जितना बोलना है बोल लो। पर होगा वही हो हम बोलेंगे।

अंकेष,कमल से–तो आप क्या बोलेंगे।

संतो,कमल से–बताईये ! कहानी मे इतना सस्पेंस अच्छा नही है। समय रहते सस्पेंस खत्म हो जाना चाहिए,

ताकि लोग पाँच मिनट के लिए ही सही बाथरूम तो जा सके।

अंकेष,कमल से–तो मुझे देर हो रही है । वो सुक्खी मेरा इंतेजार रहा होगा ,अभी तक उसने खाना भी नही

खाया होगा। उसकी माँ अभी नही है इसलिए उसकी सारी देख–रेख हमें ही करनी है।

अगर आप कुछ बताऐंगे तो इस उम्मीद के सहारे कुछ और देर तक रूका जा सकता है।

कमल,अंकेष से–षराब मे उतना नषा कहां है, जितना नषा तुम्हारे जुनून मे तुम्हारा है।

अब कमल अपने दोनो हाथो के अंगुलियो को टेबल पर पटकने लगता है (ताल के रूप मे) और अपने दोनो पैरो को हिलाकर खुले आँखो से कुछ सोचने लगता है फिर,,,,,,,

कमल,अंकेष से–हां ठिक है, पर मुझे मेरे दोस्त से बगावत करने के लिए मेरी जो षर्ते है उसका क्या ?

अंकेष,कमल से–मानने लायक हुआ तो जरूर पुरा करेंगे।

कमल,अंकेष से–पहली षर्त ये है कि मुझे दस लाख रूपयाँ चाहिए।

संतो,अंकेष से–लगता है एक से ज्यादा षर्ते है।

अंकेष,कमल से–दिया। वो भी खुष होकर।

कमल,अंकेष से–दुसरी थोड़ी कठिन है, पर सोच समझकर जवाब देना।

अब अंकेष और संतो एक दुसरे को यह सोचकर देखने लगते है और अंकेष मन–ही–मन मे सोचता है कि इसकी दुसरी षर्त क्या होगी ? जिसके बारे मे ये सोच समझकर जवाब देने को कह रहा है। ऐसा लगता है हम इससे भीख मांगने आये है और ये हमें अपने हिसाब से भीख दे रहा है। इस साले का पल्ला हमसे नही पड़ता वही ठिक होता। पर अब परे हुए पल्ले को झार भी तो नही सकते है। फिर अंकेष भीतर से अपने–आप को थोड़ा सम्भालते हुए,,,,

अंकेष,कमल से–कहिए।

कमल,अंकेष से–तो तुम लोगो को कोई ऐसा बहाना ढुंढना पड़ेगा जिससे सुकेष से मुझे कोई परेषानी नही

हो, किसी को बचाने के लिए ये दोस्ती का रिष्ता थोड़े देर के लिए टूट भी जाय तो कोई

दिक्कत नही , पर जिंदगी अच्छी से बीते बस यही कामना है।

संतो,कमल से–ये क्या बात हुई ? इन सब के लिए तो आपने रूपये का डिमांड तो कर ही दिया है। ये सब

मैनेज करना तो अब आपका काम रह गया ना।

कमल,संतो से–मानता हुँ ,पर ये काम अगर मै करूंगा तो ये एक दोस्त का एक दोस्त के लिए गद्दारी

लगेगी। चाहे मै कितना ही सही काम करने के लिए क्यो ना जा रहा हुँ ? पर वो काम तो

उसके खिलाफत की है। डर लगता है किसी को बचाने मे किसी अपने का दुष्मन ना बन

जाउ। उसे ऐसा लगना चाहिए कि जो भी हो रहा है वो सही हो रहा है। वैसे तुम्हे बता दुँ

की सुकेष ने हमे कहा है तुम लोगो के बीच मे नही पड़ने के लिए । उसके बहुत सारे कर्ज

है हमपर, जिसे मै चुकाना नही चाहता। नही चुकाने के लिए उससे बचके चलना जरूरी है।

कमल,अंकेष से–फिलहाल मै चलता हुँ । अगर जब भी हमसे मिलना हो तो ना ही मेरे दुकान पर जाना

और ना ही मेरी माँ से मिलना ।

संतो,कमल से–हां समझ गए षराब के ठेके पर ही मिलोगे आप।

यह कहते हुए कमल वहां से निकलता जाता है।

संतो,अंकेष से–ये क्या कह रहा है ये ? ये गवाही देगा या गोल–गोल हमें घुमा रहा है।

अब जैसे ही कमल उस रेस्टुरेन्ट से बाहर निकलता है , देखता है कि उसके सामने वाले रेस्टुरेन्ट से सुकेष

अपना मुड बनाकर नषे मे धुत्त होकर बाहर निकल कर रूककर सिगरेट पी रहा होता है ,इसे इत्तेफाक कहिए या और कुछ पर कमल को इस बारे मे कुछ पता नही होता। कमल यहां सुकेष के नजरो से बचकर निकलना चाहता है क्योंकि अगर उसे सुकेष ने देख लिया तो वो उससे पुछ–ताछ करेगा जरूर ,और यह भी देखना चाहेगा की वो यहां किसके साथ बैठकर पी रहा था। पर ऐसा होते कमल नही देखना चाहता था। इसलिए वो चुपके से पीछे मुड़ते हुए दुसरे रास्ते पकड़कर अपने घर को चला जाता है। पीछे से ये दोनो अंकेष और संतो रेस्टुरेन्ट से बाहर निकलते है , लेकिन इन दोनो की नजरे सुकेष पर पड़ने से पहले सुकेष की नजरे इन दोनो पर पड़ जाती है, जिससे सुकेष अपने आप को छुपाते हुए वापस उसी रेस्टुरेन्ट के भीतर चला जाता है जिससे पीकर वह बाहर निकला था। वो ये समझने कि कोषिष मे जुट जाता है कि आखिर ये दोनो यहा कर क्या रहे है ? सुकेष रेस्टुरेन्ट के दरवाजे के अंदर से इन दोनो के जाने का इंतेजार कर रहा होता है।

संतो,अंकेष से–(रेस्टुरेन्ट के बाहर मे जाते हुए) ये कमल पुरी षराब पीकर आधी बात कहकर चला गया।

देखने मे ये बेवकुफ जैसा लगता है पर अभी तक ये हमलोगो के समझ मे नही आया है। ये

क्या बोलता है और क्या बता करके जाता है कुछ पल्ले ही नही पड़ रहा है।

अंकेश,संतो से–वक्त पर किसी को भी बाप, दादा बड़ा भाई बनाना पड़ता है ये वही पल हैं।

इन दोनो के इस तरह बात करते – करते वहां से निकलने के बाद सुकेष अब उस रेस्टुरेन्ट मे जाता है जहां

ये लोगे कुछ देर पहले बैठकर षराब पी रहे थे।

सुकेष,कॉउंटर स्टाफ से–यहां से जो दो लोग अभी बाहर गए है उसके साथ कोई तीसरा आदमी भी था

क्या ?

कॉउंटर स्टाफ–हां वो इससे कुछ देर पहले निकला था।

सुकेष–उसके बारे मे बता सकते हो वो कैसा था।

कॉउंटर स्टाफ–उसके बारे मे तो कोई भी बता देगा, की उसके बाल लम्बे थे, हाथ मे छोटी मोबाईल जिसे

वो बार–बार निहारता रहता था यह सोचकर जैसे किसी के फोन आने का इंतेजार कर रहा

हो।

कॉउंटर स्टाफ के द्वारा इस तरह के हुलिए के बारे मे बताने पर सुकेष को लग रहा होता है कि यहां उन

लोगो (अंकेष,और संतो) के साथ कमल ही होगा, वरना वे लोग यहां इतने दुर आकर षराब क्यो पीयेंगे। अब मन मे गुस्से को दाबे हुए सुकेष वहां से निकलता है और सीधे कमल के घर पहुँचता है।

सुकेष,कमल की माँ से–तो आंटी दिन से ही कमल को खोज रहा हुँ वो है कहां ?

कमल की माँ,सुकेष से–होगा कही, किसी का पंचेती कर रहा होगा। उसने घर को दुकान और दुकान को

घर बना रखा है। वो रहता कहां है ये उसे भी नही पता जो उसके साथ रहता है,

जैसे की तु।

सुकेष, कमल की माँ से–हां ये बात तो है, वो कब किधर चले जाता है, कितनो का काम जो नही होने

वाला है, वो काम करने के लिए जवाबदेही ले लेता है। वैसे है कहां वो ?

कमल की माँ,सुकेष से–अभी तो आया था, और अभी–अभी गया है ये कहकर की किसी का कुलर खराब

हो गया है जिसे देख कर आता हुँ।

सुकेष, कमल की माँ से–अभी इतने सुहाने मौसम मे किसे कुलर की जरूरत पड़ गयी। क्या अब वो कुलर

मे बैठकर रात गुजारेगा क्या ?

इतने मे कमल अपने घर आ जाता है,,,और बाहर से ही सुकेष की बाते सुनकर अचंभित रह जाता है।

सोच मे पर जाता है कि कही सुकेष ने हमे अंकेष के साथ देख तो नही लिया। अगर देख लिया होगा तो उस बारे मे पुछेगा तो क्या जवाब दुंगा। सुकेष कमल से कुछ पुछे उससे पहले कमल ही उसपर धाबा बोल देता है।

कमल,सुकेष से–तो आज षाम से कहां थे तुम जो खोजने पर भी नही मिले।

सुकेष,कमल से–मन से खोजोगे तो भगवान भी साक्षात दर्षन दे देते है। पर मै तो इंसान हुँ , मै तुम्हे

दर्षन देने से खुद को कैसे रोक सकता हु। पर तुम मुझे क्यो खोज रहे थे ?

कमल,सुकेष से–क्यो खोज रहे थे ? तुम मेरे दोस्त हो, दोस्तो से बेवजह मिलना भी एक प्रकार की दोस्ती

है। ऐसा तो हमलोग कई बार कर चुके है।

सुकेष,कमल से–तुम बातो के इतने माहिर हो चुके हो कि किसी को जीतने ही नही देते।

कमल,सुकेष से–मै क्या करू ? वो हो जाती है अपने–आप, इतने दिनो का अनुभव है मेरे पास।

सुकेष,कमल से–ठिक है बाहर चलो कुछ बाते करनी है।

दोनो बाहर आते है ,,,,,,

सुकेष,कमल से–तो आज उन लोगो को मैने तुम्हारे ईलाके वाले रेस्टुरेन्ट मे देखा।

कमल,सुकेष से–किसे देखा ?

सुकेष,कमल से–उसे ही, जिसे उस दिन मै रेस्टुरेन्ट मे तोड़ने और पटकने वाला था।

यह बात सूनकर कमल थोड़ा हिचक सा जाता है और किसी भी तरह जबतक हो सके ये सारी बातो को मिलाकर चलना चहता है। जिससे दोस्ती का दिवालिया ना निकले। पर जब पानी सर से ऊपर चला जाता है तो ना चाहते हुए भी इंसान को हाथ–पैर मारना पड़ता है।

सुकेश,कमल से—तो हमें ऐसा क्यो लग रहा है कि मेरे दोस्त से गद्दारी की बू आ रही है ? जिससे मै

समझ नही पा रहा हुँ, अपनो की इस चाल को।

कहते है षराब के नषे के बाद आदमी की मनोदषा के साथ—साथ उसकी सोचने समझने की क्षमता फिल्हाल रूक सी जाती है। वही आज कमल के साथ—साथ सुकेष के साथ भी होने वाला था।

कमल,सुकेष से—तुम इतने लंबे चौड़े देने लगते हो जैसे मानो मेरे कलेजे पर ही आकर बैठ जाते हो। ये

बताओ किसी निर्दोष को सजा देकर तुम्हे क्या फायदा ?

सुकेष,कमल से—अच्छा ! तो बात यहां तक पहुँच चुकी है।(जोर से) ऐसी बात मत करो ! मेरी माँ मरी है।

कमल,सुकेष से—(जोर से) हां मुझे ये बात पता है, तुम्हे बताने की जरूरत नही है, और ये भी पता है कि

सच्चाई क्या है ?

सुकेष,कमल से—ओ तो तुम्हे लालच दिया गया है षायद उसके (अंकेष) तरफ से।

कमल,सुकेष से—ऐसी—वैसी बात ना किया करो। तुम्हारी मुँह से ये सब बाते सुनने मे तकलिफ होती हैं।

सुकेश,कमल से—तो तुम गवाही ना दो गे।

कमल,सुकेष से—यहां बात गवाही की कहां से आ गई ?

सुकेष,कमल से—खींचा—तानी तो उसी बात की चल रही है।

कमल,सुकेष से—ये सब बाते वैसी ही चलती रहती है, तुम क्या देख रहे हो ? और हम से क्या कह रहे हो

? पहले तुम अपने—आप मे अच्छी तरह से सोच लो फिर कहना जो कहना चाहते हो।

सुकेश,कमल से—ये सोचने वाली बात तो मैने पहले ही कह डाली, जो कह डाली वही तो मुद्दा है आज का।

अब अंदर से कमल की पत्नी निकलती है,,,,,,

कमल की पत्नी दोनो से—ना जाने मैं कितने दिनो से इस पल का इंतेजार कर रही थी कि तुम दोनो मे

कब झगरा हो और ये (कमल) समय से घर आना षुरू करे।

सुकेष,कमल के पत्नी से–तो आप बुझते हुए आग मे पेट्रोल डाल रही है।

कमल की पत्नी,सुकेष से–तो क्या करे ? आप लोगो ने थमाया ही पेट्रोल है तो पानी कहां से डाले।

सुकेष,कमल की पत्नी से–तो आपके कहने का मतलब क्या है ?

कमल की पत्नी,सुकेष से–वही मतलब जो एक पत्नी अपने पति को समय से घर आने के लिए हरेक तरह

से कोषिष करती है।

सुकेष,कमल की पत्नी से–आपके जानकारी के लिए बता दुं कि आप जैसा सोच रहे है वैसा बिल्कुल नही

है, अगर ऐसा हुआ तो मेरे कमल भैया का क्या होगा ?

अब कमल अपनी चुप्पी तोड़ते हुए ,,,,,,,,,

कमल,सुकेष से–तो षब्दो को यही विराम दो और चलो घर से बाहर सड़क पर टहलते हुए बात करते है।

कमल की पत्नी,कमल से–क्या हुआ उसे बोलने तो दो। सब दिन तुम जो कहते रहते हो सुकेष के पास

थे–सुकेष के पास थे, और ये तुम्हारा दोस्त झुठ पर झुठ बोले जा रहा है।

कमल,अपनी पत्नी से–अरे अंदर जाकर अपनी सास को खाना खिलाओ और बहु होने का फर्ज निभाओ।

कमल,सुकेष से–सारी दिन दोनो सास बहु मिलकर मेरी पंचेती करती रहती है। चलो आगे चलते है।

दोनो सड़क पर चलते है और बातो को फिर से षुरू करते है,,,

कमल,सुकेष से–देख दोस्त तुझे ऐसा क्यो लग रहा है कि तुझे जो लग रहा है वो सही ही लग रहा है।

सुकेष,कमल से–मुझे ऐसा लगा तो तेरे पास आ गया, अपना दिल हल्का करने के लिए। अब तुम ही हो

जो मुझे तसल्ली दे सकते हो, और ये भी बता दो कि सच्चाई क्या है ?

कमल,सुकेष से–अरे मिट्टी डालो बातो पर, तुम्हे भी पता है और हमें भी पता है कि कोई बेवजह सजा काट

रही है। अगर उसकी गलती नही हो तो उसे छोड़ दो।

सुकेष,कमल से–कैसी बात कर रहो हो तुम ?

कमल,सुकेष से–देखो माफ करने वाला सबसे बड़ा होता है। अगर वह (अर्चना) निर्दोष है तो उसे माफ कर

दो। मै मानता हुँ उसकी थोड़ी–बहुत गलतियाँ है, पर उतनी नही जितने की वो सजा काट

रही है।

कमल की ये बाते सुनकर सुकेष को अब पुरा यकिन हो जाता है कि ये कमल कही ना कही उन लोगो के

टच मे है, और ये हमें ठग लेगा क्योंकि इसके चाल–चलन हमे कुछ ठिक नही लग रहे है। अब सुकेष को थोड़ा गुस्सा आना लाजिमी है।

सुकेष,कमल से–लगता है मेरे हाथो से अब किसी का मर्डर होने वाला है।

कमल,सुकेष से–तो सच से सामना हुआ तो मुँह फेरने लगे और दिखा दी अपनी औकात।

सुकेष,कमल से–घबराओ नही ! उसके यार का मर्डर होगा , जिसके लिए वो (अर्चना) इतनी प्यासी है।

अब सुकेष वहां से गुस्सा होकर चला जाता है।

कमल,सुकेष से–अरे दोस्त सुन तो सही , मै तो बातो से समस्या को सुलझा रहा था। तुम हो कि सुलझने

देते ही नही।

सुकेष,कमल से–(पीछे मुड़कर जोर से) मै समझ गया तुम समझने वाले नही हो। इसका परिणाम जब

तुम्हारे सामने होगा तब तुम्हे समझ आयेगा। दोस्त होने के नाते मै तुम्हे समझा रहा हुं ,

समझ जाना । वरना दोस्ती तो जाएगी ही और भी कुछ जा सकता है।

फिर सुकेष ये सारी बाते कहते हुए वहां से निकल जाता है। दुसरे दिन जेल मे अर्चना को एक महिला पुलिस

के द्वारा पुकारा जाता है,,,,और कहा जाता है कि जा तुझसे मिलने कोई आया है। अर्चना जैसे ही मिलने वाली रूम मे पहुँचती है तो खिड़की के उस पार सामने देख कर उसके होष उड़ जाते है। क्योंकि वो सामने मे आज कमल को देख रही होती है, जिसे वो सुकेष के दोस्त के तौर पर जानती है,पर उसके नाम से वाकिफ नही है। फिर वो आष्चर्य मे पर जाती है और

सोचने लगती है कि षायद जिसे अंकेष दिन मे दिये जलाकर खोज रहा है, वो खुद–ब–.खुद मेरे सामने मुझे दिखाई दे रहा है। क्या ये मेरे लिए एक सुनहरा मौका है, या मेरे आँखो का धोका है।

कमल,अर्चना से–(बड़े अदब से) तो कैसे है आप ?

अर्चना,कमल से–अपना, अपना ना रहा, तो कोई पराया ही सही । पर आपकी मौजुदगी मुझे हैरान कर रही

है। क्योंकि आप उसके (सुकेष) दोस्त है, जो हमसे त्रस्त है।

कमल,अर्चना से–इन सब बातो के कारण अपने दिमाग पर बेवजह जोड़ मत डालिए, जोड़ डालिए उस चीज

पर जिससे आपका भला हो सके।

अर्चना,कमल से–बस यहां से निकल जाऊ, सिर्फ इसी भले की उम्मीद करती हुँ। पर करना क्या है ये नही

पता।

कमल,अर्चना से–तो बहुत दुख होता है ये देख कर की आप यहां है।

अर्चना,कमल से–लेट से ही सही पर दुःख तो हुआ आपको। तो हमसे क्यो मिलने आये है ?

कमल,अर्चना से–थोड़ी लम्बी सांसे लेकर स्थिर हो जाईये और अपने आप को जरा षांत कीजिए। कोई

वजह, बेवजह नही होती, क्योंकि पत्ते भी बिना हवा के मर्जी से नही हिला करते। दुःख

हुआ जब हमें आपके बेवसी के बारे मे पता चला, फिर मेरे अंतरात्मा से एक आवाज आयी

वो आवाज थी अगर हो सके तो किसी का भला करना।

अर्चना,कमल से–अचानक से आप हमपर इतने मेहरबान कैसे ? उसके (अंकेष) कहने पर या अपने–आप

आपकी खुद्दारी जाग सी गई हमारे बारे मे जान कर।

कमल,अर्चना से–आपके बारे मे तो मुझे पहले से पता था, पर मुझे बारिकी से जब बताया गया तब मेरे

कदम ना रूके आपसे रूबरू होने के लिए।

अर्चना,कमल से–तो आप मेरे लिए क्या कर सकते है ?

कमल,अर्चना से–ऐसा लग रहा है कि हम ही कर सकते है और कोई नही कर सकता,अगर कोई कर

सकता है तो उसमे समय लगेगा।

अर्चना,कमल से–आप कुछ पुछने आये है या बताने आये है। ये सारी बाते मेरे पल्ले नही पर रहा है।

अर्चना,कमल से–आपको यहां किसने भेजा है ?

कमल,अर्चना से–बस ये मान लीजिए कि मुझे रास्ता दिखाया गया है और मै आपका भला करने आया हुँ।

अर्चना,कमल से–वो कैसे ?

कमल,अर्चना से–मै आपको यहां से निकलने मे मदद कर सकता हुँ।

अर्चना,कमल से–तो कीजिए ना। कहां थे इतने दिन ? मै तो ना जाने कितने दिनो से इस पल का इंतेजार

कर रही थी की कोई आये और मुझे यहां से निकाल ले जाये।

कमल,अर्चना से–बस आप मुझे सच्चाई बता दीजिए, मै सच्चाई का साथ दुंगा।

अर्चना,कमल से–पर हमें ऐस क्यो लग रहा है कि आप यहां अपने फायदे के लिए आये है।

कमल,अर्चना से–नही ऐसी कोई बात नही है।

अर्चना,कमल से–फिर मै कैसे मान लू कि आप हमारे पास और हमारे लिए ही आये है।

अब कमल बातो के बतंगर को रोकते हुए,,,

कमल,अर्चना से–अंकेष हमसे कई बार मिल चुका है।

ये बात सूनते ही अर्चना आगे कोई भी बात बोलने से पहले रूक सी जाती हैः–

कमल,अर्चना से–पर मै खुद आकर आपसे मिलकर सच्चाई जानना चाह रहा था। तो आप अपने बारे मे

कुछ बताना चाहती है तो बताईये।

अर्चना,कमल से–तो अंकेष ने आपसे क्या कहा और आप क्या करना चाह रहे है।

कमल,अर्चना से–अंकेष ने हमसे वही कहा जो आपने अंकेष से कहा, पर उस दिन के बारे मे मै आपसे जानना चाहता हुँ, वो इसलिए कि मै भी वहा

पर मौजुद था, लेकिन कुछ देर हो चुका था। लेकिन सुकेष के बातो से ऐसा लगता है कि आप कितने खतरनाक खलनायिका है।

अब अर्चना गुस्से से मुस्कुराने लगती है,,,,,

अर्चना,कमल से–तो सनम बेवफा वाली कहानी आपने भी सुनी। हम उसके ना रहे, वो हमारे ना रहे। वो

किसी ओर के होने लगे और हम किसी और के भी ना रहे। चक्रव्यूह तो उसने ही रचा

और फंस हम गए। हमे क्या पता घर को जोड़ने मे इतनी बड़ी सजा मिलती है। मेरी उस

दिन की कहानी कोई खास नही ,, बस थोड़ी सी भुमिका ही थी उस दिन ।

अब अर्चना काल कोठरी के अंदर से खिड़की के सामने खड़े कमल को पुरा आप बीती सुना डालती है और साथ ही साथ सुकेष के अवगुणो को भी उसके सामने पड़ोस देती है, जैसे–उसका बार–बार अर्चना पर हाथ उठाना, अपने पत्नी को पत्नी ना समझना, छोटी बातो को बड़ा माजरा बनाकर मां के बातो को ही सही मानकर घर के षांत माहौल को बेवजह खराब करना। ताकि कमल को भी सुकेष के घर के प्रति उसके व्यावहार के बारे मे पता चल सके।

कमल,अर्चना से–तो बाते बहुत गंभीर थी, जो हमें पता नही थी। ऐसा उसने (सुकेष) कभी बताया नही, और

आपसे कभी रूबरू ना हुए इसलिए आपने सुनाया नही। तो हुआ यू कि उसकी (सुकेष)

मां को आपने कुछ किया नही, उसके साथ जो भी हुआ वो उसके खुद के गलती के

कारण ही हुआ। हां उस समय उसने (सुकेष) हमसे कहा था कि उसके माँ के सर मे चोट

लग गई है गिरने के कारण, इसलिए उसे जल्दी से हॉस्पिटल ले जाने के बारे मे कह रहा

था। फिर हमलोग एम्बुलेंस बुलाकर उसे हॉस्पिटल भेजे। पर वो ठिक थी, वो गुजर कैसे

गई ये षायद सोचने वाली बात है। इस बारे मे हमे ज्यादा नही पता, पर आप हमें निर्दोष

लगते हो।

कमल की इस तरह की बाते सूनकर अर्चना को थोड़ा सुकून मिलता है और वो अपने पलको को झपकाते हुए मन ही मन कमल को षुक्रिया करती है, पर चाह कर भी वो हँस नही पाती है, क्योकि वह अभी माया जाल मे फंसी हुई एक विवष कैदी है जिसे हर किसी के सहारे की जरूरत हैं। उसके इस तरह के बेवसी को कमल भली–भाँती समझ रहा होता है और उसके ना हँस पाने की मजबुरी को भी। फिर भी उसके चेहरे की षुकून वाली रंगत को देख कर कमल को अच्छा लगता है और मन मे ठानता है कि इस दुखियारी को अगर दुख से मै निकाल सकता हुँ तो इसके लिए हर कोषिष करूंगा।

कमल,अर्चना से–मै जो आपसे पुछने और समझने आया था वो पुछ भी लिया और समझ भी लिया। अपना

ख्याल रखिये ,सब ठिक हो जायेगा। मै चलता हुँ।

अब कमल अपने दिलो मे बहुत सारे बातो को लिए एकदम चुपचाप से जेल से लौटता है, और बगैर किसी के अनुरोध के ही अर्चना के पक्ष मे गवाही देने का मन बना लेता है। पर कही ना कही उसे सुकेष के धमकियो का भय भी सता रहा होता है। जिसका तोर वह अपने से तलाषने की कोषिष के बारे मे सोचने लगता है।

उसी समय सुक्खी अपने स्कूल के क्लास मे बेंच पर उदास बैठा है और टिचर के पढाने पर उसका ठिक से ध्यान भी नही जा रहा है। कभी वो खिड़की के तरफ देखता है तो कभी अपने क्लास के दरवाजे की तरफ तो कभी टिचर के द्वारा पढाये जाने वाले बोर्ड को भी देख कर कुछ अपने नोट बुक पर लिख लेता है।

वो उदास है , वजह उसके पास उसके माँ का ना होना है।

दुनियाँ मे सब उसे प्यारे लगते है, पर उसकी माँ उसके लिए एकदम खास है।।

सुक्खी का दोस्त,सुक्खी से–तो तुम आज पढाई नही कर रहे हो।

सुक्खी–कर रहा हुँ , पर धीरे–धीरे।

सुक्खी का दोस्त–जानते हो डांस प्रोग्राम होने वाला है स्कूल मे, बाहर से लोग आयेंगे । यहां डांस होने

वाला हैं। कल षाम को प्रोग्राम है।

सुक्खी–क्या ? सही मे ! तुम्हे किसने कहा ?

सुक्खी का दोस्त–मुझे पता है और आज सबको पता भी चल जायेगा। तो कल षाम को तुम आओगे ना।

सुक्खी–अब मेरे पापा मुझे लेकर आए तो ना । उन्हे तो बहुत काम रहता है।

दोस्त–अरे कल दिन मे स्कुल बंद है। सिर्फ षाम को ही आना है।

अब ये बात सुनकर सुक्खी थोड़ा खुष हो जाता है और,,,,,

सुक्खी–मुझे अच्छा लगेगा ,मै आउंगा जरूर अपने पापा के साथ।

जेल मे,,,,,,

रूबी,अर्चना से–तो आज तेरा मन थोड़ा हरा–हरा सा लग रहा है ,तुझे इस तरह से किसने भरा। तेरा

आषिक आया था या उससे भी कोई प्रिय – प्रियतम था।

अर्चना,रूबी से–जब जिंदगी उलझती है तो मानो ऐसे तोड़ती है जैसे –दिलो–दिमाग मे आपका कुछ बचा

ही ना हो, और जब सुलझती है तो ऐसा लगता जिसकी हमें जरूरत है वो खुद–बखुद

आपके पास चलकर आ रहे हो, वो भी बिन बुलाये। एक गवाह आया था मुझे ये बताने के

लिए की वो मुझे बचाना चाहता है।

रूबी,अर्चना से–फिर तो ये तेरे लिए सोने पे हिरे जैसा हुआ ना।

अर्चना,रूबी से–पर उसके मन क्या था ये मै पता नही कर सकी, ऐसा लग रहा था जैसे वो मदद के लिए

नही कुछ पता करने के लिए आया हो या हो सकता है मेरी सिचुएषन कितनी खराब है यह

देख कर किसी को बताकर खुष होने के लिए या किसी और के खुषी के लिए या किसी

लालच से।

रूबी,अर्चना से–लगता है तुझ पर तो अगल–अगल तरह से जाल फेका जा रहा है, जो माया जाल के जैसे

लग रहे है ।

इतने मे एक महिला सिपाही इन दोनो के पास आती है और फिर,,,,,

महिला सिपाही,अर्चना से–सूनो जी अर्चना ! आज तेरा काम खाना बाँटने मे लगा है। रसोई मे जाकर

रसोईया से मिल लेना।

रूबी,महिला सिपाही से–इससे ना हो पायेगा मैम, इसने पिछले बारी किया था ये काम, सारे भुख्खरो ने इसे

परेषान ही नही किया बल्की इसके दिमाग को हैक करके छोड़ दिया। ये बेचारी

तो आपको बोल नही सकती इसलिए मेहरबानी करके कोई दूसरा ही हुकूम दे

दिजिए।

महिला सिपाही,रूबी से–क्यो इसके (अर्चना) मुँह मे कुछ जमा हुआ है, जो बोल नही सकती ,या तु इसकी

पी0 ए0 बनी बैठी है। करने दे ना इसे ,सीखेगी कब ये ?

महिला सिपाही,अर्चना से–चल आ जा।

अर्चना,महिला सिपाही से–ठिक है।

महिला सिपाही यह कहकर वहां से चल पड़ती है।

रूबी,अर्चना से–देखना आज कोई गरबड़ी ना हो उस दिन की तरह। बोलना कम और सिर्फ हाथ चलाते

रहना। वरना खाना बाँटने जैसे पुण्य काम के लिए वे खाना माँगने वाले लोग तुझे हाय

लगने वाली बद्दुआये बड़े आराम से देकर जाएंगे।

अर्चना,रूबी से–दुआँ हो या बद्दुआ कुछ तो लगे। कमबख्त लगती कहां है जो।

रूबी,अर्चना से–देख तू बड़ी षांत स्वभाव की है, यहां पे षांति तुझे अषांति की तरफ धकेल सकती है। तु

जब षांत रहती है तो कुछ लोग तेरी तरफ खींचे चले आते है और तुझे आकर नोंचने लग

जाते हैं। मै तेरी षुभ चिंतक हुँ ,इसलिए ये सब बाते बोल रही हुँ । वरना तुझे पता है मै

ज्यादा बोलती नही सिवाय तेरे मेटर के।

सारी बातो को बड़े आराम से अर्चना सुनती है और कुछ पल बाद वो रसोई घर के तरफ चल पड़ती है। फिर कुछ समय के बाद अर्चना कैदियो को खाना बाँट रही होती है। लाईने लंबी है और षोर थोड़ा थमा हुआ सा है, कुछ कैदी लोगो की नजरे बड़े षालिनता से तो कुछ कैदी की नजरे कटुता से अर्चना को देख कर अपनी बारी का इंतेजार कर रही होती है। नजरे झुकाये अर्चना बराबर से सभी को खाना पड़ोस रही होती है। तभी संयोग से उसके सामने षालिनी जो एक कैदी है प्रकट हो जाती है फिर क्या ? आईये जानते है क्या होता हैः–

ष्षालिनी,अर्चना से–तो तु तो हमलोगो की दाता बनी बैठी हुई है। पर अपने आपको ज्यादा उँचा मत

समझने लगना ।अपने दायरे मे ही रहना, चल बढाकर खाना डाल।

ष्षायद रूबी जो सोच रही थी वही हो रहा था, वो षालिन के द्वारा अर्चना से इस तरह के बदसलुकी वाली हथकंडे को बराबर से देख रही थी और मन ही मन उसे वराईटी–वराईटी की गालिया दे रही थी। षालिनी भी अर्चना से बात करते हुए रूबी को खोज रही थी कि आखिर अर्चना की सहेली रूबी है किधर,,,।

षालिनी,अपने पीछे वाली से–खाना ये जानबुझ कर कम करके दे रही है। बोलोगे नही तो अच्छे से मिलेगा

नही। हक मांगने से भी नही मिलता उसके लिए तो लड़ना ही पड़ता है।

फिर षालिनी अपने थाली को आगे खाना लेने के लिए बढाती है और जैसे ही अर्चना थाली मे खाना डालती है ठिक उसी समय षालिनी अपने थाली को पीछे खींच लेती है, जिससे खाना नीचे गिर जाता है।

षालिनी,अपने पीछे वाली से–देखो ! खाना कम क्या ? ये तो खाना नीचे गिराकर दे रही है हमें।

पीछे वाली महिला कैदी,अर्चना से–तु तो बैरिस्टर बन गई है रे। तुझे हाथो मे इन लोगो ने खाने का कमान

क्या सौपा तु तो लगी मचलने ।पर अफसोस की तेरी मचलन को हम कम नही कर सकते।

पीछे से एक और महिला कैदी,अर्चना से–हुआ तो, तु उसकी मुँह क्यो देख रही है। खाना बाँटने पर ध्यान

दे, क्योंकि भुखा पेट बहुत कुछ करा सकता है।

इन सारी बातो को एक महिला सिपाही बड़े बारिकी से देख रही थी, क्योंकि उसे कुछ समय पहले अर्चना के द्वारा षालिनी के कर्मकांड के बारे मे बता दिया गया था। फिर महिला सिपाही चहल कदमी करते हुए षालिनी के पास अर्चना के सामने आकर खड़ी हो जाती है।।

महिला सिपाही,षालिनी से—मैं तुझे देख रही थी ,पर तु मुझे नही देख रही थी । तेरे अंदर जो किड़ा रेंग

रहा है ना उसे षांत कर ले, वरना हमलोगो को षांत करना पड़ेगा। खाना ले

और निकल बाँए दाब के, वरना तु जानती है हम पुलिस वाली को। हमलोग

जब तुझे यहां वहां से कुटेंगे तो तु छितर जायेगी।

अब षालिनी अर्चना की ओर अपनी थाली बढाकर खाना लेती है और उसे कोसते हुए आगे बढ जाती है।

महिला सिपाही,

सभी खाना लेने वाली कैदियो से—तो सुनो इसकी (षालिनी) तरह और कोई फटराईस मत झारना।

वरना उसका मै क्या करूंगी ये अभी तक मुझे भी नही पता। चलो सब लोग अपने बारी के हिसाब से खाना लो और जगह पर जाकर मुँह मे चापो।

फिर अर्चना खाना बाँटने का काम षुरू कर देती है। अब रूबी महिला सिपाही के पास पहुँचती हैः—

रूबी,महिला सिपाही से—आप नही आती तो आज मै उसे (षालिनी) दिखाती की सिर्फ उसी के षरिर मे

किड़ा नही काटता है, हमलोगो मे भी उससे बड़े—बड़े किड़े है। जो निकल—निकल

कर काटते है।

महिला सिपाही,रूबी से—तु भी षांत रहा कर, उसकी (अर्चना) तरह। जेलर बनने की कोषिष मत कर,

उसके लिए बहुत सारे लोग है जो लाईनो मे लगे है। मै यहां हुँ ये सब संभालने के लिए।

जा तु भी अपनी उपवास तोड़ ले।

अब अर्चना के खाना बाँटते समय उसके सामने एक नई कैदी आती है जिसका नाम मार्फी है, जो अपने

पड़ोसी के हत्या के आरोप मे अपने पति और देवर के साथ–साथ जेल आयी है पिछले रात को।

अर्चना,मार्फी से–नई हो।

मार्फी,अर्चना से–(ईषारो मे) हां। (इससे ज्यादा बोलने की उसमे ताकत नही बची है, क्योंकि वो सदमे मे

है)।

अर्चना,मार्फी से–कौन से कमरे मे हो ?

मार्फी,अर्चना से– बारह (12) ।

इतने मे अर्चना उसे खाने की सारी आईटम पड़ोस चुकी है।

अर्चना,मार्फी से–खाना खाने के बाद मिलना हमसे वहां उस पेड़ (पेड़ की ओर ईषारा करते हुए) के पास।

यह बाते सुनकर अर्चना को देखते हुए मार्फी बगैर कुछ बोले अपनी खाने की थाली लेकर आगे बढ जाती है और उसी पेड़ के नीचे जहां के बारे मे अर्चना के द्वारा कहा गया है वहां जाकर बैठकर खाने लगती है। कुछ पलो के बाद वहां अपने हाथो मे खाने की थाली लिए षालिनी पहुँचती है:–

षालिनी,मार्फी से–क्यो ना हमलोग एक दूसरे से परिचित हो जाए।

मार्फी षालिनी की बाते सुनकर बगैर कुछ बोले मायुष होकर खाते हुए अपनी भुख मिटा रही है।

षालिनी,मार्फी से–लगता है सदमे मे हो।

फिर भी मार्फी कुछ नही बोल रही है।

षालिनी,मार्फी से–तुझसे ही बात कर रही हुँ ,ज्यादा भाव मत खा , क्योंकि खाना तु खा ही रही है।

अब मार्फी पहली बार अपनी चुप्पी तोड़ती हुई,,,,,,

मार्फी,षालिनी से–आपको बोलने की जरूरत नही है, वो मै पहले से खा रही हुँ।

षालिनी,मार्फी से–(अपने हाथो को चमकाते हुए) वाह तो तु बोलती भी है। तो कैसे आना हुआ ईधर ?

मार्फी,षालिनी से–वैसे जैसे आप आये है।

षालिनी,मार्फी से–मै तो मार्डर करके आयी हुँ , तु ।

मार्फी,षालिनी से–धारा वही है, पर सजा थोड़ा कम है।

षालिनी,मार्फी से–अभी तक तुमने अपना नाम नही बताया।

मार्फी,षालिनी से–आपने पुछने मे लेट कर दी, और आपने पुछा ही नही इसलिए हमने बताया ही नही।

षालिनी,मार्फी से–तेरे तकरार की मै मां–बाप कर दुंगी,

मार्फी सिर झुकाकर खाना खाने लगती हैं।

षालिनी,मार्फी से–बात खत्म किए बगैर छोड़ मत मुझे।

मार्फी,षालिनी से–छोड़ दिया, आप जा सकते है।

षालिनी,मार्फी से–तु खाना खा ले,फिर मै तुझे देखती हु ,अब ये मत बोलना की इतने देर से मै क्या

देख रही थी ?

मार्फी– बात करने के लहजे से हम उसके चरित्र के लिबास को पहचान जाते है।

वे ये क्यो समझने लगे है कि सब यहां एक जैसे ही लिबास पहन कर आते है।।

षाम मे,,,,,,

सुक्खी, अपने पापा अंकेष से–तो कल मेरे स्कूल मे डांस प्रोग्राम है पापा, आप मेरे साथ चलेंगे ना।

अंकेष–कल कितने बजे जाना होगा।

सुक्खी–षाम को।

अंकेष–ठिक है चलेंगे।

सुक्खी–ओके पापा। पर कल कोई बहाना मत किजिएगा की अचानक कोई काम आ पड़ा। क्योंकि मैने

अपने दोस्त से वादा किया है कि हमलोग साथ मिलकर डांस देखेंगे। इस प्रोग्राम के लिए कल

सबेरे स्कुल बंद किया गया है। इसलिए आपको सबेरे लंच बनाने की कोई टेंषन भी नही ।

अंकेष–हां तुमने तो मेरी आधी टेंषन खत्म कर दी। तुम कितने प्यारे बच्चे हो और हमें कितना प्यार करते

हो। मम्मी से भी करते हो ना प्यार।

सुक्खी–हां आपसे थोड़ा ज्यादा।

अंकेष,सुक्खी से–बदमाष कही के,,,,,।

फिर रात को दोनो साथ मिलकर खाना खाते है और सोने वक्त (सोने से पहले) अंकेष मन ही मन यह सोचता है कि फिर अगली तारिख कब आएगी जो अर्चना के जेल से निकलने का थोड़ा चांस बने। कितने चक्कर कांटने पड़ेंगे ये कमल के फुल का उसे लुभाने के लिए। सबेरे मे अंकेष बिस्तर पर आँखे खोलता है और पलंग पर से अपने पैरो को नीचे करके अपने षरिर को थोड़ा स्थिर करते हुए सब दिन की तरह बोरियत फिल करता है। हर दिन की तरह आज के डेली रूटिन को करने के लिए अपने सर को पकड़ कर ना जाने क्या–क्या सोचने लगता है। फिर सुक्खी के द्वारा करवट लेते हुए उसकी नींद टुटने वाली आहट की आवाज को सुनकर अंकेष उसके तरफ देखते हुए,,,,,,

अंकेष,सुक्खी से–चलो उठ जाओ और सबेरे की थोड़ी हवा लगाओ, अपने फुल वाले गार्डेन मे। आज तुम्हे

लेट हो गया है जगने मे।

सुक्खी,अंकेष से–क्योंकि आज स्कूल नही जाना ।

अंकेष,सुक्खी से–स्कूल नही जाना है, पढ़ाई तो करना है , खाना तो खाना है, मस्ती तो करना है। इसलिए

उठना जरूरी है समय से।

सुक्खी,अंकेष से–आज षाम को स्कूल जाउंगा आपको लेकर।

अंकेष,सुक्खी से–पता है, पता है। तुम्हारे इस रूटीन को मैने कल ही लॉक कर दिया था।

अब ये दोनो सुक्खी और उसका पिता अंकेष अपने दिन के षुरूआती काम–काज मे बिजी हो जाते है और सुक्खी षाम के लिए अपने प्लान को तैयार करने लगता है।

ईधर सुकेष सबेरे–सबेरे अपने वकील के पास पहुँचता है।

वकील,सुकेष से–तो आईये ,हो गई सारी तैयारियाँ। क्या हुआ उस गवाह का जिसके बारे मे हमने और

आपने बाते की थी।

सुकेष,वकील से–वो बिक चुका है सोने के भाव मे, मै उसे (कमल) खरीद नही सका दोबारा। कमल मेरा

दोस्त गद्दार निकला।

वकील,सुकेष से–ऐसा ही होता है, अगर आप नही लपके तो अगला लपक कर ले जाता है।

सुकेष,वकील से–पर उसे तो हमलोग ध्यान मे ही नही लेकर चल रहे थे।

वकील,सुकेष से–यही होता है जिसे आपने गवाह बनाया है सिर्फ उसे ही गवाह मत मानिये, अगल–बगल

के सभी लोगो को साथ मे लेकर चलना पड़ेगा। आपके पास किसी के लिए भले अहमियत

ना हो, वो अलग बात है। पर वो अगर सामने वाले के हाथ लग जाता है तो वो उसके

लिए हीरो के समान है। इसलिए गवाह तैयार करने के साथ ये भी कोषिष करना था कि

आपको घटना के दिन वहां पर मौजुद लोग आपके पत्नी के तरफ ना चले जाय।

सुकेष,वकील से–वो चला गया पर उसके अलावे बहुतो सारे लोग है जो हमारे लिए है।

वकील,सुकेष से–तो अब क्या करना है ? केष ओपेन है, अभी तो आपके नजदीकी लोगो की जरूरत

पड़ेगी, पर जो नजदीक के थे वो तो बिक गए और जो आपके पास पहले से है उनमे

एक गवाह है, जो अभी आपके पास है, वो गवाह कहां है।

सुकेष,वकील से–जिसे मैने षुरू मे गवाह बनाया था, वो तो है मेरे साथ।

वकील,सुकेष से–उनसे मिल ही लिजिए ,वरना वो भी ना बिक जाय।

सुकेष,वकील से–ऐसी बात नही है ,वो परमानेन्ट है।

वकील,सुकेष से–तो क्या वो आपके साथ यहां आया है।

सुकेष,वकील से–बोलेंगे तो ले कर आ जायेंगे।

वकील,सुकेष से–ठिक है उसे षाम को लेकर आईये। अच्छी तरह से समझा देंगे। क्योंकि कोर्ट मे उससे

हम कम हमारे विरोधी दोस्त ज्यादा पुछेंगे।

सुकेष,वकील से–वैसे हमारे तरफ का वह आदमी जो उसके तरफ चला गया है इससे यह केष किस ओर

जायेगा।

वकील,सुकेष से–ये तो गवाहो के बयानो और सबूतो के आधार पर जज साहब तय करेंगे। अभी मै कोर्ट

निकल रहा हुँ ,आप षाम मे मिले हमसे।

इसके बाद सुकेष वहां से अपने सॉप पर जाने के लिए और वकील अपने कोर्ट जाने के लिए निकलता है। अपने सॉप पर सुकेष पहुँच कर चिरचिरे स्वाभाव के साथ उसे ओपेन करता है और कोर्ट ,कमल और अर्चना तीनो के बारे मे सोचते हुए अपने हिसाब–किताब मे लग जाता है। फिर उसके अपने तरफ का जो गवाह है जो सरकारी गवाह है, जिसने अर्चना के खिलाफ गवाही दी थी उसे अपने सॉप पर बुलाता है। जिसका नाम है–असर्फी ।

असर्फी,सुकेष से–तो बेवजह कागज के पन्नो मे उलझे हुए हो या इसकी जरूरत है अभी। मैने सुना तुम्हारा

तुम्हारे जिगरी दोस्त के साथ थोड़ी खींच–तान चल रही है। ये दोस्ती किस मुकाम पर

लेकर चली गई तुम दोनो को,समझ से परे लगता है तुम दोनो का दोस्ताना याद करके।

सामने खाली कुर्सी पर असर्फी बैठता है। सुकेष दो चाय का आर्डर देता है और,,,,,,,,

सुकेष,असर्फी से–तो अभी कही बाहर तो नही जाने वाले हो तुम ।

असर्फी,सुकेष से–क्यो क्या हुआ तारिख पक्की हो गई केष की। हमे लगा था तुम यही काम के लिए हमें

याद कर रहे हो। रोज षाम को बियर के साथ बिरियानी खाते समय तो याद करते नही।

सुकेश,असर्फी से–तेरे दर्षन हो गए यही काफी है,क्योंकि भगवान मिल जाऐंगे पर तुम जल्दी से नही मिलेगो।

असर्फी,सुकेष से–मैने तेरा क्या बिगाड़ा है जो इस तरह के बेबुनियाद आरोपो को तुम मुझ पर थोप रहे हो।

सुकेश,असर्फी से–संयोग है कि मैने जब फोन किया तो तु इधर से ही गुजर रहा था, वरना तु कहां मिलने

वाला था हमें।

असर्फी,सुकेष से–इससे पहले कि मै यहां से खुल जाऊ, तु अपने बातो के पिटारे को खोल दे।

सुकेश,असर्फी से–कुछ दिनो मे कोर्ट की तारिख कंफर्म होने वाली है, इसलिए तु अभी कही बाहर जाने के

बारे मे मत सोचना।

असर्फी,सुकेष से–पिछले दफा जो तुमने रूपये दिए थे वो खत्म हो चुके है। कुछ कर्ज समझ के ही दे देते

तो मै अपनी मां का ईलाज यही अपने षहर मे ही करवा लेता। वरना हमे फ्री मे ईलाज

कराने के लिए उसे यहां से बहुत दूर यानी दिल्ली ले जाना पड़ेगा।

सुकेश,असर्फी से–हमे पता था तु अपना मुँह फारेगा तो रूपयो के लिए ही। पर इस बार तुमने थोड़ जल्दी

फाड़ दिया। अभी मेरे टच मे ही रहना दुर ना जाना।

ये असर्फी सुकेष का कोई खास दोस्त नही है, यह उसका एक पड़ोसी है जिससे सुकेष का उसके घर मे

घटित होने वाले घटना से पहले कोई खास बात–चित भी नही होती थी। कभी–कभार रास्ते मे आते–जाते ये लोग की नजरे एक–दुसरे पर पड़ जाया करती थी, बस इतना ही जान पहचान थी दोनो मे, लेकिन जिस दिन सुकेष की माँ का देहांत हुआ उस दिन उसके घर के सामने भीड़ मे असर्फी के मौजूद होने के कारण सुकेष ने उसे आँखो देखा गवाह बनाया था। सारी भीड़ जब इकठ्ठा हुई थी उसके घर पर उससे पहले उसकी माँ को गिर कर चोट लग चुका था। ये बात सिर्फ सुकेष और कुछ हद तक कमल को ही पता थी। बाकी लोगो को वही पता है जो सुकेष ने सबसे कहा है।

असर्फी,सुकेष से–कितनी भी दूर क्यो ना चला जाऊ, तुम्हारे पास पहुँचने मे मुझे सिर्फ एक दिन ही लगेंगे।

तो बताओ अब क्या करना है ?

सुकेष,असर्फी से–चाय पीकर बात करते हैं।

यहां असर्फी थोड़ा जल्दी मे है इसलिए .....

असर्फी,सुकेष से–बात करते–करते आज चाय पीयेंगे। मै थोड़ा जल्दी मे हुँ आज, क्योंकि मुझे मेट्रो सिटी

जाकर वापस लौटना भी है। तुम्हे पता है मेरे अलावे मेरी माँ की देख–रेख करने वाला

कोई नही है मेरे घर मे। मुझे अगर कही जाना भी होता है तो अपनी माँ को अपनी बहन

के यहां रख कर जाता हुँ। अभी भी मै उन्ही की जड़ी बुटी वाली दवाई लाने जा रहा हुँ।

तो अभी तुम्हारे सनम बेवफा वाली केष का क्या स्टेटस है।

सुकेष,असर्फी से–पहले सनम बेवफा हो गयी, अब दोस्त गद्दार हो चुका है।

असर्फी,सुकेष से–रूपये नही देना है तो मत निकाल अपने बटुए से, पर गद्दारी वाली षब्द मुझे अच्छी नही

लगती।

सुकेष,असर्फी से–दिल पे मत ले, और अपने पर तो मत ही लेना। मै तुम्हारे बारे मे नही कर रहा।

असर्फी,सुकेष से–तो किस महापुरूष ने तुम जैसे महापुरूष से गद्दारी कर के अपने आप से गद्दारी करने

का रिष्क उठाया है।

सुकेष,असर्फी से–कमल उसके यानी मेरी पत्नी के पक्ष मे गवाही देने के लिए तैयार हो रहा है। जो

बार–बार मेरी बेचैनी बढा रही है। उसके गवाही से केष कमजोर हो जाएगा और वो

(अर्चना) जेल से बगैर सजा काटे ही रिहा हो जाएगी, और फिर अपने प्रियतम के प्यार मे

पड़ कर हमें ना कुछ करते हुए भी बहुत तरह की चुभने वाली तकलिफे देती रहेगी।

असर्फी,सुकेष से–ऐसा कैसे हो सकता है ? गवाही देने से सच्चाई नही बदल सकती, और वो (कमल) झुठी

गवाही कैसे दे सकता है ? तुमने उसे समझाया नही, वो तो तुम्हारा जिग्री था और षायद

लंगोटिया भी।

सुकेष,असर्फी से–हम इंसान पल मे कैसे बदल जाते है,इसी का तो उदाहरण पेष किया है उसने, मुझे जब

–जब षक होता था उसके बारे मे तो उसे समझाता और इन–डायरेक्ट रूप से उससे

डिसकर्सन भी करता था, पर उसने कभी स्वीकारा नही की वो ऐसा करेगा। लेकिन एक

दिन पहले वो मुझे सीधे तौर से कहने लगा की उसके गवाही देने से अगर कोई बेगुनाह

बच जाती है तो इसके लिए वो तैयार है। पर उसे ये नही पता है कि वो एक गुनेहगार

को बचाना चाह रहा है और यह बात जानकर इससे मुझे कितनी तकलिफ हो रही है ये

वो नही जान रहा है।

असर्फी,सुकेष से–अच्छा ! तो इसके पीछे क्या कारण हो सकता है ? की वो ऐसा करने के लिए राजी हो

गया।

सुकेष,असर्फी से–उसका (अर्चना) यार कमल से बराबर मिल रहा था। उसी (अंकेष) ने इसे (कमल) अच्छे

से घुमाया है, गवाही देने के लिए, चाहे जो लालच दी गई हो। लेकिन वो मेरा दोस्त है

इसलिए उसे समझाने के अलावे कुछ कर भी नही सकता।

असर्फी,सुकेष से–तो बोलो तो उसके यार को दु क्या ? की वो कमल से ना मिले उसे गवाही देने के लिए

कहने के लिए।

सुकेष,असर्फी से–मैने भी ये सोचा था ,पर ये मुझे पुराने हिन्दी फिल्मो के कहानी जैसा लगने लगा, जिससे

अंतिम मे मेरा ही पक्ष कमजोर होने लगेगा। इसलिए मैने इसपर ध्यान ही ना दिया।

असर्फी,सुकेष से–ठिक है देने दो उसे गवाही , पर मेरे गवाही के सामने उसकी गवाही फिकी पड़ जायेगी।

तुम्हारे काले कोर्ट वाले आदमी का क्या नाम है ? जो तुम्हारे पक्ष मे वहां लड़ेगा और

हमसे तरह–तरह के सवालात करेगा जज को दिखा–दिखाकर। साथ ही साथ सबके

पीछे तुमसे रूपये भी लेता हो वो आदमी का नाम क्या है ?

सुकेष,असर्फी से–कैलाष वर्मा , लाईसेंस नंबर–124/91 ।

असर्फी,सुकेष से–नाम सुना हुआ लग रहा है, फिर भी मै पता कर लुंगा अगर चाहुंगा तो। तो अभी तत्काल

मझे क्या करना होगा तुम्हारे लिए।

सुकेष,असर्फी से–बस टच मे रहना और कोषिष करना की मेरी बैचेनी ना बढे और मै आत्म हत्या ना

करू।

असर्फी,सुकेष से–ऐसा कभी मन करे तो बियर–बार मे बैठ कर बियर की आर्डर देकर मुझे याद कर लेना।

अब मै चलता हुँ , मुझे वहां जाकर लौटना भी है।

इसी समय अर्चना जेल मे दो महिलाओ को आपस मे झगड़ा करते देखती है और अपने पुराने दिनो को अपने सास के

साथ होने वाले गिले–षिकवे और बातो के तकरार को याद करने से खुद को रोक नही पाती है और कुछ समय के लिए पुराने दर्द भरी अतीत की यादो मे खो जाती है। अर्चना की सास का नाम षारदा है।

फ्लैस बैक मे (अतीत की ओर)

अर्चना,षारदा से–तो मां जी बनाऊ आपके लिए कुछ चटपटा खाने के लिए।

षारदा–क्यो आज कही घुमने जाने का इरादा है क्या ?

अर्चना–नही ऐसी कोई बात नही है, लेकिन आप अगर कहेंगे तो चली जाऊंगी घुमने के लिए ,और आपके

लिए खाना बना कर जाउंगी।

षारदा–तो बात कोई ओर, और मतलब कोई ओर। तो मामला मन बहलाने का है। अपने से बड़े बुजुर्गो के

सेवा करने से भी मन बहलता है ,जरूरी नही की कही घुम कर ही मन बहलाया जाय। समझे मेरे

समधन की सुपुत्री। पुराने जमाने की हुँ ,भले उड़ती चिड़याँ के पंख ना गिन सकुँ ,पर पता कर

लेती हुँ की वो दाना चुगने जा रही है या षैर–सपाटे के लिए निकली है।

अर्चना–मतलब से मतलब रखू तो उसमे भी आपको दिक्कत, और अगर बिना मतलब से आपसे बात करना

चाहू , ताकि रिष्ते मे मधुरता आये तो उसमे भी आप लालच की मोती तलाषने लगते है।

षारदा–ज्ञान की बाते तो तुझे काटने के लिए दौड़ती है। एक दिन तु भी मेरे जगह होगी और फिर इस

दिन को याद करेगी की मेरी दुष्मन सास ने मुझे कभी क्या कहा था।

अर्चना–हर बातो का बतंगर ! ऐसा लगता है मैने आपसे ये पुछकर की आप कुछ चटपटा खायेंगे मानो

अपराध ही कर दिया।

षारदा–तुमने पुछा तो अच्छा किया ,लेकिन मतलब से। कभी बिना लालच और बिना मतलब के भी मतलब

रखा कर, देखो अच्छा लगेगा।

अर्चना–ठिक है अब आप जब कुछ बोलेंगे बनाने तब ही बनेगा। उससे पहले तो हरगिस नही।

षारदा–तो दिखा दी ना अपनी जात । बहु ' बहु ही रहेगी वो कभी बेटी बनने की कोषिष नही करेगी

और ना ही बनना चाहेगी।

अर्चना–आपने कभी माँ बनने की कोषिष की है , माँ बनकर देखिये मजा आयेगा आपको। मुझे बेटी

समझियेगा तो बेटी जैसा प्यार मिलेगा और बहूँ समझियेगा तो आपको बहूँ ही मिलेगी।

षारदा–मुझे ज्यादा बकाओ मत । वरना बेटी समझ कर दे दुंगी दो चार जोड़ से, फिर कहते रहना माँ जी

के जगह पर माँ , माँ। थोड़ी देर के लिए दूर हो नजरो से मेरी।

अर्चना खिड़की की तरफ नजरे करती हुई मन ही मन सोचती है कि दुनियाँ की हरेक चीजो मे परिवर्तन आ जायेगी पर ये सास नाम की प्रजाती मे कभी परिवर्तन नही आने वाला है। यह देख षारदा,,,,

षारदा, अर्चना से–अब मन ही मन गाली देने के साथ–साथ मुझे जीते – जी मारने के बारे मे सोच रही हो।

यह बाते सुन अर्चना चुपचाप अपने कमरे मे चली जाती है, ताकि बात आगे ना बढे। उसके सास ष्षारदा और अर्चना मे इस तरह की बाते इसलिए होती है, क्योंकि अर्चना कुछ ही दिनो पहले अपने मॉसी की बेटी की षादी से तीन दिनो के जगह पर सात दिनो मे लौटी है। जिस कारण अर्चना की सास अर्चना से खपा चल रही है , और उसके बातो का ना जाने तरह–तरह की मतलबे निकाल रही है।

कुछ समय बाद षाम होने के बाद अर्चना का पति सुकेष घर आता है और वो सीधे अपनी माँ के पास जाकर बैठता है। लगभग दस मिनट तक बैठने के बाद उसकी माँ ना जाने क्या–क्या सुकेष के कानो मे फुक देती है। फिर जैसे ही अर्चना इन दोनो के पास आती है फिर,,,,,

सुकेष,अर्चना से–तो तुमने माँ को षाम मे चाय बनाकर क्यो नही दी।

अर्चना,सुकेष से–मै तो इनके लिए छोले बना रही थी, और इन्होने मना कर दी, और इन्होने चाय के बारे

तो बोला ही नही।

सुकेष,अर्चना से–बोलेंगी तब तुम चाय दोगी।

अर्चना,सुकेष से–हां आज से ऐसा ही होगा। जब जो चीजे मांगेगी तब ही हम दे पायेंगे। उसके अलावे

अपने मन से मै कभी कुछ नही दुंगी। क्योंकि अपने मन से कुछ करती हुं तो इन्हे लगता है कि मै किसी लालच से इनसे कुछ खाने पीने के लिए कह रही हुँ।

षारदा,सुकेष से–अब तेरे सामने यही सब सुनने के लिए रह गया है क्या बेटे ?

सुकेष,अर्चना से–अपने दायरे मे रहा करो और जाओ चाय बनाकर लाओ।

षारदा,सुकेष से–रहने दो मै ही बना लेती हुँ।

अर्चना,षारदा से–बेटे के सामने आप इतने अच्छी मां बनते है ना मां जी ,जब आपके बेटे नही रहते है तब

तो ऐसे मधुर बाते आपके मुँह से नही निकलते ।

सुकेष,अर्चना से–(जोड़ से) मुँह बन्द करो ! और मैने जो कहा वो करो , जाओ यहां से।

अर्चना,सुकेष से–ऐसे डांट कर बोलिएगा तो हमसे नही बनेगा चाय। जाईये खुद बना लीजिए।

यह बात सुनकर सुकेष अपना आपा खो देता है खड़े होकर जोड़ से अर्चना को एक थप्पड़ जड़ देता है।

थप्पड़ इतने जोड़ की थी कि अर्चना को लगते ही वो धम से जमीन पर गिर जाती है।

अब वर्त्तमान मे,,,,,,,,,,,।

इसके बाद अर्चना डर से और कुछ पुरानी यादे को और ज्यादा याद नही करना चाहती है और वह वर्त्तमान मे लौट जाती है। अर्चना को अकेली बैठी देख मार्फी उसके पास धीरे–धीरे कदमो से आकर बैठती है।

मार्फी,अर्चना से–लगता है काफी लंबे समय से है यहां पर आप।

अर्चना,मार्फी से–(सर हिलाकर) हां। पर तुम यहां कैसे ?

मार्फी,अर्चना से–बदनसीबी यहां खींच कर ले आई। वरना मैने तो आज से पहले तक जेल की दीवारो को

भी नही देखा।

अर्चना,मार्फी से–बहुत कमिनी चीज होती है ये नसीब। चाहे तो किसी को सोने पर सुला देती है और चाहे

तो किसी को कोयले पर जला देती है। उसकी मर्जी वो जो चाहे कर सकती है। उसपे

किसी का कोई जोड़ नही। मारपीट का मामला लगता है तुम्हारा, या और कोई बवाल है।

मार्फी,अर्चना से–मेरे पति के बड़े भाई ने अपने पड़ोसी को जाने से मारने की कोषिष की, क्योंकि उस साले

हरामी के बच्चे, अपने बाप के बिगड़े औलाद ने हमलोगो का जीना हराम कर दिया था।

फिर मेरे भाई साहब को ये बर्दाष्त नही हुआ तो उतार दी उस साले के न्युरोटॉक्सिन

वाली जह़र को।

अर्चना,मार्फी से–तो क्या जान से मार दिया उसे।

मार्फी,अर्चना से–नही ! बच गया साल। हम होते तो मार दिए होते और हमारे वार से वो बचता भी नही।

अर्चना,मार्फी से–चलो बच गया तो तुमलोगो को अब सजा कम होगी।

मार्फी,अर्चना से–मर जाता तो ठिक होता, इसके लिए ज्यादा सजा कांटने मे कोई ज्यादा अफसोस भी नही

होता हमलोगो को।

अर्चना,मार्फी से–ऐसा क्या किया उसने ?

मार्फी,अर्चना से– जैसे दरवाजे के सामने बड़ी गाड़ी लगा देना, षाम मे पुजा करते समय स्पीकर को तेज

वॉल्युम के साथ बजाना। मेरे घर के बच्चे अगर खेलते–खेलते अगर उसके दरवाजे पर

चले गए,तो उसे डाटकर भगाना, छत पर खड़े होकर मेरे आँगन की तरफ झाकना, जिससे

हमलोग कुछ समय के लिए बहुत असहज महसुस करते थे। एक दिन तो उसने हद ही

कर दी।

अर्चना,मार्फी से–क्या ?

मार्फी,अर्चना से–मेरे बड़े भाई साहब के छोटे से बच्चे को उसने दो चमाट मार दी। वजह जो भी हो, पर था

तो वो बच्चा। जिस कारण उसके गर्मी को मेरे पति और भाई साहब से उतार दी। जिस

कारण हम सभी लोग जेल आ गए। क्योंकि उसने सभी को इसमे घसिट लिया।

उसके बाप ने पुलिस को रूपये देकर सभी पर हत्या करने की कोषिष वाला धारा लगवा दिया।

अर्चना,मार्फी से–उसके साथ और कौन–कौन रहता था ?

मार्फी,अर्चना से–अकेले रहता था भाड़े के मकान मे मेरे सामने और रात के अंधेरे का फायदा उठाकर वो

कभी–कभी लड़कियाँ भी ले आता था। मकान मालिक ने उसे सारी जिम्मेवारी क्या

सौपी वो तो लगा गवर्नर बनने। ऐसा लगता था उसे सारी सम्पत्ति का वारिस बना कर

छोड़ दिया है।

अर्चना,मार्फी से–फिर तो बड़ा अव्वल दर्जे का था वो कमिना। वैसे तुम्हारे पति और उसके बड़े वाले भाई

साहब है किस जेल मे।

मार्फी,अर्चना से–इसी जेल मे।

अर्चना,मार्फी से–चलो तुम जल्द ही छुट जाओगी। बाहर जाओगी तो मेरा एक काम करना, इसका एहसान

जिंदगी भर चुकायेंगे और याद भी रखेंगे।।

मार्फी,अर्चना से–वो क्या ?

अर्चना,मार्फी से–मेरा एक 06 (छः) साल का बेटा है , अगर तुम्हे एतराज ना हो तो तुम उसका थोड़ा ध्यान

रखोगी, वो अभी अकेले रहता है मेरे पति के साथ जो दिन मे अपने काम पर चले जाते है

और सीधे रात को ही घर आते है। बच्चा दिन को स्कूल जाता है, बाकी समय मे पड़ोसी

के यहां दिन बिताता है और मुझे याद करके रोता भी है।

मार्फी,अर्चना से–वैसे आप यहां कितने दिनो से है और कितने दिनो तक रहिएगा।

अर्चना,मार्फी से–इसकी तो कोई गारंटी नही है, कि कब तक रहेंगे । मेरा वष चले तो मै आज और अभी

ही यहां से निकल जाऊ। पर सिचुएषन हमारे कन्ट्रोल से बाहर है।

मार्फी,अर्चना से–वैसे आप यहां किस वजह से है ? लगता है काफी दिनो से आप यहां है।

अर्चना,मार्फी से–वजह से तो नही बेवजह से हैं। मैने अपनी माँ समान सास को जो मुझे बेटी की तरह

मानती थी, और हमपर जान न्योछावर करती थी। जो मेरे खुषी से खुष होती और मेरे गमो

से दुःखी हो जाती थी उस देवी समान न्याय के मुरत को हमने जान से मार दिया।

यह बात सुनकर मार्फी थोड़ी घबरा जाती है और लंबी सांसे लेती हुई अपनी षरीर को थोड़ा सम्भालती है फिर,,,,,

मार्फी,अर्चना से–क्यो ?

अर्चना,मार्फी से–क्योंकि वो हमें बहुत ज्यादा प्यार करने लगी थी , इसलिए।

मार्फी,अर्चना से–फिर क्या हुआ ?

अर्चना,मार्फी से–परिणाम तुम्हारे सामने है। हर दिन यहां बैठे अपने बदनसिबी को कोसती हुँ।

मार्फी,अर्चना से–आपके बातो के गहराई को मै समझ चुकी हुँ ,प्रार्थना है ऊपर वाले से कि वो आप पर कृपा

बरसाये। अगर मै आप से पहले बाहर गई, तो उससे (सुक्खी) जरूर मिलुंगी।

अब यहां पर रूबी का आगमण होता है,,,

रूबी,अर्चना से–तो यहां पर चर्चा के महफिल मे क्या मै सिरकत कर सकती हुँ ?

अर्चना,रूबी से–सारी महफिल ही तुम्हारी है। आप चाहे तो कही से भी षुरू कर सकती हो।

रूबी,मार्फी से–तो उस दिन तुम्हारे कानो मे क्या डाल रही थी वो (षालिनी) ।

मार्फी,रूबी से–वही जो एक नये कैदी के कानो मे एक पुराने कैदी के द्वारा डाला जाता है। अपनी ईलाके

के बारे मे अपनी दहषत का षोर–षराबा और मै' मै हुँ , तुम मेरे पाले मे रहो वगैरह–वगैरह।

रूबी,मार्फी से–जेल मे आने के बाद ऐसा ही होता है, पर घबराना नही है हमलोग साथ मे है तुम्हारे।

आज से आगे दो दिनो के बाद कोर्ट मे तारिख के दिन,,,,,,

कमल कोर्ट रूम के गेट पर अंकेष से बात कर रहा था, तभी सुकेष का अपनी दोस्त असर्फी के साथ उसके आगे से जाते समय उसकी नजर कमल पर पड़ती है। क्योंकि उस रात जिस दिन ये दोनो मे झगरा हुआ था उस दिन से आज के बीज मे सुकेष के लाख खोजने पर भी कमल उसे नही मिलता है। ताकि वो उसे गवाही ना देने के लिए समझा सके। पर ऐसा होता नही है जिस कारण सुकेष कमल पर भड़का हुआ है।

सुकेष,कमल से–दोस्त दोस्त ना रहा, प्यार प्यार ना रहा,

जिंदगी मे ऐै सनम मेरा कुछ अपना ना रहा।

चाहत अपनो के लिए मैने जितना भी किया,

ना वो अपने रहे ना वक्त अपना रहा।।

इंसान ने इंसान को कितनी बार समझाया,

जो ना समझा वो गद्दार कहलायेगा।

हम तो संटुष्ट हो गए आपको समझाकर,

पर आप ना समझे तो ये बंदा कातिल कहलायेगा।।

कमल और उसके साथ मे खड़े अंकेष,संतो को सुकेष की ये बातो से गहरी दुष्मनी की महक आ रही है जो बाद मे षायद घटकर किसी ना किसी को नुकसान पहुँचाने वाली थी। चाह कर भी कमल यहां सुकेष को कुछ नही बोल पा रहा है वो इसलिए कि उसे उसकी टुटती हुई दोस्ती का गम सताये जा रहा था। पर वो ये सोचकर उस गम को भी दाबे हुए है कि दुष्मणी निभाकर वो किसी की जिंदगी बचाने जा रहा है।

असर्फी,कमल से–क्या कमल ? मेरे दोस्त के दुष्मन, तुमने तो अपने दोस्त के पल्ले को पलंग के पउवे जैसे

झट से झार दिया। क्यो इतने खपा–खपा से हो और जुदा–जुदा भी। दिन के तुम तारे

और रात के उजाले बन गए हो जो एक समय मे मिलते ही नही।

अब दोनो सुकेष और असर्फी आगे बढकर कोर्ट रूम की तरफ बढते है।

संतो,कमल से–पार्टी मे अब ये कौन सा नया आईटम है। जो बिना बजाए ही बजे जा रहा था।

कमल,अंकेष से–ये उसके (सुकेष) ही मुहल्ले का है , पर इसके साथ पहली मरतवे देख रहा हुँ। इसका

नाम मै नही जानता हुँ पर है बहुत चालु और चतुर। ये अगर चाहे तो केष को ये पल

भर मे यु घुमा सकता है जज को अपने उल्टे सीधे ब्यान देकर।

सुकेष और असर्फी कोर्ट रूम पहुँचते है जहां वो अर्चना को सर झुकाये बेंच पर बैठे हुए अपने खुली आँखो से देखता है, और ना जाने एक पल मे कितने बद्दुआये उसके तरफ उछाल देता है। उसकी आहट, आवाजो के झनकार और लोगो के फुसफुसाहट की बाते सुनकर अर्चना को लगता है कि उसका पहले वाला पति सुकेष षायद पहुँच चुका है। लेकिन अर्चना उसके तरफ देखकर अपने पुराने दर्द भरी यादो को ताजा नही करना चाहती है। वह बस उसके विपरीत दिषा मे अपनी नजरो को घुमा कर जज के कुर्सी की तरफ देखकर अपनी नजरे फिर से नीचे झुका लेती है।

असर्फी,सुकेष से–लगता है भाभी पहले से पहुँची हुई है।

सुकेष,असर्फी से–अब वो तेरी भाभी नही रही। नामकरण बदलो उसका।

असर्फी,सुकेष से–भाभी तो आपको लेकर एकदम से बेरूखी सी है।

सुकेष,असर्फी से–ये बात तो हमें उसी समय पता चल गई थी जब वो हमें छोड़ के गई थी।

असर्फी,सुकेष से–आप दोनो की जोड़ी ज्यादा दिनो तक चली नही , वैसे क्या कारण था इसका।

सुकेष,असर्फी से–तुम्हे कोर्ट मे ही सुझा है ये सारी बात जानने के लिए। अच्छा समय चुना है तुमने मुझे

परेषान करने के लिए। अब षांत होकर मैने जो कहा उसे याद कर लो कि यहां क्या

बोलना है, और बेवाक अंदाज मे बोलना। जिससे सब चौक जाय।

कोर्ट रूम के बाहर कमल अंकेष और संतो चहल कदमी करते हुए कोर्ट रूम मे आने के लिए आगे बढते हुए,,,,,,,,,,

अंकेष,कमल से–बस एक बार पुरे अच्छे से सच्चाई को जोड़ से साबित कर दीजिए। बाकि हमारे वकील

साहब सम्भाल लेंगे।

संतो,कमल से–आपको याद है ना क्या कहना है ?

कमल,अंकेष से–एक षर्त तो तुमने पुरा कर दिया, पर एक लटक गई। उसका समाधान कैसे करोगे ?

अंकेष,कमल से–समाधान को हम खींच लायेंगे आपके पास ,बस एक पड़ाव तो पार कीजिए। कदम तो

बढाईये, रास्ता खुद–ब–खुद बन जायेगा। हमे दोस्त बनाईये मजा आयेगा। आप ये ख्याल

दिमाग से निकाल दीजिए की आपकी दोस्ती ना रही। सोचिए कि आपकी दोस्ती के बदले

आप किसी को जिंदगी देने जा रहे हैं।

इतने मे पीछे से अर्चना के वकील अंकेष को आते दिखाई देते है।

अर्चना का वकील,अंकेष से–तो आपका गवाह आ चुका है ना।

अंकेष–ये रहे कमल ।

अर्चना का वकील,कमल से–ओ तो आप ही है। आपको क्या बोलना है याद है ना।

कमल–जो सच है मै बोल दुंगा।

अर्चना का वकील–तो क्या है सच्चाई, जरा हमे बताईये।

कमल–यही कि वो (अर्चना) अपने कमरे मे बंद थी , और उसकी सास यानी मेरे दोस्ती की प्यारी माँ, जिसे मरना था और मर गई। वो खुद षोर–षराबा कर रही थी और हल्ला मचाते हुए गिर गई जिससे उसके सर मे चोट लगा और वो बेहोष हो गई।

अर्चना का वकील–ये सब आपने खुद देखा।

कमल–हां।

अर्चना का वकील–आप वहां क्या कर रहे थे ?

कमल–मै उसका पड़ोसी हुँ और हल्ला सुनकर उसके यहां गया, तो देखा कि उसके पति के सामने मे

उसकी सास अपने बहु पर हल्ला किए जा रही थी। मै बिच–बचाव करता कि उससे पहले ये घटना

घटित हो गई।

अर्चना का वकील–गुड। पर अब बात ये है कि आपके पहुँचने के बाद वो आपके सामने मे गिरी या आपके पहुँचने से पहले गिर चुकी थी। ये बात आपसे बार–बार पूछी जायेगी। तो आप क्या कहेंगे ?

कमल,अर्चना के वकील से–वही जो इससे पहले मैने कहा, मेरे सामने घटित होने वाली कहानी। वो (सुकेष

की माँ) मेरे सामने गिरी।

अर्चना का वकील,अंकेष से–कहां से पकड़कर लाये हो इसे ?

अंकेष,अर्चना के वकील से–उसका (सुकेष) पड़ोसी है। बहुत मेहनत से ढुंढा है इसे (कमल)।

अब ये चारो लोग कोर्ट रूम मे पहुँचते है।

सरकारी पेषकार जोड़ से आवाज पुकारता है–केष नंबर 168/वर्ष 2022 अर्चना प्रिया ।

केष नंबर सुनते ही केष से संबंधित दोनो वकील, अर्चना उसका पति सुकेष उसका प्रियतम अंकेष अर्चना के तरफ से उसका गवाह कमल, सुकेष के तरफ से उसका गवाह असर्फी, अंकेष के दोस्त का साला संतो और साथ मे बैठे सभी महानुभाव लोग आगे क्या होने वाला है यह जानने के लिए स्थिर हो जाते है ।अंत तक सभी लोग एक दुसरे परिचितो के चेहरे के रंगत को भी भली भाँती देख लिए है और अपने मन ही मन मे विमर्ष करने की षुरूआत करने लग जाते है। कुछ ही पलो बाद जज साहब आकर सबका इंतेजार खत्म करते है, पेषकार उनके तरफ अर्चना के केष के कागजात बढाते है, और फिर जज साहब केष की सुनवाई षुरू करते है। जज साहब पिछली तारिख के बहस को ध्यान से पढते है, केष मे दिए फरमान को समझते है फिर,,,,,,,

जज,पेषकार से–पुलिस की डायरी।

पेषकार,जज से–आ गई है ।

पेषकार जज साहब की तरफ पुलिस की डायरी को बढाता है, फिर जज साहब कुछ मिनट स्थिर होकर पुलिस की डायरी को बारिकी से पढते है उसके बाद जज साहब केष से जुड़े सभी कड़ी को समझने के बाद,,सुकेष के वकील (घनष्याम वर्मा) से,,,

जज,सुकेष से वकील से–षुरूआत कीजिए।

सुकेष के वकील,जज से–(सर झुकाकर नमस्ते करने के बाद), तो मै आज कोर्ट के सामने ये

पक्ष रखना चाहता हुँ कि आज इस केष से जुड़े सारे कड़िया यहां पर मौजूद है

और सबूतो के तौर पर सारे कागजात भी आपके सामने दिए जा चुके है। जो

आरोपी श्रीमति अर्चना प्रिया के गुनाह को साबित करते है। इसलिए आज उसकी

सजा मुक्करर होनी चाहिए। इसके लिए मै षुरूआत से अदालत को आईना

दिखाना चाहता हुँ और इस केष के पीड़ित जिसकी माँ की हत्या कि गई है उसे

कठगरे मे बुलाना चाहता हुँ। जो आरोपी का पति है।

जज,सुकेष से वकील से–हां वो जरूरी है। आने दिजिए। बगैर आये ये अपना दर्द कैसे सुनायेंगे।

असर्फी,सुकेष से–जा भाई कलेजे को मजबुत करके सब कुछ षब्दो मे ढाल देना। कोई कसर बाकी ना रह

जाय,ताकि बाद मे पछताना ना पड़े सर पर हाथ रखकर।

सुकेष सर हिलाकर असर्फी की सारी बातो मे हामी भरता है और चल पड़ता है अपनी पत्नी को सजा दिलाने के मंषे के साथ कठगरे की ओर। कठगरे मे पहुँचने के बाद,,,,

सुकेष का वकील,सुकेष से–तो आप अपना परिचय दीजिए और अदालत को ये बताईये कि इस केष से

आपका क्या संबंध है ? जज साहब को बताईये।

सुकेष,जज से–मेरा नाम सुकेष मजुमदार है। मै एक छोटा सा खरिद बिक्री का व्यापार करता हुँ। मै अपनी

माँ और अपनी पत्नी एक छः साल के बच्चे के साथ अपनी जिंदगी जी रहा था। लेकिन एक

सूखी परिवार मेरी पत्नी को रास नही आयी। उसने अपने प्रेमी के प्यार मे पड़कर मेरे घर

का विनाष कर दिया। यहां तक कि उसने मेरी माँ को भी नही बख्षा और उसकी हत्या कर

दी मेरे आँखो के सामने। मै देखता रह गया और मेरी माँ मेरी आँखो के सामने दम तोड़ दी।

इसने (अर्चना) मेरी माँ को जमीन पर पटक दिया, जिस कारण उसके सर मे चोट लगने के

कारण वो नही रही।

सुकेष का वकील,सुकेष से–हुआ क्या था ? आप जरा डिटेल मे बतायेंगे। ताकि मामला समझ मे आ सके।

सुकेष,अपने वकील से–मेरी पत्नी का मुझसे षादी के बाद किसी अंजान व्यक्ति जिसका नाम अंकेष है

उससे नजदिकिया बढ गई, जो बात मेरे साथ–साथ मेरी माँ को भी पता चल चुकी

थी। एक पति को अपनी पत्नी और सास को अपनी बहु के बारे मे इस तरह की

बते पता चलने पर उसके साथ क्या बितती है ये तो वही लोग बता सकते है जिन्होने

इस लम्हे को झेला हो। फिर परिवार के मुखिया होने के नाते मेरी माँ जब इसे

डाँटती थी तो इसे खराब लगता और उसका गुस्सा ये हमपर उतारती, दुसरे बहाने

से। जब मेरे द्वारा इसे इसके करतुतो को लेकर डराया धमकाया जाता था तो ये

मेरी माँ से बेवजह झगरा करती और किसी की बात नही सुनती। जिससे घर का

माहौल अषांत हो चुका था। अंत मे एक दिन बात–चीत के दरमियां इसने मेरी माँ

(रोते हुए) को मार ही दिया।

सुकेश का वकील,सुकेष से–आप जा सकते है।

ये सारी बातो को अर्चना अपने नजरो को फर्स के तरफ झुकाये सुनती जाती है। उसपर लगाए गए सारे आरोप गलत होने के बावजूद वो षांति मन से सारी बातो को सुनकर सब नियती पर छोड़ देती है कि अब जो होना होगा वो होगा।

सुकेश का वकील, जज से–तो इस केष के पीड़ित व्यक्ति के बातो से यह स्पष्ट है कि उसकी

माँ की हत्या हुई है वो भी उनकी ही पत्नी के द्वारा। जो अर्चना प्रिया इस वक्त

कोर्ट मे मौजूद है। अब आरोपी पर आरोप सिद्ध हो सके, इसके लिए मै एक

आँखो देखा गवाह आपके समक्ष पेष करना चाहता हुँ, जिससे अदालत को यह

यकिन हो सके कि पीड़ित व्यक्ति की पत्नी अर्चना प्रिया ने किस तरह से

अपना आपा खोकर अपने सास को मौत के मुँह मे ढकेल दिया। वो ये नही

समझ पाई कि वो भी किसी की माँ है, और एक औरत भी। तो मै असर्फी दास

को इस कठगरे मे बुलाना चाहता हुँ।

अब बारी आती है असर्फी कि जो सुकेष के तरफ से एक आँखो देखा गवाह के तौर पर यहां गवाही देने सुकेष के साथ आया है। वो अपने आप को गवाही देने के लिए तैयार करता है और सुकेष के तरफ देखकर उससे ईषारो मे इजाजत लेते हुए कठगरे की ओर बढता है।

जज,सुकेष के वकील से–कौन है ये महाषय् जरा बुलाइये उन्हे।

अब तक सारी बातो को अर्चना का वकील षांति से सून रहा है, और विरोधी के कमजोर पक्ष को तलाषने की कोषिष कर रहा है, अर्चना का वकील अभी ये सोचकर भी चुप है कि जब वो बहस करेंगे तो उसे भी बोलने का पुरा मौका मिले, ना कि उसे सामने वाले वकील बीच मे ही चुप कराने की कोषिष करे। अगर ऐसा हुआ तो उन्हे ये बोलने का मौका रहेगा कि जब आप बोल रहे थे तो मै चुप होकर सुन रहा था तो आप भी चुप होकर सुने।

असर्फी कठगरे मे पहुँचता है, अर्चना एक नजर उठाकर उसे देख कर जानना चाहती है कि ये कौन है जो गवाही देने आ रहा है। असर्फी को देख कर अर्चना को लगता है कि इसे षायद वो अपने ससुराल के आसपास कभी–ना–कभी देखी है पर उसे ठिक से याद नही कि उसके पति सुकेष को ये कैसे और क्यो जानता है और उस दिन घटना के दिन ये वहां मौजूद था या नही ये अर्चना को पता नही है। फिर वकील साहब (कैलाष वर्मा) असर्फी से अपने बातो का सिलसिला षुरू करते है।

वर्मा जी,असर्फी से–तो आप अपना नाम बताईये और कहां रहते है ये भी। (जज साहब के तरफ ईषारा

करते हुए) उधर जज साहब को बताईये।

असर्फी,जज से–(दोनो हाथ जोड़ते हुए) जज साहब मेरा नाम असर्फी दास है मै वही सुकेष के घर के

बगल मे ही रहता हुँ ,उसी मुहल्ले मे मेरा घर है। जब भी मै अपने घर से निकलकर काम

पर जाता हुँ तो इसके (सुकेष) घर के सामने से ही गुजरता हुँ।

वर्मा जी,असर्फी से–अब ये बताइये कि उस दिन घटना वाले दिन सुकेष के घर पर आप कैसे पहुँचे और

पहुँचने पर आपने क्या देखा ?

असर्फी,वर्मा जी से–मै हर रोज की तरह उस दिन भी अपने घर जा रहा था, षाम से कुछ बाद का समय

हो रहा था इसके घर के सामने से जब मै गुजर रहा था तो इसके घर से कुछ लोग

अंदर बाहर कर रहे थे और अंदर से षोर–षराबे की आवाज आ रही थी। जबकि सब

दिन माहौल षांत होता था पर उस दिन की आवाजे सुनकर और लोगो की हरकते

देखकर मै आष्चर्य मे पड़ गया। एक दोस्त होने के नाते मै जानना चाह रहा था कि

वहां अंदर हो क्या रहा है ? जैसे ही मै अंदर गया वहां देखा कि सुकेष की पत्नी अपनी

सास यानी सुकेष की माँ से लड़ी जा रही थी। बात इतनी आगे बढ चुकी थी कि दोनो

मे हाथा–पाई की नौबत आ गई। सुकेष के द्वारा अपनी माँ और पत्नी को बराबर से

समझाया जा रहा था, लेकिन कोई मानने के लिए तैयार न था। फिर मेरे बीच–बचाव

करने पर मामला कुछ हद तक षांत हुआ और मै और सुकेष दोनो थोड़े बगल मे होकर

बाते करने लगे। फिर अचानक से सुकेष की पत्नी और उसकी माँ मे बाते षुरू हो गई

और देखते – देखते उसकी (सुकेष) पत्नी ने अपनी सास पर हाथ उठा दी और उसे

इतनी जोड़ से धक्का मारा कि वो बेचारी फर्स पे जा गिरी, जिससे उसके साथ वो

हादसा हो गया जो नही होना था।

जज,असर्फी से–क्या हुआ तब ?

असर्फी,जज से–वो गिरते ही बेहोष हो गई ,फिर उसे आनन–फानन मे हॉस्पिटल ले जाया गया। लेकिन

गिरते वक्त ही उसकी मौत हो चुकी थी।

जज,असर्फी से–ये तुम कैसे कह सकते हो ?

असर्फी,जज से–क्योंकि ऐसा डॉक्टर ने हमलोगो से कहा।

जज,असर्फी से–और आपने मान भी लिया। डॉक्टर ने और कुछ नही कहा, हो सकता है रास्ते मे उसकी

मौत हुई होगी। डॉक्टर ने क्या कहा ये अच्छे से याद तो है ना, क्योंकि मै उन्हे भी यहां

बुलाने वाला हुँ।

वर्मा जी,असर्फी से–जो भी बोलना है साफ और स्पष्ट बोलिए, ताकि कोर्ट के सामने तस्वीर साफ हो सके।

असर्फी,जज से– डॉक्टर साहब ने कहा की इसकी मौत बहुत पहले ही हो चुकी है।

असर्फी के द्वारा बोले जा रहे बातो के अंतर को उसका वकील वर्मा जी थोड़े–थोड़े समझने लगते है, और उन्हे लगता है कि असर्फी की गवाही मे अंतर होने के कारण मामला उलझ जायेगा, फिर,,,

वर्मा जी,असर्फी से–ठिक है अब आप जा सकते है।

वर्मा जी ,जज से–तो my load हमारे गवाहो के ब्यान से स्पष्ट है कि अर्चना प्रिया ने जान बुझ

कर अपनी सास को धक्का मारी, जिस कारण उसकी सास की मौत हुई। जिसकी उसे

सख्त से सख्त सजा मिलनी चाहिए।

जज,वर्मा जी से–ये तो हुई आरोपी पर आरोप लगाने वाली गवाही। अब जरा उसकी बेगुनाही वाला पक्ष तो

सुन ले वकील साहब। कोर्ट तो फैसला तब सुनाएगा जब वो दोनो तरफ की सुनेगा। अब

बचाव पक्ष के वकील को कहने दिजिए।

वर्मा जी,जज से–जी my load ।

जज–(वकीलो की झुंड की तरफ देखते हुए) बचाव पक्ष की तरफ से कौन है ?

अब अर्चना के वकील ष्यानदेव पाठक जी सामने आते है और जज को झुक कर प्रणाम करते है, जिससे जज साहब समझ जाते है कि इस केष के बचाव पक्ष के वकील यही है।

अब सुकेष का वकील अपने बातो को विराम देकर अपने चेयर पर बैठ जाता है। अब सामने अर्चना का वकील तैयार है बहस करने के लिए।

जज,अर्चना के वकील से–आपका चेहरा तो जाना पहचाना लग रहा है वकील साहब। इससे पहले लगता है

आप बहस कर चुके है हमसे।

अर्चना का वकील,जज से–जी हुजूर ! मै वकील और आप जज है तो आमना सामना तो होता ही रहता है।

जज,पाठक जी से–क्यो नही अभी भी आमने–सामने है, और ये तो होता रहेगा। षुरू किजिए।

पाठक जी,जज से–धन्यवाद ! सबसे पहले मै श्रीमान् को यह बताना चाहता हुँ कि इस केष मे एक निर्दोष

महिला को बेवजह घसिटा जा रहा है। उस महिला का नाम श्रीमति अर्चना प्रिया है।

जिसपर उसके ही पति के द्वारा अपनी माँ की हत्या करने का झुठा आरोप लगाकर कितने

महिनो से उसे जेल के सलाखो के पीछे रहने को मजबूर कर दिया गया है। मै आपसे

गुजारिष करता हुँ कि इस केष का फैसला हकिकत की गहराई मे जाकर किया जाय,

ताकि इस बेगुनाह(अर्चना) को न्याय मिल सके। मै सबसे पहले इस केष के मुख्य कड़ी

जिस पर अरोप है, उस अर्चना जी को कठगरे मे बुलाना चाहता हुँ।

जज,पाठक जी से–बुलाईये , बिना उन्हे सुने इस केष की कार्रवाई आगे कैसे बढेगी ?

अर्चना के कानो तक सारी आवाजे पहुँच रही है, लेकिन वो बेसुद होकर अपने अतीत और भविष्य को मन ही मन कोस रही है जिस कारण से वो अपने वकील की बातो को गौर से नही सुन सकी। उसके वकील उसे पुकार रहे है पर वो उसे सुन नही पा रही है। फिर अचानक से,,,,,,,, अंकेष जोड़ से अर्चना के हाथो को पकड़कर हिलाता है जिससे अर्चना पुराने ख्यालो से बाहर निकलकर अंकेष को देखती है।

अंकेष,अर्चना से–वकील साहब तुम्हे बुला रहे है, जाओ।

अर्चना–(वकील के तरफ देखते हुए मन ही मन) इतने बेईज्जती से लोगो का मन नही भरा जो कठगरे मे

बुलाकर बेईज्जत करना चाहते है।

अर्चना,अंकेष से–भले मेरे हाल पर तुम मुझे छोड़ देते तो आज लोगो के सामने तमाषा ना बनता।

अंकेष,अर्चना से–जाओ भी ! कितना कोसोगी अपने–आप को।

अब अर्चना धीरे से चहल कदमी करते हुए कठगरे की तरफ बढती है अपने मन मे ये ख्याल लेकर की ना जाने कितने लोगो की नजरे अभी उस पर गड़ी हुई है। वो नजरे झुकाये हुए कठगरे मे पहुँचती है, फिर षुरू होती है उसके साथ उसके वकील पाठक जी का उसे बचाने के लिए उससे सवाल–जवाब।

पाठक जी,अर्चना से–सबसे पहले आप अपना नाम, पता, आपकी षादी कब और किससे हुई और कहां हुई

ये सारी बाते थोड़े डिटेल मे जज साहब को बताईये।

जज,पाठक जी से–वकील साहब आपने तो सवालो की झड़ी लगा दी। एक–एक करके पुछिए, बेचारी घबराई हुई लग रही है, आपको नही लगता ऐसा ! या इसके बाद किसी और तारिख मे जाना है ,आपको।

पाठक जी,जज से–नही श्रीमान् ऐसा नही है।

पाठक जी,अर्चना से–तो सबसे पहले आप अपना नाम बताईये।

अर्चना,पाठक जी से–अर्चना।

पाठक जी,अर्चना से–आपका मायके कहां है ?

अर्चना,पाठक जी से–मधुरगंज।

पाठक जी,अर्चना से–अब आप ये बताईये कि आपकी षादी कब और किससे हुई ?

अर्चना,पाठक जी से–मेरी षादि ,,,

इतने मे ,,,,,

पाठक जी,अर्चना से–हमे नही उधर जज साहब की तरफ देख कर बताईये और थोड़ी जोर से बताईये।

जज,पाठक जी से–वकील साहब मै सुन रहा हुँ।

जज,अर्चना से–कंटिन्यू ।

पाठक जी,अर्चना से–बताईये।

अर्चना–(जज साहब की तरफ देखते हुए) मेरी षादि 05 (पाँच) साल पहले सुकेष मजुमदार, पिता बिरप्पन

मजुमदार से इसी डिस्ट्रीक्ट के क्षेत्र संख्या–26 मे हुई थी।

पाठक जी,अर्चना से–बहुत अच्छा। अब आप ये बताईये कि इन पाँच सालो मे आपकी पारिवारिक लाईफ

कैसी चल रही थी।

अर्चना,पाठक जी से–जैसे कोई ताजा फल बाजार से लाकर घर मे रखने से वो धीरे–धीरे खराब होने

लगती है, ठिक उसी तरह मेरी पारिवारिक लाईफ भी साल दर साल खराब होती चली

गई।

पाठक जी,अर्चना से–वाह ! हमे नही पता था कि आप दार्षनिक के जैसा जवाब देंगे। रिष्ता खराब होने के

पीछे कारण क्या था ? आप उस परिवार मे एडजेस्ट नही हो सकी या आपके

सास ने आपको एडजेस्ट होने नही दिया।

अचानक से अब सुकेष का वकील वर्मा जी अपने कुर्सी पर से खड़े होकर,,,,,

वर्मा जी,जज से–यहां तो my load गहराई की बाते बताकर कुछ और ही बाते की जा रही है।

पाठक जी,वर्मा जी से–अभी तो मैने षुरूआत ही की है वर्मा जी, और अभी से आप पेरषान हो गए। आप

बोल रहे थे तो मै चुप–चाप सून रहा था ,तो आपका भी कर्त्तव्य बनता है कि आप भी

गहराई वाली बातो को ध्यान से सुने, हो सकता है इसमे आपका भी कोई फायदे वाली

बात निकल आए।

वर्मा जी,पाठक जी से–मैने अपना बंदोबस्त करके रखा है ,इसके लिए आपकी जरूरत नही है।

पाठक जी,वर्मा जी से–तो फिलहाल जो हमारी जरूरत है, उसे तत्काल पुरा करने दीजिए।

जज साहब ईषारो मे वर्मा जी को तत्काल रोकते है और पाठक जी को कंटिन्यू कहते है। पुनः –

पाठक जी,वर्मा जी से–एक बात कहे वकील साहब, बीच मे रोका–टोका मत किजिए। क्योकि दिमाग मे

आने वाली बाते आपके टोकने से गायब हो जाती है और गायब हो भी जायेगी।

इस बात को गंभीरता से लिजिए ।आपको फिर मौका मिलेगा बोलने के लिए, नही

मिलेगा तो हम आपको दिलायेंगे।

पाठक जी की यह बाते सुनकर वर्मा जी जज साहब के तरफ देखकर ईषारो मे उसे कुछ कहने को कहते है।

जज,वर्मा जी से–मै सब देख रहा हुँ। आप बैठिये।

पाठक जी,अर्चना से–हां तो मै कह रहा था कि आपके घर का माहौल खराब होने का रिजन क्या था ?

अर्चना,पाठक जी से–मिस अंडर स्टैंडिग ।जो काम और बाते मुझे पसंद थी वो मेरे साथ नही हुई ,तो कोई

बात नही। लेकिन जो काम और रहन–सहन मुझे पसंद ही नही था, वही चीज हमपे

थोपी जाने लगी।

पाठक जी,अर्चना से–इस चीज को जरा अच्छे से डिफाईन किजिएगा।

अर्चना पाठक जी से–जैसे कि मेरे ससुराल मे मेरे पति के दोस्तो का षराब पार्टी के लिए मजमा लगता था

और उसके लिए सारी तैयारिया करने के लिए मुझे कहा जाता था। जिसपर मेरी सास

भी मेरा साथ नही देती थी। ऐसा लगता था जैसे मै षादि करके ससुराल नही गई,

किसी बियर–बार मे काम करने के लिए एपोएन्ट की गई हुँ। चाहती तो ये सब घटनाए

मेरी सास रोक सकती थी, पर उन्होने ऐसा करने के बारे मे नही सोचा। मेरी सास

अपने पुराने ख्यालातो मे जीती और मुझे भी उसी तरह जीने को मजबुर करती। सबेरे

सुर्य निकलने के पहले जग जानी चाहिए हमे। अगर हमसे लेट हुई तो उस दिन मेरे

हाथो का बना कुछ भी वो नही खाती। उस दिन वो खुद बना के खाती और ऐसा होते

देख मेरा प्रिय पति जो अपने लाईफ मे मुझे आज तक एक चावल के दाने के बराबर

भी महत्त्व नही दिए,वो उस दिन मेरे साथ बगैर कुछ जाने तांडव करता। गिले –षिकवे

तो पुरानी बाते हो गई थी मेरे ससुराल मे,मरने के पहले वाला माहौल रोज–रोज बनता

था मेरे ससुराल मे। ना किसी अपनो से मिलने कि आजादी, ना ही आराम की कोई

बात और पति से साथ घुमने की बाते तो गुम ही थी। कभी–कभी ऐसा लगता था जैसे

जानबुझ कर गुलामी की एग्रीमेन्ट पे हस्ताक्षर की थी मैने। जिंदगी की खुषी तो मुठ्ठी

से रेत की तरह लगातर कम होती जा रही थी। कष के पकड़ भी नही सकती थी

और जानबुझ कर अपने खुषी को छोड़ता भी कौन है।

पाठक जी,अर्चना से–तो फिर कैसे एडजेस्ट किया आपने वहा पर इतने साल।

अर्चना,पाठक जी से–कोषिष तो हमने अंत तक की, पर मेरी सास मेरे साथ एडजेस्टमेंट नही कर सकी।

उसे जिस दिन मेरे हाथो का बनाया खाना नही खाने का रहता तो वो उस दिन सुकेष

को कहती अपना खाना बनाने को। फिर मेरा पति मुझे आकर पहले मारता और फिर

पुछता कि तुम्हारे रहते हुए मै इस घर मे क्यो खाना बनाऊ।

पाठक जी,अर्चना से–क्यो ? आपका पति आपको समझ नही पा रहा था या समझना नही चाह रहा था।

अर्चना,पाठक जी से–वो कुछ चाह ही नही रहा था। वो चाह रहा था कि उसकी माँ का हरेक आज्ञा कैसे

पुरी हो मेरे प्रति।

पाठक जी,अर्चना से–तो उस दिन के घटना तक ये मामला कैसे पहुँचा ? यानी वारदात वाले दिन क्या

हुआ, किस कारण से हुआ और कैसे हुआ ये बताईये ?

अर्चना,पाठक जी से–बस वो (अर्चना की सास) हमे जिंदा नही देखना चाहती थी। लेकिन संयोग है कि

उसके मंषा को ऊपर वाले ने जान लिया और उसकी किए की सजा उसे मिल गई।

उस दिन हमे ऐसा लग रहा था कि वो (अर्चना की सास) हमे खुद मार देगी या अपने

बेटे से हमें मरवा देगी। माहौल इतना भयानक हो चुका था कि मैनें खुद को बचाने के

लिए अपने–आप को कमरे मे बंद कर लिया। इसी दरमियां मेरी सास के पैर फिसल

जाने से उसके सर मे पीछे तरफ चोट लग गई और वो बेहोष हो गई। फिर उसे

हॉस्पिटल ले जाने के बाद क्या हुआ ये हमे नही पता। मै अंदर से डर गई थी कि

षायद मेरा पति दोबारा हमे मारने की कोषिष करे, इससे पहले मै वहां से निकलकर

अपने एक परिचित के यहा चली गई।

पाठक जी,अर्चना से–तो आपको कब पता चला कि आपकी सास का देहांत हो चुका है।

अर्चना,पाठक जी से–मुझे कुछ दिन बाद पता चला।

पाठक जी,अर्चना से–तभी आप कहां थे ?

अर्चना,पाठक जी से–मै अपने ससुराल मे नही थी।

पाठक जी,अर्चना से–तो आप अपने मायके चली गई होंगे या अपनी कोई सहेली के यहां या फिर अपना

कोई क्लोज रिलेटिव जिसे आप अच्छी तरह से जानते हो। क्या मैने सही कहा ना।

पाठक जी,जज से–तो श्रीमान् मै ये कहना चाहता हुँ ये बात पर गौर किया जाए कि इसकी सास की मौत

की खबर अर्चना जी को कुछ दिनो के बाद पता चली।

पाठक जी,अर्चना से–अब आप जा सकते है।

पाठक जी,जज से–श्रीमान् अब मै उस व्यक्ति को इस कठगरे मे बुलाना चाहता हुँ जो कुछ समय पहले

पीड़ित व्यक्ति (सुकेष) के पक्ष मे यह सोचकर गवाही देकर गए कि वो जिसके पक्ष मे बोल

रहे है वो बिल्कुल सही है। मै उसके (असर्फी) आँखो पर परे पर्दे को हटाने के लिए ,,,,

पाठक जी,वर्मा जी से–क्या नाम है उसका,,?

वर्मा जी,पाठक जी से–असर्फी दास।

पाठक जी,जज से–हां श्रीमान् ! असर्फी दास को बुलाना चाहता हुँ।

जज,पाठक जी से–बुलाईये , इजाजत है।

पाठ़क जी,असर्फी दास से–आईये जी , कहां बैठे है आप ?

अब सुकेष का वकील अपने पक्ष के गवाह असर्फी से–,,,,,,,,

वर्मा जी,असर्फी से–जाईये , उल्टा–पुल्टा सवाल अगर पुछेंगे तो हिसाब से अपने जवाब अपने जुबान से

डकार की तरह धीरे–धीरे निकालियेगा। जिस तरह मेरे सवालो का जवाब दिया था,उसी

तरह ही उन्हे वही सारी बाते बताना है। गवाही मे थोड़ा सा भी बदलाव नही करना है।

अब असर्फी फिर दोबारा कठगरे मे जाने के लिए तैयार है और वो सुकेष की ओर देखते हुए आगे बढता है। सुकेष पक्ष के सभी लोगो की नजरे उस असर्फी और वकील पाठक जी पर टिकी हुई है कि वकील के सवालो पर गवाह का जवाब क्या होगा ?

पाठक जी,असर्फी से–हां तो आप इस केष के बारे मे और क्या–क्या जानते है ?

असर्फी,पाठक जी से–आपको क्या जानना है ये पुछिये ? हम वही जानते है जो हमने कुछ समय पहले जज

साहब को बताई है।

पाठक जी,असर्फी से–आपने कुछ देर पहले बताया कि आपने सारी वारदात को अपने आँखो से देखा।

आपको ये गलता है कि किसी को अगर धक्का मार के गिराया जाय तो उसे उतनी

चोट लग जायेगी, जिससे उसकी मौत भी हो सकती है।

असर्फी,पाठक जी से–हां हो सकता है, क्यो नही ? अगर किसी धारदार चीज पर सर जाकर टकराये तो

ऐसा हो सकता है।

पाठक जी,जज से–तो इस बात को नोट किया जाय श्रीमान् कि इनका कहना है कि किसी धारदार चीज

पर सर जाकर टकराने से किसी की मौत हो सकती है, ये बाते सच भी है,लेकिन

पोस्टमार्टम रिर्पोट मे दर्षाया गया है कि मृतका के सर पर जख्म इतने छोटे थे कि

उससे जान जाने की सम्भावना ना के बराबर है और रिर्पोट मे हृदय गति रूकने की भी

बात कही गई है।

पाठक जी,असर्फी से–तो आप ये बताईय कि जब उसकी (अर्चना) सास को उसके पति के द्वारा हॉस्पिटल

ले जाया जा रहा था तो क्या आप उनके साथ गए थे।

असर्फी,पाठक जी से–मै बाद मे पहुँचा था हॉस्पिटल, क्योंकि सुकेष के माँ को हॉस्पिटल ले जाने के लिए

गाड़ी नही मिलने के कारण उसे उस गाड़ी मे ले जाया गया जिसमे पहले से ही कुछ

लोग बैठकर कही जा रहे थे।

पाठक जी,असर्फी से–बातो को बातो से मत उलझाईये बरखुद्दार, क्योकि बातो से बातो को सुलझाने मे

अर्से लग जाते है। पर अंत मे होता वही है जो बहुत पहले हो जाना था, लेकिन होता

है बहुत कुछ खोने के बाद। तो जब आप उसके साथ गाड़ी मे बैठकर गए ही नही तो

आपने ये कैसे यकिन कर लिया कि उसकी मौत पहले ही हो चुकी है।

असर्फी,पाठक जी से–ये तो डॉक्टर साहब ने कही।

पाठक जी,असर्फी से–डॉक्टर साहब की कही सारी बाते तो सच नही हो सकती ना, जबतक वो इसे

राईटिंग मे ना दे। तो क्या आपके सामने उन्होने दम तोड़ा ?

असर्फी,पाठक जी से–नही। तभी उसकी साँसे हमलोगो ने चेक नही किया ।

पाठक जी,जज से–तो श्रीमान् इसके बातो से स्पष्ट है कि इनके सामने तो स्व0 षारदा देवी की मौत नही

हुई।

जज,पाठक जी से–तो मरने वाली का नाम षारदा है।

पाठक जी,जज से–जी श्रीमान्।

पाठक जी,असर्फी से–तो आप कितने देर के बाद हॉस्पिटल पहुँचे।

असर्फी,पाठक जी से–जितनी देर हमे वहां से निकल कर हॉस्पिटल पहुँचने मे लगना चाहिए, बस उतनी ही देर मे मै

पहुँच गया।

पाठक जी,असर्फी से–हो सकता है आप कन्या कुमारी से चले हो और आपको हॉस्पिटल पहुँचने मे दो दिन
भी लग गए हो। एक्जाक्ली समय बताईये कि उसके घर से हॉस्पिटल कितनी दुरी
पर है और आपको वहां पहुँचने मे कितना समय लगा। क्योंकि कोर्ट को ये नही पता
की हॉस्पिटल और आपके प्रिय दोस्त के घर की सही दूरी कितनी है ?

असर्फी,पाठक जी से–हमें नही पता कि आप इतने पेचिदे सवाल करेंगे। वो तब जब आदमी के मेमॉरी से
उसकी खुद की मेमॉरी मिट चुकी हो।

पाठक जी,असर्फी से–ये कोर्ट है महाषय् ! यहां पर पेचिदे सवालो से ही सही जवाब बाहर आते है।

असर्फी,पाठक जी से–अगर रास्ते मे जाम ना हो तो 20 (बीस) मिनट और अगर जाम मिल जाए तो कह
नही सकते। उस दिन मै उतने ही समय यानी 20–25 मिनट मे पहुँच गया था।

पाठक जी, असर्फी से–अब मै आपको ये बताना चाहता हुँ कि आपके दोस्त के घर से हॉस्पिटल पहुँचने के
लिए सिर्फ 10–12 मिनट चाहिए। अगर आप रास्ते मे चाय, नास्ते और सिगरेट पीने
के समय को भी इसमे जोड़ियेगा तो ये अगल बात है। अब आप बिहार से दिल्ली
जाने के लिए पहले बंगाल चले जायेंगे फिर झारखंड होते हुए मध्यप्रदेष के रास्ते
दिल्ली पहुँचेंगे तो ये आप की मर्जी है। तो आपको उस दिन लेट क्यो हुआ ?क्योंकि
उस दिन आप जाम मे फसे थे इसका जिक्र तो आपने नही किया।

असर्फी,पाठक जी से–जाम नही था, लेकिन मुझे उतना समय लग गया था।

अब सुकेष का वकील अपना आपा खोते हुए,,,,,,,

वर्मा जी,जज से–बीच मे रोकने के लिए माफी चाहता हुँ my load , लेकिन इसके (असर्फी) हॉस्पिटल लेट

या जल्दी पहुँचने के क्या मतलब है ? इससे सच्चाई तो नही बदल सकती ना।

जज,पाठक जी से–बताईये इस केष से आपके इस सवाल का क्या संबंध है ?

पाठक जी, वर्मा जी से–वर्मा जी ! आपको पता है ना कभी–कभी सच्चाई को खींच कर निकालना पड़ता है।

और गवाहो के जवाब से ही कुछ जवाबो को छांटना पड़ता है उस पर ही उपयोग

करने के लिए।

वर्मा जी,पाठक जी से–आप सच्चाई बाहर नही निकाल रहे है, उसे और दबाने की कोषिष कर रहे है।

पााठक जी,वर्मा जी से–दबाने की कोषिष कर रहे है या निकालने की कोषिष कर रहे है ये बाते सबसे

पहले आपको ही पता चलेगी।

पाठक जी,असर्फी से–असल मे बात ये है कि आप हॉस्पिटल गए ही नही थे।

असर्फी,पाठक जी से–क्या बात कर रहे है आप ? मै गया था।

पाठक जी,असर्फी से–आप कैसे प्रुफ कर सकते है कि आप गए थे हॉस्पिटल ?

असर्फी,पाठक जी से–प्रुफ करना तो आपका काम है, मै तो अदालत को सिर्फ विष्वास ही दिल सकता हुँ।

पाठक जी,असर्फी से–हां आप विष्वास दिलाईये, लेकिन अदालत को भटकाईये मत। आप जा सकते है।

पाठक जी,जज से–श्रीमान् मै अब फिलहाल अपने आप को विराम देता हुँ ,और अपने कलिग को बहस के

लिए समय देने का आग्रह करता हुँ। धन्यवाद।

जज,वर्मा जी से–हां वकील साहब तभी से बहुत षांत रखा आपने खुद को , अब आपकी बारी, कहिए जो

कहना चाह रहे थे।

वर्मा जी,जज से– my load मैने अभी अपने कलिग की बाते सुनी,जो बेहद रोमांचक लग रही थी, वो केष

को किस दिषा मे ले जा रहे थे, गवाहो से किस तरह की बाते कर रहे थे और किस

तरह से गवाहो के दिमागो मे दर्द पैदा कर रहे थे, ये मै क्या यहां बैठे सभी लोग देख

रहे थे। मै चुप था क्योंकि मुझे मेरे दोस्त (कलिग) की बाते सुनकर आष्चर्य हो रहा

था। तो मै अब इस केष मे मुख्य आरोपी श्रीमति अर्चना प्रिया से कुछ सवाल करना

चाहता हुँ। अगर इजाजत हो तो मै उसे यहां बुलाना चाहता हुँ।

जज,वर्मा जी से–इजाजत है।

ना जाने क्यो अब दोबारा अर्चना कठगरे मे आने से कतरा रही है ? वह अंदर से पहले से और ज्यादा बेईज्जती होने के कारण डरी हुई है, वो मन ही मन सोचती है क्यो नही जल्द से जल्द ये विवाद खत्म हो जा रहा है, चाहे मै छुट जाऊ या सजा पा जाउ, जो भी हो पर जल्दी से हो जाए बस। ताकि इस भरी अदालत मे मै कम से कम षर्मिंदा हो सकू। अपने दिलो मे इतने सारे जज्बातो को लेकर अर्चना कठगरे की ओर बढती है, और झुकी हुई नजरो से अपने विरोधी वकील को देखती है, कि ना जाने वो अब कौन से सवाल करेंगे।

वर्मा जी लोहे को गरम करके अब तब मे उससे ना जाने कौन से और कितने तरह के सवालात करने के लिए तैयार हैः–

वर्मा जी,अर्चना से–मै आपके बातो को सून चुका हुँ ,इसलिए मै वह बात जानना चाहुँगा जो आपने नही

बताई। यानी वही बात पुछुंगा जो आपसे नही पुछी गई।

अर्चना थोड़ी घबराई हुई है यह उसके चेहने को देखकर साफ–साफ पता चल रहा था।

वर्मा जी,अर्चना से –हमे लग रहा है आप थोड़ी घबराई हुई है,घबराईयेगा नही मै आराम से

ही बात करूंगा। तो आप ये बताईये कि आपको अपने पति से कितने बच्चे है।

अर्चना,वर्मा जी से–01 (एक) ।

वर्मा जी,अर्चना से–षादि के कितने साल हुए आपके।

अर्चना,वर्मा जी से–(06) छः साल से कुछ ज्यादा।

वर्मा जी,अर्चना से–तो आपके 01 एक ही बच्चे क्यो है।

पाठक जी,वर्मा जी से–परिवार नियोजन के बारे मे सरकार इतने प्रचार–प्रसार कर रही है, फिर भी आप

ऐसी बात करते है वर्मा जी।

वर्मा जी,पाठक जी से–पहली सवाल पर ही आप टोकने लगे।

पाठक जी,वर्मा जी से–मै आपको टोक कहां रहा हुँ ? मुझे तो हँसी आ रही है।

जज,पाठक जी से–हँसी की बात होती तो यहां पर सब हँसते, सिर्फ आप ही क्यो ?

पाठक जी,जज से–माफी चाहता हुँ श्रीमान्।

अर्चना,वर्मा जी से–पहले के मुताबिक अभी के बच्चे को पालना थोड़ा कठिन है और परेषानी भी, और अभी

बच्चा लेने से पहले प्लानिंग करनी पड़ती है जो हमलोगो ने नही किया।

वर्मा जी,अर्चना से–आपके अलावे और कौन ?

अर्चना,वर्मा जी से–मेरे पति।

वर्मा जी, अर्चना से–प्लानिंग क्यो नही हुआ ?

अर्चना,वर्मा जी से–क्योंकि हमलोगो मे कुछ ठिक–ठाक नही चल रहा था ?

वर्मा जी,अर्चना से–ठिक–ठाक नही चल रहा था या आप ठिक–ठाक चलने नही देना चाह रहे थे। सोच रहे

थे कि भविष्य मे कुछ ठिक–ठाक नही रहे।

वर्मा जी,अर्चना से–क्योंकि आप अपने पति के अलावे किसी दूसरे पुरूष की ओर आकर्षित हो रही थी ?

और अगर ऐसा होता है तो परिवार मे ऐसा करने वाले की तरफ से कुछ भी हो सकता

है। जैसे कि जो आपको पसंद नही है उससे अच्छे से बात नही करना, उसकी सारी

बातो को नजर अंदाज करना, यानी अपने पति की। अपने सास के प्रत्येक बातो पर

चिरचिरा सा व्यवहार करना। सही बातो को गलत ऐंगल से देखना चाहे वो आप ही के

फायदे के लिए क्यो ना हो ? उस समय मे वो काम करना जिस समय मे उस काम की

जरूरत ही ना हो।

अर्चना,वर्मा जी से–ऐसा कुछ नही है।

वर्मा जी,अर्चना से–ऐसा ही है, क्योंकि आपको लगता था अगर ऐसा करेंगे तो घर का माहौल खराब होगा,

और घर का माहौल खराब होगा तो आपको घर छोड़ने का बहाना मिल जाए ! षायद।

अर्चना,वर्मा जी से–(सर ना मे हिलाकर) नही ऐसी कोई बात नही है।

वर्मा जी,अर्चना से–क्या ये सही नही है कि आप दोनो के बीच किसी तीसरे की इंट्री हो चुकी थी ,यानी

दूसरे मर्द की। जो बाते आपके पति के साथ–साथ आपके सास को भी पता चल चुकी

थी। जिस कारण से ही आपके घर का माहौल दिन–ब–दिन खराब होता चला गया।

आपकी हरकतो को देख कर आपकी सास बराबर आपको समझाया करती, जो आपको

रास नही आ रही थी । जिसका कसर आपने अपनी सास से उस दिन होने वाली झगड़े

मे निकाल ली। जिस दिन का इंतेजार आपको बहुत पहले से था।

अर्चना,वर्मा जी से–उस समय ऐसी कोई बात नही थी ,कि मेरी नजदीकी किसी के साथ है, और मैने अपने

सास को नही मारा।

वर्मा जी,अर्चना से–आप अपने सास को पहले से ही मारना चाहती थी, और उस दिन जब आपको मौका

मिला तो आप इस तरह से जुगार बिठाकर उन्हे (अर्चना की सास) धक्का दिया की वो

उसी चीज से जाकर टकराये की उसे गहरी चोट लगे, और हुआ वही जैसा आप चाह

रहे थे।

अर्चना,वर्मा जी से–मै अभी जिसके साथ (अंकेष) रह कर भी नही रह रही हुँ ,उससे मेरा ताल्लुक मेरे पति

के घर से मुझे निकलने के बाद ही हमसे हुआ था। मैने अपने पति का घर ये सोचकर

नही छोड़ा की कोई है जिसे मै चाहती हुँ। बल्कि मैने जब अपने कलेजे को मजबुत

करके अपने पति का घर छोड़ा तब मैने उसे ये सोचकर अपनाया कि वो मेरे बच्चे के

साथ मेरी देखभाल करेगा। क्योंकि हर औरत को एक ऐसे आदमी की जरूरत होती जो

उसे सुखी से रख सके। पर इसके (अंकेष) साथ रहने के लिए मैने अपना घर नही

छोड़ा, बल्कि उसके (सुकेष) साथ नही रहने के लिए मजबुर होकर अपने पति का घर

छोड़ा।

वर्मा जी,जज से– my load ये गौर करने वाली बात है कि अर्चना प्रिया जब अपने घर से अपने एक

सीधे–साधे पति को छोड़कर निकली तो वो उस आदमी के पास गई, जिस आदमी को

पाने के लिए वो अपने सास को रास्ते से पहले हटा चुकी थी। जिससे स्पष्ट है कि

प्यार,मोहब्बत और ईष्क के मायाजाल मे फसकर उसने ना सिर्फ अपनी सास की हत्या की

बल्कि अपने एक फलते–फुलते घर–परिवार को भी बर्बाद कर दिया। जिससे साबित होता है इसने

(अर्चना) अपने सास की हत्या ही इसलिए की, ताकि इसे कोई रोक–टोक ना कर सके।

और जब मन करे अपने पति का पल्ला झार कर चल दे किसी ओर के पास, और हुआ भी

यही। धन्यवाद ।

जज,वर्मा जी और पाठक जी से—हमे लगता है आप दोनो वकील साहब इस अदालत का वक्त जाया कर

रहे है।

जज,वर्मा जी से—ना तो आप इन्हे (अर्चना) गुनाहगार साबित कर पा रहे है और,,,,,,

जज,पाठक जी से—ना ही आप इन्हे (अर्चना) बेगुनाह,,,,।

जज,अपने पेषकार से—आज और कितनी केषो की तारिख है।

पेषकार,जज से—02 (दो), एक मे जमानत देना है और एक नये केष को रजिस्ट्रर्ड करना है,जिसमे आवेदक

के द्वारा अपने पत्नि का किसी के साथ भागने के कारण मामला दायर किये जाने से

संबंधित है।

जज, वर्मा जी और पाठक जी से—आधे घंटे का लंच ,फिर उसके बाद आपलोगो को एक घंटे मिलेंगे।

जज साहब अपने कुर्सी को छोड़ कर अपने आराम करने वाले रूम मे चले जाते है। अर्चना का वकील पाठक जी अर्चना को कठगरे से बाहर आने को कहता है, वर्मा जी अपने कुर्सी पर जाकर बैठते है, लोगो के बीच केष को लेकर कुछ गहमा—गहमी षुरू हो जाती है। अर्चना अंकेष के बगल वाली षीट पर जाकर बैठने वाली होती है वह देखती है वहां उसके षीट पर सुक्खी आकर बैठा हुआ है। जैसे ही अर्चना की नजर सुक्खी पर पड़ती है फिर,,,,,

अर्चना,सुक्खी से—सुक्खी,,,,,।

सुक्खी,अर्चना से—मम्मा,,,,,।

अपने माँ को पुकारते हुए सुक्खी आपने माँ से लिपट जाता है और अर्चना भी उसे पुकारते हुए अपने गोद मे ले लेती है और उसे एक 06 (छः) माह के बच्चे की तरह चुमते हुए दुलार करने लगती हैं। अर्चना कुछ पलो तक उसे अपने बाहो मे भरे हुए बैठी है फिर अंकेष की तरफ देखते हुए सुक्खी के बारे मे ईषारो मे पुछती है।

अंकेष,अर्चना से–मैने मंगवाया है किसी के माध्यम से स्कूल से सीधा यहां पर।

अर्चना,सुक्खी से–तो कैसा है ?

सुक्खी,अर्चना से–(मायुष होकर) ठिक ।

अर्चना,सुक्खी से–कुछ खाया तुमने।

सुक्खी,अर्चना से–हां ! स्कूल मे खाया था, जो घर से लेकर गया था।

अर्चना,सुक्खी से–भर पेट खाया।

सुक्खी,अर्चना से–हां । मम्मा आज आप घर चलेंगे ना। आज आप घर चलेंगे तो मै आपको बहुत सारे अपने

खिलौने दिखाउंगा। आप बहुत झुठ बोलती है, घर जाने के बारे मे, हां बोलती है पर जाती

नही।

अर्चना अब बातो को बदलते हुए,,,,,

अर्चना,सुक्खी से–देखो –देखो वकील साहब क्या कर रहे है ?

सुक्खी अब वकील साहब की तरफ देखता है ,,,,,,

थोड़ी देर के लिए अर्चना का पहला पति सुकेष अपनी तिरछी नजरो से अर्चना को देखते हुए कोर्ट रूम से बाहर की ओर अपने दोस्त असर्फी के साथ निकलता है। उसके आगे उनका वकील वर्मा जी भी लंच टाईम के लिए बाहर निकलते है। ईधर अर्चना,अंकेष और उसके साथ संतो अपने वकील पाठक जी की तरफ गंभीरता पुर्वक देखे जा रहे है, जो वकील साहब अपने सबूतो वाले कागजातो को पढने मे बिजी है।

अंकेश,पाठक जी से–जब आप बहस करते है तो लगता है हम जीत जायेंगे, और जब वो (वर्मा जी) वकील

साहब बहस करते है तो लगता है सामने वाला जीत जायेगा।

पाठक जी,अंकेष से–(बड़े इत्मिनान से) अंतिम मे जो जीतेगा ,समझिये बाजी वही मारेगा। एक काम कीजिए

अपने पत्नि को तबतक कुछ लंच लाकर खिलाईये। बहुत दिन हो गए होंगे उसे बाहर

का खाना खाये,ना कुछ खाना चाहे तो कुछ पीने लायक जो हो वही लाकर दीजिए।

कुछ पलो बाद अर्चना अंकेष के द्वारा ग्लास मे लाया हुआ कुछ पी रही है, लंच का आधा समय गुजर चुका है। पाठक जी अर्चना को थोड़ा रिलेक्स होते देख,,,,

पाठक जी,अर्चना से–तो आप और कुछ बता सकते है इस केष के बारे मे जो पहले आपने हमे नही बताई।

अगर ऐसा है तो कुछ याद आ रहा है तो बताईये।

अर्चना अपने नजरे को झुका लेती है और कुछ बोलने के बदले नही बोलकर खामोष सी हो जाती है।

अंकेष,पाठक जी से–ये (अर्चना) मेरे पास है इसलिए इसे ये सब भुगतना पड़ रहा है।

पाठक जी,अंकेष से–क्यो ये आपके साथ रहने के कारण क्यो जेल मे रहेगी ? इस पर तो आरोप हैं।

अंकेष,पाठक जी से–आरोप कम, ईर्ष्या के कारण ऐसा हुआ है।

पाठक जी,अंकेष से–आप लोगो के बीच की कुछ ऐसी बाते है जो मेरे दिमाग मे आकर वापस चली जा रही

है।

पाठक जी अपने कलम को हाथ मे लेते हुए,,,,,,,

पाठक जी,अर्चना से–तो ये बताईये कि आपकी सास जिस दिन मरी उस दिन के बाद से आप कहां थे ?

मतलब अपने पति के पास थे या नही।

अर्चना,पाठक जी से–उस दिन के घटना के डर के कारण मै वहां से निकल चुकी थी।

पाठक जी,अर्चना से–तो उसके कितने दिनो बाद आपको ये पता चला कि आपके पति ने अपनी माँ की

हत्या का आरोप आप पर लगाया है और आपको पुलिस ढुंढ रही है।

अर्चना,पाठक जी से–मामला कुछ हद तक ठंड पर गई थी, फिर अचानक से पुलिस ढुंढते हुए इसके

(अंकेष) घर पर आ पहुँची, जहां मै थी। वो मुझे गिरफ्तार करने आई थी। यह बाते

सुनकर मेरे पैरो तले जमीन फटने लगी थी कि वो (सुकेष) ऐसा क्यो कर रहा है ?

यह बाते सुनकर फिर से वकील साहब कागजात मे अर्चना के सास के मरने की तिथि और एफ0आई0आर0 दर्ज करने की तिथि को बारिकी से समझने की कोषिष करने लगते है। फिर वकील साहब को एक नये पहलू का पता चलता है। उन्हे लगता है कि उसके सास के मरने के बाद अर्चना को नामजद नही बनाया गया था, उसे नामजद कब बनाया गया कुछ दिनो के बाद। क्योंकि मौत के तिथि को ही जब उसे (सुकेष) आरोपी के बारे मे पता था तो फिर उसने उसके नाम से तब एफ0आई0आर0 क्यो नही दर्ज कराया।

पाठक जी,अर्चना से–तो आप अपने ससुराल से निकलने के बाद सीधे इनके (अंकेष) पास आ गए थे, जो आपके पहले पति सुकेष को कुछ दिनो के बाद पता चला। क्या ये बात सही है ?

अर्चना,पाठक जी से–षायद ! पर उसे पता था कि मै अगर वहां से निकली हुँ तो मै इसी (अंकेष) के पास

आ सकती हुँ , पर मै इसी (अंकेष) के पास हुँ ये उसे (सुकेष) कुछ दिनो के बाद मे

पता चला।

अब पाठक जी के दिमाग मे एक बाते तेजी से दहषत मचाने लगती है, वो मन ही मन बातो का गुणा भाग करने मे लग जाते है ,वो ये कि उसकी (सुकेष) माँ अपनी गलती से मरी और अर्चना डर से हो या गुस्से से उसके घर को छोड़कर चली गई , यहां तक तो ठिक है पर मामला गड़बराया तब से जब उसे (सुकेष) ये पता चला कि अर्चना उसे (सुकेष) छोड़ के अंकेष के साथ रह रही है। अब पाठक जी सारे माजरे को थोड़ा गहराई से समझते हुए आष्वस्त होते है, अच्छा तो ये बात है। उन्हे लगता है कि अब अर्चना के पति सुकेष से थोड़ा बहस तो करनी पड़ेगी। लेकिन उससे पहले मै अपने गवाह से थोड़ा जज साहब को रूबरू तो करा दू।

पाठक जी,अर्चना से–देखिये आपने एकदम ठिक से गवाही दिया है, और इसी तरह अपने बातो पर कायम

रहिएगा। अपने बोले गए बातो मे जरा सा तिल के बराबर भी बदलाव नही किजिएगा,

वरना सामने वाले मेरे काबिल दोस्त आपके ब' से बेगुनाही को ब' से बदनामी मे

बदलने मे देर नही लगाऐंगे। आपने जो अभी मुझसे कहां है, हो सकता है ये बाते मै

आपसे पुंछू तो इसी तरह सोच–समझ के जवाब दीजिएगा।

पाठक जी,अंकेष से–क्योंकि अब जो हम मामले को उजागर करेंगे तब आपको पता लगेगा कि हम क्या

उजागर कर रहे है ?

पाठक जी के आगे पीछे बैठी अर्चना,अंकेष,संतो और कमल के साथ–साथ अर्चना का बेटा सुक्खी भी सभी की तरह उनकी आपसी बाते अपने माँ की गोद मे षांति से चिपककर सुन रहा है।

बाहर मे सुकेष का वकील सुकेष और असर्फी के साथ अपने चेम्बर मे बैठकर प्लानिंग सेट करने मे लगे हुए है कि आगे किससे और क्या–क्या सवाल–जवाब करने है।

वर्मा जी,सुकेष से–अभी तक उसने अपने लाए गए गवाह से गवाही नही दिलाई है ,और हो सकता है

कि सामने वाला वकील आपसे कुछ सवाल जवाब करे। सवाल ऐसा होगा जिसका जवाब

आपके पास षायद ना हो , और जो जवाब आप देंगे उसे वो तोड़ मरोड़ कर आप को ही

गुमराह कर दे, तो इसके लिए आपको करना सिर्फ इतना ही है कि बस एक ही बातो के

आस पास उसे कष के पकड़कर चलना है कि अर्चना ने किस तरह बातो–बातो मे

झगड़े की आर मे आपकी माँ को मार डाला, और ये भी बोलना है कि आपकी पत्नी

किसी भी षर्त मे आपके साथ रहना नही चाहती थी जिस कारण वो किसी भी हद तक

जाने के लिए तैयार थी।

असर्फी,वर्मा जी से–उसकी सजा तो बरकरार रहेगी ना।

वर्मा जी,असर्फी से–ये तो फैसले के अंत मे ही पता चलेगा।

सुकेष,वर्मा जी से–फिर भी किसी भी हालत मे उसे बाहर नही आने देना है।

वर्मा जी,सुकेष से–मै तो आपका पक्ष रखने के साथ–साथ भरपूर कोषिष करूंगा। बाकी तर्को के आधार पर

कोर्ट सच्चाई को देखती है ,वो जिसमे संतुष्ट हो जाए उसी के अनुरूप फैसला सुनाती

है। इसमे मै और आप सिर्फ कोषिष कर सकते है, निर्णय नही दे सकते है। आप लोग

एक बात और हमें बताईये कि आपलोगो ने जितना हमें बताया है वह पूरी है या कुछ

कमी है जो आप हमे नही बता पा रहे है। आप जो हमे बताते आ रहे है वही सही है या

जो सही है वो बता नही रहे है। क्योंकि सबकुछ जानने के बाद कोर्ट मे लड़ाई करने मे

और सामने वाले को पछाड़ने मे मजा आता है।

सुकेष,वर्मा जी से–आपके बातो से ऐसा लगता है कि कही ना कही हमलोग ये केष हार ना जाए।

वर्मा जी,सुकेष से–ऐसी बाते सिर्फ आपको लग रही है, लेकिन मै जो आपको दिखाना चाह रहा हुँ ,वो

आपलोग देख नही पा रहे है। लेकिन आप हारे या ना हारे लेकिन मै सामने वाले को

जीतने नही दुंगा। मैने जो बाते आपको अभी कही है बस उसी बात पर कायम रहना है,

जो आप ने ही कही थी और जो सही भी हैं।

ईधर कोर्ट रूम मे लंच के बाद जज पहुँचते है ,,उससे पहले सभी लोग कोर्ट रूम मे पहुँच चुके है और जज के आने पर सभी लोग खड़े हो जाते हैं।

जज,पेषकार से–कार्रवाई षुरू करवाईये।

अब पेषकार दोनो वकीलो को ईषारो मे तैयार होने को कहते है , यह देख अब अर्चना का वकील पाठक जी अपना पक्ष रखने के लिए तैयार है और अपने पहने हुए कोर्ट को व्यवस्थित करते हुए सामने रखे कागजात को हाथ मे उठाते है।

जज,पाठक जी और वर्मा जी से–तो आपलोगो के पास एक घंटे है, (वर्मा जी से) गुनेहगार को गुनेहगार

साबित करने के लिए और (पाठक जी से) बेगुनाह को बेगुनाह।

दोनो लोग जज के सामने सर झुकाकर सहमती व्यक्त करते है और फिर,,,,,

पाठक जी,जज से–तो श्रीमान् मै इस कोर्ट को आईना दिखाने के लिए इस केष के अहम किरदार यानी

सुकेस मजुमदार महोदय को पुछताछ के लिए इस कठगरे मे बुलाना चाहता हुँ।

जज,पाठक जी से–ईजाजत है, बुलाईये।

पाठक जी,जज से–धन्यवाद।

वर्मा जी,सुकेष से–जाईये और बहुत ही इत्मिनान से सवालो के जवाब दिजिएगा पुरा सोचकर,इसके लिए

आपको सोचने का पर्याप्त समय भी मिलेगा, घबराईये नही।

सभी की नजरे सुकेष पर है बगैर अर्चना को छोड़कर,,,,,,वो सिर्फ दबे नजरो से उसकी बाते सुनना चाहती है कि वकील साहब के बातो पर वो क्या जवाब देते है। सुकेष कठगरे मे पहुँचता है।

पाठक जी,सुकेष से–तो आपने तो अपना परिचय और सारी बाते बता ही दी है, मै वो बाते पुछना चाह

रहा हुँ जो आपसे आपके वकील साहब ने नही पुछी, जो अब हम पुछना चाहते है। तो

ये बताईये कि आपकी पत्नी अपसे प्रेम नही करती थी , लेकिन आप उससे प्रेम क्यो

नही करते थे ? जो वो आपसे दुर होती चली गई। ऐसा लगता है कि सारे मामले की

वजह कोई और नही बल्कि आप खुद है।

सुकेष,पाठक जी से–ऐसा आपको क्यो लगता है ? मेरा घर मेरा परिवार,मै कैसे रहा अपने लोगो के साथ ?

ये आप कैसे जान सकते है ?

पाठक जी,सुकेष से–ये हम ऐसे नही कहते,हम नब्ज को टटोलते है फिर उसी को आधार बनाकर कुछ भी

कहते है। आपने तो बताया कि आपकी पत्नि की किसी से नजदिकिया बढ जाने के

कारण आपके घर मे झगरा होता था। आपने ये नही बताया कि आप घर को घर कम

और मुसाफिर खाना ज्यादा समझते थे। आप तो घर मे रहते ही नही थे।

सुकेष,पाठक जी से–नही रहता था, अगर घर मे रहता तो बाहर काम करने कौन जाता।

पाठक जी,सुकेष से–घर से मेरा मतलब है, वो घर जिसमे सबकुछ जरूरी होता है,जरूरत के हिसाब से।

पर अपने घर मे लोग जरूरत के हिसाब से कुछ ज्यादा ही निवेष करते है, जो षायद

कही ना कही आपसे ऐसा नही हो सका, और यही कारण है कि आप वो सब अपने

घर और पारिवारिक लाईफ मे नही मिला सके जो प्यार आपको उसमे मिक्स करना

था।

सुकेष,पाठक जी से–आप कहना क्या चाहते है ?

पाठक जी,सुकेष से–आप समझना क्या चाहते है ?

सुकेष,पाठक जी से–हां मै अपने परिवार मे निवेष नही कर सका, पर इसका मतलब ये नही की इससे

उसकी सजा माफ हो जाय।

पाठक जी,सुकेष से–मै ये कहां सोच रहा हुँ कि किसी को सजा हो जाय, और किसी की सजा माफ हो

जाय। मै तो अपना कर्त्तव्य निभा रहा हुँ, और फल देने के लिए जज साहब बैठे हुए

है। वो जो फैसला करेंगे वो हमें ही नही आपको भी मानना पड़ेगा। चलिए अब मुद्दे की

बात करते है, थोड़े देर के लिए आप ये भुल जाईये कि आपकी पत्नि गलत रास्ते पर

चली गई थी, और आप ये बताईये कि आपने अपने पत्नि के दिलो मे प्रेम की ज्योति

जलाने के लिए क्या किया ? जिससे वो अपने सभी दुःखो को एक तरफ छोड़ के

सिर्फ और सिर्फ आपको ही देखती ।

अब वर्मा जी अपने सब्र के बांध को तोड़ते हुए,,,,,,,,

वर्मा जी,जज से– my load आपने एक घंटे का समय दिया था ,पर यहां तो एक सवाल एक घंटे का पुछा

जा रहा है।

पाठक जी,वर्मा जी से–सब्र रखिये थोड़ा सा , अभी तो 10 मिनट ही हुए है और जब तक की कोर्ट सारे

गवाहो और सबूतो को बारिकी से जांच नही कर लेंगे तब तक फैसला नही आयेगा।

आज फैसला नही हुआ तो अगली तारिक को होगी ,पर निर्णय हो जाने के बाद उसे

जल्दी से बदला नही जा सकता। अगर बदलना चाहे तो दषको लग जाते है।

जज,पाठक जी से–किस तरह की बाते कर रहे है वकील साहब आप । जिससे पुछ रहे है उसे क्या, हमें

भी मजा नही आ रहा है आपकी ये सब बाते सुनकर।

पाठक जी,जज से–क्षमा चाहता हुँ श्रीमान् , कभी–कभी कोर्ट के सामने सही बाते लाने के लिए इस तरह

की बाते करनी हमारी मजबुरी हो जाती है।

पाठक जी,सुकेष से–तो आपने अपनी पत्नि को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए क्या किया ?

सुकेष,पाठक जी से–मैने कुछ नही किया , क्योंकि इससे उसपर कुछ असर नही होने वाला था।

पाठक जी,जज से–तो ये बाते गौर करने वाली है श्रीमान् की इसने (सुकेष) अपने बिखड़ते हुए घर को

सम्भालने की कोषिष नही की, जिससे घर के बिगड़ते माहौल को ठिक किया जा सके।

जब घर मे कोई दिक्कते आती है तो घर के guardian का फर्ज होता है कि दिक्कतो

को कम करे, ना कि उसे छोड़ दे। क्योंकि चुनौतियो से भागने पर वो पीछा करती है,

और सामना करने पर चुनौतिया खत्म होती है।

पाठक जी,सुकेष से–लेकिन आपने ऐसा नही किया। चलिए आप ये बताईये आपकी माँ घायल कैसे हुई ?

सुकेष,पाठक जी से–क्योंकि उसे धक्का दिया गया था। जिससे उसके सर मे चोट लग गई थी।

पाठक जी,सुकेष से–क्या आप अपने माँ को जब हॉस्पिटल लेकर जा रहे थे तो आपके साथ मे कोई था ?

सुकेष,पाठक जी से–नही।

पाठक जी,सुकेष से–हॉस्पिटल पहुँचने पर डाक्टर ने आपसे क्या कहां ?

सुकेष,पाठक जी से–(emotional होकर, बड़े इत्मिनान से) वो मेरी माँ को ईमरजेन्सी वार्ड मे ले कर चले गए,

थोड़ी देर बाद वो आए और बोले की वो चल बसी। उनके द्वारा कही गई ये छोटी सी

बात मेरे लिए कितनी बड़ी बात थी यह एक मरी हुई माँ का बेसहारा बेटा ही जान

सकता है। अचानक से ऐसा लगा कि अब कुछ रहा ही नही मेरी जिंदगी मे। एक पत्नि

मुझसे झगरती थी और एक माँ थी जो अब रही ही नही। ऐसा जैसे कुछ भी ना होने

जैसा लग रहा था, पल भर मे मेरी माँ की छाया मेरे सर पर से हट चुकी थी और एक

पल मे ही माँ की सारी यादे मेरे आँखो पर आके बैठ सी गई। मै सोचने लगा मेरा घर

जो मेरी माँ का इंतेजार कर रही होगी, उस दिवारो से मै जाकर क्या कहुँगा अपनी माँ

के बारे मे। कभी रोज की तरह मेरे घर जाने पर क्या मुझे मेरी माँ की आवाज फिर से

सुनाई देगी। ये सारे सवाल कुछ ही पलो मे मेरे दिमाग मे गुंजने लगी।

पाठक जी,सुकेष से–ये तो आपने जिस समय को जिया,उसे बहुत ही अच्छे से बयां किया। इसके लिए मुझे

काफी तकलिफ है कि आपकी माँ नही रही। पर आगे क्या हुआ ये बताईये ? जब आप

फिर से घर गए तो क्या हुआ उसके बाद ?

सुकेष,पाठक जी से–मेरी माँ की मौत पर कोई रोने वाला नही था, क्योकि मेरा आँगन सुना था। मेरे आने

से पहले वो (अर्चना) जा चुकी थी। षायद उसे पता चल चुका था कि उसके चलते

मेरी माँ मर चुकी है। खुद गलती करके खुद को बचाने के लिए वो भाग चुकी थी।

पाठक जी,सुकेष से–चलिए ! तो इसी बात पर आप कायम रहिएगा। क्योंकि अब आपसे जो सवाल पुछे

जाएंगे उसे बदलियेगा नही। तो आपने पुलिस मे रिपोर्ट दर्ज कब करायी। वो छोड़िये

ये बताईये कि आपकी माँ की मौत किस तारिख को हुई ?

सुकेष,पाठक जी से–05 अगस्त को।

पाठक जी,सुकेष से–ठिक ,बहुत अच्छा। अब ये बताईये कि आपने पुलिस मे रिपोर्ट कब लिखाई की आपकी

पत्नि श्रीमति अर्चना प्रिया ने आपकी माँ को मार कर मरने के लिए छोड़कर वो भाग

गई।

पाठक जी के इस सवाल पर केष से जुड़े सभी कि निगाहे षांत होकर मानो सुकेष के जवाब के इंतेजार पर ही टिक सी गई हो। इस सवाल के बाद मानो सुकेष के साथ–साथ उसके वकील साहब वर्मा जी भी ये समझ चुके है कि ये मामले मे पाठक जी हमलोगो को दबा देंगे। अब वर्मा जी अपने सामने रखे सुकेष की माँ की पोस्टमार्टम और एफ0आई0आर0 की कॉपी मे तारिख देखने लगते है। सुकेष ये सोचकर परेषान है कि आगे वो क्या बोले ?

अब तक तो सुकेष बड़े ही आराम से पाठक जी के सवालो का जवाब दे रहा था, पर अचानक से पाठक जी ने ऐसी सवाल कर दी की उसका जवाब देने के लिए सुकेष के पास कोई षब्द ही ना हो। फिर भी सुकेष चुप रहने के बजाय कुछ बोलना पसंद करता है।

सुकेष,पाठक जी से–मुझे वो तारीख याद नही।

पाठक जी,सुकेष से–मतलब ये मानते है कि आपकी पत्नि ने आपकी माँ की हत्या करने की कोषिष की।

सुकेष,पाठक जी से–हां।

पाठक जी,सुकेष से–चलिए कोई बात नही, पर तारीख पता भी हो तो सही ही बोलिएगा,झुठ मत बोलिएगा।

तारिख याद नही है तो ये बताईये कि कितने दिनो के बाद रिर्पोट लिखाई?

सुकेष के द्वारा कोई प्रतिक्रिया नही देने पर,,,,,

पाठक जी,सुकेष से–चलिए ये भी आपको याद नही।

पाठक जी,जज से–श्रीमान् अगर किसी को कोई मारता है या मार देता है, और उसके घर वाले को यह

बाते पता है कि ये काम किसने की होगी, तो पुलिस मे उसकी कम्प्लेन कब दर्ज करायी

जायेगी ?

जज,पाठक जी से–आप मुझसे पुछ रहे है या बता रहे है।

पाठक जी,जज से–बता रहा हुँ श्रीमान्। ऐसा होने पर आरोपी के खिलाफ उसी दिन या ज्यादा से ज्यादा

दुसरे दिन रिपोर्ट लिखाई जाती है,लेकिन इन्होने (सुकेष) अपनी माँ के मौत के आरोपी

के खिलाफ 17 (सत्रह) दिनो के बाद रिपोर्ट दर्ज करायी। आपके सामने पोस्टमार्टम और

एफ0आई0आर0 की कॉपी है, देख लिया जाय। जिससे यह साबित होता है कि इसपर (अर्चना)

आरोप कम और निजी दुष्मणी ज्यादा निकाली जा रही हो।

ये बाते सुनते ही सुकेष अब सुकेष नही रह जाता है, कही उसकी मंषा उजागर ना हो जाए इसलिए वो अंदर से बेचैन होने लगता है। पहले जैसे

स्थिर होकर वो जितने आराम से वकील साहब के सवालो का जवाब दिए जा रहा था पर अब ऐसा नही करके वो बार–बार अपने वकील वर्मा जी को देखे जा रहा था और वर्मा जी अपने हाथो के ईषारो से उन्हे बार–बार स्थिर से सारी जवाब देने को कहते है।

वर्मा जी,जज से–माफ किजिए my load , इससे ये साबित नही हो जाता है कि आरोपी बेगुनाह है ये

(सुकेष) खुद अभी परेषान है, इसे इतने दिन पहले की सही तारीख याद कैसे रह सकती

है।

पाठक जी,वर्मा जी से–घबराईये नही मै वही पर आ रहा हुँ जहां आप पहले से पहुँच चुके है। आपको कुछ

बोलना है तो बोल लिजिए, क्योंकि मेरा सवाल–जवाब इससे होता ही रहेगा अभी।

वर्मा जी,पाठक जी से–जो बात आप उनसे पुछ रहे है वो सारी कागजात तो आपके पास भी है उसमे देख

लिजिए।

पाठक जी,वर्मा जी से–कागजात और गवाह दोनो से पुछेंगे, अगर दोनो के बातो मे अगर अंतर हो रहा है

तो पुछताछ आगे जारी तो रहेगी ही। क्योंकि जो कागज बोल रही है वही बाते इन्हे

बोलनी है और दोनो मे एकरूपता होनी चाहिए। अगर ऐसा नही होता है तो सोचिए

ऐसा क्यो हो रहा है ?

वर्मा जी, पाठक जी से–आप तो षब्दो का षगुफ्फा इतना छोडते है ना, मानो आप जानबुझ कर ऐसा कर

रहे है गवाहो को उलझाने के लिए।

पाठक जी,वर्मा जी से–अगर मेरे बातो मे आप उलझ गए तो मानिये की आप कही ना कही गलत हो चुके

है ।

पाठक जी, सुकेष से–तो क्या ये बात सही है कि आपने अपनी माँ की मौत के 17 (सत्रह) दिनो के बाद

हत्या का रिपोर्ट दर्ज कराया।

सुकेष,पाठक जी से–मैने कहा ना ये सब बाते हमें याद नही।

पाठक जी,सुकेष से–पता है पर आप बताना नही चाहते। क्योंकि आपको कही–ना–कही लगता है कि आप

भी गलत है। अब ये बताईये कि आपको कितने दिन बाद पता चला कि आपकी पत्नि

कहां है और किसके पास है।

सुकेष,पाठक जी से–उसके (अर्चना) बारे मे मै क्यो पता करू ? जो मेरी मां को मारकर चली गई, हा उसके (अर्चना) बारे मे पुलिस को जो पता करना था उसने किया।

पाठक जी,सुकेष से–आप ये क्यो नही कहते कि जब आपको पता चला कि आपकी पत्नि आपको छोड़ कर

किसी दुसरे मर्द के पास चली गई है। जिससे आपके स्वाभिमान को ठेस पहुँचा और

इसका बदला लेने के लिए आप उतने दिन बीत जाने के बाद उसपर (अर्चना) हत्या

का गलत आरोप लगवा कर उसे जेल भिजवा दिया। जिससे आपने एक तीर से दो

ही निषाना लगाना चाहा पर अफसोस वो भी बेकार चली गई। आपकी माँ कैसे मरी ये

आपको पता है , फिर भी आप अपनी पत्नि से खुन्नस निकालने के लिए अपनी माँ की

मौत का ठिकरा उसपर फोड़ दिया।

सुकेष,पाठक जी से–ऐसी कोई बात नही, जो सही बाते है वही मैने कही। रिपोर्ट लिखने मे षायद देरी हो

गई होगी , लेकिन मै तो षुरू से ही उसके (अर्चना) बारे मे रिपोर्ट लिखाने के लिए

तत्पर था।

पाठक जी,सुकेष से–तो आपकी माँ की हत्या आपकी पत्नि ने की है।

सुकेष,पाठक जी से–हां , पर वो मेरी पत्नि नही है।

पाठक जी,सुकेष से–ये बाते आपको कब पता चली ? 17 सत्रह दिनो के बाद। हत्या का केष तो एक दिन

मे रजिस्टर्ड होता है पर आपको इतने दिन क्यो लग गए। क्योंकि उसके पहले आपके

दिमाग मे अर्चना को फसाने के बारे मे कोई आईडिया ही नही आया था। क्या ?

सुकेष,पाठक जी से–किसी को फसाने की क्या बात है ? जिसने गलती की है उसे तो सजा मिलेगी ही।

पाठक जी,सुकेष से–हां ये बात सही है, पर ये काम कोर्ट का है , पर आपने अगर गलती की है तो

आपको भी सजा मिलेगी।

पाठक जी,जज से–तो श्रीमान् मै ये कहना चाहता हुँ कि कागजातो के आधार पर ये साबित होता है कि

आरोपी के खिलाफ हत्या की रिपोर्ट 17 (सत्रह) दिनो के बाद दर्ज करायी गई, जिससे

साफ जाहिर होता है कि पुराने गिले–षिकवे से उपजी आपसी रंजिस के कारण श्री

सुकेष मजुमदार द्वारा अपनी ही पत्नि को गुनेहगार साबित करने के लिए कोर्ट को

गुमराह किया गया है। जिसे इसकी सजा मिलनी चाहिए और मेरे मोवक्कील श्रीमति

अर्चना प्रिया को मै रिहा करने का कोर्ट से आग्रह करता हुँ।

पाठक जी,सुकेष से–आप जा सकते है।

अब वर्मा जी बगैर समय गवाये अपने कुर्सी पर से खड़े होते है,,,,

वर्मा जी,सुकेष से–नही वही रूकीये। मै आ रहा हुँ।

वर्मा जी,पाठक जी से–एक घंटे के सारे मिनटो पर तो आपने कभी ना हटने वाला कब्जा कर ही लिया।

चलिए कुछ तो समय छोड़ा आपने हमारे लिए।

वर्मा जी,सुकेष से–ये बताईये जब झगर षुरू हुआ तो उस वक्त आपकी माँ के पास कौन–कौन था।

सुकेष,वर्मा जी से–सिर्फ दो ही लोग थे मै और वो (अर्चना) ।

वर्मा जी,सुकेष से–आप सही से जवाब नही दे पाते है, जिस कारण कोर्ट सही फैसले पर पहुँच नही पा रही

है। आपका बच्चा भी तो था वहां। फिर आपने ये क्यो नही बताया ?

सुकेष,वर्मा जी से–उसपर षायद मेरा ध्यान नही गया।

वर्मा जी,सुकेष से–मन मे एकाग्रता लाईये , तब ही आप सही से बाते बता सकेंगे।

वर्मा जी,जज से– my load उस वक्त वहां पर दो ही लोग मौजुद थे, एक ये (सुकेष) स्वयं और दुसरी

इसकी पत्नि अर्चना प्रिया, जिस वक्त इसकी माँ का झगरा इसकी पत्नि के साथ हो रहा

था। अब ये तो अपनी माँ की हत्या कर नही सकता, और दुसरी वहां इसकी पत्नि थी।

जिसने अपने ही सास को मारा और घर छोड़कर चली गई। वो यह देखने के लिए भी

नही रूकी की उसकी सास मर गई या अंतिम समय मे जिंदा भी है। जिसपर हत्या का

आरोप है और सबूत और गवाह भी इसके खिलाफ। मेरे मोवक्कील की माँ का मरने का

सिर्फ और सिर्फ एक ही कारण है वो है अर्चना प्रिया के साथ झगरा होना। मै अब आपसे

अनुरोध करता हुँ कि सबूतो और गवाहो को आधार मानते हुए आरोपी को कड़ी सजा दी

जाय।

अब पाठक जी अचानक से अपने कुर्सी पर से खड़े होकर जज साहब से,,,,

पाठक जी,जज से–अभी मेरे एक गवाह का गवाही बाकी है श्रीमान्। जिसे सुनने के बाद अपने–आप सारे

मामले पानी की तरह साफ हो जायेंगे, और किसी को कुछ बोलने की जरूरी नही

पड़ेगी। खास करके वर्मा जी तो अपना राग अलापना ही बंद कर देंगे।

अब जज साहब दिवाल पर लगे घड़ी को देखते हुए,,,,,,,,

जज,पाठक जी और वर्मा जी से–तो आप लोगो की अगली तारिख है आज से पाँच दिनो के बाद। उस

दिन आज तक के कार्रवाही के बाद की ही कार्रवाही ही षुरू होगी।

उसी दिन सारे बचे गवाहो की गवाही होगी और जो सबूत पेष करना

होगा उसे आपलोग इकठ्ठा कर लिजिए। इस केष का फैसला उस दिन

कर दिया जाएगा। आज की कार्रवाई समाप्त की जाती है।

यह बाते सुनकर अंकेष थोड़ा बेचैन होने लगता है वह सोचता है कि अगर कमल की गवाही नही होगी तो भारी दिक्कत हो सकती है। फिर,,,,,

अंकेष,पाठक जी से–(धीरे से कान मे) कमल का गवाही करवा ही दीजिए, हम सब के लिए बेटर होगा।

अब पाठक जी को लगता है कि एक बार कोषिष करके देखा जाय, षायद जज साहब मान जाये।

पाठक जी,जज साहब से–श्रीमान् , श्रीमान् , श्रीमान् ! मेरे गवाह का गवाही अगर हो जाता तो कोर्ट को

फैसले लेने मे आसानी होगी। आज कल के सिचुएषन को तो आप जान ही रहे

है चुँकि गवाही वाली बात है इसलिए। गवाहो के साथ कभी भी कुछ भी हो

सकता है। आये दिन आज कल न्यूज मे देखने को मिलता है कि कितने आदमी

की मौत हार्ट अटैक से हो रही है।

जज,पाठक जी से–क्यो ? उसे (कमल) क्या हुआ ?

पाठक जी,जज से–उसे हॉस्पिटल से उठाकर लाया गया है श्रीमान्। उसके हार्ट का भल्ब कभी–कभी जाम

हो जाता है श्रीमान्। इनका टिकट तो कंफर्म है, पर ये गाड़ी पर कब बैठते है ये

इनपर निर्भर है।

जज,पाठक जी से–अगर आप गवाही दिलाने के लिए ये सब बोल रहे है तो verry bad । सीधे–सीधे

बोलिए ना आप आज ही ये केष खत्म करवाना चाहते हैं।

पाठक जी,जज से–नही श्रीमान् ! मेरा ये मानना नही हैं। मेरी ये सोच है कि सारे हालात कोर्ट के कंट्रोल

मे हो, ताकि उन्हे जो भी फैसले लेने हो वो कभी भी ले सकते है। इससे ज्यादा मेरी

और कोई ख्वाहिषे नही है। (दोनो हाथ जोड़कर) धन्यवाद।

जज,पाठक जी से–कमाल की एक्टिंग करते है महाषय आप। आपको तो मेरी जगह यहां पर बैठनी चाहिए।

पाठक जी,जज से–नही श्रीमान् !सबकी जगह तो ऊपर से पहले ही तय किया गया है, इसमे हम और आप क्या कर

सकते है ?

जज,पाठक जी से–हां ! हर सवालो के जवाब जिनके पास हो, वही तो है आप। तजुरबा होने पर यही तो

होता है कि बिन बताये वो झलकने लगते है। ठिक है तो दो केष का हेरिंग होने

दिजिए फिर आपके गवाह की सुनते है।

पाठक जी,जज से–(दोनो हाथ जोड़ते हुए) ठिक है श्रीमान् , तब तक हमलोग थोड़ा ब्रेक ले लेते है।

जज,वर्मा जी से–सुने, आप भी थोड़ा ब्रेक ले लिजिए वर्मा जी , गवाहो का चक्कर आज खत्म ही कर देते

है।

वर्मा जी,जज से–मामला तो पहले से ही आईने की तरह साफ हो चुका है my load, फिर किसी गवाह

की जरूरत क्या है ?

जज,वर्मा जी से–क्या कीजिएगा ? कानून तो नियमो से बंधा हुआ है। केष की बुनियाद तो गवाहो और

सबूतो पर ही तो टिकी होती है वकील साहब। सूनना तो सबका पड़ेगा ही। (कुछ पल

रूक कर) , ठिक है इन दो केष के हेरिंग के बाद आईये।

अब पेषकार जोड़ से जमानत देने वाले केष नंबर पुकारता हैः–37/2019 पोछा सादा प्रतिवादी झमटा गोसाई। फिर केष की फाईले जज को आगे बढाता है,,,,जज साहब वकीलो के झुंड की ओर देखते हुए–हां

वकील साहब। वो देखते है सामने मे एक नये वकील साहब इस केष का पक्ष रखने के लिए तैयार है, जिनका नाम–सुधाकर मिश्रा हैं।

जज,मिश्रा जी से–षुरू किजिए।

मिश्रा जी दोनो हाथो को जोड़कर जज साहब को नमस्ते कहते है।

मिश्रा जी,जज से–जमानत के लिए अर्जी लगाया गया है श्रीमान् इसलिए मै अपने मोवक्किल को कठगरे मे

बुलाना चाहता हुँ।

जज,मिश्रा जी से–बुलाईये , पर आपने मामले को समझाया नही।

मिश्रा जी,जज से–बता रहा हुँ श्रीमान्।

मिश्रा जी,अपने मोवक्किल पोछा से–आईये।

पोछा अब दबे पांव से जिंदगी मे पहली बार कठगरे मे जाने के लिए तैयार हैं। वह अब कठगरे मे पहुँच चुका है।

मिश्रा जी,जज से–श्रीमान् यह एक पड़ोसी का दुसरे पड़ोसी से अपने घर की सीमा को लेकर होने वाला

विवाद है। जिसमे मेरे मोवक्किल श्री पोछा सादा को झुठे मारपिट के आरोप मे फंसा कर

जेल भेज दिया गया। मामला ये है कि इनके घर के बगल वाली भूमी जो इनकी है, वहां

उसके सीमा के अंदर वाली भूमि पर लगे पेड़ को काटने से हुए विवाद से हुआ। इन्होने

उस पेड़ को काटने से मना किया तो इनके विरोधी श्री झमटा गोसाई ने इनपर गाली –

गलौज और मारपिट का झुठा आरोप लगाकर केष करके इस बेचारे को जेल भिजवा

दिया। जिसमे इनके द्वारा कोई अपराध नही किया गया है और ये 06 (छः) माह की

सजा भी काट चुके है। इसलिए केष को खारिज करते हुए मेरे मोवक्किल को बाईज्जत

बरी किया जाय।

जज,मिश्रा जी से–ये तो आप कह रहे है। इसकी (पोछा) जुबानी भी तो सुन ले जरा।

जज,पोछा से–हां जी बोलो ।

पोछा,जज से–(दोनो हाथ जोड़ते हुए) मालिक हमें घर,,,,,,,

इतने मे जज,,,

जज,पोछा से–हाथ नीचे करके बोलो।

पोछा अपने हाथ नीचे करते हुए।

पोछा,जज से– मालिक हमें घर पर नय रहिये, घरके बगले मे हमे खेत् मे फसल कमावे रहिये। तब एकदम

से हमर बच्चा आबी के बोललके की बाउ हो अपनो जमीन के गाछ काटे रहल छ। त हम

काम छोड़ी के भागलिये घर के तरफ।

जज,पोछा से–हां तब की भले।

पोछा,जज से–हमरा पता रहे कि हमर गाछ के काटी सके छै।

जज,पोछा से–के काटत रहे गाछ।

पोछा,जज से–वही जेकर पे हमरा षंका रहे, झमटा !

जज,पोछा से–फिर,,,।

पोछा,जज से–फिर की हमरा देखी के दुरे से गरियावे लगले और कुल्हारी से काटे के धमकी देवे लगले।

धमकी की उ' त ' काटे ला तैयार भी भ्या गेले। अगर हम अपन सुझ–बुझ नय दिखेतो , त

हम तो गेले रहिए समझह।

जज,पोछा से–हां ऐसा बोल दिया वो (झमटा)

पोछा,जज से–हां विष्वास नय है तो हम क्रिया खाय ला तैयार छिये।

जज,पोछा से–अहां ओकरा मारपिट गाली–गलौज काहे करलिए।

पोछा,जज से–(अपने कलेजे पर हाथ रखकर) हक नय करलिये ,हम नय करलिये अनर्थ वाला बात छय ई।

जज,पोछा से–पर हम त पता करवेलिए, त पता चलल की अहां भी ओकरा गाली–गलौज करल छिये।

पोछा,जज से–नय ऐसन बात नय छः।

अब जज झमटा द्वारा लगाए गए आरोप और थाने की एफ0आई0आर0 कॉपी पढले लगते है। एफ0आई0आर0 मे जज

साहब पढते हैं कि झमटा के षरीर पर मारपिट के ज्यादा गहरे जख्म नही पाए गए थे, और झमटा द्वारा बहुत सारे आरोप पोछा पर लगाए गए थे जो गलत थे।

जज,मिश्रा जी से––झमटा कहां है ?

इतना बात कहते ही दर्षक दीर्घा से एक आवाज आती है, जो पोछा के पत्नि की होती है।

पोछा की पत्नि,जज से–(जोड़ से) कोढ़िया नय एले छय।

अब मिश्रा जी उसे षांत रहने को कहते है।

जज,मिश्रा जी से–ये कौन है और गाली क्यो दे रही है ?

मिश्रा जी,जज से–ये उसकी (पोछा) पत्नि है।

जज,पोछा की पत्नि से–(डांट कर) कोर्ट मे ऐसा बोला जाता है, षांति से बैठिए।

जज,मिश्रा जी से–आपके सामने कौन वकील साहब है ?

मिश्रा जी,जज से–(चौधरी जी की ओर ईषारा करते हुए) यही चौधरी जी है।

चौधरी जी,जज से–मामला तो गंभीर था श्रीमान् , पेड़ काटने के बहाने को लेकर मेरे मोवक्किल झमटा

गोसाई को जान से मारने की असफल कोषिष की गई थी।

जज,चौधरी जी से–पर एफ0आई0आर0 मे ऐसा कहां कुछ लिखा हुआ है। बेवजह आप किसी को परेषान

कर रहे है। वैसे भी बेचारा 06 (छः) माह से जेल मे बंद है, और कितना अंदर रखियेगा

इसे, जाने दिजिए।

यह बात जानते हुए कि केष कमजोर है झमटा का वकील चौधरी जी आगे कुछ नही बोलते है।

जज,पोछा से–तो अब वो (झमटा) पेड़ काटेगा तो सीधे पुलिस को जाकर बताना। मै पुलिस को भी इसकी

सुचना दे रहा हुँ कि जमीन का सीमांकन का जाँच करवा देंगे और भविष्य मे कोई बात ना

बिगड़े इसके लिए दोनो मे समझौता भी करवा देंगे। जाओ घर जाओ। तुम्हे जमानत दी

जाती है।

अब पोछा,,,,,

पोछा,जज से–मालिक अब भुलवे नय आपके ।

मिश्रा जी, जज से–(दोनो हाथो को जोड़कर) श्रीमान् को धन्यवाद ।

अब झमटा का वकील चौधरी जी अपने सर को झुकाकर नमस्ते करते हुए अपनी सहमती व्यक्त करते हुए वहां से निकल जाते है।

जज,पेषकार से–अगला केष।

पेषकार जोड़ से आवाज लगाता है–264/22 जीतन पटवारी ।

इस केष मे जीतन के वकील है राघव कुमार।

जज,राघव कुमार से–हां वकील साहब बोलिए।

राघव कु0,जज से–एक पारिवारिक मेटर है श्रीमान्। पत्नि गुस्से से मायके चली गई हैं, और पाँच सालो से

नही आयी है।

जज,कुमार से–पाँच साल से। इतने दिनो से ये (जीतन) क्या कर रहा था।

कुमार,जज से–ये (जीतन) बाहर कमाता है श्रीमान् , इसने कई बार समझौते की कोषिष की, लेकिन बात

नही बनी। अंत मे इसे अदालत का दरवाजा खटखटाना पड़ा। बहुत परेषान है ये श्रीमान्।

जज,कुमार से–झगरा करता होगा ये उससे। पर इतने दिनो तक तो कोई अगल नही रहता, कुछ ना कुछ

तो निष्कर्स निकलना चाहिए था अबतक। ठिक है ।

जज,पेषकार से–केष के स्वीकार प्रक्रिया को पुर्ण करते हुए नोटिस जारी कीजिए।

जज,जीतन से–ठिक है बुलाते है उसे (जीतन की पत्नी)।

अब राघव कुमार जज को प्रणाम करते हुए अपने कागजात समेटने लगते है और ईषारो मे जीतन को बाहर

निकलने को कहते है।

बाहर मे,,,

राघव वकील,जीतन से–ठिक है केष रजिस्ट्रर्ड हो जाएगा ,और उसे नोटिस भेजकर बुलाया जायेगा। जैसे

ही नोटिस जायेगा वह झनझनाते हुए यहां आएगी और वह सब बोलेगी जो आज

तक आपको नही बोली होगी। क्या चाहती है उसे यहां आकर बताना ही होगा। वहां

कोई काम करती है क्या वो ?

जीतन,राघव जी से–नही पुरा पता तो हमें नही है। पर हो सकता है।

राघव वकील,जीतन से–ठिक है जाईये , उस दिन पता चल जाएगा। बेफिक्र रहिए खाईये पीजिए और

मस्त रहिए। होना वही होगा जिसकी नींव पहले पर चुकी है। पर पाँच साल आप

कैसे छोड़ दिये अपनी पत्नी को।

जीतन,राघव जी से–बीच–बीच मे तो उससे भेट करते ही है।

राघव जी,जीतन से–(चौकते हुए) क्या ? ये बात आपने कोर्ट मे क्यो नही कहां ? जेल चले जाईयेगा बाहर

से ही बाहर। ऐसा मत कीजिए। जो बोले सो बोले, ये बात अब जज साहब के सामने

अपने इस छोटे जुबान से बाहर भी मत निकालिएगा। जो कोर्ट मे बोले थे वही

बोलिएगा कि आपकी पत्नि पाँच साल से मायके से नही आयी है, आप उससे मिलते है

या नही मिलते है ये बताने की जरूरत नही है, समझे। जाईय।

जीतन,राघव जी से–अब कब मिलेंगे आपसे।

राघव जी,जीतन से–हम खबर करेंगे।

अब जीतन वहां से कोर्ट से बाहर निकल जाता है और राघव जी वकील साहब अपने दुसरे काम मे लग जाते है। ईधर कोर्ट रूम के अंदर,,,,,,फिर से अर्चना के वकील पाठक जी और सुकेष के वकील वर्मा जी और सभी गवाहो के साथ जज साहब भी केष के प्रति अपनी दायित्वो को पुरा करने के लिए तैयार है।

कमल की गवाही षुरू हो इससे पहले अंकेष, कमल और उसके पाठक जी आपस मे गुप्तगू करते है।

अंकेष,कमल से–एकदम आराम से सबकुछ कहना है, जो वकील साहब पुछेंगे वही बताना है।

पाठक जी,कमल से–(दबे आवाज मे) दिमाग मे बैठा हुआ है ना जो हमलोगो ने आपको बताई थी ,क्या

कहना है और क्या नही कहना है ?

कमल,पाठक जी से–(अपनी सर हिलाते हुए) आप इत्मिनान रहिए।

अब अचानक से,,,,,,

जज,पाठक जी से–क्या कर रहे है वकील साहब ?

अब पाठक जी झट से अपनी कुर्सी को छोड़ते है।

जज,पाठक जी से–आपके लिए हम इतने जल्दी से केष का निपटारा कर रहे है और आप है कि अभी तक गवाहो के साथ फुसफुसाहट मे ही लगे है।

पाठक जी,जज से–श्रीमान् , हम तैयार है।

जज,पाठक जी से–तो कराईये गवाही लेट क्यो कर रहे है ?

पाठक जी,जज से–जी।

अब पाठक जी ईषारो मे कमल को कठगरे मे जाने को कहते हैं। कमल अपने कुर्सी छोड़ते हुए कठगरे मे जाकर खरा हो जाता है। यह वाक्या देख वहां पर मौजुद सुकेष को ऐसा लगता है जैसे मानो उसे कब मौका मिले और वो कमल का खुन पी जाय। वह कब कमल के साथ क्या कर दे ये षायद उसे भी नही पता। कमल के गवाही देने के कारण सुकेष के षरीर मे एक तमस सा और खुन गर्म सा हो गया है। वह बेचैन है उसके साथ कुछ करने के लिए, पर अफसोस की वो अभी अदालत मे बैठा हुआ है। खुन की घूंट पीये वह कमल को तिरछी नजर करते हुए देख रहा होता है। कमल जज और पाठक जी की तरफ देख रहा है, पर उसका ध्यान उसके दोस्त सुकेष पर है कि यह सब देख करके वह (सुकेष) उसके बारे मे क्या सोच रहा होगा अभी। वह अंदर से नर्वस है, पर बाहर से संतुलन बनाए हुए है। वो सुकेष से अपनी नजरे बचाए हुए है और कोषिष कर रहा है कि उससे नजरे मिले ही ना।

पाठक जी,कमल से–हां तो क्या नाम है आपका ?

कमल,पाठक जी से–मेरा नाम कमल नारायण है, और घर यही सिटी मे ही है।

पाठक जी,कमल से–आप सुकेष मजुमदार को कैसे जानते है ?

कमल,पाठक जी से–वैसे ही जैसे एक दोस्त दुसरे दोस्त को जानता है,बचपन से पचपन तक।

जज,कमल से–तुम तो मजेदार आदमी लगते हो। कहो–कहो।

पाठक जी,कमल से–फिर भी कब से, कहां से, कैसे ? षुरूआर से कैसे जानते है ?

कमल,पाठक जी से–मै और वो एक ही मुहल्ले मे रहते थे, और बचपन से ही हमलोगो की दोस्ती हुई थी।

ये हमारा पड़ोसी है । हमदोनो का एक दुसरे के घर आना जाना होता था।

पाठक जी,कमल से–फिर आप अपने दोस्त को दुखी करने के लिए गवाही देने क्यो आये है ?

कमल,पाठक जी से–मै यहां किसी को सुखी और दुःखी करने नही आया। बस किसी के लिए मेरी तरफ से

जो मदद हो सके वही करने आया हुँ। बाकी आगे जो हो।

पाठक जी,कमल से–चलिए कोई बात नही, जो भी बोलना है परफेक्ट बोलिए। आगे देख लेंगे। उस दिन के

बारे मे बताईये जो आपने देखा। एकदम बारिकी से, स्टेप बाई स्टेप बोलिए।

कमल,पाठक जी से–मै उस दिन भी हर दिनो की तरह सुकेष के घर के सामने से गुजर रहा था। उसके

घर के सामने उसके पड़ोस वाली दो महिलाये कुछ बात कर रही थी, जैसे ही मै

उनके पास पहुँचा सुकेष के घर से झगरे की आवाज आ रही थी। मै बेझिझक अंदर

गया और देखा की सुकेष की माँ सुकेष और उसकी पत्नि तीनो एक दुसरे से लड़

रहे थे। उस वक्त सुकेष की पत्नि अपने रूम मे बंद थी और खिड़की के

अंदर से अपने पति और सास को जवाब दे रही थी। फिर दोनो को समझाकर जैसे ही

मै बाहर निकला, थोड़ी देर बाद सुकेष दौड़ कर मेरे पास आया और कहने लगा की

मॉं को हॉस्पिटल लेकर जाना है उसके सर मे चोट लग गई है। मैने पुछा कैसे–उसने

कहा अरे क्या बताये आओ ना जल्दी से। यह कहते हुए उसने बात को टाल दिया।

इस सिचुएषन को देखकर मैने और ज्यादा पुछना सही नही समझा। फिर मै

जब दोबारा अंदर गया तो देखा अर्चना भाभी अपने कमरे मे ही थी और सुकेष की मॉं

जहां पर पहले खड़ी थी वही गिरी हुई बेहोष पड़ी थी। फिर क्या झट से हम दोनो

उसे उठाकर बाहर दरवाजे पर लेकर गए, फिर मैने एक छोटी सी गाड़ी बुलाकर उसे

सुकेष के साथ हॉस्पिटल भेजा। मुझे ऐसा नही लगा कि जख्म ज्यादा था और इससे

उसकी जान भी जा सकती है।

पाठक जी,कमल से–बहुत अच्छा। एक सांस मे आपने वो सब कह दिया जो बाद मे हम आपसे पुछने वाले

थे।

पाठक जी,जज से–तो श्रीमान् मै आपको ये बताना चाहता हुँ कि वहां उस दिन घटना के समय ये (कमल)

आदमी मौजुद था।

पाठक जी,कमल से–एक बात और बताईये आप, जो आपसे मैने पुछा नही। वो ये कि उस समय वहां पर

कितने आदमी मौजुद थे सुकेष की मॉं के मदद के लिए।

इतना बात सुनते ही सुकेष के वकील वर्मा जी का कान खड़ा हो जाता है और फिर वर्मा जी पीछे बैठे सुकेष से धीरे–धीरे कहते है,,

वर्मा जी,सुकेष से–ये (असर्फी) वहां पर था ये बाते और कौन बता सकत है।

सुकेष,वर्मा जी से–ये (असर्फी) तो वहां पर था ही नही।

वर्मा जी,सुकेष से–अरे ये तो हमको भी पता है।

सुकेष,वर्मा जी से–उस समय वहां कुछ पड़ोसी थे जिसने इसे (असर्फी) देखा भी नही।

वर्मा जी,सुकेष से–चलो रहने दो।

वर्मा जी,असर्फी से–तुम सिर्फ ये कहना कि वहां सिर्फ तुम ही थे और वो कमल नही था। वो झुठ बोल रहा

है।

इधर

कमल,पाठक जी से–सब बाहर से कान लगाकर सुन रहे थे (इस तरह कानो के पास अपने हाथो को ले

जाकर ये बताते हुए कि किसी की कोई बात चुपके से कोई कैसे सुनता है,उदाहरण के

तौर पर), सुकेष और मेरे अलावे वहां कोई नही था।

पाठक जी,जज से–तो श्रीमान् इस केष के बचाव पक्ष के गवाह के बातो से स्पष्ट है कि वहां पर उस दिन

सुकेष और कमल के अलावे उसकी माँ कि मदद के लिए कोई तीसरा व्यक्ति मौजुद

था ही नही । इसके लिए दुसरे पक्ष के गवाह श्री असर्फी दास को कठगरे मे बुलाना

चाहता हुँ।

जज,पाठक जी से–समय कम है मै दुसरे दिन का समय आपको दे रहा था पर आप लोग चाहते है कि

सब कुछ आज ही हो जाय।

पाठक जी,जज से–बस श्रीमान् कुछ ही पल तो आपसे माँग रहा हुँ।

जज,पाठक जी से–(थोड़े चिरचिरे स्वाभाव से) बुलाईये जल्दी से।

इधर वर्मा जी अपने गवाह असर्फी से–जाओ पर अपने बातो पर अडिग रहना।

असर्फी दुसरे कठगरे मे पहुँचता है।

पाठक जी,कमल से–तो आप ये बताईये कि इसे (असर्फी की ओर ईषारा करते हुए) आप पहचानते है।

इससे पहले कि पाठक जी के षब्द खत्म हो,,,,,,

कमल,पाठक जी से–ये (असर्फी) फ्रॉड है।

जज,कमल से–क्या है ?

पाठक जी,कमल से–आ ! हा ! आराम से।

जज,कमल से–ये अदालत है समझे, षराब मिलने वाला क्लब नही। बात लहजे मे रहकर कीजिए।

अब कमल अपने विचारो मे थोड़ा नरमी लाता है।

कमल,पाठक जी से–हां इसे पहचानता हुँ। ये मेरे ही मुहल्ले का लड़का है जो हमेषा ईधर से उधर जाता

रहता है, और काम क्या करता है ये किसी को नही पता। इसका नाम जो है वो सही

नाम है। इसका दुसरा नाम गुड्डू भी है।

पाठक जी,कमल से–वाह क्या बात है ? आप तो इसे (असर्फी) अच्छे से जानते है। अब ये बताईये कि ये

उस दिन जिस दिन सुकेष की माँ घायल हुई थी वहां पर था।

कमल,पाठक जी से–ये उस दिन वहां क्या , ये तो सिटी मे भी नही था ?

पाठक जी,कमल से–ये आप कैसे कह सकते है कि ये उस दिन षहर मे भी नही था।

कमल,पाठक जी से–मै जानता हुँ इसे ,ये बराबर अपने बहन के ससुराल जाया करता है। अपने जीजा की

बहन से मिलने के लिए। ये बराबर मेरे नजरो के सामने से गुजरता है पर उस घटना

के दिन के कुछ दिन पहले से कुछ दिन बाद तक ये वहां दिखाई नही दिया। आप

चाहे तो उसके पड़ोसी से पुछ सकते है।

पाठक जी,जज से–तो श्रीमान् मेरे गवाह के बयान से यह साबित होता है कि विपक्षी गवाह श्री असर्फी दास

के द्वारा झुठी गवाही देकर इस केष की सच्चाई को छुपाया गया है, और उसे एक झुठे

गवाह के तौर पर पेष किया गया है। इससे अंत मे ये सच्चाई साबित होती है कि उस

दिन की घटना कोई सुनियोजित घटना नही थी, जो भी हुआ अंजाने मे हुआ और

सुकेष की माँ के द्वारा ही हुआ । इसमे मेरे मोवक्किल श्रीमति अर्चना प्रिया का ना कुछ

गलत करने का कोई ईरादा था, और ना ही उसने गलत किया। इसलिए मै अदालत से

उम्मीद करता हुँ कि मेरे मोवक्किल को आरोपो से बड़ी करते हुए रिहा किया जाय।

धन्यवाद।

सुकेष,वर्मा जी से–(धीरे से) अब क्या होगा।

वार्मा जी,सुकेष से–ठहरिये अब उसके गवाहो से हम भी कुछ सवाल कर ले।

अब वर्मा जी खड़े होते है और,,,,,,

वर्मा जी,पाठक जी से–ऐसे कैसे हो सकता है ? जरा हम भी तो आपके गवाह से कुछ पुछ ले। षायद कुछ

बाहर निकल आए।

वर्मा जी,जज से– my load मै बचाव पक्ष के गवाह से कुछ सवाल करना चाहता हुँ।

जज,वर्मा जी से–हां आप भी क्यो पीछे रहिएगा। आईये, आप भी अपना कसर निकाल ही लिजिए आज ही।

वर्मा जी,कमल से–तो आप ये बताईये कि उस झगरे वाले दिन जब आप उसके घर गए तो फिर आप बाहर

कब निकले।

कमल,वर्मा जी से–उन लोगो को थोड़ी देर समझाने के बाद।

वर्मा जी,कमल से–जब आप बाहर निकले तो उस समय तक उसकी माँ बाते कर रही थी।

कमल,वर्मा जी से–बाते नही झगरे कर रही थी।

वर्मा जी,कमल से–हां मै समझ गया ,आप हमें मत समझाईये। तो जब आप भीतर गए तो फिर क्या हुआ ?

कमल,वर्मा जी से–उसकी (सुकेष) माँ बेहोष पड़ी हुई थी।

वर्मा जी,कमल से–तो आपने क्या समझा ? क्या हुआ होगा उस वक्त ?

कमल,वर्मा जी से–कुछ देर पहले जब मैने उसे देखा था, तब से ही वो बोलते वक्त अपने–आप को सम्भाल

नही पा रही थी। जब मै बाहर था तो हो सकता है उसे बोलते–बोलते चक्कर आया

होगा और प्रेषर के कारण वो गिर गई होगी।

वर्मा जी,कमल से–ये आपसे किसने कहा कि सुकेष की माँ खुद गिर गई होगी। आपने तो नही देखा ना।

आपने देखा उसे गिरते।

कमल,वर्मा जी से–नही।

वर्मा जी,कमल से–हो सकता है सुकेष की वाईफ कमरे से निकलकर अपनी सास को धक्के मारकर फिर से

अंदर चली गई हो।

कमल,वर्मा जी से–ये भी हो सकता है कि किस को फंसाने के लिए कोई अपना ही सर फोड़ना चाहता हो।

कुछ भी हो सकता है, पर मुझे जैसा लगा मैने वैसा ही कहा।

वर्मा जी,जज से–तो my load मै ये कहना चाह रहा हुँ कि इसने जो भरी अदालत मे गवाही दी,

और इसने जो घटना के दिन देखा, उन दोनो मे कॉफी अंतर है। उस दिन सारे समय के

लिए सिर्फ–और सिर्फ वहां तीन ही लोग थे। एक सुकेष ,उसकी माँ और उसकी पत्नि,

पर अफसोस तीनो मे से एक अब नही रही और जो दो है उन दोनो के अलग–अलग

विचार है। एक (अर्चना) जो गलत कह रही है और दुसरा बेचारा (सुकेष) जो सच के धागे

पकड़े हुए है। अब फैसला आपको सुनाना है my load । धन्यवाद।

जज,दोनो वकीलो से–ठिक है और कुछ आप लोगो को कहना है, क्योंकि अब हम फैसला सुनाऐंगे।

इतनी बातें सुनते ही सारे लोगो की निगाहे एकदम से जज साहब पर टिक से जाते है। ईषारो मे दोनो वकील ये बता चुके है कि उन लोगो को जो कुछ कहना था वो कह चुके है। अर्चना के दिल की धड़कने सामान्य गति से ज्यादा तेजी से धड़कने लगी है। उसकी सांसे मानो थम सी गई हो । अंकेष अर्चना की ओर देखते हुए जज साहब की ओर बराबर से देखे जा रहा है। सभी के षांत माहौल को सुक्खी भी अपनी खुली आँखो से देखा जा रहा था। उधर सुकेष और उसके साथ मे असर्फी अपने को षांत रखकर अपने पक्ष मे फैसला आने का इंतेजार कर रहा है, पाठक जी अपने चेहरे पर अंगुलियाँ फेरते हुए और वर्मा जी अपने अंगुलियो को सामने डेक्स पर पटकते हुए अपने लिए फैसले आने का इंतेजार बेसब्री से कर रहे है। कमल बराबर से अर्चना और अंकेष को देखकर उसे ईषारो मे षांत रहने को कहता है। एक दुष्मनी की नजरो से सुकेष बार—बार कमल को देख रहा था, और इस बात को कमल नजरे इधर—उधर करके देख भी रहा है कि उसे सुकेष देख तो नही रहा है।

जज,वर्मा जी और पाठक जी दोनो से—ठिक है इस केष का फैसला पाँच दिनो बाद सुनाया जायेगा। अब

आप लोग जा सकते है।

यह बात सुनते ही सब लोग एक दुसरे को देखते हुए अपने—अपने जगहो पर जाने के लिए तैयार से होने लगते है, और कोर्ट से बाहर निकलने लगते है। अर्चना जाने क्या होगा का ख्याल मन मे लिए वहां से चलने को तैयार है, अंकेष सुक्खी को अर्चना के गोद से लेते हुए उसे थोड़ राहत पहुँचाने की कोषिष करता है, पर अर्चना का मन भारी होने के कारण ये अंकेष अब भी कोर्ट रूम मे सुक्खी को गोद मे लेकर अर्चना के साथ बैठे हुए है। अंकेष सोच रहा है काष आज ही इसकी (अर्चना) रिहायी हो जाती तो अब से हमलोग साथ मे रहते। अर्चना मन ही मन सोच रही है कि कब तक ये माजरा चलेगा जिसमे हम ना जाने बेवजह उलझे से है। इतने मे सुक्खी,,,,,

सुक्खी,अर्चना से—माँ आज आप घर चलोगी ना मेरे साथ।

अब सुक्खी की ये बाते सुनकर अर्चना के आँखो से आँसू निकल पड़ते है, जिसे अर्चना अपने आँखो से गिरने से रोकती है, ताकि सुक्खी भी उसे देखकर ना रोने लगे।

अंकेष,सुक्खी से–(गंभीर होकर) आज तो मम्मी नही जा पायेगी हमलोगो के साथ, पर अब तुम्हारी मम्मी

छुट जायेगी जेल से। बस कुछ ही दिनो की बात है।

सुक्खी,अंकेष से–मम्मी को ले चलिए ना पापा अपने साथ।

अब अर्चना सुक्खी को अपने गोद मे लेती है और उसके बालो को अपने हाथो से सहलाते हुए उसके चेहरे को चुमने लगती है।

अर्चना,सुक्खी से–क्यो तुम्हे पापा के साथ मन नही लगता।

अर्चना,अंकेष से–अभी कुछ दिनो तक और इसका ख्याल रखना पड़ेगा तुम्हे।

अंकेष,अर्चना से–वो तो मै हमेषा रखूंगा।

अब तीनो वहां से धीरे कदमो के साथ कोर्ट रूम से बाहर निकलते है। गेट रूम के पास पहले से मौजुद संतो इन सब का पहले से इंतेजार कर रहा है।

संतो,अर्चना से–तो अंतिम समय मे वक्त काटना थोड़ा मुष्किल होता है पर क्या करे आपको थोड़ा कुछ

दिन और सहन करना पड़ेगा।

अर्चना,संतो से–कुछ दिन या बहुत ज्यादा दिन। इस बारे मे कुछ कहा नही जा सकता है।

संतो,अर्चना से–उम्मीद तो हमलोग कुछ दिन का ही लगा के रखे है।

अर्चना,संतो से–जरूरी नही की वो पाँच दिन के बाद हमारे ही लिए खुषी आये, दुखो के काले बादल भी

छा सकते है हमेषा के लिए।

संतो,अर्चना से–किसी भी परिस्थिति मे इंसान को उम्मीद नही छोड़नी चाहिए।

अर्चना,संतो से–पर जब चारो तरफ अंधेरा हो तो करनी भी नही चाहिए।

अब महिला पुलिस वाली अर्चना को जेल जाने वाली गाड़ी मे बैठने के लिए ईषारा करती है,यह देखते हुए अर्चना सुक्खी को फिर से अंकेष के गोद मे थमाने की कोषिष करती है। पर सुक्खी अब अर्चना के गोद से उसे छोड़कर अंकेष के पास जाने के लिए तैयार नही है। बहुत जद्दोजहद के बाद सुक्खी अर्चना के गोद से अंकेष के गोद मे जाता है।

अंकेष,सुक्खी से–बस बेटे कुछ दिन और इंतेजार करो फिर माँ हमेषा के लिए तुम्हारे पास आ जायेगी।

अर्चना,सुक्खी से–मत रोओ ! तुम इतने होषियार हो गए हो फिर भी रोते हो । लोग क्या कहेंगे ? कि

इतने बड़े होकर ये रो रहा है।

सुक्खी,अर्चना से–वे लोग मेरी माँ लाकर मुझे दे देंगे क्या ? जो मुझे रोने पर बुरा कहेंगे। आप मुझे हमेषा

झुठ बोलते है और हमे बार–बार रूला कर हमें छोड़ कर चले जाते है। आज मुझे भी

आप अपने साथ लेकर जेल चलिए। मै भी चलुंगा आपके साथ।

अब सुक्खी अंकेष के गोद से उतर कर फिर से अर्चना के पास जो गाड़ी मे बैठ चूकि होती है उसके गोद मे जाकर बैठ जाता है। यह देख कर महिला पुलिस वाली,,,,,,,

महिला पुलिस,सुक्खी से–मम्मा को जाने दो बाबू ,वो फिर आ जायेगी आपके पास। वहां जाना जरूरी है

वरना वहां (जेल) लेट से पहुँचने पर सभी को मार लगता है डंडे से।

अब माँ को मार लगने वाली बातो पर सुक्खी थो़ड़ा सोचने लगता है और वह चाहता है कि उसके माँ के साथ ऐसा ना हो। अब अर्चना महिला पुलिस वाली की झुठी बातो को सच बताते हुए सुक्खी को हां मे ईषारा करती है, ताकि वह मान जाय और उसके साथ जाने की जिद़ ना करे। अब महिला पुलिस सुक्खी को अपने गोद मे लेकर अंकेष को सौपती है और खुद गाड़ी के अंदर बैठकर दरवाजे को अंदर से बंद कर देती है, और गाड़ी चल पड़ती है। गाड़ी जब तक नजरो से ओझल नही होती तब तक सुक्खी,अंकेष और संतो तीनो लोग गाड़ी को टकाटक देखे जा रहे होते है और गाड़ी के अंदर से अर्चना भी सुक्खी को लगातार बगैर पलके झपकाये देखे जा रही है। अब गाड़ी इन तीनो के नजरो से काफी दुर निकल चुकी है और ये लोग अपने नजरो को झुकाए अपने घर की ओर चल पड़ते है। गाड़ी मे अर्चना अपने आसू को बहाते हुए नजरो को एक जगह टिकाये हुए जैसे उसके षरीर मे जान ना हो, अपने को स्थिर कर लेती है और अपने सर को गाड़ी के खिड़की से लगाकर एकदम से षांत हो जाती है। कुछ पलो के बाद वो जेल

पहुँचती है और अपनी सहेली रूबी के पास जाकर बैठती है,इससे पहले कि रूबी इससे कुछ पुछे,,,,,,

अर्चना,रूबी से–नही मिल सकी आज जमानत।

रूबी,अर्चना से–फिर क्या हुआ तो ? क्यो नही मिली जमानत ?

अर्चना,रूबी से–जज को भी कही ना कही लगता है कि मै दोषी हुँ।

रूबी,अर्चना से–जज को क्यो लगेगा ? तुम्हारे वकील पर निर्भर करता है कि जज को क्या लगे और क्या

ना लगे। तुम्हारा वकील जज को कॉन्फिडेन्स मे नही ले पाया होगा। षायद वो जज को

सही से आईना नही दिखा पाया होगा। वो लोग तो चाहते ही है की केष लम्बा चले। तुम

बाहर निकलती तो हमारा भी कुछ फायदा होता।

अर्चना,रूबी से–सोचा हुआ पुरा कहां होता है किसी का। होता भी है तो गड़बरा कर के होता है। क्या करे

कुछ भी नही हो पा रहा है?कुछ हो भी तो जाय अच्छा या बुरा, इससे तसल्ली भी तो मिले।

रूबी,अर्चना से–ऐसा कहने से क्या होगा ? होगा वही जो होना होगा। अपने किस्मत को मत कोसो,कर्म

अगर तुमने अच्छा किया है तो तुम्हे डरने की कोई जरूरत नही।

अब रूबी दूर मे लाठी के सहारे बड़ी मुष्किल से चल रही और चलने के साथ–साथ कुछ पल के लिए थक कर बैठती एक महिला कैदी को अर्चना को दिखाते हुए,,,,,

रूबी,अर्चना से–देखो वो भी कर्म के फल का स्वाद ही चख रही है षायद, या हो सकता है पुरे अंजाम तक

अभी ना पहुँची हो, पर हो सकता है उसके कर्म उसे अंजाम तक पहुँचा दे।

अर्चना,रूबी से–बड़ी विडम्बना है जिंदगी मे, जो जीना चाहता है उसका षरीर खराब है और जो जीना नही

चाहता है उसका तो दिमाग ही खराब है। जिंदगी भी कभी–कभी हमलोगो के साथ बेवफा

वाली सलूक करती है। जैसी उसकी मर्जी, ठिक वैसी ही करती है।

रूबी,अर्चना से–करोगी क्या ? मोह, माया और मोहब्बत मे पहले से तुम पर चुकी हो, जिसकी एक नाजूक

कली तुम्हे थामे हुए है। इसलिए जिंदगी से मुँह मोड़ना तुम्हारे लिए अभी संभव नही है।

अब कुछ देर पहले जिस महिला कैदी के बारे मे ये लोग बात कर रही थी उस को दुसरी एक महिला कैदी एक बीड़ी लाकर देती है, जिसे वो जलाकर बड़े सुकुन से उसका कष ले लेकर पीना षुरू करते हुए अपने आत्मा को संतुष्ट करती है,उसे देख ऐसा लगता है मानो जैसे उसे कोई अमृत मिल गया हो पीने के लिए।

रूबी,अर्चना से–इसे कहते है जहां भी हो जैसे भी हो जिंदगी का मजा लेते रहो। कब धड़कने, धड़कते

–धड़कते षरीर का साथ छोड़ देगी ये खुद को भी कहां पता होता है।

अर्चना,रूबी से–पर ऐसा हो कहां रहा है मेरे साथ ?

रूबी,अर्चना से–कहां घुम रही हो तुम , बस एक ही जगहो पर अटकी हो। चलो ये सब बाते छोड़ो ये

बताओ की तुम्हारा बच्चा तो तड़प रहा होगा तुम्हारे लिए।

अर्चना,रूबी से–तड़प ही नही रहा था वो तो यहां मेरे साथ आने के लिए तैयार भी था।

रूबी,अर्चना से–सही मे ! ये जानते हुए की तुम जेल मे हो।

अर्चना,रूबी से–(सर हिलाते हुए) हाँ।

इधर,,,,,,,

संतो के साथ अंकेष और सुक्खी मदन के पास उसके हाल–चाल जानने के लिए पहुँचता है। जहां मदन अपने घर मे बेड पर एकदम षांत अवस्था मे परा है, जो जल्द से जल्द अपने बेड रेस्ट के दिन को जल्द से जल्द पुरा होने की कामना करता है। अब मदन की नजरे इन तीनो पर पड़ती है। फिर,,,,,,

संतो,अंकेष से–देखिये इस (मदन) बेचारे का हाल। क्या हो गया इसे ?

अंकेष,मदन से–कैसे हो ?

मदन,अंकेष से–वैसा ही जैसा तुम देख पा रहे हो। तो इसे (सुक्खी) भी तुम आज ले आये हो सैर–सपाटे

पर।

अंकेष,मदन से—इस बेचारे को सैर—सपाटे मे मजा नही आता है। इसे तो बस मम्मी चाहिए।

मदन,अंकेष से—तो कहां तक पहुँचा इसकी (सुक्खी) मम्मी को जेल से मुक्त करवाने वाला तुम लोगो का

मिषन।

अंकेष,मदन से—क्यो तुम्हे अपडेट नही मिलता इससे (संतो)।

मदन,अंकेष से—हां मिलता तो है पर आज का नही मिला है। आज क्या हुआ जो इसके (सुक्खी) साथ

इसकी मां (अर्चना) नही है।

अंकेष,मदन से—क्या करे ? परेषानी तो सात जन्मो तक साथ निभाने के लिए साथ खड़ी है।

मदन,अंकेष से—कोई सोल्युषन निकला या अभी तक घुम रहो हो गवाहो के पीछे।

अंकेष,मदन से—मत पुछो गवाहो तक की ही बात हो तो कोई बात, यहां तो गवाहो से होकर वकीलो के

पास से गुजर कर जज के चरणो मे नसमस्तक होना पड़ रहा है, फिर भी उम्मीद धुंधला

नजर आ रहा है। सारी कोषिषे हमलोगो के द्वारा कर दी गई है अब फैसला का दिन जज

के द्वारा तय कर दिया गया है। आज से पाँच दिनो के बाद।

मदन,अंकेष से—साक्ष्य और सबूतो को तुम्हारे वकील ने अच्छे से तो रखा ना जज के सामने।

संतो,मदन से—उसमे कोई कसर नही छोड़ी है इसके (अंकेष) वकील साहब ने।

मदन,अंकेष से—उसने (कमल) गवाही तो अच्छे से दिया ना।

अंकेष,मदन से—हां, उसने (कमल) अपना काम अच्छे से किया। तो रूपये आये तुम्हारे पास, जो कमल को

देने थे।

मदन,अंकेष से—वो रूपये तो कब से तुम्हारा इंतेजार कर रहे है।

मदन,संतो से—जरा मेरी माँ को आवाज लगाना।

संतो,मदन से–मैने उन्हे कह दिया है चाय के बारे मे, वो आ रही है चाय लेकर।

मदन,अंकेष से–बैठो।

मदन,सुक्खी से–तो क्या हाल तुम्हारा , पढाई–लिखाई के साथ खेलकूद चल रहा है तुम्हारा।

सुक्खी,मदन से–(मायूषी के साथ) हां । पर मै खेलता नही हुँ।

मदन,सुक्खी से–क्यो ?

सुक्खी,मदन से–क्योंकि मेरे दोस्त लोग मुझसे लड़ाई करने लगते है ? जब मै जीत जाता हुँ तो।

मदन,सुक्खी से–ओ ! तो ये बात है, तब तो तुम्हारे दोस्त से मिलना पड़ेगा हमें।

इतने मे मदन की माँ चाय लेकर आती है, और सुक्खी के खाने के लिए प्लेट मे बिस्किट। सभी को चाय देने के बाद सुक्खी को बिस्किट वाली प्लेटे थमाती है।

मदन की माँ,सुक्खी से–लो बेटे खाओ।

अंकेष,सुक्खी से–(बिस्किट के प्लेट के बारे मे) ले लो।

मदन की माँ,सुक्खी से–तुम तो काफी बड़े हो गये हो। तो पढाई चल रही है ना तुम्हारी।

सुक्खी,मदन की माँ से–हां।

मदन की माँ,सुक्खी से–आओ मेरे पास आओ।

अंकेष,सुक्खी से–जाओ।

अब सुक्खी मदन की माँ की गोद मे जाकर बैठता है।

मदन की माँ,अंकेष से–तो क्या हुआ इसकी (सुक्खी) माँ का निकलने का कुछ बंदोबस्त हुआ या

नही।

मदन,अपनी माँ से–हो गया है, गवाही वगैरह जो होना था, वकील ने सारे कागजात जमा कर दिए है। अब

बस जज अपना फैसला सुनायेंगे।

मदन की माँ,मदन से–वो तो गवाही होने के साथ ही हो जाती है। गवाही होगी आज, सारा काम हो

आज और फैसला आये कई दिनो बाद मे। ऐसा होता है क्या ?

अंकेष,मदन की माँ से—ऐसी कुछ प्रक्रियाएँ है जिसे कोर्ट के लिए तय की गई है। विचार—विमर्ष के बाद

जब वो संतुष्ट होंगे तो वो फैसला दे देंगे।

मदन की माँ,अंकेष से— यही तो आदमी पिछड़ जाता है, अपने अधिकार पाने मे।

मदन,अपनी माँ से—ऐसा नही है, होता ये है कि अदालत जब सारे गवाहो और सबूतो को देख लेता है और

उसे कुछ ऐसा लगता है कि जल्दबाजी मे ये फैसला नही देना चाहिए, तो इसके लिए अदालत कुछ

समय लेती है। तब जो फैसला आता है वो परफेक्ट आता है।

मदन की माँ,मदन से—फिर भी गवाहो और सबूतो को देखकर तो उन्हे लग ही गया होगा कि इसकी

(सुक्खी) माँ निर्दोष है।

अंकेश,मदन की माँ से—हां ये सारी बाते तो वे (जज) समझते ही होंगे। इसलिए तो समय लिया गया है।

मदन,अंकेष से—हमें लगता है फैसला इसी (अर्चना) के पक्ष मे आयेगा।

संतो,मदन से—आयेगा क्या ? आ ही गया मानिये। बस अब जज साहब को सुनाना बाकी है।।

सुक्खी मदन की माँ की गोद मे बैठा हुआ है इसलिए वो सुक्खी के माँ के जेल से निकलने के बारे मे ज्यादा बाते नही करती है, ताकि उससे सुक्खी कही घबरा नही जाय।

मदन की माँ,सुक्खी से—सब ठिक हो जायेगा, घबरओ नही बेटे। तुम्हारी माँ जरूर मिलेगी तुम्हे।

मदन,अपनी माँ से—माँ जरा वो बैग (रूपये वाला) दे देना। जो मैने दिए आपको रखने के लिए।

मदन की माँ,मदन से—ठिक है।

मदन की माँ,सुक्खी से—खाओ बेटे और कुछ लोगे तो कहना।

अब मदन की माँ वो बैग लेने के लिए जाती हैं।

मदन,अंकेष से—तो जितने रूपये उसे (कमल) देने थे उस हिसाब से तो उसने (कमल) गवाही तो दी ना।

संतो,मदन से—उसने तो ऐसे बकना षुरू किया, सभी लोग उसे ऐसे सुन रहे थे जैसे मानो वो चाँद पर

से आकर वहां के वातावरण के बारे मे यहां सभी से अपने अनुभव षेयर कर रहा हो। बिना

पलके झपकाये जज साहब उसकी सारी बाते सुन रहे थे, और विरोधी वकील की तो उसने

(कमल) क्लास ही ले ली। जो भी कहा उसने (कमल) परफेक्ट और संतुलन के साथ कहा।

उसके ही गवाही ने तो अंतिम मे केष मे जान डाल दी।

अंकेष,मदन से—(लंबी सांसे लेते हुए) उसने (कमल) तो अपना काम कर दिया, इसलिए वादे के मुताबिक

उसे (कमल) आज रूपये देने है।

मदन,अंकेष से—अकेले मत जाना, इसे (संतो) भी साथ मे ले लेना। आज कल दिवारो के कान नही, हवाओ

के भी कान होने लगे है।

माँ रूपये वाली बैग लेकर आती है और अंकेष को थमाती है।

अब ये लोग वहां से रूपये लेकर कमल को देने के लिए निकलते है।

मदन की माँ,अंकेष से—जा रहे हो बेटे, खाना तो खा लेते।

अंकेष,मदन की माँ से—किसी दिन षाम मे आकर खाते है, आराम से भर पेट खाउंगा। इसे (सुक्खी) भी

लेकर आउंगा।

मदन की माँ,संतो से—तुम भी आना संत ।

संतो,मदन की माँ से—ठिक है आंटी। इस तरह के निमंत्रण तो मुझे हमेषा स्वीकार रहते है। क्योंकि मै ऐसी

पार्टी खोजता हुँ , और आपने तो मुझे दे दिया। अब निकलता हुँ आंटी, नमस्ते।

अब अंकेष वहां से जैसे ही निकलता है, अंकेष मदन के दरवाजे के सामने से कमल को रूपये देने के लिए उसे फोन करता है।

कमल,अंकेष से—(फोन पर) तुम तो अपने वादे पर सुपारी के पेड़ की तरह एकदम से सीधे खड़े उतरे।

अंकेष,कमल से–(फोन पर) हां ,किसी की जिंदगी बचाने के लिए मैने किसी से वादा जो किया है। जिंदगी

के सामने इस रूपये का क्या मुकाबला। कहां लेंगे आप रूपये ? बताइये , मै आता हुँ।

कमल,अंकेष से–(फोन पर) घर पर ही आओ, अगर लुटेंगे तो अपने लोग ही लुटेंगे।

अंकेष,कमल से–(फोन पर) मै किसी भी समय आज षाम मे पहुँचूंगा, आप घर पर ही रहना।

कमल,अंकेष से–(फोन पर) अरे आँखे बिछा के आपके फोन का इंतेजार हो रहा था, आईये आपका इंतेजार

कर रहे है षुकून के साथ।

अब अंकेष संतो के साथ,,,,,,

अंकेष,संतो से–तो चलो उसे (कमल) रूपया दे ही देते है।

संतो,अंकेष से–हां चलो, हिसाब बराबर कर ही लो। रूपये पास मे रहने से दिक्कत है। उसे रूपये सौप दो

अपना जवाबदेही खत्म।

अब ये लोग सुक्खी के साथ कमल के यहां पहुँचते है जहां कमल इस लोगो का पहले से इंतेजार कर रहा होता है।

कमल,अंकेष से–आईये बरखुद्दार। आपलोगो को देखकर ऐसा लग रहा जैसे देव दर्षन हो रहा हो।

अब अंकेष कमल को रूपये से भरे बैग थमाता हैं।

अंकेष,कमल से–ये लिजिए आपके रूपये, पुरे है।

कमल,अंकेष से–ये बात बोलकर षर्मिंदा क्यो कर रहे है ? पुरे नही भी होते तो आप कहां जाने वाले है ?

अब रूपयो से भरी बैग कमल अपने हाथो मे लेता है , और इतने मे उसकी पत्नी चाय लेकर के आती है,,,,,,

अंकेष,कमल की पत्नी से–बड़ी जल्दी आपने चाय बना दी।

कमल,अंकेष से–असल मे हमलोगो का समय हो चुका था चाय पीकर चाय पर चर्चा करने के लिए ,और

तब तक आपलोग आ ही गए।

संतो,कमल से–तो भाभी को तो कम पड़ जायेगी फिर चाय।

कमल,संतो से–कोई बात नही फिर बन जायेगी। कितना प्यारा बच्चा है ये (सुक्खी)

कमल,सुक्खी से–कुछ खाओगे बेटे।

अंकेष,कमल से–नही खायेगा षायद। ये अभी वहां से खाकर ही आया है।

संतो,कमल से–तो आपने तो आज कमाल कर दिया कोर्ट मे। वो वकील सोचने पर मजबुर हो गया होगा

कि वो किससे बात कर रहा है।

कमल,संतो से–हम भी पुराने जमाने के जेलर है ,उसे (वकील) पता नही होगा कि वो जो कोर्ट मे जितने

आदमी को चला रहा है उतने को तो मै बगैर कोर्ट के चला लेता हुँ।

संतो,कमल से–आप तो पहुँचे हुए निकले।

कमल,संतो से–पहुँच के हम रिटार्य है। षायद उनको पता नही।

अब ये लोग कमल को रूपये सौप कर वहां से निकलते है । फिर अंकेष सुक्खी और संतो को लेकर अपने घर पहुँचता है,,,,,

अंकेष,सुक्खी से–तो आज मै तुम्हारे लिए बाहर से खाना पैक करवाकर लाउंगा। सोना नही मेरे आने तक,

टी0 भी0 देखो।

अब अंकेष संतो के साथ वहां से निकलकर बियरबार पहुँचता है अपने दिन भर के थकान को मिटाने के लिए। दोनो कुर्सी पर बैठते है और वेटर को ईषारा करते है,,,,,,

अंकेष,संतो से–आज कुछ नया लेते है जो कुछ हटके हो। क्योंकि आज हमलोग बहुत परेषान हुए है ?

कोर्ट से लेकर कचहरी तक।

संतो,अंकेष से–हां स्वाद बदलना चाहिए। आज जिंदगी बहुत भाग दौड़ मे निकली है। टषन मे जषन को

हमलोग क्यो भुले।

अब वेटर पहुँचता है,,,,

वेटर,संतो से–तो क्या लाऊ sir,,,?

संतो,वेटर से–आज कुछ स्पेषल लाओ ! जो देखने के साथ–साथ पीने मे भी अच्छा हो।

वेटर,संतो से–आज आपको बढ़िया वाला ब्रांड लाकर देते है।

वेटर चला जाता है,,,,,,,,,

अंकेष,संतो से–ना जाने कौन सा ब्रांड लायेगा ? नाम तो बता देते।

संतो,अंकेष से–आज उसकी (वेटर) भी पसंद देख ही लेते है कि वह क्या ला रहा है ?

अंकेष,संतो से–भुख भी लगा है, कुछ स्टाटर मे भी बोल दो।

अब वेटर एक नये ब्रांड की षराब इन लोगो के सामने लाकर रखता है, ब्रांड तो पुराना है पर इन लोगो के लिए नई है,,,,, अंकेष षराब की बोतल को आगे–पीछे करके देखता है फिर,,,,,,

अंकेष,वेटर से–टेस्ट कैसा है इसका ?

वेटर,अंकेष से–आप लिजिए, आप को अच्छा लगेगा।

संतो,अंकेष से–इसे चखने मे कोई हर्ज नही हैं। टेस्ट किया जा सकता है।

अब दोनो मिलकर नये वाईन के पहले पैक का मजा लेते है,,,,,

संतो,अंकेष से–जैसे पति–पत्नी मे झगरा होने पर जो फिलिंग आती है, थोड़ा मिठा, थोड़ा फिका, ठिक उसी

तरह का टेस्ट है इसका (षराब) । क्या ?

अंकेष,संतो से– हम तो दो–तीन पैक के बाद ही इसका रिजल्ट दे पायेंगे। वैसे थुकने लायक नही है ये

(षराब)।

इन दोनो की नई टेस्ट वाली बाते सुनकर बगल के टेबल के कुर्सी पर बैठ कर पी रहे एक आदमी इन दोनो को टोकता है।

आदमी,अंकेष से–आप जो पी रहे है वो एक नंबर चीज है, और सही पी रहे है। मै भी कभी–कभी लेता हुँ

इसे। नषा जो धीरे से चढ़े और देर से उतरे, असल मजा तो उसी मे है। वो नषा क्या

जो जल्दी से चढे और तेजी से उतर जाय।

संतो,वो आदमी से–ये बाते बोलकर तो आपने महफिल मे जान डाल दी। अब क्या मजाल हमलोगो की जो

इस पुरी बोतल को खत्म ना करे ? आपने तो बहाना दे दिया इसे बड़े चाव से पीने के

लिए।

इधर अंकेष टॉफिक को चेंज करते हुए,,,,

अंकेष,संतो से–ना जाने पाँच दिनो के बाद क्या फैसला आयेगा। हमलोगो के लिए खुषी लेकर आयेगा या

सारे किए–कराये पर पानी से निपा–पोती होगी।

संतो,अंकेष से–मन के हारे हार, और मन के जीते जीत। तुम्हे जरूर मिलेगी तुम्हारी प्रीत।।

अंकेष,संतो से–मै तो अपने लिए कम और उस बच्चे (सुक्खी) के लिए ज्यादा परेषान रहता हुँ ,कि उसका

क्या होगा अगर उसकी माँ उसे नही मिल सकी, उसे सजा हो गई तो।

संतो,अंकेष से–वकीलो के बहस को और जजो के मानसिकता को हमलोगो ने बखूबी देखा है जिसे नजर

अंदाज नही किया जा सकता, यह सोचकर कि हमलोग केष हार जायेंगे, और एक ही कोर्ट

नही है, इसके ऊपर भी कोर्ट है, घबराओ नही ऐसा कुछ बुरा तो होगा नही, अगर हुआ तो

आगे का दरवाजा खुला हुआ है हमलोगो के लिए।

इस तरह अपनी–अपनी भावनाओ को ये लोग व्यक्त करते हुए पुरी बोतले गटकने के बाद अच्छे से मुड मे आ जाते है, फिर,,,,,

अंकेष,संतो से–चलो अब चलना चाहिए, उसके (सुक्खी) लिए खाना भी लेकर जाना होगा।

संतो,अंकेष से–मायुष होने की कोई जरूरी नही है , मेरा मानना है कि मन चंगा तो कठोती मे गंगा। आज

जो आप इतनी मेहनत से एकाग्रता के साथ इसमे लगे हुए है इसका मिठा वाला फल

आपको जरूर मिलेगा। इंसानी सोच तो पुरी दुनियां मे क्रान्ति ला सकती है, हमलोगो के

सामने तो सिर्फ एक अदालत है और उसमे बैठे एक जज और दो–चार काले कोर्ट वाले

वकील। जिसे हमलोगो ने झेल लिया है और झेल ही लेंगे। घबराते वो है जो गलत होते है,

हमें तो सही होकर खुष होना चाहिए। तुम जो कर रहे हो करते रहो, बाकी ऊपर वाले पर

छोड़ दो।

अंकेश,संतो से–हमे नही पता था कि ये नया टेस्ट तुम्हारे दिमाग मे इतनी क्रान्ति पैदा कर देगा।

वो आदमी,अंकेष से–भले ही नया टेस्ट का असर हो, पर बाते इसने एकदम धार वाली कही है।

अंकेष,वो आदमी से–हां ये बात तो है।

अब ये लोग वहां से निकलते है,,,,,, कि अचानक से अंकेष की नजरे आते हुए कमल पर पड़ती है।

इससे पहले कि अंकेष कुछ बोले उससे पहले ही संतो,,,,,,

संतो,अंकेष से–क्या मै वही देख रहा हुँ जो तुम देख रहे हो ?

अंकेष,संतो से–अब तुम हमसे अलग तो कुछ देख सकते नही, कोई चीज का बाहरी नक्षा तो सबको एक

समान ही दिखाई देता है।

कमल इन दोनो के नजदीक पहुँच चुका है,,,,

कमल,अंकेष से–तो चलो आज की पार्टी मेरे तरफ से।

संतो,कमल से–पर पार्टी तो हमलोगो की हो चुकी है। अब बस डिनर पार्टी बची हुई है।

कमल,संतो से–तो डिनर के साथ ही दो घुंट ले लेंगे।

कमल,अंकेष से–क्या कहते है ?

संतो,अंकेष से–बात तो इनका रखना पड़ेगा। क्योंकि हमलोगो की बाते जो इसने रखी है ?

ना चाहते हुए भी अब अंकेष को कमल का बात रखना पड़ता है और उसके साथ किसी डिनर वाले होटल मे चलकर खाने के लिए जाना पड़ता है। होटल पहुँचने पर इन लोगो के सामने खाना पड़ोसा जाता है और ये लोग खाना षुरू करते है।

अंकेष,कमल से–तो आपका बहुत–बहुत धन्यवाद । डिनर पार्टी के लिए।

कमल,अंकेष से–अभी तो पार्टी षुरू हुई है, अभी डिनर हुई है, अब ड्रिंक होगी, फिर डिंग–डांग होगी।

अंकेष,कमल से–पार्टी ज्यादा लंबी करने की जरूरत नही है। हमें निकलना होगा, घर मे मेरा बच्चा इंतेजार

कर रहा है। वो भी बाहर के खाने के इंतेजार मे।

संतो,कमल से–सही कहा इसने।

कमल,अंकेष से–ठिक है , तो दो घुंट ले लिजिए और चले जाईये।

अब कमल अपने जेब से एक षराब की बोतले निकाल कर टेबल पर रखता है।

अंकेष,कमल से–तो आप अपना खुराक साथ मे ही रखते है।

कमल,अंकेष से–रखना पड़ता है इमरजेंसी के लिए। वैसे मैने ये तुमलोगो के लिए ही ली थी।

अब तीनो ग्लास मे तीन पैक कमल लगाता है और तीनो लोग उसे पीते है फिर दोबारा कमल पैक लगाता है और फिर ये तीनो लोग दुसरा पैक उठाते है।

कमल,अंकेष से–तो बचवा के लिए खाना यही पैक करवा देते है।

संतो,अंकेष से–हां ठिक रहेगा।

अंकेष,कमल से–हां ठिक है।

अब कमल वेटर को बुलाकर सुक्खी के पसंद का खाना उसके पिता अंकेष से पुछकर पैक करने को कहता है।

अंकेष,वेटर से–कितना समय लगेगा, थोड़ा जल्दी करना मेरे भाई।

वेटर,अंकेष से–बस दस मिनट।

अंकेष,वेटर से–ठिक है।

तब तक कमल एक और पैक लगा चुका होता है।

संतो,कमल से–तो आपका दोस्त (सुकेष) तो आपसे पुरा नाराज होगा।

कमल,संतो से–क्या उसका नाम ले रहे हो ? सारा मजा किरकिरा हो जायेगा। मतलबी इंसान है वो

(सुकेष)। अपने फायदे के लिए वो छोटे बच्चे को भी नही बख्सने वाला है। अगर वो सही

होता तो आज ऐसी नौबत ही नही आती तुमलोगो को ये सब करने के लिए। ना जाने उसे

बच्चे से किसी भी तरह का लगाव ही नही था। ऐसा लगता था जैसे सुक्खी उसका बच्चा

था ही नही। पर इस बारे मे उसने मुझे कभी कुछ बताया ही नही कि आखिर वो ऐसा क्यो

करता है सुक्खी के साथ सौतेले जैसा व्यावहार। मै बराबर जाया करता था उसके यहां, पर

बाप–बेटे मे जो लगाव होता है वह कहां दिखाई देता था उन दोनो के बीच।

अंकेष,कमल से–ऐसा क्या था जो आपको ऐसा लगने लगा।

कमल,अंकेष से–ऐसा लगा पर इस बारे मे मैने कभी उसकी पत्नी अर्चना से पुछा ही नही और ना ही सुकेष

ने कभी हमे बताया।

संतो,अंकेष से–कहानी थोड़ा पेचिदा नही लग रहा।

अंकेष,कमल से–इस बारे मे तो मुझे भी उसने (अर्चना) कुछ नही बताया।

कमल,अंकेष से–खैर छोड़ो इन सब बातो को, फिर भी किसी बच्चे को जब भी सहारे की जरूरत होती है

उसे उसी समय सहारा देनी चाहिए। वरना ऐसा समय हमेषा याद रह जाता है। बच्चे को बाप के द्वारा ना चाहना भी परिवार मे अलगाव की भावना बना सकती है।

संतो,अंकेष से–सोचने वाली बात है, ऐसी क्या अंद्रुनी वाली बात रही होगी जो कोई पति अपनी पत्नी को

हत्या के झुठे केष मे फंसा भी सकता है।

अंकेष,कमल से–अब राज पर से पर्दा तो राज वाली ही उठायेगी।

अब वेटर पैक वाला खाना reception counter पर रख कर अंकेष को ईषारा करता है।

अंकेष,कमल से–ठिक है खाना रेडी है अब मै चलता हुँ।

अंकेष,संतो से–तुम रूको यही पर इनका साथ देने के लिए।

संतो,अंकेष से–ठिक है, तो फिर आप निकलो, वो (सुक्खी) आपका इंतेजार कर रहा होगा।

संतो को वही छोड़ अंकेष अब खाना लेकर वहा से निकलता है।

संतो,कमल से–(अंकेष के जाने के बाद) बहुत परेषान है बेचारा। ये उस बच्चे को अपना बच्चा समझकर

प्रेम करता है।

कमल,संतो से–करना ही पड़ेगा , अभी उसकी माँ उसके साथ नही है।

संतो,कमल से–ये जो अभी ये सब झेल रहा है, हर समय इसे सुई बनकर चुभता होगा।

कमल,संतो से–क्या करोगे ? मोहब्बत ने कहां किसी को चैन से मरने दिया। जब भी आँख लगी बेचैनियो ने

नींद ही तोड़ी है।

संतो,कमल से–पर आपने अपना काम अच्छे से कर दिया।

कमल,संतो से–क्या करे ? किसी से दोस्ती निभा करके अपनो से दुष्मणी मैने उधार जो ली है। कोई बात

नही, ऊपर वाला जान रहा होगा कि मैने सही किया या गलत।

संतो,कमल से–आपका भगवान जो भी हो, पर उसके (सुक्खी) लिए तो आप ही भगवान है। इंसानो की सेवा

ही तो ऊपर वाले की सच्ची वन्दना है। जिसे आज हमलोग भुलते जा रहे है।

कमल,संतो से–तो तुम इसे (अंकेष) कब से जानते हो ?

संतो,कमल से–वो (अंकेष) बहुत दिनो से मेरे जीजा को जानता है, जो मुझे जानता है।

कमल,संतो से–अच्छा ! तो दोस्त के दोस्त मिले कैसे ?

संतो,कमल से–मेरा जो दोस्त है उसे षायद आप जानते होंगे।

कमल,संतो से–मै कैसे जान सकता हुँ , तुम्हारे दोस्त को, जो उसका (अंकेष) दोस्त है।

संतो,कमल से–सबसे पहले जब अंकेष आपसे जिसके साथ मिला था , वही है मेरा पुराना दोस्त। उसी ने

मेरी इससे दोस्ती लगवाई है।

कमल,संतो से–वो किसलिए ?

संतो,कमल से–इसी तरह आपके साथ पार्टी करने के लिए।

कमल,संतो से–समझ गया, मामला हमें फंसाने का था।

संतो,कमल से–रहने दीजिए, मरे हुए मुर्दे उखारने पर दोबारा हमें ही दफनाना पड़ेगा। पर जो भी हो

हमलोगो की मेहनत ने रंग लाया।

इधर अंकेष सुक्खी के लिए खाना लेकर अपने घर पहुँचता है, देखता है सुक्खी उसके इंतेजार मे अपने खिलौने से खेल रहा था। क्योंकि भुखे उसे नींद नही आ रही है और अंकेष ने उसे सोने के लिए मना किया हुआ था।

अंकेष,सुक्खी से—(दुलारते हुए) सुक्खी,,,,! तो तुम वाकई मे नही सोये, बहुत अच्छा। चलो आओ पापा

तुम्हारे लिए खाना लेकर आये है, खा लो।

अंकेष खाने को टेबल पर निकालता है, सुक्खी आकर खाना खाने के लिए बैठता है। फिर दोनो खाना खाते है। सुक्खी अपने खाने को अपने हाथो से अभी तक ठिक से खाने के लिए नही सिख पाया है , क्योंकि उसे अर्चना ने अपने से खाने के लिए कभी नही सिखाया। इसी का परिणाम है कि अब तक खुद से सुक्खी की अंगुलियाँ खाने के निवाले को अच्छी तरह से नही उठा पर रहे है। यह देखते हुए अंकेष सुक्खी को खुद अपने हाथो से खाना खिलाता है, ताकि वो भुखे ना रह जाये।

अंकेष,सुक्खी से—आज अगर भगवान की कृपा होती तो आज हमलोग तुम्हारी माँ के साथ खाना खा रहे

होते। पर फिक्र मत करो एक दिन ऐसा आयेगा जब हमलोग साथ बैठ कर बड़े मजे से

खा रहे होंगे।

सुक्खी,अंकेष से—माँ तो सब दिन अपने हाथो से हमे बना कर अपने हाथो से खिलाती थी।

अंकेष,सुक्खी से—हां ये बाते तो तुम्हे जरूर खलेगी। पर क्या करोगे ? माँ के हाथो मे और मेरे हाथो मे जो

तुम्हे अंतर पता चल रहा है उसे दुर करने की मै पुरी कोषिष करूंगा और कर भी रहा हुँ।

इस तरह अंकेष सुक्खी को खाना खिलाकर उसे बड़े प्यार से सुला देता है। दूसरे दिन इधर सुकेष का खुन खौल रहा है कमल को लेकर। वह अपने दुकान पर बैठकर असर्फी से बात कर रहा है कि कैसे वो कमल को मजा चखा सके उसके विरूद्ध जाकर गवाही देने के लिए।

सुकेष,असर्फी से—मेरा तो मन नही कर रहा उसे (कमल) जिंदा छोड़ने का।

असर्फी,सुकेष से–ये बाते अभी अपने दिमाग मे लाओ भी नही। बर्दाष्त करो, और कोई ऐसा उपाय सोचो

की काम भी हो जाय और लाठी भी ना टुटे। मतलब दुसरे को सजा भी दो और तुमपर

आरोप भी ना लगे।

सुकेष,असर्फी से–उतना मै नही सोचुंगा, मै सिर्फ ठोकुंगा। वो (कमल) मेरा दोस्त है तो क्या हुआ ? उसने

मेरे साथ धोखा किया है , दोस्त को अहमियत ना देकर उसने एक वैसे आदमी की मदद

की है जो उसके दोस्त को क्षति पहुँचा रहा था।

असर्फी,सुकेष से–उसे (कमल) जो करना था उसने कर दिया, तुम्हे जो करना था तुमने किया, अब फिर जो तुम्हे

करना है वो सोच समझ कर करना है।

सुकेष,असर्फी से–सोच–समझ कर क्या करे ? उसने (कमल) ऐसी गवाही दी है कि हो सकता है उसे

(अर्चना) जमानत मिल जाय, और वह बाहर निकल कर खुले आम घुमेगी और मै उसका

तमाषा देखू।

असर्फी,सुकेष से–अभी फैसला तो नही आया है ना , हो सकता है उसे (अर्चना) जमानत ना मिले। उससे

पहले तुम अगर किसी भी तरह की गलत हरकत करोगे तो, वो (अर्चना) तो जेल मे रहेगी

ही और तुम भी जेल पहुँच जाओगे। ये भी हो सकता है कि वो कुछ दिनो मे निर्दोष

साबित होकर बाहर निकल जाय, और तुम जेल के अंदर सड़ने के लिए पहुँच जाओ। फिर

तो तुम्हे बेचैनी के साथ हर समय गुजारना पड़ेगा , वो भी काल कोठरी मे।

सुकेष,असर्फी से–मेरा तो ऐसा मन कर रहा है कि मै अभी जाकर उसे (कमल) इतना मारू कि वो मरे नही,

पर मेरे सामने मे गिरगिराये यह कहते हुए कि मुझे माफ कर दो। वो साला कोर्ट मे इस

तरह से बाते कर रहा था जैसे मानो वही वकील हो और वकील इस केष की गवाही दे

रहा हो। सवालो के जवाब तो वो (कमल) ऐसे दे रहा था, मानो मेरा उससे कितनी पुरानी

दुष्मनी है।

असर्फी,सुकेष से–तुम्हारे भावनाओ से उत्पन्न हुए क्रोध को मै समझ रहा हुँ, और मै तुम्हे अभी सिर्फ समझा

सकता हुँ। तुम्हे करना क्या है ये तुम्हारे स्व–विवेक पर निर्भर करता है। तुम उसे मारोगे

तो वो (कमल) भी तुम्हे मार सकता है या तुम पर जान से मारने का आरोप लगा कर

तुम्हे जेल भिजवा सकता है, फिर तुम क्या करोगे ?

अब एक तीसरा आदमी सुकेष के पास आता है जो पहले से सुकेष को जान रहा होता है, जिसे सुकेष ने ही कमल के बारे मे कुछ पता करने के लिए तैयार किया था , जिसका नाम है नटट्ा।

नटट्ा,सुकेष से–तो आज–कल वो (कमल) बहुत रूपये उड़ा रहा है। बियरबार मे लेट तक बैठकर षराब भी

पीता है, लोगो से लिए पुराने कर्ज के रूपये वो लौटा भी रहा है। फोन से किसी से ऐसे

बात करता है मानो उसे करोड़ो की लॉट्री लग गयी हो। उसके पहनावे मे तो काफी

निखार आ गया है, पहले के मुताबिक। मानो तो पुरे–के–पुरे चेंजिंग है।

असर्फी,सुकेष से–(नट्टा के बारे मे) तो तुमने कितने आदमियो को काम पर लगा रखा है ?

सुकेष,असर्फी से–क्या करे ? अब सब काम तो तुमसे नही करा सकते ना।

सुकेष,नटट्ा से–तो उसे (कमल) सोने के अंडे देने वाली मुर्गी हाथ लगी है क्या ? मुझे षक था कि वो

बड़ी रकम लेकर गवाही देने के लिए तैयार हुआ है। उसे (कमल) तो मै घसिटूंगा बिना

कपड़ो के अब तो वो (कमल) गया मानो।

नटट्ा,सुकेष से–तो अब मै चलु भैया ।

सुकेष,नटट्ा से–और क्या–क्या देखा तुमने उसमे (कमल) नया।

नटट्ा,सुकेष से–मन एकदम फरहर है उसका (कमल)। जैसे चावल को जब बनाकर उसे पसाया (यानी

पानी से अलग किया) जाता है तो वो गरम–गरम कितना अच्छा लगता है भैया खाने मे, ठिक

उसी तरह एकदम ताजा।

सुकेष,असर्फी से–अब बताओ क्या करें उसका ? तुम बोलते हो षांत रहने के लिए, (जोड़ से) उसने तो

मेरी नषे काट दी और पट्टी तक नही किया। बोले तो j कर दिया उसने मेरे

जज्बातो की।

असर्फी,सुकेष से–आराम से।

नटट्ा,सुकेष से–तो आप भी वाट लगा के रख दो उसका ।कुछ किया है उसने आपके साथ क्या ?

वो तो आपका जिगरी था, क्यो भरक रहे है उस पर ऐसे। बोलिए तो हम बात करे का।

सुकेष,नटट्ा से–तुम इसी तरह नजर रखो उसपर (कमल) , आगे जो करना होगा हम तुम्हे बतायेंगे। हां

एक बात और यह भी देखना की उससे (कमल) कौन–कौन से लोग मिलते है और

कहां–कहां मिलते है, और वो अपने रूपये को कहां खर्च करता है।

असर्फी,सुकेष से–इन सब बातो का अब क्या फायदा ? वो किससे मिलता है और कहां जाता है ? जो होने

का था वो तो हो गया ना।

सुकेष,असर्फी से–उसके साथ जो अब होने वाला है, वो तो अब करना पड़ेगा ना। ये पता करके रखना

पड़ेगा ना कि उससे (कमल) अच्छे से मुलाकात कहां होगी।

सुकेष,नटट्ा से–तुम जाओ अब।

यह बाते सून कर नटट्ा वहां से चला जाता है, अब असर्फी सुकेष को षांत करने के लिए अपने जेब से सिगरेट का डब्बा निकालता है और उसमे से एक सिगरेट सुकेष को बढाता है।

असर्फी,सुकेष से–लो टेंषन को धुँए मे जरा उड़ा डालो। तुमने मन मे जो ठान लिया है उसमे मै क्या कर

सकता हुँ ? फिर भी जो भी करना सोच समझ के करना।

अब सुकेष गुस्से से पुरे आग–बबुला है कमल के प्रति, और मन मे बार–बार यह सोच रहा है कि कैसे उसे (कमल) उसके किए की सजा दे ? इस तरह की उधेड़–बुन उसके दिमाग मे लगातार चल रही होती है।

सुकेष,असर्फी से–कुछ भी हो मै उसे (कमल) नही छोरूंगा।

असर्फी,सुकेष से–ठिक है, पर क्या करोगे उसका ?

सुकेष,असर्फी से–उसके (कमल) सारे रूपये छीन कर,उसके सारे पैर–हाथ तोड़ कर उसे कही का नही

छोरूंगा।

असर्फी,सुकेष से–ठिक है तब तो हम सिर्फ तमाषा ही देखेंगे।

अब कमल कही आ –जा रहा होता है कि उसकी नजरे नट्टा पर पड़ती है उसे याद आ जाता है कि जहां वो जाता है वहां वो नट्टा को ही देखता है। पर इस वक्त नट्टा कमल की रेकी करने नही निकला है, अभी तो वह सुकेष के पास से लौट रहा था जब उसे रास्ते मे कमल ने देखा। अब नट्टा अपने किसी जान पहचान वाले से रूक कर बात करने लगता है, फिर दबे कदमो से कमल उसके पास पहुँचता है। उसके नट्टा के पास पहुँचने पर नट्टा उसे अपने पास आते देख उसपर अपनी दाई आँखे गराये हुए है कि वो ईधर पास क्यो आ रहा है। अब कमल वहां बगल के जूस के दुकान पर रखे कुर्सी पर बैठ जाता है और नट्टा की बाते खत्म होने का इंतेजार करने लगता है।

नट्टा,अपने जान पहचान वाले से–तो बड़े दिनो के बाद मिले हो। ये बताओ कहां थे तुम।

जान पहचान वाला, नट्टा से–यही सवाल तो मेरा तुमसे है। तुम कहां थे इतने दिनो से उस दुकान पे तुम

दिखाई ही नही दिए, ना जाने कितने वर्षो से।

नट्टा,जान पहचान वाले से–हां मै तो सबेरे 05 (पाँच) बजे निकलता हुँ और रात के 10 (दस) बजे घर

लौटता हुँ , इसलिए किसी से मुलाकात क्या दर्षन भी दुर्लभ है ?

जान,पहचान वाला, नट्टा से–हां मोह माया और मनी के लिए तो सब परेषान है,तो इधर कहां जा रहे हो ?

नट्टा,जान पहचान वाले से–बस चला अपने मंजिल पर, यानी काम पर,। चलो, चलते हुए बात करते है।

अब नट्टा और उसका जान पहचान वाला आदमी दोनो सड़क किनारे बात करते हुए चलने लगते है।

जान,पहचान वाला, नट्टा से–तो हमारे लिए कोई काम है ?

नट्टा,जान पहचान वाले से–काम तो बहुत है करने वाले नही मिलते है। अभी भी तुम्हारे लिए एक काम है,

चाहो तो तुम उसे सड़क पर चलते–चलते कर सकते हो।

जान,पहचान वाला, नट्टा से–बोलो तो सही , कर लेंगे।

नट्टा,जान पहचान वाले से–देखो मेरे पीछे एक आदमी (कमल) आ रहा है, और हमलोग जहां बैठेंगे वो (कमल) भी वहां जाकर बैठेगा। उसके बाद हमलोग कोई खाने वाले चीज का आर्डर देंगे

और वो भी आर्डर देगा, फिर उसके पास जो खाने की चीजे आयेगी

और वो जैसे ही खाना षुरू करेगा हमलोग वहां से निकल जायेंगे।

और अगर वो फिर पीछे आया तो उसे तुम क्या करोगे।

जान,पहचान वाला, नट्टा से–उससे पुछेंगे उसके तबियत के बारे मे। अगर उसने ठिक से बताया तो ठिक

है वरना उसमे बॉक्सिंग का ज्ञान पेलेंगे।

नट्टा,जान पहचान वाले से–वाह ! तुम तो हमाने भावनाओ को बहुत जल्दी भांप लिए। ठिक है अब चलो

हमलोग किसी दुकान मे बैठते है और जिंदगी मे इंसान के साथ होने वाली

करवटे पर ध्यान लगाते है।

अब सामने की एक दुकान मे नट्टा और उसे जानने वाला उसका दोस्त जाकर बैठता है,, कमल भी उसके चार कदम पीछे से आकर उस दुकान मे बैठता है।

नट्टा,जान पहचान वाले से–तो तुम्हे याद है ना एक साल पहले जो मैने तुमसे बात कही थी, उसे

करने का वक्त आ गया है अब।

अब नट्टा के जान पहचान वाला दोस्त कुछ खाने के लिए आर्डर देता है, और उधर होटल का एक स्टाफ कमल के पास आर्डर लेने के लिए आता है।

कमल,स्टाफ से–कुछ भी ताजा दे, दो।

स्टाफ–चिकन टिक्का दुँ।

कमल–हां।

नट्टा,जान पहचान वाले से–तो तुमने क्या आर्डर दिया ?

जान,पहचान वाला, नट्टा से–मैने तो आर्डर दिया ही नही।

यह बात जानकर नट्टा होटल के स्टाफ को ईषारे देकर बुलाता है, स्टाफ उसके पास आता है।

स्टाफ, नट्टा से–आपका आर्डर मिल चुका है।

नट्टा का दोस्त,स्टाफ से–पर हमने तो आर्डर दिया ही नही ।

होटल स्टाफ कमल की ओर ईषारा करते हुए,,,,

स्टाफ,नट्टा से–उसने (कमल) दिया है।

अब कमल देख रहा है कि होटेल का स्टाफ उसकी ओर ईषारा करते हुए उन दोनो को मुझे दिखा रहा है। नट्टा को लगता है कि अब हमे कुछ करना पड़ेगा वरना कमल कुछ ना कर दे।

कमल,नट्टा से–(अपने टेबल पर से) खा लो फिर तुमलोगो का हिसाब लेते है।

जान,पहचान वाला, नट्टा से–क्या करे ? दूँ इसे (कमल) कुछ क्या ?

नट्टा,अपने जानपहचान वाले से–हां,उससे (कमल) पुछना पड़ेगा ना की वो हमारा पीछा क्यो कर रहा है ?

अब नट्टा का दोस्त कमल के पास जाकर उससे पुछता है,,,,

नट्ट का दोस्त,कमल से–तो आप हमारे दोस्त का पीछा क्यो कर रहे है भाई ?

कमल,नट्टा के दोस्त से–अपने दोस्त को भेजो।

नट्ट का दोस्त,कमल से–मै बात कर रहा हुँ ना।

कमल,नट्टा के दोस्त से–पर तुमसे मुझे बात नही करना।

नट्ट का दोस्त,कमल से–ज्यादा होषियार ना बनिये। मै इसी ईलाके का हुँ।

कमल,नट्टा के दोस्त से–तुम भी होषियार ना बनो, ये पुरा ईलाका ही मेरा है, और जहां पर तुम खड़े हो

ये तो मेरे पुर्वजो के नाम की जमींदारी है।

नट्ट का दोस्त,कमल से–तुम्हे तो मै थाने भेज सकता हुँ।

कमल,नट्टा के दोस्त से–मै थाने को यहां बुला दुँ।

नट्ट का दोस्त,कमल से–तुम बात आगे बढा रहे हो ,सही–सही बताओ की तुम पीछा क्यो कर रहो

है और चाहते क्या हो ?

अब कमल अपना आपा खोते हुए अपने कुर्सी पर से उठकर नट्टा के दोस्त को जोड़ से एक थप्पड़ जड़ देता है, थप्पड़ लगते ही नट्टा का दोस्त जमीन पर गिर जाता है और उधर से खाना बना रहे कारीगर यह देखते हुए चावल छानने वाला छनोटा लेकर आता है और नट्टा के दोस्त को दो–चार छनोटे और दे मारता है, क्योंकि वह खाना बनाने वाला कारीगर कमल का अपना भतीजा है। यह सारी घटनाओ को देखते हुए नट्टा जो वहां से भागने लगता है,,,,,फिर

कमल,अपने भतीजे से–उसे (नट्टा) पकड़ो।

अब नट्टा इतनी तेजी से वहां से अपने दोस्त को छोड़ कर भागता है कि वह फिर सीधे सुकेष के पास जाकर ही रूकता है,, और वहां पहुँच कर सुकेष से सारी बाते बताता है।

सुकेष,नट्टा से–ठिक है तुम निकलो यहां से।

अब दाँये–बाँये दाबते हुए नट्टा वहां से भागता है। कमल का भतीजा जो नट्टा का पीछा कर रहा था वो नट्टा को सुकेष से बात करते देखकर सारी बाते जाकर अपने चाचा कमल को बताता है। यह सूनकर कमल सारी बाते समझ जाता है कि सुकेष ने ही मेरे पीछे उसे (नट्टा) लगाया था या हो सकता है कही मुझे मरवाना तो नही चाहता है वो (सुकेष)। यह सोचकर कमल बड़े आष्चर्य मे पर जाता है।

कमल का भतीजा,कमल से–क्या मामला है चाचा ?

कमल,अपने भतीजे से–अरे मामला तो बड़ा गंभीर लग रहा है, कि उसने मेरे पीछे आदमी क्यो लगा रखी है ?

कमल का भतीजा,कमल से–अगर आपको कुछ हुआ तो उसके (सुकेष) दुकान के सामने उसे जलाकर उसके मांस

को कुत्ते को खिलाएंगे, ताकि उसके डी0 एन0 ए0 जाँच के लिए पुलिस को

कुत्ते का लैटरिन चेक करना पड़ेगा, और ये (नट्टा का दोस्त) कहां गया ?

जिसे हमने यहां पर बिछाया था छनौटे से।

कमल,अपने भतीजे से–छोड़ो उसे। उसे छोड़ दिया हमने ,इन सब मे वो संलिप्त नही है। उसकी तो

अभी–अभी मुलाकात हुई थी उससे (भागने वाले नट्टा से)

कमल का भतीजा,कमल से–मैने भी जाने दिया उसे (नट्टा) ,क्योंकि वह जाकर सुकेष से कुछ बतिया रहा

था, और मै जानता हुँ कि सुकेष से आपकी अच्छी जमती है। आप सुकेष से

जाकर बात कर लीजिए, वरना हमे बात करनी होगी।

कमल,अपने भतीजे से–हम बात कर लेंगे। तुम इन सब मे ना पड़ो।

कमल का भतीजा,कमल से–ना पड़े ! मेरे सामने मे आपको कोई उंगली दिखायेगा ,तो मै उसे क्या छोड़

दूँ। उंगली सहित उसके हाथ को मै काट दुंगा।

कमल,अपने भतीजे से–हुआ ,अब षांत रहो।

समय दोपहर का है। यह कहते हुए कमल वहां से अब निकल जाता है। भर रास्ते कमल यह सोचता है कि ये सुकेष तो हमारे पीछे ही पर गया। अब इसका (सुकेष) क्या करे ? खुद इसे मिल के समझाये या किसी और के माध्यम से इससे पुछे कि वो आखिर चाह क्या रहा है ? अब कमल भटकते हुए अंकेष के पास पहुँचता है और उसे सारी बाते बताता है।

अंकेश,कमल से–तो वो (सुकेष) आपका पीछा नही छोड़ रहा है ना। अब तो आपने अपना काम कर दिया

है, अब वो आपका पीछा करे या किसी से आपकी रेकी करवाये, इससे आपको ज्यादा

परेषान होने की जरूरत नही है।

कमल,अंकेष से–हां, अब तो जो होना था वो हो गया। लेकिन बात अब ये है कि वो अगर मेरा पीछा करवा

रहा है तो इसमे उसने (सुकेष) मेरे लिए कुछ सोच के रखा हो षायद।

अंकेष,कमल से–जैसे।

कमल,अंकेष से–जैसे , हमे मरवा भी सकता है।

अंकेष,कमल से–क्या ? वो इस हद तक भी जा सकता है।

कमल,अंकेष से–टषन मे आदमी कुछ भी कर सकता है।

अंकेष,कमल से–लेकिन वो (सुकेष) आपका दोस्त है।

कमल,अंकेष से–लेकिन मैने उसे अपना दोस्त रहने कहां दिया। बीच मे तुम जो आ गए।

अंकेष,कमल से–तो आपके हिसाब से आपको अब क्या करना चाहिए ?

कमल,अंकेष से–हम अब क्या कर सकते है इसमे ? हमे जो करना था, हमने कर दिया। मेरा कहना है ये

मामले को तुम ही सलटा दो अपने तकनीक से। दोस्ती तो टूट ही गई है, पर इससे

ज्यादा कुछ ना हो इसी का डर है।

अंकेश,कमल से–आपकी दोस्ती से तो कही ज्यादा उसकी दुष्मनी है हमसे। दोस्ती बनाये रखने मे ही

हमारी दुष्मनी और ज्यादा ना बढ जाय। फिर भी हम भरसक प्रयास करते है यह जानने

के लिए कि वो चाहता क्या है, और ये सबका समाधान कैसे होगा। लेकिन तब तक

आपको षांत रहना है, जब तक अर्चना के बारे मे कोर्ट का डिसिजन ना आ जाये। क्योंकि

इन सब के अलावे अब ना मै और ना आप ही अगल से केष मुकदमे झेल पायेंगे। मेरा

कहना है अभी आप घर और काम के अलावे कही और ज्यादा ना जाये।

कमल,अंकेष से–तो क्या उसके (सुकेष) डर से घर मे ही छीपे रहे ? हम तुम्हारे पास इसलिए आये है कि

तुम्हे कोई आईडिया है तो उसका उपयोग करो, वरना हम अपने तरफ से कुछ करेंगे तो षायद कुछ

बड़ा मामला बन जाय। तुम ये मत सोचो कि हम उससे (सुकेष) डर गये। बस उसकी

इज्जत कही ना कही मेरे दिल मे बाकी है, इसलिए।

अंकेष,कमल से–समझ गया मै। मामला गंभीर है पर आप निष्चिंत रहिए।

अब दोनो की मिटिंग खत्म होती है। दोनो अपने–अपने गंतव्य की ओर चल पड़ते है। उसी दिन जेल मे। अर्चना और रूबी दोनो एक जगह बैठ कर बाते कर रहे होते है। तभी उसके बगल मे एक अधेड़ महिला कैदी आकर बैठती है।

अर्चना,रूबी से–ये वही है ना जो उस दिन किसी से बीड़ी मांग कर पी रही थी।

रूबी,अर्चना से–बिल्कुल वही है।

अब अचानक वो अधेड़ महिला कैदी जिसका नाम ललिता है इन दोनो के सामने आकर खड़ी हो जाती है।

ललिता,रूबी से–बहना तेरे पास कुछ है क्या ?

रूबी,ललिता से–आगे बढ।

ललिता,रूबी से–भगवान तुम्हारा भला करेगा। अगर है तो दो।

रूबी,ललिता से–क्या कुछ है मेरे पास ? जो तुझे दूँ, और भगवान मेरा अगर भला करे तो मै यहां रहती

तेरा कंकाल से चेहरे को देखने के लिए।

ललिता,अर्चना से–बहन तेरे पास कुछ है।

रूबी,ललिता से–हमदोनो के पास तुझे देने के लिए कुछ नही है, और जो है वो तु ले नही सकती। तुम उसके पास जाओ जिससे कल तुमने बीड़ी ली थी।

ललिता,रूबी से–तो तुम जानते हो कि हम तुमसे बीड़ी ही मांग रहे है, और तुमने कल हमे देखा था बीड़ी

पीते हुए।

रूबी,ललिता से–षुरू करने से लेकर अंत करने तक देखा था तुम्हे, कैसे तुम बीड़ी पीने वक्त सिर्फ बीड़ी

पर ही ध्यान दे रही थी। हमलोगो का वो ब्रांड नही है जो तुम मांग रही हो , और जो

ब्रांड लेते है वो है नही तो बोलो तुम्हे कहां से दे ?

ललिता,रूबी से–अब मै क्या करू ?

रूबी,ललिता से–तु योग कर आगे जाके।

वो अधेड़ महिला कैदी अब आगे बढ जाती है।

अर्चना,रूबी से–कितने लाचार लोग यहां आ जाते है।

रूबी,अर्चना से–लाचार लोग ! जरा बाहर तो इसे निकलने दो यही तुम्हारे पहचान मे नही आयेगी और

जरूरत पड़ी तो तुम्हे अपना षिकार भी बना सकती है।

अर्चना,रूबी से–लगता है नषे की लत ने इसे (ललिता) जकड़ लिया है पुरी तरह से।

रूबी,अर्चना से–जाने दो, मजा ये (ललिता) लेगी तो सजा भी तो इसे ही भुगतना पड़ेगा।

फाईनली रिजल्ट आने के एक दिन पहले वाली सुबह को,,,,,,,,

आर्चना सबेरे–सबेरे अपने आने वाले फैसले के बारे मे सोच कर उदास बैठी है और पेड़ पर चह–चहाते हुए पक्षियो की आवाजे एकदम ध्यान लगाकर सून रही होती है। पास मे उसके रूबी आकर बैठती है,,,,

रूबी,अर्चना से–तो कल के बारे मे सोच रही हो।

अर्चना,रूबी से–(सर हिलाकर) हां।

रूबी,अर्चना से–घबराओ नही ऊपर वाले की कृपा से सब ठिक ही होगा।

अर्चना,रूबी से–अगर नही हुआ तो मेरी जिंदगी तो यू ही जहन्नूम बन कर रह जायेगी।

रूबी,अर्चना से–तुम जैसा सोचोगे वैसा ही होगा। इसलिए अच्छा सोचो, अच्छा ही होगा। ज्यादा सोचकर भी

कर क्या सकती हो, जो होने का होगा वही तो होगा, या कोई आबाद होगी या बर्बाद। पर

कुछ ना कुछ तो होगा ही। इसलिए मन मे मलाल नही रखो।

अर्चना,रूबी से–आज का दिन तो मेरे लिए सौ दिनो के बराबर है। जो बहुत धीरे–धीरे कटेगा। एक पल

एक घंटे और एक घंटे एक दिन के बराबर लग रहा है मानो। ऐसा मेरे साथ पहली बार हो

रहा है और अजीब सा फिलिंग दे रहा है। कुछ भी अच्छा नही लग रहा है मन बेचैन है,

कदम चल नही पा रहे है, मानो वो थम सी गई है। नजरे कही टिकी हो पर ध्यान केवल

और केवल एक ही जगह पर जाकर अटक गई है।

रूबी,अर्चना से–तुम जिस खबर का बेचैनी से इंतेजार कर रही हो, वैसी जगह जो भी रहेगा उसका भी वैसा

ही हाल होगा।

अर्चना,रूबी से–तुम्हारा षुक्रगुजार हुँ , इस तरह मेरा हौसला बढाने के लिए। मै तुम्हे कभी नही भुल

पाउंगी।

इधर आज रात मे अंकेष एक अलग ख्यालो मे डुबा हुआ है, सुक्खी अपने बेड पर सोया हुआ है और अंकेष अपने बेड पर आँखे खोले हुए पीठ के बल लेट कर कल अर्चना को लेकर आने वाले फैसले के बारे मे सोचकर परेषान है कि ना जाने कल क्या होगा ? किसी की तकदीर बनेगी या हमेषा के लिए उसका आषियाना उजड़ जायेगा। अगर फैसला पक्ष मे आया तो ठिक, नही तो दिल के अरमां ना जाने कितने तरह के आँषू वाली नदियाँ बन कर बहेगी, एक माँ की उसके अपने बेटे के लिए यह कोई नही जानता। अंकेष मन ही मन यह भी सोचता है कि वो अर्चना को लेकर किस उधेर–बुन मे फँस से गए है ,जो मछली के उस कांटे की तरह गले मे फंस गई है जो ना ही निगलते बन रहा है और ना ही उगलते बन रहा है। पर वह सुक्खी को सोते हुए उसके मासुम चेहरे को देखकर पल भर के लिए सारे परेषानी को भुल जाता है और उसे सही सलामत उसकी माँ (अर्चना) को सौपने के लिए एकदम से जोष के साथ तैयार है।

अंकेष करवटे लेकर अर्चना के साथ बिताये अपने पुराने दिनो को याद करते हुए षुकुनं के साथ गहरी नींद मे सो जाता है।

आमुमन आज वो सुबह आ चुकी है जिसका पिछले पाँच दिनो से अर्चना,अंकेष,सुकेष, और सबसे ज्यादा सुक्खी को और उसके साथ–साथ इस सबो को जानने वाले को इंतेजार था।

सबेरे–सबेरे बिस्तर पर सुक्खी की आँखे खुलती है और बिस्तर पर से ही,,,,,

सुक्खी,अंकेष से–तो आज मम्मी आ जायेगी ना घर।

अंकेष,सुक्खी से–हां ! जरूर ।

सुक्खी,अंकेष से–तो कब चलेंगे मम्मी को लाने के लिए।

अंकेष,सुक्खी से–चलेंगे दोपहर के समय मे।

सुक्खी,अंकेष से–पक्का ना।

अंकेष,सुक्खी से–एकदम मिठे आम की तरह। मै अभी ऑफिस जाऊंगा और दोपहर को वहां से आने के

बाद तुम्हे लेकर आज मम्मी को लेने जायेंगे।

सुक्खी,अंकेष से–वॉव ! आज तो मजा आ जायेगा।

अंकेष,सुक्खी से–बहुत ही ज्यादा मजा अयेगा आज।

अंकेष मन ही मन सोचता है कि हे भगवान काष इस बच्चे का दिल आज ना टूटे। वरना ये अंदर से टूट जायेगा।

इधर जेल मे अर्चना अपने बिस्तर को थोड़ा लेट छोड़ती है और बराबर से अपने आने वाले फैसले के बारे मे ही सोची जा रही है। उसे एक तरफ अपने दिमाग मे ये भी ख्याल आता है, कि हो सकता है कही ना कही उसके पति सुकेष रूपये खर्च करके कही फैसला मेरे विरूद्ध ना करवा दे। पर सबेरे–सबेरे होने के कारण वो इन सब बातो को ज्यादा नही सोचने से बचती है और अपने बिस्तर से उठकर अपने बिस्तर को समेटने लगती है, बिस्तर समेटने के बाद वो बाहर सीढी पर जाकर बैठ जाती है, और लोगो के दिनचर्या को गौर से देखने लगती है और मन ही मन ये सोचती है कि कल षायद हम यहां होंगे या नही होंगे। क्या यहां आज मेरी आखिरी सुबह है या कल से फिर इन्ही लोगो के साथ रहना पड़ेगा हमेषा के लिए। आज की रात मै अपने बच्चे के साथ अपने घर मे बिताउंगी या बाकी रातो की तरह यही जेल मे बिताना पड़ेगा। वह दिवाल पर लगे घड़ी के कांटे को देखती है जिसमे सुबह के 05:40 बज रहे होते है। अब पीछे से रूबी आकर उसके कंधे पर अपने हाथ रखती है।

रूबी,अर्चना से–घबराओ नही सब ठिक ही होगा। पर हमसे मिलने जरूर आना।

अर्चना,रूबी से–मिलने नही तुम्हे लेने ही आउंगी।

रूबी,अर्चना से—इस बात का तो हमे इंतेजार रहेगा। लेकिन पहले तुम निकल तो जाओ, यही बात से तो

मै आनंदित हो जाऊंगी। तुम खुषनसीब हो कि इतने लोगो के बीच मे से तुम्हे कोई इस

दलदल से निकालने वाला है। सोचो मत ज्यादा, सभी दिनो के जैसे अपने—आप मे बिजी

रहो, दिल को हल्का करके। दिल को भारी मत बनाओ,वरना सांसे अटक जायेगी।

अर्चना,रूबी से—देखते है आज का दिन हमारे लिए क्या पैगाम लेकर आता है ? या तो जेल छुटेगी या घर

द्वार।

रूबी,अर्चना से—चलो फिर, लाईने लंबी हो जायेगी,(रूबी अर्चना को वॉष रूम के बारे मे कहती है) नहा कर

अपने—आप को तरोताजा भी महसूस कर सकती हो।

अब अर्चना और रूबी दोनो अपने दिन—चर्या मे लग जाती है।

इधर अंकेष सबेरे के 10:00 बजे तैयार होकर अपने वकील के पास कोर्ट पहुँचता है। उसे आते देख उसका वकील पाठक जी मन ही मन ये सोचने लगते है कि ये अंकेष तो आज समय से पहले आ गया,ना जाने आज इसके केष का क्या फैसला आने वाला है, इसे खुषखबरी मिलेगी या फिर निराषा हाथ लगेगी , अगर बेचारे का काम ना हुआ तो ना जाने ये मुझे कितना कोसेगा। अब तक अंकेष पाठक जी के पास पहुँच जाता है।

अंकेष,पाठक जी से—नमस्ते।

पाठक जी अब अपने चेहरे पर थोड़ी मुस्कुराहट लाते है।

पाठक जी,अंकेष से—आईये , आईये। बड़ी जल्दी आ गए आप।

अंकेष,पाठक जी से—क्या करे ? मन मे कुछ हलचल ही ऐसी मची हुई है कि जल्दी आना पड़ा। तो कब

चलेंगे जज साहब के पास।

पाठक जी,अंकेष से—पता करवा लेते है कि उस दिन का फैसला जज साहब आज कितने बजे सुनायेंगे।

अंकेष,पाठक जी से—तो आपको कैसा लग रहा है, क्या फैसला होगा जज साहब का।

पाठक जी,अंकेष से–सारे सबूतो और गवाहो को हमने इतने बारिकी से जज साहब के सामने पड़ोसा है कि

वो जो भी फैसला सुनायेंगे आपके हक मे ही सुनायेंगे। आप बेफिक्र रहिए।

पाठक जी,अपने सहायक वकील से–(केष नं0 लिखकर देते है) जाईये इस केष के बारे मे पुछियेगा कि

इसका फैसला सुरक्षित रखा गया था वो कितने बजे सुनाया जायेगा।

अब उसका सहायक वकील सरकारी पेषकार के पास जाता है ,जहां पता चलता है कि उस दिन का फैसला दोपहर के बाद 04 (चार) बजे सुनाई जायेगी। यह बाते वो आकर अपने सीनियर वकील पाठक जी को कहता है।

पाठक जी,अंकेष से–चार बजे। चार बजे रेडी रहियेगा अपने कलेजे को थाम करके। क्योंकि आपका वक्त

चार बजे के बाद बदलने वाला है।

अंकेष,पाठक जी से–इंतेजार की घड़ी तो लंबी होती जा रही है,कैसे सम्भाले अपने आपको इतने देर तक ?

पाठक जी,अंकेष से–खुद को सम्भालना भी अपने आप मे एक कला है, जो सबो मे नही होती। कुछ

बिखड़ते है तो कुछ निखरते है। हौसला रखिये, उम्मीदो को उड़ान जरूर मिलेगी।

अंकेष,पाठक जी से–हां उसके अलावे और चारा ही क्या है ? मै आता हुँ चार बजे।

अब अंकेष वहां से निकलकर अपने ऑफिस पहुँच जाता है और अपने कुछ जरूरी कामो को निपटाकर 04 (चार बजे) दोबारा पाठक जी के पास लौटता है। पाठक जी भी अंकेष का इंतेजार कर रहे होते है। जैसे ही अंकेष पाठक जी के पास पहुँचता है ,,,,

पाठक जी,अंकेष से–चलिए। देखते है क्या होता है ?

पाठक जी और अंकेष दोनो कोर्ट रूम मे पहुँचते है। कोर्ट रूम मे जज पहले से किसी और केष की सुनवाई कर रहे होते है। वहां पहले से सुकेष के वकील वर्मा जी बैठकर फैसले का इंतेजार कर रहे होते है। यह देख पाठक जी वकील के लाईनो मे जाकर बैठते है और अंकेष को दर्षक दीर्घा मे जाकर बैठने के लिए कहते है। अब वर्मा जी की नजरे पाठक जी पर पड़ती

है फिर दोनो एक दुसरे को देख कर मुस्कुराते है और जज साहब की बातो को ध्यान से सुनने के साथ ही केष के फैसले का इंतेजार करने लगते है। इधर दर्षक दीर्घा मे बैठे अंकेष फैसला सुनने के लिए बैचेन है और अपने आप को एकदम से षांत करके रखा हुआ है। कोर्ट रूम मे थोड़ी बहुत लोगो की सुगबुगाहट है, जो लोग अपने–अपने केषो को लेकर चर्चा कर रहे है। कुछ पलो के बाद अंकेष देखता है कि सुकेष अपने एक नये साथी के साथ कोर्ट रूम मे पहुँचता है और वो अपने वकील वर्मा जी के पास जाकर उसे अपनी उपस्थिति के बारे मे बताता है। फिर वर्मा जी उसे ईषारो मे दर्षक – दीर्घा मे जाकर बैठने के लिए कहते है। वो पहले से ही अंकेष को देख चुका होता है और बैठने के साथ एक बार फिर पलटकर अंकेष को देखता है। अंकेष यह देखकर अपने–आप मे थोड़ा अन–कम्फर्टेबल महसूस करता है और लंबी सांसे लेकर खुद को रिलेक्स करता है। फिर उसकी तरफ से ध्यान हटाकर अपना फोकस जज साहब की बातो पर लगाता है। मानो उसे कोई देख रहा है और अंकेष उसे नजर अंदाज कर रहा हो। अब कुछ पलो के बाद अर्चना के केष का फैसला जज साहब सुनाने को तैयार है। जज साहब जैसे ही केष नं0 बोलते है,,,,,,

अंकेष डर के मारे अपनी आँखे बन्द कर लेता है। आगे क्या होने वाला है ये हम आगे बतायेंगे।

अब षाम के छः बजे वो अर्चना के पास पहुँचता है, मानो उसकी खुषी का कोई ठिकाना ना रहा हो, वो जल्द से कोर्ट के रिलिज आर्डर जेल के गेट के अंदर भिजवाता है। गेट पर खड़ा पुरूष सिपाही रिलिज आर्डर लेकर जेल सुप्रीडेन्टेन्ट के पास जाता है। अब वहां जेल सुप्रीडेन्टेन्ट उसे पढकर आवष्यक कागजी प्रक्रिया पुरी करने के बाद एक महिला सिपाही को अर्चना को बुलाने के लिए कहता है। अर्चना षाम के समय खाना खाने के लाईन मे लगी ये सोच रही है कि आज अभी तक ना तो ये अंकेष आया है और ना ही कोई खबर,लगता है फैसला मेरे पक्ष मे षायद नही आया होगा। यह सोचते हुए अर्चना एकदम से लाचार होकर लाईन मे खड़ी है, और अपने आने वाले भविष्य के अंधकार को देखकर एकदम से डरी सी हुई है। अपने बच्चे सुक्खी के बारे मे सोचकर वो सोचने लगती है कि अब वो मेरे बिना कैसे रहेगा और कितने दिनो तक हमसे दूर रहेगा। मै अगर बाहर ना निकल सकी तो मेरा बच्चा ना जाने कितना परेषान हो जायेगा अपने जिंदगी मे, और क्या अंकेष

मेरे बिना अकेले रह पायेगा, या आगे वो कही कोई गलत कदम ना उठा ले। वह किस तरह से सुक्खी का आगे देखभाल करेगा, या देखभाल करने मे कोई कमी ना कर दे ये सब परेषानी के कारण।

अब अचानक से अर्चना को पुकाराने की एक आवाज आती है, जब एक महिला सिपाही उसका नाम पुकार रही थी। फिर अर्चना झट से उसके तरफ मुड़ती है,,,,,,

महिला सिपाही,अर्चना से–चलो, तुझे जेलर साहब बुला रहे है,षायद आज तु निकलने वाली है। खाना बाद

मे खा लियो, पीछे वाले को बोल दे तेरा खाना ले लेगी।

यह बात सुनते ही अर्चना अपनी आँखे बन्द करके खुषी की अनुभूति वाली आनंद महसूस करती है,उसकी धड़कने तेजी से धड़कने लगती है,आँखो से आंषू निकलनी षुरू हो चुकी है, हाथो से वो अपने आषुओ को पोछने लगती है, ना जाने वो एक पलो मे कितनी बीती हुई यादो को छोड़ कर आगे बढने को तैयार है। वो आसमां को देखकर दिल खोलकर रोने को तैयार है। भविष्य मे सुक्खी और अंकेष से होने वाली उसकी मुलाकात की तस्वीरे उसके दिमाग मे छपने लगी है। आगे–पीछे खाना लेने के लिए लाईन मे लगी सभी महिला कैदी उसे देख कर उसके हाव–भाव को निहारने मे लग जाती है और आपस मे इसके छुटने की चर्चा करने लगते है।

एक महिला कैदी,दुसरे महिला कैदी से–चलो इसे चहार दीवारी से छुटकारा मिल गई, आज से आजाद हो

गई ये।

दुसरी महिला कैदी,पहले से–हां, पर बहुत कम दिन ही हुए थे इसके यहां पर। मेहरवान है इसपर वो (ऊपर

देखते हुए) जो आज तक हमपर नही हुए।

अर्चना अब अपने खाने की थाली अपने पीछे वाली महिला कैदी को थमाती है और वो हल्के कदमो से धीरे–धीरे बढते हुए जेलर के पास पहुँचती है।

जेलर,अर्चना से–क्या नाम है तुम्हारा ?

अर्चना,जेलर से–अर्चना प्रिया ।

जेलर,अर्चना से–ओ ! तो अर्चना तुम ही हो। तो बोरिया–बिस्तरा समेट लो, तुम्हारा रिलिज आर्डर आया है,

और तुम्हे आज और अभी ही यहां से जाना होगा। आधे घंटे है आपके पास, रेडी होकर

आ जाओ। (रजिस्टर अर्चना की तरफ बढाते हुए) यहां सिग्नेचर किजिए।

अर्चना रजिस्टर मे सिग्नेचर करती है और दोनो हाथो को जोड़ कर जेलर को नमस्ते करती है।

जेलर,अर्चना से–तो कैसे आना हुआ था यहां (जेल मे)

अर्चना,जेलर से–मेरे पति के द्वारा प्रताड़ित किया गया है हमे ,और झुठा आरोप लगाया गया हमपर। बहुत

खराब दौर से गुजरे है हम । एक छोटा बच्चा है हमारा लगभग 07 (सात) साल का। जो

हमारे बिना अभी रह रहा है।

जेलर,अर्चना से–(अपना सर हां मे हिलाते हुए) हां मै समझ रहा हुँ ,ऐसे मे एक माँ की परेषानी को। पर

जाईये अब आप आजाद है। पर आगे की जिंदगी सम्भल कर जीना और धोखा खाने से

बचिये।

अर्चना,जेलर से–(सर झुकाकर) जी।

अब अर्चना वहां से तेजी से निकलती है अपने सामान लेने के लिए और इसी के बीच उसकी नजरे रूबी को खोज रही है, जैसे ही उसके सामने रूबी आती है, अर्चना रूबी के गले से लिपटकर रोने लगती है। रूबी भी उसे जोड़ से अपने बाहो मे थाम लेती और उसके भी आँखो से या खुषी के आँसू हो या अर्चना से बिछड़ने वाले गम के आँसू वो रोक नही पाती है।

रूबी,अर्चना से–बहुत खुष हुँ आज यह जानकर की तु आजाद होने वाली हो।

अर्चना,रूबी से–(चौकते हुए) तुम्हे पता है।

रूबी,अर्चना से–मैने पता कर लिया। क्योंकि जब किसी को इस समय बुलाया

जाता है तो मानो की उसे आजादी मिल गई है, और तुम तो दौड़ते हुए मुस्कुराकर आ रही

हो मेरे पास, तो फिर हम कैसे ना समझे की इसकी वजह क्या हो सकती है ? तो अब

कैसा लग रहा है, अपने–आप को हमलोगो से अलग पाकर ?

अर्चना,रूबी से–मानो की एक पल मे सबकुछ बदल सा रहा है, और हमारी उलझी हुई सारी चीजे

अपने–आप सुलझने लग रही हो।उलझनो के बादल बड़ी तेजी से सर पर से हटने लगे है।

अपनो से मिलने की खुषी आत्मा को आनंदित कर रही है। दिलो से बोझ हटने के बाद

दिल एकदम हल्का–हल्का सा लग रहा है। पर दुख एक बात की है कि अब हर दिन

तुमसे ना मिल पायेंगे।

रूबी,अर्चना से–(अब एक दुसरे के गले को छोड़कर अलग होते है) कभी–कभी तो मिलने आओगे। मै

तुम्हारा इंतेजार करूंगी। कितने समय दिए है तुम्हे जेलर साहब ने रेडी होने के लिए।

अर्चना,रूबी से–आधे घंटे।

रूबी,अर्चना से–अपने घरो से कही जाने के लिए तैयारी के लिए तो तुम्हारे लिए आधे घंटे ज्यादा नही होते

होंगे, लेकिन यहां तुम्हे इसी आधे घंटे मे तैयार होना होगा, चलो।

फिर ये दोनो अपने कमरे कि तरफ बढते है।

बाहर मे अंकेष अर्चना के निकलने पर उसकी एक झलक पाने के लिए बेताब सा है। उसके लिए मानो समय थम सा गया हो और इंतेजार की घड़िया खत्म नही हो रही है। वो जेल के बड़े से गेट के सामने सुक्खी के साथ उसकी हाथो को पकड़ कर अपने कदमो को आगे पीछे चला कर इंतेजार की वक्त को बहुत जल्दी पीछे छोड़ना चाहता है। इसी बीच सुक्खी का अंकेष से सवाल पर सवाल करना जारी है।

कहते है अंधेरे से दुर मे भी एक रोषनी दिखाई दे तो वो अंधेरे से बाहर निकलने की ताकत देती है। जिस पर अंकेष आज खड़ा उतरने वाला है।

सुक्खी,अंकेष से–मम्मी क्यो नही आ रही है ? बहुत देर लग रहा है। इतनी देर क्यो लग रही है मम्मी को

आने मे।

अंकेष,सुक्खी से–कुछ आवष्यक लिखने–पढने वाली काम होती है, जो हो रही होगी, जिससे लेट लग रहा

है। तुम्हे जितना इंतेजार है उनता ही बेसब्री से तो मै भी उसका इंतेजार कर रहा हुँ ,मेरे

बच्चे। घबराओ नही आज तुम्हारी माँ को लेकर ही जायेंगे।

सुक्खी,अंकेष से–तो हमलोग अंदर क्यो नही जा रहे है ? मम्मा के पास।

अंकेष,सुक्खी से–अंदर जाने के लिए हमलोगो को नही मिलेगा। हो सकता है तुम्हारी मम्मी तैयार हो रही

होगी।

सुक्खी,अंकेष से–जेल से तैयार होकर कहां जायेगी ,उसे घर ही तो आना है।

अंकेष,सुक्खी से–षायद अपने कुछ कपड़े और सामान पैक कर रही होगी।

वहां गेट पर खड़े सिपाही थोड़ी मुस्कुराहट के साथ सुक्खी को देख रहा है। सुक्खी की नजरे उस सिपाही पर पड़ती है पर सुक्खी उसे देखकर कोई प्रतिक्रिया नही देता है,फिर धीरे से उसके पास पहुँचता है।

सुक्खी,सिपाही से–अंकल मेरी मम्मी कितने देर मे बारह आयेगी।

सिपाही,सुक्खी से–थोड़ा इंतेजार करो, आ जायेगी। तो क्या नाम है मम्मी के बच्चे का।

सुक्खी,सिपाही से–सुक्खी।

सिपाही,सुक्खी से–तुम्हारे नाम मे तो लॉजिक है।

सुक्खी,सिपाही से–मेरी माँ ने रखा है।

सिपाही,सुक्खी से–कुछ सोच समझ कर ही रखा होगा।

इधर जेल के अंदर दोनो के कैदखाने वाले कमरे के पास पहुँचने के समय चलते चलते ,,,,,

रूबी,अर्चना से–तो कोई लेने आया है या सिर्फ आर्डर ही आया है रिहाई का।

अर्चना,रूबी से–कैसी बात कर रही हो ? आया होगा वो (अंकेष, सुक्खी) ।

रूबी,अर्चना से–तो हमारी याद आयेगी।

अर्चना,रूबी से–यहां तो तुम्ही एक सहारा थे ,मुझे सहारा देने के लिए। खास करके यहां की बाते कोई कैसे

भुल सकता है ?

रूबी,अर्चना से–भुलने के लिए तो लोग अपने–आप को भुल जाते है। किस्मते कहां है वैसी हमारी जो कोई

हमे अपनी जह़न मे भी उतारे।

अर्चना के पैर अब थम चुके है, वो रूबी के चेहरे की तरफ बड़े आराम से देखती हुई अपनी आँखे बन्द करती है और उसके कंधो पर हाथ रखकर उसे तसल्ली देती है।

अर्चना,रूबी से–ऐसी कोई बात नही तुम्हारी जिसे हम भुल गए हो। चाहे वो तुम्हारी माँ–पिता के प्यार के

बारे मे हो, या तुम्हारी छोटी बहन के बारे मे हो, या कमबख्त तुम्हारे पति के बारे मे हो, या

तुम्हारी बचपन की वो सुनहरी यादे जो तुमने अपने सहेली लौकी के साथ बिताई हो। मै तो

ये भी नही भुली की तुम्हारा पहला,,,,,,

रूबी,अर्चना से–बस कर, मेरे आँसू बहुत किमती है।

अब दोनो काल कोठरी मे प्रवेष करते है,,,और अर्चना अपने कपड़े और कुछ वैसे सामान जो उसे जेल से ना मिले हो जिसे वो अपने साथ ले जा सकती है उसे समेटन लगती है। इसमे रूबी भी उसकी मदद करने मे जुट जाती है।

रूबी,अर्चना से–आधे घंटे तो तुम्हे जेलर साहब ने ज्यादा ही दे दिया। इतनी सामान तो मै पाँच मिनट मे

समेट दूँ।

अर्चना,रूबी से–कुछ निषानी तेरे लिए छोड़ के जाउंगी।

अर्चना अपनी एक चादर रूबी के हाथो मे पकराती है।

अर्चना,रूबी से–लो इसे , रात मे जब ठंड लगे तो इसे ओढ़ लेना। पास मे ना सही , पर दुर ना होने का

तुम्हे एहसास होगी मेरी, रख ले।

रूबी के चादर ना लेने पर अर्चना उसे अपने से चादर ओढ़ा देती है।

रूबी,अर्चना से–तुम मेरे होने वाले बच्चे के बाप हो कि निषानी देकर ही जाओगे।

अर्चना,रूबी से–मॉसी।

अब झट से दोनो मिलकर अर्चना की सामान समेटने मे लग जाते है। रूबी बाहर से खुष है पर अंदर–अंदर उसका दिल बैठा जा रहा है यह जानकर की कल तक जिसके साथ वो दिन रात बैठकर अपना समय बिताती थी वो अचानक से उसे छोड़कर जा रही है। उसके मनोभाव को अर्चना भांप चुकी है।

अर्चना,रूबी से–मत रोओ। मै तुमसे मिलने आउंगी, और कोषिष करूंगी तुम्हारे लिए (रिहाई के लिए)।

इतना कहते ही रूबी अर्चना के गले से लिपट कर रोने लगती है और अर्चना भी रोते हुए उसके आँसू पोछने लगती है।

अर्चना,रूबी से–तुमसे कोई जान–पहचान नही थी हमारी, पर कुछ ही दिनो मे ऐसा लग रहा है कि तुम मेरे

कितने करीब हो। ऐसा लग रहा है जैसे किसी अपने को छोड़कर किसी अपनो के पास

जा रही हुँ। अपने जज्बातो को तुमने कितना दबा के रखा था, आज पता चला तुम मुझे

कितना चाहती हो।

अब दोनो सामान उठाकर जैसे ही काल–कोठरी से बाहर निकलते है, बाहर अर्चना को करीब से जानने वाली दो –चार महिला कैदी उससे मिलने के लिए खड़ी है। तभी उसके हिस्से की थाली मे खाना लिए एक महिला कैदी उसके सामने पहुँचती है।

महिला कैदी,अर्चना से–ये ले बहना ,तेरे हिस्से का खाना अंतिम दफा यहां के लिए।

अर्चना प्यार से उसकी हाथ पकड़ लेती है और मन ही मन उसके प्रति अपने लिए आभार प्रकट करती है।

रूबी,अर्चना से–खा लो। इस खाने के साथ यहां के लोगो का प्यार भी तुम्हारे साथ जायेगा।

अर्चना,खाना लेकर आये महिला कैदी से–ख्याल रखना तुम लोग अपना। मै भगवान से प्रार्थना करती हुँ कि

तुम लोगो के साथ भी न्याय हो।

सामने खड़ी दो–चार महिला कैदी से भी अर्चना जाकर उन सबके हाथ पकड़कर उससे अपनी बिदाई लेती है। अब अर्चना बरामडे की सिढी पर रूबी की हाथ पकड़ कर बैठती है और अपने साथ रूबी को भी खाना खाने को कहती है। दोनो साथ मिलकर खाना खाते है। खाना खाकर दोनो जेलर साहब के ऑफिस वाले रूम मे पहुँचते है।

जेलर,अर्चना से–आ गए। तो आपके कुछ सामान जो यहां हमारे पास रखे गए थे वो इसमे (एक छोटा सा बैग अर्चना को बढाते हुए) है, आप देख लिजिए और यहां पर सिगनेचर कर दिजिए।

अब अर्चना उस बैग को खोल कर अपने सामानो की पहचान और संख्या देखती हैं।

जेलर,अर्चना से–ठिक है सब।

अर्चना,जेलर से–हां हमारा ही है और ठिक है।

अब सामान रिसिव कराने वाले रजिस्टर मे जेलर अर्चना का सिगनेचर लेता है और उसे वहां से बाहर जाने के लिए अपने स्तर का एक रिलिज गेट पास देता है और जाने को कहता है।

जेलर,महिला सिपाही से–इसे छोड़ के आईये गेट मे बाहर तक।

जेलर के ऑफिस के दरवाजे के बाहर से रूबी अर्चना पर बराबर ध्यान लगाये हुए है। अब जैसे ही अर्चना जेलर के ऑफिस से निकलती है रूबी उसके साथ आगे बढने लगती है। जो मुख्य दरवाजे के पहले वाले दरवाजे तक उसके साथ–साथ चलती है। फिर अचानक से अर्चना को पीछे से एक आवाज आती है।

'''तो हमे भुल गई '''''

अर्चना और रूबी दोनो पलट कर देखती है तो वो देखती है कि पीछे षालिनी है, जो इन लोगो से जेल मे पहले काफी लड़ाई करती थी।

षालिनी,अर्चना से–हम थोड़े खफा क्या हुए, तुमने तो हमारी निषां ही मिटा दी। हमारे लिए भी थोड़ी

जिंदगी जीना खुले हवा मे आजादी से,जो हम कैद होते हुए नही जी सकते। हमारी सारी

गलतिया माफ कर देना बगैर इसके की जो हमने जान बुझ कर की हो। उसके लिए

ऊपर वाला हमें सजा देगा ,जरूर।

अब अर्चना जाकर षालिनी के हाथो को पकड़कर उसे एकसास दिलाती है कि वो उससे गुस्सा नही है।

अर्चना,षालिनी से–मै तुमसे गुस्सा नही हुँ। मै तुम पर हुए गुस्से को हर दिन थुकती थी सबेरे–सबेरे ब्रष

करते समय।

षालिनी,अर्चना से–अब तुम गुस्से को थुकती थी या मेरे मुँह पर थुकती थी ये तो मुझे नही पता, पर यहां

से तुम्हे मुझे माफ करके जाना पड़ेगा।

अर्चना,षालिनी से–माफ करती हुँ तुम्हे दिल से मेरी बहना। आ गले लग जा।

यह सारी बाते रूबी देखकर अपने–आप मे चिरचिरा सी हो रही है, पर इसी बीच अर्चना रूबी को अपने पास बुलाकर षालिनी की हाथ उसकी हाथो मे पकड़वाकर दोनो से ,,,,,,,,,

अर्चना,षालिनी और रूबी से–तुम दोनो अब कभी भी झगरा मत करना। मै जब भी आउंगी दोनो से मिलने

आउंगी।

अब रूबी और षालिनी एक दुसरे की नजरो मे देख कर दोनो एक दुसरे से ईषारो–ईषारो मे माफी मांगते है। अब सभी लोगो से अर्चना का बिदाई लेने का समय आ चुका है ,वो जब तक मुख्य गेट के बाहर नही निकल जाती रूबी तबतक उसे पीछे वाली गेट से निहारती रहती है। अंतिम मे अर्चना पीछे मुड़कर देखती हुई अपने हाथो को हिलाकर एक प्यारी सी मुस्कान के साथ रूबी को बॉय करती है और मुख्य दरवाजे के उस पार चली जाती है।

षालिनी,रूबी से–चल आज हमलोग खाना खाते है साथ मे।

अब अर्चना मुख्य गेट से बाहर निकलती है और खुले हवां मे जोड़ से दम भरते हुए लंबी सांसे लेती है। सामने वो सिर्फ अंकेष को ही देखती है और खुषी से मुस्कुराती हुई उसके तरफ बढती है,यह पुछने के लिए की सुक्खी कहां है ? सामने से अंकेष भी उसकी तरफ मुस्कुराते हुए बढता हैं। इसी बीच सिपाही के बगल मे खड़े सुक्खी की नजरे अपनी माँ पर पड़ती है, नजर पड़ने के साथ ही वो तेजी से दौड़कर माँ को आवाज लगाते हुए अपनी

माँ से जाकर लिपट सा जाता है। ऐसा होते देख अर्चना सुक्खी को अपने गोद मे उठाकर उसे मन भर के चुमने लगती है। तब अंकेष के पास पहुँचने पर अर्चना के द्वारा उसके हाथ पकड़कर उसके कंधे से लिपट जाती है। अर्चना बहुत दिनो के बाद खुले हवा मे अपने बच्चे से मिलने के कारण अत्यधिक भावुकता और आनंदित महसूस करती है। अपने बच्चे को बहुत दिनो के बाद पास मे पाकर अर्चना को अत्यधिक खुषी और सुकूनं मिलती है। जिससे अर्चना अपने बच्चे के प्रमि गहरा प्यार और अपनापन महसूस करती है। वो अब सुक्खी के सुरक्षित और स्वस्थ्य होने की चिंता से मुक्त हो चुकी है। मिलने की खुषी के कारण अर्चना के आंखो मे खुषी के आंसू निकलने षुरू हो चुके है। सुक्खी को भी कुछ इसी तरह माँ के पास खुद को पाकर अपनापन महसूस हो रहा है। माँ को देखकर सुक्खी बहुत खुष और उत्साहित है। माँ के गोद मे खुद को पाकर वो बहुत ही संतुष्ट और आराम महसूस कर रहा है। जो उसे भावनात्मक सहारा दे रही है, और सुक्खी के आंखो से भी इस मिलन की घड़ी मे भावनाओ के आंसू निकलने लगे है। मर्द का दिल कठोर होने के कारण अंकेष इन दोनो के मिलन को बहुत ही आराम से देखकर खुद मे खुष है और दोनो को अपनी बांहो मे पकड़े हुए अपनी गाड़ी की तरफ ले चलने के लिए बढता है। यहां तीनो के खुषी का ठिकाना सातमे आसमान के ऊपर है। अंकेष अर्चना के कंधे पर लटके बैग को उससे अपने हाथो मे लेकर गाड़ी मे रखता है और फिर अर्चना,सुक्खी को पीछे की सीट पर बैठाकर अपने से गाड़ी चलाता हुआ निकलकर एक अच्छे से होटेल मे पहुँचता है डिनर के लिए।

अंकेष,सुक्खी से–तो आज हमलोग डिनर यहां करेंगे, साथ मे।

अंकेष,अर्चना से–तो क्या–क्या खाना पसंद किजिएगा। क्योंकि आज आपके पसंद का डिनर होगा।

गाड़ी पार्क करने के बाद ये तीनो गाड़ी से नीचे उतरते है।

अंकेष,अर्चना से–(वॉषरूम की ओर ईषारा करते हुए) फ्रेष हो जाईये।

अर्चना सुक्खी को गोद मे लिए हुए है।

अंकेष,सुक्खी से–अभी थोड़ी देर मम्मी को छोड़ दो, आओ मेरे पास। मम्मी फ्रेष होने जायेगी।

अर्चना,सुक्खी से–जाओ , मै आ रही हुँ थोड़ी देर मे।

सुक्खी,अर्चना से–जेल से निकल जाने पर भी आप अच्छे से मेरे पास नही आई है। जल्दी आईये।

सुक्खी अब अर्चना के गोद से उतर कर अंकेष की तरफ बढता है। अर्चना वॉषरूम मे जाकर तरो–ताजा होती है। अपने चेहरे को आईने मे मन भर के देखती है। बार–बार हथेली मे पानी लेकर अपने चेहरे को थप–थपाती है और यह महसूस करने की कोषिष करती है कि वो कोई सपना तो नही देख रही है पर इसे हकीकत मानते हुए सोचती है कि अब वो ठिक है और सबकुछ ठिक हो जायेगा। वो अपने दुपट्टे से अपने भीगे हुए चेहरे को बड़े ही इत्मिनान से पोछती है और लंबी सांसे लेती हुई वापस अंकेष और सुक्खी के पास लौटती है, जहां खाने के टेबल पर अंकेष और सुक्खी इसका इंतेजार कर रहे है। अर्चना इनलोगो के पास आकर टेबल के पास वाली कुर्सी पर आकर बैठती है।

अंकेष,सुक्खी से–देखो आ गई तुम्हारी मम्मी।

सुक्खी अपने कुर्सी पर से उठकर अर्चना के गोद मे जाकर बैठने की कोषिष करता है। फिर अर्चना उसे पकड़कर अपने गोद मे बिठाती है।

अंकेष,अर्चना से–तो बोलिए क्या आर्डर करे आपके लिए ?

अर्चना,अंकेष से–वही जो हमेषा हमलोगो के लिए आता है।

अब अंकेष अर्चना और सुक्खी के पसंद के हिसाब से वेटर को बुलाकर आर्डर देता है, फिर षुरू होती है सुक्खी अंकेष का अर्चना के साथ नही होने के समय के दरमियां होने वाले कस्मकष की कहानी।

अर्चना,अंकेष से–तो तुम्हारा ये एहसान हम कभी नही भुलेंगे।

अंकेष,अर्चना से–क्या कहा ? एहसान। ये क्या होता है ? जब आदमी अपने कर्त्तव्य को पुरा करता है तो

उसे एहसान नही कहते। जो मेरा दायित्व था वो मैने किया। हमारे जगह आप भी रहते तो

ऐसा ही करते, आप भी अपने दायित्व से पीछे नही हटते। जिस तरह मर्यादा पुरूषोत्तम

राम, महाबली हनुमान और माता पार्वती ने अपने–अपने दायित्वो को पुरा किया। ठिक उसी

तरह हमने किया, सभी के जीवन मे जब अपने दायित्व निभाने का समय आता है, तो कोई

उसे निभाते है तो कोई पीछे हट जाते है। तो ये मेरा दायित्व है, इसे एहसान ना माने।

अर्चना,अंकेष से–फिर भी आपने जो किया उसका कर्ज कभी अदा नही किया जा सकता।।

सुक्खी,अर्चना से–मम्मा मुझसे भी बात करो ना।

ये बाते सुनकर अंकेष और अर्चना दोनो हंसने लगते है।

अंकेश,अर्चना से–हां ! इससे भी बात कीजिए। हमसे तो आप बहुत बात किए है।

अर्चना,सुक्खी से–हां बेटे,मै तुमसे ही तो बात करूंगी। बोलो तो कितने बदमासी किए तुमने अकेले घर पर।

सुक्खी,अर्चना से–आप नही थे तो मुझे खेलने मे मन ही नही लगा कभी। हमेषा आपका इंतेजार किया

करता था।

अंकेष,सुक्खी से–और मुझे परेषान भी, की मम्मी कब आयेगी–मम्मी कब आयेगी।

अर्चना,सुक्खी से–अब मम्मी आ गयी है। अब उन्हे (अंकेष) परेषान मत करना। अब तुम हमारे साथ

खेलना। अब हमलोग खुब घुमेंगे और मजे करेंगे।

वेटर खाने लेकर आता है, और खाने को सर्व करता है।

अंकेष,सुक्खी से–तो आ गई तुम्हारे और तुम्हारी मम्मी के पसंद की डिस्। अब टूट पड़ो इस पे।

अर्चना,सुक्खी से–बोलो पहले क्या खाओगे तुम ?

सुक्खी ईषारो मे अब पहले खाने वाले ड्सि के बारे मे ईषारा करता है। फिर अर्चना सुक्खी को अपने हाथो से खिलाना षुरू करती है। बीच–बीच मे एक–आद निवाला वो खुद भी खाती है, और अंकेष को भी खाने के लिए उसके प्लेट मे खाना डालती जाती है। होटल मे घर के खाने खिलाने वाली फिलिंग देने मे अर्चना कोई कसर नही छोड़ना चाहती। बड़े मजे से ये लोग खाना खाकर अपने घरो के लिए निकलते है। घर पहुँचने पर अंकेष घर का दरवाजा खोलता है। अर्चना जैसे ही दरवाजे के अंदर जाती है, घर के अंदर खुद को पाकर वो चैन की सांसे लेती है, पर उसे उस तरह के घर का माहौल नही मिलता जैसे वो पहले घर को सजा कर रखती थी। सारे सामान

जगह पर ना होके बेजगह बिखरे पड़े है, पर उसे समेटने का अर्चना का जरा भी मन नही है। वो बड़े सुकून से सुक्खी को गोद मे लिए सोफे पर बैठती है।

अंकेष,अर्चना से–घर तो अभी वैसा नही है जैसा तुम इसे रखती थी। पर अब हमलोग मिलकर घर का साफ–सफाई करेंगे।

अर्चना,अंकेष से–कोई बात नही, हमलोग है तो फिर घर सवर जायेंगे। फिर इस घर को उसी तरह

सजायेंगे जैसे हरी डालियो के बीच मे गुलाब की कली खिली हो। इसे पहले से कही

ज्यादा खुबसूरत बनायेंगे।

अर्चना ईषारो मे अंकेष को अपने पास (सोफे पर हाथ फेरते हुए) बैठने के लिए कहती है,।

सुक्खी,अर्चना से–माम्मा आज हकलोग कहां सोयेंगे।

अर्चना,सुक्खी से–जहां आप सोयेंगे वही हम सोयेंगे।

अंकेष अब बड़े आराम से अर्चना के बगल मे आकर बैठता है। बड़े दिनो के बाद वो अर्चना को इतने करीब पाकर अंदर से आनंद मे डुबा हुआ है, जिस कारण उसे अर्चना को रिहा कराने मे होने वाली परेषानी को भुलने मे जरा भी दिक्कते नही हो रही है, और इसे अभी वो अपने परिश्रम का फल मान रहा है, पर एक बात जो अंकेष के लिए धड़कने रोक देने वाली थी, उस बात को अंकेष अर्चना को कहने से खुद को रोक नही पाता है। ये वो लम्हा है जो आज के दिन अर्चना के केष का अंतिम फैसला जज साहब सुनाने वाले थे। फैसला अर्चना के विरूद्ध ना आ जाये, इसके डर से अंकेष ने अपनी आँखे बन्द कर ली थी। अब अंकेष अर्चना के हाथो को पकड़ता है,आज कोर्ट मे जज साहब द्वारा अर्चना की रिहाई की आर्डर देते समय की बातो को याद करके अर्चना को बताता हैं।

अंकेष,अर्चना से–जिंदगी मे पहली बार मुझे आज के दिन काफी डर लगा था, जब तुम्हारा फैसला जज साहब सुनाने वाले थे। क्या बताये धड़कने रूक सी गई थी मेरी। ऐसा लग रहा था पल मे कुछ बदलने वाला हो, जिससे या तो सबकुछ बिखर जायेगा या सबकुछ निखर जायेगा।

अर्चना,अंकेष से–तुम्हारे जगह पर मै भी रहती तो मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही होता, या हो सकता है इससे

ज्यादा ही होता। मेरी तो सांसे भी रूक सकती थी, वो फैसला सुनने के लिए जो मेरी

जिंदगी बदल सकती थी। चलो जज साहब से मैने ना सूनी,तुम्ही सुनाओ वहां की धड़कने

रोक देने वाली लम्हे को।

अब अंकेष फ्लेष बैक मे जाकर अर्चना को सारी बाते सुनाता है,,,,,,

अंकेष,अर्चना से–आज मै जब कोर्ट पहुँचा और वकील साहब के साथ कोर्ट रूम मे गया तो जज साहब

दुसरे केष क्लीयर करने मे लगे थे,वहां पहले से वर्मा जी केष के फैसले का इंतेजार कर

रहे थे, हम भी बैठ कर फैसले का इंतेजार करने लगे। कुछ देर बाद वहां सुकेष भी अपने

मुंछो पर ताव देता हुआ आया, और अपने वकील से मिलने के बाद वही दर्षक–दीर्घा मे

बैठ गया, वह (सुकेष) हमें भी घूर रहा था। पर मै उसे बार–बार नजर अंदाज कर रहा

था। फिर कुछ ही पलो बाद वो घड़ी आ गई जिसका सबको बेसब्री से इंतेजार था। जज

साहब जैसे ही केष नंबर बोलने के साथ तुम्हारा नाम बोले मैने डर से अपनी आंखे बंद

कर ली। वो लम्हा षरीर मे एक अजीब सी बेचैनी पैदा कर रही थी, ना खुषी थी, ना गम

था, बेस्वाद सा लम्हा था वो ,बिल्कुल डराने वाला। उस समय मै सिर्फ और सिर्फ तुम्हे

और ऊपर वाले को याद कर रहा था।

जज साहब,दोनो वकीलो से–तो दोनो वकील साहब पहुँच चुके है।

वकील साहब कुर्सी से उठकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराते है।

जज साहब,पाठक जी और वर्मा जी से–तो इस केष के सारे सबूतो और महत्वपुर्ण गवाहो,वकील साहबो के द्वारा दिए गए दलिल एवं अदालत के तर्क के आधार पर सारी तस्वीरे साफ है कि इस केष के मुख्य आरोपी निर्दोष है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के अनुसार पीड़ीत की माँ के सर मे माईनर इंजॅरी थी,

जिससे मौत की पुष्टि नही होती है। मौत होने का कारण हृदय गति रूकने को बताया गया है। वहां पर उपस्थित सारे गवाहो के बयान अलग–अलग से थे,जिससे श्रीमति अर्चना प्रिया पर आरोप सिद्ध नही होता है।यहां बाते और भी साफ हो जाती है कि उसके पति श्री सुकेष मजुमदार ने अपनी माँ के मौत के तुरंत बाद अपनी पत्नी को आरोपी नही बनाया। जब उसे पता चला कि उसकी पत्नी किसी दुसरे आदमी के पास रह रही है तो इस बात का भरास निकालने के लिए काफी दिनो के बाद उसने अपनी पत्नी पर आरोप लगाकर उसे साजिस के तहत फसाना चाहा, जो पोस्टमार्टम रिपोर्ट और केष डायरी की तारिख से पता चलता है, जो कि सस्पेंस पैदा करती है। इसलिए श्रीमति अर्चना प्रिया निर्दोष पायी जाती है और उन्हे बाईज्जत रिहा किए जाने का अदालत हुक्म देती है,,,,,,।

जज,पाठक जी और वर्मा जी से–आप लोग जा सकते है।

अंकेष,अर्चना से–(अभी) इतनी सी बाते सुनकर मेरे कलेजे को मानो ''माईनस''50 डीग्री वाली ठंडक पहुँची

हो। लंबी सांसे लेते हुए मैने ऊपर वाले को धन्यवाद किया और फिर तुम्हारा ख्याल आया

मेरे मन मे। ऐसा लग रहा था मै नांचू ,गाऊ और क्या–क्या करू ? पर ये सब छोड़ मै

अपने वकील साहब के साथ बाहर आया,फिर वकील साहब ने हमसे,,,,,

अब अंकेष फ्लेष बैक मे जाकर अर्चना को सारी बाते सुनाता है,,,,,,

पाठक जी,अंकेष से–चलिए भगवान ने आपकी सून ली, मैने कहा था फैसला हमारे पक्ष मे ही आयेगा,

आखिर वही हुआ। थोड़ी देर मे रिलिज आर्डर बन कर जेल चला जायेगा,आप हमसे

पुछ लिजिएगा फिर चले जाईयेगा उसे (अर्चना) लाने के लिए। सुकेष तो अपने वकील

वर्मा जी पर भरका हुआ है। पता नही वो (सुकेष) उसे दिए हुए फिस के रूपये कही

वापस ना मांग ले। डर तो हमें भी था, पर तुम्हारी जीत ने उसे खत्म कर दिया। एक

मिठाई होती है कलाकंद, वो मंगाईये मेरे लिए। कोर्ट मे केष इसी तरह होते है।

कभी–कभी ,हारते–हारते कौन जीत जायेगा, और किसकी किस्मत कब बदल जाये ये

कोई भी नही जानता।

अंकेष,पाठक जी से–मत पुछिये की आपका षुक्रिया अदा कैसे करू ? मै वयां नही कर सकता अपने

षब्दो को आपके सामने।

पाठक जी,अंकेष से–कोई बात नही, आपको जितनी खुषी मिली, उससे ज्यादा खुषी हमे मिलती है अपने

क्लाईंट को बरी करा कर। ऑल द बेस्ट। अब जाईये मुँह मिठा कराईये।

वर्त्तमान मे,,,,,,

अब अर्चना सुक्खी को बगल मे सोफे पर सुला देती है।

अंकेश,अर्चना से–(अभी)मै दौड़ा–दौड़ा गया और मिठाई लाकर वकील साहब का मुँह मिठा कराया, फिर

सुक्खी को लेकर अपने इंतेजार की घड़ी को खत्म करने के लिए तुम्हारे पास दौड़ा चला

आया। इतने कम समय मे इतने भारी–भरकम लम्हे को जो मैने जीया, कसम से बहुत

ज्यादा खतरनाक और डरावना लम्हा था, और तुम्हे जेल से लाने के लिए जो वहां पहुँचा,

वहां जो समय लग रहा था, ऐसा लग रहा था जैसे थाली मे खाना रखा हुआ है और हम

खा नही पा रहे हो।

अर्चना,अंकेष से–पहले तुम मेरा दिल जीते थे, अब तो तुमने हमें पुरा जीत लिया,ये जान हमेषा आप पर

न्योक्षावर होने के लिए तैयार रहेगा ''सनम''।

ये सब आप–बीती और प्यार मोहब्बत वाली बात होते–होते अर्चना और अंकेष दोनो को नींद आने लगती है और दोनो सोफे पर बैठे–बैठे ही सो

जाते है। सबेरे अर्चना की जब नींद खुलती है और तब अंकेष भी जाग चुका होता है तो ,,,,,,,

अर्चना,अंकेष से– तो हमलोग कल रात मे जो बाते कर रहे थे, तब तक हम जेल से छुट चुके थे ना।

अंकेष,अर्चना से–हां तुमको रिहा कराने के बाद हमलोगो को नींद आयी है। पहले नींद आ जाती तो तुम

जेल मे ही छुट जाती।

अर्चना,अंकेष से–ओ कृपया सबेरे–सबेरे इस तरह की बात तो मत करो। बाहर आने पर अब उस जगह का

नाम सुनने पर डर लगता है।

अंकेष,अर्चना से–तो कही वेकेषन पर चले।

अर्चना,अंकेष से–पहले तो हमें इस मर्दो वाली घर को औरतो वाली घर बनाने दो, फिर वेकेषन के बारे मे

सोचते है। तब तक घर के ही हवां मे सांस ले ले।

अंकेष,अर्चना से–हां पुछ लो अपने घर से जरा, इसे क्या–क्या चाहिए ? कुछ हमारे लायक हो तो बताना।

अब ये लोग खुषी से अपने घर मे अपने पल को बिताना षुरू करते है।

फिर पच्चीस दिनों के बाद,,,,

अचानक से कमल की पत्नी अर्चना के पास उसके घर पर पहुँचती है। खट–खटाहट की आवाज सुनकर अर्चना दरवाजा खोलती है। सामने देखती है कि कमल की पत्नी उर्मिला खड़ी है। दोनो एक दुसरे को पहचानते है,पर दोनो की मुलाकात बहुत दिनो के बाद हुई है। कमल की पत्नी थोड़ी घबराई हुइ है, जैसे हर पत्नी अपने पति के घर नही लौटने पर घबराती है।

अर्चना,उर्मिला से–आईय अंदर, क्या हुआ ?

उर्मिला,अर्चना से–आपके ये,,,,, है घर मे ।

उर्मिला के द्वारा सीधे अंकेष को खोजने की बात अर्चना समझ नही पा रही है।

अर्चना,उर्मिला से–बात क्या है ? आप बैठिये तो सही।

उर्मिला,अर्चना से–देखिये ना मेरे पति (कमल) कल रात से घर वापस नही आये है। आपके पति इनसे

बराबर मिलते–जुलते रहते थे, इसलिए षायद उन्हे कुछ पता हो।

अर्चना,उर्मिला से–वो तो अभी घर पर नही है, मै बुलाती हुँ उन्हे (अंकेष)।

ऑफिस मे काम कर रहे अंकेष के फोन की घंटी बजती है। अर्चना का फोन होने के नाते अंकेष झट से फोन उठाता है और ,,,,,,

अर्चना,अंकेष से–(फोन पर) उर्मिला भाभी आयी है, कमल भाई साहब की पत्नी ।

अंकेष,अर्चना से–(फोन पर) कोई विषेष ,,,बात ।

अर्चना,अंकेष से–(फोन पर) कमल भाई साहब कल रात से घर नही आये है, इसी बारे मे पता करने आयी

है।

अंकेष,अर्चना से–(फोन पर) क्या ?

अर्चना,अंकेष से–(फोन पर) हां।

अंकेष,अर्चना से–(फोन पर) तो वो (उर्मिला) अपने सगे–संबंधी, पास–पड़ोस मे पता करवाई।

उर्मिला,अर्चना से–उनको (अंकेष) बुलाईये ना।

अर्चना,अंकेष से–(फोन पर) आप फ्री है तो आ जाईये।

अंकेष,अर्चना से–(फोन पर) ठिक है पहुँच रहा हुँ, थोड़ी देर मे ।

अर्चना,उर्मिला से–वो (अंकेष) आ रहे है। बैठिये।

अर्चना ग्लास मे पानी लाकर उर्मिला को देती है। उर्मिला पानी पीती है, और गहरी सांसे लेती हुई,,,

उर्मिला,अर्चना से–इससे पहले वो कही भी जाते थे तो बोल कर जाते थे, पर कल वो कुछ भी नही बोले,

इसका मतलब वो कही बाहर नही जाने वाले होंगे।

अर्चना,उर्मिला से–घबराईये नही, आ जायेंगे वो।

उर्मिला,अर्चना से–कैसे ना घबराये ? मै ना घबरा रही हुँ ,मेरा दिल घबरा रहा है। ये रूपये के लेन–देन मे

मैने अक्सर ऐसा होते देखा है।

अर्चना,उर्मिला से–कैसा होते ?

उर्मिला,अर्चना से–यही कि लोग किसी–ना–किसी मुसिबत मे फस से जाते है। हर दिन उस रखे हुए रूपये

मे से ले जाकर किसी –ना–किसी को देते थे और षराब पीते थे।

अर्चना,उर्मिला से–रूपये को लोगो के नजरो से बचा के रखना चाहिए। आज का समय कैसा चल रहा है ये

तो सब को पता है। वो इतने समझदार हो के भी इस तरह करेंगे तो कैसे होगा।

अब अंकेष अपने घर पहुँच चुका है। वो देखता है कि उर्मिला और अर्चना दोनो आपस मे बात कर रही होती है, उर्मिला को देखकर अंकेष को लगता है कि वो थोड़ी घबराई हुई सी है। जो अंकेष के पहुँचने पर उसे हताष होकर देख रही है।

अंकेष,उर्मिला से–तो कहां–कहां पता किया आपने ?

उर्मिला,अंकेष से–अपने जान–पहचान के सभी जगहो मे पता करवा लिया, फिर यहां आयी हुँ।

अंकेष,उर्मिला से–अच्छा स्थिर रहिए। मै पता करता हुँ।

अब अंकेष मदन और संतो से कमल के बारे मे फोन पर पुछ–ताछ करता है, लेकिन उसे उतना ही पता है जितना कमल के बारे मे अंकेष को पता है।

अंकेष,उर्मिला से–थाने मे भी रिपोर्ट लिखवाये है।

उर्मिला,अंकेष से–नही ! अभी तक नही। सोची पहले आप लोग से जान लू। हमलोग कल रात से ही

परेषान है।

अंकेष,उर्मिला से–आखिर गया तो गया कहां ये (कमल) ? ऐसे तो इधर–उधर सड़क पर, और नही तो

ष्षराब के ठेके पर नजर आ जाता था। फिर कहां ये नजर बंद हो गया।

अब अर्चना अपने चुप्पी को तोड़ती हुई,,,,,,,,

अर्चना,अंकेष से–पुलिस मे रिपोर्ट दर्ज करवाईये। ऐसे बैठ के रहने से नही होगा। चलिए हम सब चलते है।

अंकेष,उर्मिला,से–कल कितने बजे घर से निकले थे ?

उर्मिला,अंकेष से–यही समय था, दो या तीन बजे के बीच मे।

अंकेष,अर्चना से–लगभग 24 (चौबिस) घंटे होने को है ? रिपोर्ट दर्ज हो जायेगा।

अंकेष,उर्मिला से–चलिए थाने।

अर्चना,उर्मिला से–कुछ नास्ता कर लिजिए।

उर्मिला,अंकेष से–कैसे खाने का मन करेगा मेरा ? उनके (कमल) बिना हाल जाने हुए।

अंकेष,अर्चना और उर्मिला दोनो से–ये (कमल) भी आदमी ना ! कमाल है, रूपये हाथ मे आये नही कि

करने लगे बवाल।

अंकेष,उर्मिला से–षराब के अलावे और कोई बेकार की आदत जो नही होनी चाहिए।

उर्मिला,अंकेष से–बोलने की आदत है उन्हे। पर आप कहना क्या चाह रहे है ?

अंकेष,उर्मिला से–अगर आपको ऐसा कुछ नही लगता है तो छोड़िये। अब चलिए थाने।

तीनो वहां से निकलकर थाने पहुँचते है और थाने इंचार्ज के सामने जाकर बैठते है।

थानेदार,अंकेष से–कहिए।

अंकेश,थानेदार से–एक गुमषुदगी की रिपोर्ट लिखानी है।

थानेदार,अंकेष से–किसकी।

अंकेश,थानेदार से–(उर्मिला की ओर ईषारा करते हुए) इनके पति की।

थानेदार,उर्मिला से–क्या हुआ ? कब से लापता है ? थोड़ा विस्तार से बतायेंगी।

उर्मिला,थानेदार से–कल दो बजे दिन से। घर से निकले थे दुकान जाने के लिए और रात को समय से घर

नही पहुँचे, सबेरे मैने सब जगह पता किया कही कुछ पता नही चल सका। वो कही भी

जाते थे तो बोलकर जाते थे, और अगर बोल कर नही भी जाते तो फोन पर बता देते

थे। पर इस बार ऐसा कुछ नही किया उन्होने (कमल)।

इतना कहते हुए उर्मिला रोने लगती है।

थानेदार,उर्मिला से–अच्छा घबराईये नही। हम पुरी कोषिष करते है पता करवाने का।

उर्मिला,थानेदार से–मेरा छोटा बेटा टुन्नू बहुत रो रहा है अपने पापा के लिए ,और इनकी (कमल) माँ का तो

बोल–बोल कर बुरा हाल हो रखा है, और मेरी हालत तो आप देख ही रहे है ,सांसे भी
नही ले पा रही हुँ। कुछ किजिए ।
थानेदार,उर्मिला से–आप समय देंगी तब तो कुछ कर पाये। मै भी एक पति होने के नाते आपकी परेषानी
का अनुभव कर सकता हुँ,कि आप अभी कैसा महसुस कर रहे है ?
थानेदार,अंकेष से–नाम ,कद–काठी और उम्र बताईये उनका।
अंकेष,थानेदार से–कमल नारायण नाम है उनका, उम्र यही कुछ 42–45 वर्ष होगी और कद मेरे ही जैसा
है, 05 फिट और लगभग 6–7 इंच के बराबर का, कलर थोड़ा ष्यामला है और दूर से
चेहरा थोड़ा डार्क दिखता है।
थानेदार,अंकेष से–करते क्या है ये ?
अंकेश,थानेदार से–एक छोटा सा दुकान है मेकेनिकल का, यही सिटी मार्केट मे।
थानेदार,उर्मिला से–षराब वगैरह भी पीते थे।
उर्मिला,थानेदार से–हां वो तो रोज पीते ही थे। वो कभी षराब नही छोड़ते थे,मै झुठ नही बोलुंगी।
ये सारे डिटेल थानेदार एक कागज पर लिखकर उसकी फोटो खींच लेता है और एस0आई को बुलाकर वो कागज सौपते हुए,,,,
थानेदार,एस0आई0 से–ये डिटेल है, एक रिपोर्ट दर्ज किजिए मिसिंग का।
थानेदार,इन तीनो से–आप लोग जाईये इनके पास, रिपोर्ट दर्ज करवाईये।
थानेदार,एस0आई0 से–जय प्रकाष को सौपिये ये केष।
एस0आई0,थानेदार से–ओके सर,,,,।
ये तीनो अंकेष,अर्चना और उर्मिला एस0आई0 के साथ जाते है रिपोर्ट लिखाने ,फिर अंकेष को थानेदार रूकने को कहता है और उर्मिला, अर्चना को एस0आई0 के पास जाने को कहता है। फिर अंकेष वापस कुर्सी पर बैठ जाता है।
थानेदार,अंकेष से–तो आपका परिचय।

अंकेश,थानेदार से–हम उसके (कमल) पड़ोसी हुए, और उनके (उर्मिला) बगल मे जो बैठी हुई थी, वो मेरी

वाईफ थी। मेरा नाम अंकेष है, मै एक अगरबत्ती फैक्ट्री मे एकाउंटेन्ट का काम करता

हुँ।

थानेदार,अंकेष से–इसके (कमल) बारे मे और क्या पता है आपको ?

अंकेश,थानेदार से–कुछ नही ! सीधा–सिम्पल इंसान है ,अपने–आप से मतलब रखता है। षराब तो पीता है,

लेकिल किसी से झगरा होने की संभावना कम है, ना के बराबर।

थानेदार,अंकेष से–किसी से दुष्मनी।

अंकेश,थानेदार से–अब ये बात तो उसकी पत्नी ही बतायेगी ना SIR ! मेरे नजर मे तो वो एकदम

साफ–सुथरा था, ना किसी से कुछ लेना और ना किसी को कुछ देना। काम–से काम

रखने वाला आदमी था वो।

थानेदार,अंकेष से–(गहरी सांस लेते हुए) हां,,,,। आप अपना कॉन्टेक्ट नंबर लिखवा दिजिएगा। आप जा

सकते है।

अब अंकेष एस0आई0 के टेबल के पास पहुँचता है जहां पहले से उर्मिला और अर्चना दोनो मिलकर कमल के बारे मे रपट लिखा रहे होते है। रिपोर्ट दर्ज होने के बाद ये लोग वापस सभी लोग कमल के घर पर पहुँचते है, जहां थोड़ी देर बाद संतो भी पहुँचता है।

संतो,अंकेष से–कुछ पता चला।

अंकेष,संतो से–अभी तक तो नही। पर थाने मे हमलोगो ने रिपोर्ट दर्ज करवा दी है।

संतो,अंकेष से–रूपये का क्या हाल है ? जो उसे (कमल) हमलोगो ने दिए थे।

अंकेष,संतो से–उसके बारे मे तो उसकी पत्नी बतायेगी, पर अभी तक पुरा मामला समझ नही आ पाया हैं

कि कांड रूपये के कारण हुआ है या और कोई कारण से।

कमल की पत्नी अंकेष और संतो के पास आती है,,,।

उर्मिला,अंकेष और संतो से–अभी तो आप ही लोग इनके साथ ज्यादा रहते थे, तो आप ही लोग बता सकते

है कि क्या और कहां होंगे ये (कमल)।

संतो,उर्मिला से–यही सब बाते तो हम अपने दिमाग के दरवाजे को खट–खटाकर जानना चाह रहे है कि

आखिर ये महाषय गए तो गए कहां ? हमें भी तो कुछ ही देर पहले पता चला है इस तरह

की बेचैनी वाली बाते।

उर्मिला,अंकेष से–कुछ भी करके आप लोग पता करवाईये।

अंकेष,संतो से–मदन को बताना पड़ेगा इस बारे मे।

संतो,अंकेष से–पुछता हुँ।

अब संतो मदन को फोन लगाकर इस बात की सूचना देता है पर मदन को भी इस बारे मे ज्यादा जानकारी नही होने के कारण वो भी आष्चर्य मे पर जाता है।

मदन,संतो से–(फोन पर) कब से लापता है ? और तुमलोगो वहां क्या कर रहे हो ?

संतो,मदन से–(फोन पर) कल दोपहर के बाद से। पता चला है तो आये है,मदद के तौर पर।

मदन,संतो से–(फोन पर) अंकेष कहां है ?

संतो,मदन से–(फोन पर) पास मे ही है।

संतो अंकेष को फोन थमाता है,,,,।

मदन,अंकेष से–(फोन पर) सबसे पहली बात तो तुम लोग वहां कर क्या रहे हो ? ये सब मामले से हटकर

रहा करो, वरना षक के जद मे तुम लोग भी आ जाओगे। क्योंकि तुमने उसे रूपये दिए है।

और रूपये देने वाली बाते गलती से भी बाहर मत आने देना कि तुमने कमल को रूपये

दिए थे गवाही के लिए। वरना पुलिस गड़े मुर्दे को बहुत अच्छे से उखाड़ती है।

अंकेष,मदन से–(फोन पर) उसकी वाईफ को समझा देते है ये सब बात बाहर नही देने के लिए।

मदन,अंकेष से–(फोन पर) पुलिस को नही कहने के लिए, और ना ही अपने घर के बाहर किसी से चर्चा

करने के लिए। वरना तुम भी जेल जाओगे और बना हुआ काम फिर से बिगड़ेगा,वो अगल।

अंकेष,मदन से–(फोन पर) अब क्या करे ? उसने (कमल) हमारी मदद की, और अब उसकी वाईफ हमसे

मदद मांगने आ गई। अभी के समय मे उसके ज्यादा करीब हम ही लोग थे। इसलिए इस

समय मे उसकी मदद तो करनी जायज बनती है।

मदन,अंकेष से–(फोन पर) उसकी वाईफ को अच्छे से बता दो कि उसने (कमल) तुम्हारी और तुमने उसकी

(कमल) जो मदद की है उसे किसी को नही बताना है। पहले ये सारी बाते उसे समझाओ

और फिर हमसे बात करो। कोषिष करो उसके टच मे कम रहने का।

अब अंकेष संतो को फोन थमाता है,,,,

अंकेष,संतो से–इसने (मदन) तो मेरी आँखे खोल दी।

संतो,अंकेष से–हुआ क्या ?

अंकेष,संतो से–बताता हुँ।

इधर,,,,,,

अर्चना,कमल की बुढ़ी माँ से–ज्यादा मत रोईये आंटी, तबियत बिगर जायेगी आपकी।

कमल की बुढ़ी माँ अर्चना से–दिन मे चार बार आता–जाता रहता था वो मेरे सामने से,और बेवजह कुछ से

कुछ बोल कर चला जाता था। दो–चार बाते हमसे भी सुन लेता था। मै उसे

कितनी बार बोलती रहती थी , कि घर आया है तो थोड़ी आराम कर ले ,पर

वो नही मानता था और मेरी बात काटकर चला तो जाता था, पर फिर से

वापस आ जाता था। लेकिन कल रात से वो घर नही लौटा है । अब मै किसे

आराम करने के लिए बोलुंगी और किसे डाटूंगी ,गाली दुंगी, बताओ मुझको ! मेरा

घर का वो अकेला जलने वाला चिराग है, जिसकी रोषनी हमलोगो को रोषन

करती है।

कमल की बुढ़ी माँ,उर्मिला से–अरे किसके साथ गया, कहां गया पता तो करो, निकम्मे लोग कही के।

उर्मिला, कमल की बुढ़ी माँ से–पता करवाहित है माई, हक लोग बैठे हुए ना है।

कमल की बुढ़ी माँ,उर्मिला से–बरो झगरा भी करत रही तो,, चला गया होगा कही गुस्सा के मेरा कमला।

फुल था मेरा बच्चा, बोलता तो था पर किसी का दिल नही दुखातो थो।

उर्मिला,अर्चना से–कैसे बताये इनको ? कि हमलोग कितने परेषान है, और अभी सबसे ज्यादा जरूरत

उसकी (कमल) हमें है, मेरे जिंदगी मे उसकी (कमल) क्या अहमियत है ये हमसे ज्यादा

और कौन जान सकता है।

कमल की बुढ़ी माँ,उर्मिला से–नाटक मत करियो मेरे सामने, और लोगो मे पता कर। झमझम हाथ चमको

रही हो कैसे ? लगता है डांस प्रोगराम चल रहो है।

अर्चना,कमल की बुढ़ी माँ,उर्मिला से–चाची मै समझ रहा हुँ आपमे ममतामयी आंचल के दुखो को। धीरज

रखिये।

अंकेष दूर खड़ी उर्मिला से जो अर्चना के साथ–साथ अपनी सास से बात कर रही होती है। अंकेष अपनी पत्नी अर्चना और कमल की पत्नी उर्मिला दोनो को पास बुलाकर,,,,।

अंकेष,उर्मिला से–देखिये भाभी, कही एक घर की लड़ाई दस घर ना पहुँच जाय। इसलिए हमने जो रूपये

कमल जी को दिए थे इसके बारे मे पुलिस को और घर के बाहर के लोगो को अभी

फिलहाल नही बताना है। घर के जो सदस्य को पता नही है तो उसे बताइये भी मत।

उर्मिला,अंकेष से–वो तो ठिक है,पर रूपये आपने उन्हे क्यो दिए थे ? ये बात तो हमें पता होनी चाहिए ना।

मदद तो करना पड़ेगा ना ।

अंकेष,उर्मिला से–क्यो आपको उन्होने नही बताया ?

उर्मिला,अंकेष से–उन्होने तो यही बताया कि ये रूपये कही से आये है और किन्ही को देना है।

अंकेष,उर्मिला से–बस इतना ही।

अंकेष अब ये बात सोचकर परेषान है कि उर्मिला को जब ये बात पता नही है, तो उसे ये गवाही के बदले मे रूपये कमल को देने वाली बात बतानी चाहिए या नही। अब अर्चना और संतो यह बाते सुनकर अंकेष की ओर देखते है, और अर्चना और संतो को लगता है कि उर्मिला को रूपये वाली सही बाते बता देनी चाहिए। अब अंकेष उसके ईषारो को समझ लेता है फिर,,,,

अंकेष,उर्मिला से–देखिये भाभी , आपको ये तो पता है कि रूपये हमने जाकर दिए थे उनको (कमल), आज ना कल आप चाहियेगा तो किसी को बता ही दिजिएगा। तो चलिए आपको बिस्तार से बता ही देते है। वो रूपये उसे गवाही देने के लिए दिए गए थे, ताकि अर्चना जेल से निकल सके।

उर्मिला,अंकेष से– ओ ! अच्छा तो आप लोगो ने किन्ही को बताया भी था क्या इन्हे रूपये देने के बारे मे।

अंकेष,उर्मिला से–बस हम ही लोगो को पता है।

उर्मिला,अंकेष से–हो सकता है कोई जान गया हो , तब इन्हे गायब करवाकर अब वो रूपये की मांग

करेगा।

अंकेष,उर्मिला से–ऐसा नही हो सकता, सिवाय इसके कि उसने (कमल) किन्ही को ना बोला हो। तो हमने

किस कारण से उन्हे रूपये दिए ये बात आपको किसी को नही बतानी है। इससे हम

सबको खतरा है।

उर्मिला,अंकेष से–ठिक है, पर उनकी चिंता तो हमे खाई जा रही है।

अर्चना,उर्मिला से–हौसला रखिये, उन्हे कुछ नही होगा। हम लोगो ने चारो तरफ बाते फैला दी है, उनका

पता जरूर चल ही जायेगा।

अंकेष,उर्मिला से–ठिक है हमलोग चलते है जैसा होगा हमें बताईयेगा।

अब अंकेष, अर्चना और संतो तीनो वहां से अपने चार चक्के वाली वाहन से निकलते है,,,,,। अंकेष गाड़ी चलाता है और उसके बगल मे आगे वाली षीट पर संतो और पीछे अर्चना बैठी हुई है। कुछ पलो बाद तीनो के दिमाग मे एक साथ एक विचार आते है। जैसे ही अंकेष कुछ बोलना चाहता है इससे पहले संतो,,,,

अंकेष,संतो से–ऐसा लगता है,,,,,,,,कि,,,,,,

संतो,अंकेष से–हमें भी ऐसा ही लग रहा है।

इन दोनो की इस तरह की बाते सुनकर अर्चना अपने अंदर के विचारो को फिलहाल रोक सी लेती है और सुनना चाहती है कि ये दोनो आखिर क्या कह रहे है ? अब अंकेष और संतो एक दुसरे को देखते है और ईषारो–ईषारो मे उनका ईषारा अब सुकेष के तरफ जाता है।

अंकेष,संतो से–हो सकता है।

संतो,अंकेष से–हमें तो षक की सुई उसी के तरफ जाती हुई दिखाई दे रही है।

अंकेष,संतो से–अगर सही मे इसके पीछे किसी का हाथ है तो उसके (सुकेष) अलावे और कोई नही हो

सकता ।

अभी तक किसी का नाम नही लिए जाने के कारण अर्चना इन दोनो की बाते बहुत ही गौर से सुन रही होती है कि ये लोग आखिर किसके बारे मे बात कर रहे है।

अंकेष,संतो से–षाम मे इस बारे मे मदन से मिलकर आमने–सामने बात तो करनी पड़ेगी।

संतो,अंकेष से–हां कितने दिनो से वो बाहर निकलने के बारे मे सोच भी रहा है,उसके पैर अब ठिक हो

चुके है। उसे थोड़–बहुत चलने की जरूरत भी है।

अब अचानक से अर्चना,,,,,

अर्चना,अंकेष से–हमे लग रहा है इसमे सुकेष का हाथ है।

इतना बात कहते ही अंकेष और संतो एक दुसरे का चेहरा देखने लगते है। फिर दोनो एक साथ अर्चना का चेहरा देखने लगते है। अंकेष लंबी सांसे लेते हुए,,,,,

अंकेष,अर्चना से–इस बात पर हमलोग विचार कर ही रहे थे और तुमने अपने जुबां से निकाल ही दी।

लेकिन गलती से भी ये बाते उसे (कमल की पत्नी) उर्मिला को नही बतानी है, वरना वो उल्टे

सीधे काम करके हमलोगो के लिए मुसीबते खड़ा कर देगी। यह बात उसे हमलोग अपने

हिसाब से बतायेंगे। पर तुम्हे ऐसा क्यो लगा और कब से लगने लगा ?

अर्चना,अंकेष से–हमे तो जेल से निकलने के बाद से ही ऐसा लग रहा था कि वो (सुकेष) कुछ ना कुछ

ऐसा करेगा। अंतरात्मा से एक आवाज उठ रही थी जो किसी बात के होने की अंदेषा

जता रही हो। भले इसे हमने नजरअंदाज कर दिया होगा, पर हमारे खालीपन से तुम्हे

ऐसा जरूर लगा होगा।

अंकेश,अर्चना से–इस खालीपन को तो मै अपने प्रति तुम्हारा लगाव समझ रहा था। हमें नही पता था कि

तुम्हारा खालीपन इतनी दुर दृष्टि वाला है।

संतो,अंकेष से–स्वयं भगवान विष्णु भी महिला के महिमा मंडल को नही समझ सके, फिर हमलोग तो

कलयुग के कलयुगी इंसान है।

अंकेष,संतो से–तुम्हे भी एक महिला के महिमा मंडल की जरूरत है।

अर्चना,संतो से–हां एक साथी की तलाष कर लिजिए, जिंदगी ऐसे नही कटने वाली।

संतो,अर्चना से–कटने को तो पानी को भी हम काट दे ,पर दिल पहाड़ो जैसी होनी चाहिए। मोह,माया एक

भयानक श्राप है, जो भविष्य के सुनहरे पलो को दिखाकर वर्त्तमान के सुखो को इंसान से

छीन लेती है। ऊपर वाला भी कितना लिखेगा हमारे भाग्य मे, छोड़ दिया हमें अपने कर्मो पर

करवटे लेने के लिए। गुजारिसे हम क्या करें किसी से मिलने की, कोई और तो हमें ढुंढ ही

रही होगी।

अंकेष,संतो से—वाह ! मेरे षहर के गलियो से निकले हुए गालिब। परिचय भी आपने उस समय दिया जब

हम आपके काम ना आ सके।

अर्चना और संतो के साथ अब अंकेष अपने घर पहुँचता है, जहां सुक्खी अपनी माँ का बेसब्री से इंतेजार कर रहा होता है। सुक्खी टेबल पर बैठकर अपने खिलौने से खेल रहा होता है।

अर्चना,सुक्खी से—सुक्खी मेरे बच्चे क्या कर रहा है ? खाया कुछ आपने ।

सुक्खी,अर्चना से—बस थोड़ा सा जो आप रख के गए थे।

अर्चना,सुक्खी से—और कुछ खायेगा।

सुक्खी,अर्चना से—अभी नही।

अंकेष,संतो से—तो गालिब कुछ खाना पीना चाहोगे, चाय,नास्ते,पकोड़े या ठंडा पानी।

संतो,अंकेष से—अपना ही घर है जो मिल जायेगा ले लेंगे। चाहे वो दिल से निकली दुंआ हो या किचन से

निकला हुआ मेवा।

अंकेष,अर्चना से—तो हमलोगो के लिए कुछ दे दीजिए, जिंदा रहने के लिए।

अर्चना,अंकेष से—बस पाँच मिनट।

यह कहते हुए अर्चना किचन मे चली जाती है।

अंकेष,संतो से—साले इस सुकेष से कब पीछा छुटेगा, साला बेताल बनकर कंधे पर बैठ सा गया है। अब

पुलिस को कैसे ये बात बताये कि पुलिस उससे (सुकेष) पुछताछ करें।

संतो,अंकेष से—सब उपाय हो जायेगा, पहले षाम को मिलकर दो पैक लगाये तो सही, सारे आईडियाज

निकलकर सामने टेबल पर आ जायेंगे।

अब अर्चना कुछ नास्ते लेकर आती है और साथ मे पीने के लिए चाय भी है। अब तीनो लोग कुछ बाते करके नास्ता करते है,,,

अर्चना,अंकेष से–अब आप लोग कहां चले ? स्थिर होकर आराम करिये।

अंकेष,अर्चना से–बस थोड़ा सा अपने दोस्त मदन से मिल लेता, जिसका हमपर बहुत उपकार है। उस

बेचारे का पैर टुट गया है और हमे उससे मिलने जाना है और इस कमल के बारे मे भी

कुछ बाते करनी होगी उससे।

अर्चना,अंकेष से–षाम को लौटने वक्त एक बार पुलिस थाने भी घुम लिजिएगा, कही कुछ सुराग मिला हो।

बेचारी उर्मिला से उसके घर पर मिलकर उसका भी हाल–चाल एक बार जानना होगा।

अभी इतना तो करना पड़ेगा उसके लिए।

संतो,अर्चना से–समझदार है आप, अपने पर किए गये उपकार को आप चुकता करना चाह रही है।

अर्चना,संतो से–किसी के उपकार को नही भुलना चाहिए, खास करके हम जैसे लोगो को ।

अब अंकेष और संतो वहां से निकलकर एक बियर–बार मे पहुँचते है। जहां अंकेष के कहने पर संतो मदन को बुलाता है। बैसाखी के सहारे मदन लंगराता हुआ बियर–बार पहुँचता है।

अंकेष,मदन से–आओ, कहते तो तुम्हारे घर तरफ से ही आ जाते।

मदन,अंकेष से–नही, कुछ टहलने का बहाना भी चाहिए । बड़े दिनो के बाद तो इस बुढापे वाली जिंदगी

जीने का मौका मिला है। इस अनुभव को भी क्यो दबाना चाहते हो। जिंदगी मे जीने जैसा

कुछ भी नही है, ये तब पता चलता है जब आप लाचार होते हो।

संतो,मदन से–तो इस लंगरे पैर से कब आपको छुटकारा मिलने वाला है।

मदन,संतो से–जब तक तु मुझे दौड़ते हुए देख नही लेता।

संतो,मदन से–तो बोलो आपके पैर टुटने की खुषी मे क्या आर्डर करे ?

मदन,संतो से–(अंकेष की ओर देखते हुए) लुट लो मेरे बचे हुए सारे ईज्जतो को। चलो आर्डर करो बकार्डी के साथ रेड वाईन ,और

जब तक नषा ना चढे, तब तक कोई नषा उतारने वाली बाते मत करना। हमें पता है आज

हमलोग ऐसे यहां ईकठ्ठा नही हुए है षराब पीने के लिए।

मदन ने डेढ से दो महिने तक जो षराब छोड़ रखी थी, उन सारे दिनो का कोटा वह आज ही पुरा करना चाहता है ,और संतो को तो इस तरह का बहाना मात्र चाहिए था। फिर अंकेष तो इन दोनो का साथ देने के लिए हमेषा से तैयार ही रहता है। तीनो मिलकर बहुत सारे ब्रांडो को बहुत बार पीते है। फिर बात होती है मुद्दे की। तो सबसे पहले मुँह खुलता है मदन का ही।

मदन,अंकेष से–तो क्यो तुमलोग जानबुझ कर नंगे तार मे जाकर सटते हो, ताकि जोड़ का झटका जोड़ से

लगे। जो अपना दर्द किसी को बता भी ना सको, क्यो कर रहे हो ऐसा, बताओगे मुझे ?

अंकेष,मदन ये–क्या करे ? करना पड़ता है, तुम उसके (कमल) जगह रहते तो मै तुम्हारा भी मदद करता। क्योंकि

उसने हमारी मदद की है, और हो सकता है उन्ही मदद के चलते वो कही परेषान होगा

अभी।

मदन,अंकेष से–ऐसा क्या ? ये बात तो हमारे दिमाग मे आयी ही नही, की तुम्हारी मदद और उसे दिए हुए

रूपये का ये अंजाम हो सकता है।

संतो,मदन से–अंजाम तक तो हर वो ख्वाहिषे पहुँचती है जिसकी षुरूआत हो चुकी होती है। चाहे वो कोई

मकसद हो या मन मे सोचा गया कोई षडयंत्र।

मदन,संतो से–अब तू चुप कर, बेवजह हवा मे उड़ने वाले धुल की तरह कही भी कोई बात उगल देता है।

मदन,अंकेष से–अब तू बोल, ताकि मुझे दिमाग पर ज्यादा जोड़ ना डालना पड़े।

अंकेष,मदन से–बगैर हमलोगो के कुछ बोले ही पुलिस सुकेष को उठाकर उससे पुछताछ कर रही है,

कमल के अपहरण के कारण।

ये बाते सूनकर संतो अचानक से चौक जाता है।

संतो,अंकेष से—ये बाते आपको कैसे पता ? हम लोग तो अभी षक कर रहे थे,उसके (सुकेष) बारे मे और

पुलिस वालो ने उससे मिल भी लिया।

मदन,अंकेष से—क्या ? ये बात उसे कैसे पता चली की कमल और सुकेष मे अनबन चल रहा था।

संतो,मदन से—अब ये काम तो पुलिस वाले का है, वो चाहे जैसे पता करे।

मदन,अंकेष से—कही उसकी (कमल) वाईफ ने तो नही बता दिया।

अंकेष,मदन से—हमे भी यही षक था पर उसने नही कही है।

संतो,मदन से—क्योंकि हमे नही लगता की कमल अपने और सुकेष के बीच होने वाले झगरे की बातो को

अपनी पत्नी से share करता होगा।

मदन,संतो से—अरे कभी—कभी जो नही लगता वही हो जाया करती है और बाद मे लोग यह कहने लगते है

कि ऐसा तो हमने सोचा भी नही था।

अंकेष,मदन से—मेरे ख्याल से पुलिस के बातो से यही लग रहा था कि उसे किसी ने यानी उर्मिला भाभी ने

नही बताई होगी, क्योंकि उसे वो सब बाते भी पता नही थी जो कमल के बारे मे मुझे पता

थी। पुलिस को जो भी पता चली होगी वो उसकी अपनी पुछताछ के आधार पर पता चली

होगी। क्योंकि एफ0आई0आर0 लिखाने के बाद हमलोग उर्मिला भाभी को लेकर उसके घर

चले गए थे, और उसे वहां छोड़कर षाम को जब खाखी वर्दी वाले के पास पहुँचे तो उन्ही

ने मुझे जो बताया वह सुनकर तो मेरे होष उड़ गए।

मदन,अंकेष से—क्या ,,,? बताया क्या उसने ?

अब अंकेष,मदन से—फ्लेष बैक मे जाकर,,,,,,,।

अंकेष,थानेदार से–तो 'सर' दोपहर मे जो रिपोर्ट लिखाई गई थी गुमसुदगी की उसमे कुछ पता चला।

थानेदार,अंकेष से–वाह ! आप तो हमसे भी तेज है, इतना जल्दी कोई केष का नतीजा आता है क्या ?

फिर भी मैने एक आदमी को पुछताछ के लिए उठाया है, आप देखना चाहते है तो उसे

देख लीजिए।

अंकेष,मदन से–(अभी वर्त्तमान मे) क्या बताये ? मैने जब उसे देखा तो मेरे होष उड़ गए। मै सोच मे पड़

गया कि ये क्या हो गया, इतनी जल्दी पुलिस अपना काम कैसे कर सकती है। पर पुलिस

उससे (सुकेष) ज्यादा पुछताछ नही कर रही थी, पर जो जरूरी थी वो सब बाते पुलिस

उनसे पुछ ही रही थी। तब मै थोड़ा बेवकूफ बन कर थानेदार से सुकेष के बारे मे पुछने

लगा

अब अंकेष,मदन से–फ्लेष बैक मे जाकर,,,,,,,।

अंकेष,थानेदार से–इसे आपने किसी आधार पर उठाया ?

थानेदार,अंकेष से–क्यो आप पहचानते है इसे ?

अंकेश,थानेदार से–हां ये कमल का पड़ोसी है।

थानेदार,अंकेष से–हां , इसका किसी बात को लेकर कमल से रगड़ा चल रहा था। संजोग से मै उस गली

से ही आज एक मिटिंग करके लौट रहा था, सोचा कमल के गुमषुदगी के बारे मे कुछ

पता कर लू । तो मै रूक कर एक जगह चाय की चुस्की लेने लगा , और चाय पर चर्चा

करने लगा। फिर मैने उस दुकानदार से कमल के बारे मे पुछा तो उसने बताया वो अपने

घर मे होगा। फिर मैने कहां उसका तो अपहरण कर लिया गया है, तब उस चाय वाले

को पता चला कि कमल का अपहरण हो चुका है। फिर जाकर उसने सुकेष का नाम

बताया की वह कमल से कुछ दिनो पहले किसी बात को लेकर गहमा–गहमी वाली बाते

कर रहा था। उसने एक–दो और लोगो के बारे मे कहां जो उसके साथ नये–नये

लग रहे थे।

अंकेष,थानेदार से–तो इसने (सुकेष) अभी तक कुछ बताया कि नही।

थानेदार,अंकेष से–पुछताछ चल रही है,पहले इनसे तो पुछेंगे ही ,उसके बाद उन दो नये–नये आदमी से

पुछेंगे जो अभी तक मिले नही है।

अंकेष,मदन से–(अभी वर्त्तमान मे) थानेदार की ये बाते सुनकर तो मै डर सा गया, फिर मैने सोचा

थानेदार को सारी बाते बता ही देता हुँ। फिर दिमाग मे एक अच्छा वाला विचार आया, कि

अगर सुकेष ने ही कमल का अपहरण करवाया है और वो ये बात मान लेता है तो मै अपना

ज्ञान क्यो बाँटू बेवजह। मै उससे चेहरे पर से नजरे हटाकर और अपने बातो को दबाकर

स्थिर हो गया।

अब अंकेष,मदन से–फ्लेष बैक मे जाकर,,,,,,,,।

थानेदार,सुकेष से–तो भाई कमल को जानते हो।

सुकेश,थानेदार से–क्या हुआ उसे ? मर गया वो (कमल)।

थानेदार,सुकेष से–तुमने मार दिया होगा तो मर ही गया होगा। किसी को मारने मे आज कल कितना समय

ही लगता है। पीछे से सर पर मारो और धराम से जमीन पर,,,। लगता है तुम्हे

उसने(कमल) जख्म देकर नमक भी लगाया है। उसके नाम से इतने भरक क्यो रहे हो ?

सुकेष,थानेदार से–हमे क्या लेना–देना उससे।

थानेदार,सुकेष से–तो फिर इतने नाराज क्यो हो उससे (कमल) ?

सुकेश,थानेदार से–मै उससे नाराज क्यो रहुँ ? वो मेरी पत्नी लेकर थोड़े ही ना भागा है। उससे मेरा कोई

लेना–देना नही।

थानेदार,सुकेष से–तुम्हारे गुस्से को देखकर लग रहा है, कि उससे (कमल) कितना लगाव होगा तुम्हारा।

सुकेश,थानेदार से–आप जो हमें बेवजह यहां लाकर पुछ–ताछ कर रहे है, ये अच्छा काम नही है आपका।

थानेदार,सुकेष से–पुलिस का तो इसी तरह का काम है , क्या करे बदल भी नही सकते।

सुकेश,थानेदार से–हमसे क्या चाहते है।

थानेदार,सुकेष से–बस, दो–चार सवाल, कमल के बारे मे।

सुकेश,थानेदार से–पुछिये।

थानेदार,सुकेष से–तो कमल कल दोपहर से घर नही पहुँचा है।

सुकेष,थानेदार से–जब आपलोगो ने उसका नाम लेकर हमें यहां बुलाया, तब तो मैने यही समझा कि उसने

कम्प्लेन तो नही किया मेरे बारे मे, पर यहां आकर तो कुछ और ही पता चल रहा है। तो

क्या करू मै ? मै उसे पकड़ कर ला दुँ , आपके पास।

थानेदार,सुकेष से–वो हम कर लेंगे ,सिर्फ आप ये बताईये कि वह कहां मिलेगा।

सुकेष,थानेदार से–हमें क्या पता है कि वो कहां मिलेगा।?

थानेदार,सुकेष से–तो तुम्हे नही पता।

सुकेश,थानेदार से–नही।

थानेदार,सुकेष से–सोच लिजिए, बाद मे कोई क्लू मिला तो लटका देंगे तुमको।

सुकेश,थानेदार से–हां लटका दीजिएगा।

थानेदार,सुकेष से–ठिक है! फिर उसका झगरा क्यो हुआ था तुमसे ?

सुकेश,थानेदार से–जब इतना पता कर ही सकते है कि मेरे और उसके बीच झगरा हुआ, तो ये भी पता

कीजिए की झगरा क्यो हुआ ? झगरा हुई थी पर उसके अपहरण के बारे मे हमें कुछ

भी पता नही । मुझे अपने कुछ काम निपटाने है, इसलिए मुझे अभी जाना होगा। आप

हमसे क्या जानना चाहते है कि हमने उसका अपहरण किया या उसके अपहरण के बारे

मे हमें कुछ पता होना चाहिए।

थानेदार,सुकेष से–कुछ भी जो तुम बता सको।

सुकेश,थानेदार से–अभी फिलहाल कुछ नही, हां मै पता करके बता सकता हुँ , इतना कर सकता हुँ आपके

लिए, और उसके (कमल) लिए भी। वैसे भी वो मेरा लंगोटिया यार है, उसका अपहरण

मै क्यो करूंगा ? माना कि मैने उसे (कमल) कुछ बाते कही थी पर इसका मतलब ये

नही कि मै उसका दुष्मन बन जाऊ, मै अपने काम पर जा रहा हु,आप जब भी बुलाईगा

मै आ जाउंगा और कुछ पता होगा तो आपको आकर पहले बताऊंगा, पर आपको मेरे

बारे मे किसने बताई कि मेरा और कमल का खिचाव चल रहा था।

थानेदार,सुकेष से–राज पर से पर्दा हटाने का मतलब है कि अपने–आप से खिलवाड़ करना। हवां बहती है

तब तो पत्ते हिलते हैं, वरना पत्ते तो खामोष हो जाते है। चलो तुम्हारे कॉन्फिडेन्स को

देखकर मुझे अच्छा लगा, अब तुम जा सकते हो। पर जब भी बुलायेंगे आना होगा।

सुकेष,थानेदार से–कोई दिक्कत नही, साँच मे आँच कैसा ? मै तो मुस्कुराता हुआ आउंगा।

वर्त्तमान मे ,,,,,,,,,

अंकेष,मदन से–(अभी वर्त्तमान मे) इससे पहले कि सुकेष वहां से बाहर निकलता उससे पहले ही मै वहां से

निकल कर यहां आ गया, ये सब बाते बताने के लिए कि अब क्या करना होगा ?

मदल,अंकेष से–होगा क्या ? तुमने जब उसका अपहरण नही किया है तो डरो मत अगर तुमसे पुछा जायेगा

तो सच्चाई बतानी पड़ेगी, अगर जरूरत पड़ी तो। वरना अपना मुँह बन्द रखना और दुर से

तमाषा देखना।

अब अचानक से अंकेष का फोन बजता है, पता चलता है थानेदार का फोन है। अंकेष को लगता है कि षायद कमल के बारे मे कुछ पता चला है इसलिए थानेदार फोन कर रहे है,,,। लेकिन थानेदार की बाते सुनकर अंकेष चौक जाता है।

थानेदार,अंकेष से–(फोन पर) तो नाम तो आपका भी उछल–कुद कर आ रहा है सामने। आपका भी तो

कमल के साथ बराबर उठना बैठना होता था, पर आपने बताया नही कि किस कारण

से आप उसके पास जाते थे और क्या मिटिंग होती थी आपकी उसके साथ ? एक काम

कीजिए अभी आ सकते है तो ठिक, वरना कल सबेरे ग्यारह बजे आ जायेंगे आप।

कुछ ज्यादा ना बोलने की स्थिति मे होने के कारण,,,,,

अंकेष,थानेदार से–(फोन पर) मै कल सबेरे ही आता हुँ।

फोन कट जाता है।

अंकेश,मदन से–लो सच्चाइ बताने का समय इतनी जल्दी आ जायेगी ये नही पता था।

मदन,अंकेष से–हुआ क्या ?

संतो,मदन से–ऐसा लगता है जैसे थानेदार का कॉल था।

मदन,संतो से–लगता क्या है बे ? उसी का कॉल था।

अंकेष,मदन से–वो तो अजीब तरह से बात कर रहा था, उसे लगता है कि मैने उसे सच्चाई नही बताई।

मै क्या उसे बताऊ जो उसे जानना था।

मदन,अंकेष से–हो सकता है 'सुकेष ने बताया होगा तुम्हारे बारे मे उसे।

संतो,अंकेष से–ये बात तो हमलोगो के दिमाग मे आया ही नही।

अंकेष,संतो से–हो सकता है ! और क्या–क्या बताया होगा उस (सूकेष) साले कुत्ते ने।

मदन,अंकेष से–अरे ईष्क नही आषां बस इतना समझ ले।

हर कदम लावा बिखरे पड़े है।।

अंकेष,मदन से–इसे (कमल) मै रूपये नही देता ना ,तो कोई परेषानी ही नही बनती मेरे लिए। डर इसी

बात का है कि रूपये के कारण कोई अनहोनी ना हो जाये कमल के साथ।

संतो,मदन से–अब सब काम छोड़ के हमलोगो को कमल को ढुंढना है। तब ही मामला सुलझेगा।

मदन,अंकेष से–इतने समय मे पहली या दुसरी दफा इसने (संतो) अच्छी बाते कही है।

अंकेष,संतो से–हां अब कल से उसी काम मे लगना पड़ेगा उसके (कमल) सबाब़ और कबाब को तलाषना

पड़ेगा, और कल क्या पुछेगा थानेदार यह अगल टेंषन बना हुआ है दिमाग मे ?

मदन,अंकष से–कुछ नही ! बस रूपये देने के अलावे सब कुछ बता देना, अगर जो बाते बताने की जरूरत

ना पड़े तो, उसे मत ही बताना।

दुसरे दिन सबेरे ग्यारह बजे अंकेष पुलिस स्टेषन पहुँचता है थाने का माहौल एकदम से षांत है, थानेदार किसी दुसरे केष के संबंधित फाईले देख रहे है। कुछ लोग दुसरे एस0आई के पास बैठकर अपना फरियाद लिखा रहे है। कुछ एस0आई0 खाली है जो अपने मोबाईल मे बिजी है। अंकेष थानेदार के सामने जाकर बैठता है। जहां पहले से दो महिला सिपाही अपने केष से संबंधित फाईलो मे थानेदार से डिसकर्स कर रही होती है, महिला सिपाही की उम्र लगभग 21 से 25 साल की रही होगी। अब अंकेष उसके सामने कुर्सी पर जाकर बैठता है।

अंकेष,थानेदार से–नमस्ते sir , आज आपने बुलाया था।

बगैर कुछ कहे थानेदार अंकेष की ओर देखता है, और हाथ के ईषारो से थोड़ी देर स्थिर होकर बैठने को कहता है। फिर दोनो महिला सिपाही को

अंकेष नमस्ते करते हुए थानेदार के द्वारा बात करने का इंतेजार करने लगता है। कुछ पलो बाद,,,,,,

थानेदार,अंकेष से–तो आप लोग सही–सही क्यो नही बताते है, जो आप लोगो के साथ घटती है या जो

आप लोग करते है।

अंकेष,थानेदार से–क्या हुआ जो ''सर''' ?

थानेदार,अंकेष से–वही हुआ जो आप लोग करते है। आपका भी कमल के साथ उठना–बैठना था, जो

अचानक से होने वाला था, जो पहले कभी नही होता था, तो ऐसा क्यो होता था आपने

बताया नही।

अंकेष,थानेदार से–वो मेरा पड़ोसी था, और पड़ोसी से बात विचार तो होता ही रहता है।

थानेदार एक सादे कागज पर बीचो–बीच लकिरे खींच कर दोनो तरफ अंकेष से पुछे जाने वाले सवाल की संख्या लिखने लगता है।

थानेदार,अंकेष से–तो आप कब से जानते थे कमल को ?

अंकेश,थानेदार से–अब पड़ोसी को कब से जानेंगे, बहुत पहले से जानते है उसे।

थानेदार,अंकेष से–वो (कमल) आपका पड़ोसी है या अपके पत्नी का।

अंकेश,थानेदार से–अब हम और मेरी पत्नी दोनो साथ–साथ रहते है तो , वो (कमल) दोनो का पड़ोसी हुआ

ना ''सर''।

थानेदार,अंकेष से–तो सुकेष को आप कैसे जानते है ?

अंकेश,थानेदार से–वो मेरे जान पहचान वाला है मेरे पत्नी के माध्यम से। वो कमल का दोस्त भी है।

थानेदार,अंकेष से–आपकी कमल से किस तरह की बाते होती थी ?

अंकेश,थानेदार से–क्या बाते होंगी ''सर''' ? वही गिले–षिकवे वाले, घर की मोह–माया प्यार मोहब्बत और

बहुत तरह की वैसी टेंषन जिसे जिंदगी भर खत्म नही किया जा सकता है।

थानेदार,अंकेष से–बहुत क्लोज थे उससे (कमल) आप। सही आपलोग बताईयेगा नही और आकर हमें

परेषान किजिएगा की मेरा आदमी अभी तक मिला क्यो नही ? तो पुछे गए चारो सवालो

के जवाब आपने गलत दिये। क्यो ?

अब अंकेष थानेदार की इस तरह कि बाते सुनकर सदमे मे है और दोनो महिला सिपाही को देखते हुए अपने नजरो को टेबल पर झुका लेता है।

एक महिला सिपाही,अंकेष से–अगर आप गलत नही किए है तो आप सच बता सकते हैं। प्रत्येक सवाल का

जवाब देने से पहले आपका थोड़ा मुस्कुराना आपके गलत सवाल का परिचय

देता है। पुलिस को कोई भी सुराग या सबुत कहां से मिलेंगे जब तक आप

जो बाते जानते है उसे सही–सही नही बतायेंगे तो।

अंकेष,थानेदार से–माफी चाहता हुँ श्रीमान् ! मै थोड़ा फ्रस्टेड हो गया था ये सब बाते जानकर, और आपको

सारी बाते बताने से डर रहा था। मुझे लग रहा था कि सिर्फ कमल के बारे मे ही बताने

से बात बन जायेगी तो सारी बाते क्यो बताये।

थानेदार,अंकेष से–ऐसा आपको लगा ना, पर ऐसा हमें नही लगता है। हमे बैक–अप लेकर चलना पड़ता है,

जितना जाने उतना फायदा होता है। हम आपको कुछ नही कहेंगे। बताईये जो जानते

है।

अब धीरे–धीरे दबे होठो से अंकेष कमल को गवाही देने के लिए राजी करने से लेकर अर्चना के जेल से छुटने तक की सारी बाते थानेदार को बताता है, साथ–ही साथ इस दरमियां सुकेष के रवैये के बारे मे भी बोलने से नही चुकता है।

थानेदार,अंकेष से–(लंबी सांसे लेते हुए) इतनी सारी बाते।

थानेदार,महिला सिपाही से–अभी तक तो ये केष सिर्फ अपहरण का लग रहा था, पर अब तो ये केष

डेंजरस लगने लगा है। जिसमे बदले की भावना दिखाई पर रही है।

इनके (अंकेष) हिसाब से षक की सुई तो उसी (सुकेष) पर जाती है जिससे

हम लोग कल पुछ–ताछ कर रहे थे।

थानेदार,अंकेष से–उसकी (सुकेष) पत्नी जो तुम्हारे पास चली गई, वो (सुकेष) कितना रो रहा था कल। वो

चाहता तो तुम्हारे साथ कुछ कर सकता था, पर उसने अपने आवेष को दबाकर रखा,

यह सोचकर कि उसकी पत्नी ही जब उसके साथ नही रहना चाह रही है तो वो फिर

क्यो दिमाग लगाये आपके पीछे। पर यह सोच कर भी वो आपको ठिकाने लगा सकता

था, कि जब उसकी पत्नी उसकी ना हुई तो किसी की नही होनी चाहिए। फिर भी

उसने खुन का घुंट पीया और अपने आप को संभाले रखा।

अंकेष,थानेदार से–वो (अर्चना) विवष थी उसके साथ। वो टिक नही पा रही थी।

थानेदार,अंकेष से–हरेक पति–पत्नी एक दुसरे के साथ विवष ही होते है, फिर भी वो टिके रहते है, और

ऐसे मे कोई अपने से उजड़ जाये तो कोई बात नही, लेकिन आप किसी को उजाड़ने कि

कोषिष किजिएगा या किए है, तो आप भी एक दिन सुकेष के जगह खुद को पाईयेगा।

थानेदार की इस तरह कि बाते सुनकर अंकेष अपने–आप मे षर्मिंदगी महसूस करता है और सोचता है कि कितनी जल्दी यहां से मुक्ति मिले, और वो फिलहाल थानेदार से नजरे मिलाने से कतरा रहा है। पास मे बैठी दोनो महिला सिपाही अंकेष को देखकर उसके द्वारा किए गए पागलपन और दिवानगी पर हल्के–हल्के से मुस्कुरा रही है। यह जानते हुए कि अंकेष ने जो किया वो लगत था।

थानेदार,अंकेष से–बहरहाल , इतना बताने के लिए धन्यवाद। पर अभी तक आस–पास के किसी भी थाने मे

कोई लावारिस आदमी से संबंधित कम्प्लेन दर्ज नही हुई है। हमलोग हर जगह उसकी

फोटो shere कर चुके है और लगातार खोज करवा रहे है, सो आप उनकी पत्नी उर्मिला

जी को थोड़ा बता देंगे। अब आप जा सकते हैं।

अंकेष मन ही मन यह सोचते हुए बाहर निकलता है कि चलो जान छुटा। अंकेष के चैम्बर से निकलने के बाद,,,,

महिला सिपाही,थानेदार से–(अंकेष के बारे मे) चेहरा देखने मे सुंदर है, इसका मतलब ये नही कि किसी का

घर ही बर्बाद कर दे। देखने मे ऐसा नही लग रहा है कि ये इतने बड़े कांड

करके बैठा हुआ है।

थानेदार,महिला सिपाही से–प्रकृति का तो यही मायाजाल है,जो चीजे जैसी दिखाई देती है,वैसी वो कदापी

नही होती, और हमलोग जिसे षुरू मे जैसा मान लेते है अंत तक वो वैसा रहता

नही।

जैसे ही अंकेष बाहर निकलता है, वो सामने देखता है कि कमल की पत्नी उर्मिला थाने के अंदर प्रवेष कर रही होती है। जिसकी नजर अब या तब मे अंकेष पर पड़ने वाली ही होती है, इससे पहले कि उर्मिला अंकेष से कुछ सवाल करे, इतने मे,,,,,,,

अंकेष,उर्मिला से–आप क्यो आ गई यहां फिर से, हम तो आये ही थे यहां पता करने के लिए।

हताष भरी नजरो से उर्मिला अंकेष को देखती हुई उसके पास पहुँचती है।

उर्मिला,अंकेष से–तो कुछ पता चला।

अंकेष,उर्मिला से–अभी तक तो नही।

इतना बात सुनते ही उर्मिला हुकार देते हुए रोने लगती है, जिसे थाने के सभी एस0आई0 और महिला सिपाही अचानक से देखने लगते है कि इस महिला को अचानक से हुआ क्या ? फिर एक महिला सिपाही उर्मिला के पास

आकर उसे षांत रहने और पास मे बेंच पर बैठने को कहती है। अंकेष भी उसे चुप कराने की भरपुर कोषिष कर रहा होता है।

अंकेष,उर्मिला से–घबराईये नही सब ठिक हो जायेगा। इंसपेक्टर साहब सब जगह खबर कर दिए है, जैसे

भी किसी थाने मे कोई सुचना प्राप्त होती है, तुरंत यहां खबर हो जायेगा। मै यही सब

बाते यहां इंसपेक्टर साहब से कर रहा था , कमल भाई साहब के बारे मे। आप बेवजह

यहां आ गई।

उर्मिला,अंकेष से–मुझे कुछ अच्छा नही लग रहा है, मन बेचैन सा लग रहा है। क्या करे,कहां जाये,किससे

पुछे, कुछ समझ मे नही आ रहा है। दो दिनो से घर मे मेरे किसी को खाना नही भा रहा

है, और कोई अपनी भुख मारकर बैठा हुआ है। कोई बता भी नही

रहा है कि उससे (उसका पति कमल) कोई क्या चाहता है ?

अंकेष,उर्मिला से–अभी तक घर पर किसी का कोई खबर या कोई फोन या ऐसी कोई बात जो आपको

अजीब लगी हो।

उर्मिला,अंकेष से–मुझे तो दो दिनो से पुरा अजिब सा ही लग रहा है। कोई फोन भी करता तो यह सोचकर

तसल्ली होता कि वो ठिक है ,पर यहां तो वो बात भी नही हो रही हैं।

अंकेष,उर्मिला से–हां ये बात तो है , पर अभी यहां रूकने से कोई फायदा नही है, चलिए आपको घर छोड़

देता हुँ।

उसे अपने गाड़ी की पीछे वाली सीट पर बिठा कर अंकेष खुद गाड़ी चलाता हुआ उर्मिला को घर छोड़ने के लिए निकलता है। उर्मिला के आँखो से आंसू निकलना बंद नही हुए है। इन सबके बीच अंकेष के दिमाग मे एक बात बराबर से टिस की तरह टसन दे रही है, जिसे वह उर्मिला से पुछने मे कतरा भी रहा है, कि षायद उसके दिमाग मे कोई षक ना बैठ जाय। फिर भी जानकारी उसे ही होती है जो पुछने की कोषिष करता है, और अंकेष

अपने ख्यालातो को दाबते हुए उर्मिला से वह सवाल कर ही देता है जो उसे नही करना था।

अंकेष,उर्मिला से–बुरा मत मानियेगा मै ये बात आपसे जानना चाहता हुँ कि कमल भाई साहब का किसी

औरत से कोई लगाव रहा था क्या, अभी या कुछ समय पहले ?

उर्मिला,अंकेष से–ये आप कैसी बाते कर रहे है ? वो (मेरे पति) ऐसे नही है।

अंकेष,उर्मिला से–वही मै आपसे पुछ रहा हुँ ,कभी आपको ऐसा कुछ एहसास हुआ हो, क्योंकि अभी तक

किसी का फोन नही आने का मतलब समझ नही आ रहा है। अगर कोई उसका अपहरण

भी करता तो अब तक फोन आ जाना था। पर ऐसा नही होना गले के नीचे ये बात उतर

नही रही है, और वो रूपये जो आपको दिए थे कमल भाई साहब ने रखने के लिए वो

सारे है ना या कम है।

उर्मिला,अंकेष से–(चौकते हुए) वो तो मैने नही देखा।

अंकेष,उर्मिला से–तो आप क्या देखते है ? घर मे एक पत्नी ही होती है जो पति की ही हरकत पर निगाह

रखती है। अगर आपसे घर मे कुछ मिस हो रहा है तो समझ लिजिए बहुत बड़ा मिस हो

रहा है। चल के पहले उस रूपये को देखिये सही सलामत है या नही।

अब कुछ समय बाद अंकेष उर्मिला को उसके घर छोड़कर अपने घर अर्चना के पास पहुँचता है, जहां अर्चना सुक्खी को बड़े प्यार से स्नान करा रही होती है, फिर अंकेष सोफे पर बैठते हुए अपनी आँखे बंद कर लेता है,और कमल के बारे मे सोचने लगता है।

सुक्खी,अर्चना से–पानी डालो जल्दी से मम्मा ! आँखे लहर रही है ,षैम्पू घुस चुका है मेरे आँखो मे। मैं

बोल रहा था कि मै खुद स्नान कर लुंगा पर आप करने भी नही देती और बगैर रूलाये

छोड़ते भी नही। अब मुझे खुद से स्नान करना आ गया है । कब तक आप मुझे स्नान

कराते रहिएगा।

अर्चना,सुक्खी से–हो गया तुम्हारा स्नान, अब बस चुप करो। लगता है अंकेष जी आ गये ,,,।

अर्चना,अंकेष से–अगर तुम आ गए हो तो थोड़ा टॉवल दे देना ।

अब अंकेष समझ चुका होता है कि उसके आहट को अर्चना पहचान चुकी है,।

अंकेष–(मन ही मन मे) ओ ! यहां भी बहुत सारा काम होता है। जो मुझे आराम करने नही देते।

अब अंकेष टॉवल लेकर बाथरूम के तरफ जाकर अर्चना को देता है।

अंकेष,अर्चना से–कितना घस–घस कर नहा रही हो इसे (सुक्खी) ।

अर्चना,अंकेष से–अरे मत पुछिये, ना जाने कितने मैल पानी मे बहे है।

अंकेष,अर्चना से–पुरा गोरा ही कर दोगी क्या।

अर्चना अंकेष के चेहरे पर देखती हुईं।

अर्चना,अंकेष से–क्या हुआ ? आज चेहरे पर इतने सिकन क्यो पता चल रहा है ?

अंकेष,अर्चना से–मत पुछो , बात ही कुछ ऐसी है। ये कमल तो ड्रामे–पर ड्रामे किए जा रहा है।

अर्चना,अंकेष से– क्या हुआ ?

अंकेष,अर्चना से–अरे उसने (कमल) तो आधे से ज्यादा रूपये कुछ ही दिनो मे ईधर से उधर कर दिए है। मै गया था कमल के घर उसकी पत्नी से मिलकर हाल–चाल जानने के लिए। वहां पर तो पता चला कि कमल तो लगभग 05 (पाँच) लाख रूपये कर्ज और षराब मे उड़ा दिए।

अंर्चना,अंकेष से–मेरे हिसाब से कर्ज मे कम और षराब मे ज्यादा गई होगी।

अंकेष,अर्चना से–पूरे रूपये उर्मिला के घर मे नही मिलने के कारण ,वो बेचारी बहुत जोड़ से चिल्लाकर

रो रही थी। क्योंकि एक तो उसका पति दो दिनो से घर नही लौटा है और दुसरी बात ये

है कि उसे जो मैने रूपये दिए थे, उसमे से आधे का सफाचट कर गया है वो (कमल)।

वो 'उर्मिला' जी कह रही थी कि कही रूपये के लालच मे उसे कही किसी ने ,,,,,,,,, फिर

मैने उसे रोका, और कहां ऐसी कोई बात नही हैं।

अर्चना,अंकेष से–किसी के भी पति के साथ ऐसा होता है तो उसका हाल इस तरह का तो होगा ही। अगर

वो (कमल) जान बुझकर कर रहा है तो बहुत गलत कर रहा है।

अंकेष,अर्चना से–ऐसा लग नही रहा है, वो ऐसा क्यो करेगा ? वो (कमल) कही ना कही फसा हुआ है

षायद। उसके (कमल) दुकान के पास कभी–कभी कुछ महिलाओ का जमावड़ा लगा रहता

था, यह बात से अब हमें लग रहा है कि हो सकता है कोई औरत वाली बात ना हो।

अर्चना,अंकेष से–मै खाना लगाती हुँ।

यह कहते हुए अर्चना खाना की तैयारी करने के लिए किचन मे चली जाती है और कुछ पलो के बाद खाना लेकर आती है, अंकेष और सुक्खी को खाना पड़ोसती है और खुद भी बैठती है खाने के लिए।

अंकेश,अर्चना से–आज वही पर जाकर पता करना होगा।

अर्चना,अंकेष से–कहां ?

अंकेष,अर्चना से–वही औरतो के जमावड़े वाले जगह पर।

अर्चना,अंकेष से–होषियारी से, अगर उसके बारे मे कुछ भी पता चला तो कुछ आदमी को अपने साथ कर

लिजिएगा, और सामने वाले को यह एहसास दिलाईयेगा कि आपको कुछ भी पता नही है।

ऐसा अगर करते है तो आप हर वो बाते पहले जान पायेंगे जो वारदात के बाद आपको

जानने की जरूरत होगी।

अंकेष,अर्चना से–बहुत लंबी –चौरी बाते कह दी तुमने, लेकिन बात मे दम है । पर ये सब लाईने तुमने

लाई कहां से ?

अर्चना,अंकेष से— कल मै एक मूवी देख रही थी , जिसमे इसी तरह की लाईने कही जा रही थी। मूवी मे

एक हिरो किसी बात को पता करने के लिए कही पहुँच चुका होता है जैसे ही उसे सारी

सच्चाई के साथ सच से सामना होता है, जिसके साथ ही उसके सामने नई आफते भी

आ जाती है। जिससे वो खुद को अकेला पाता है और बचते — बचाते किसी तरह से

वहां से निकल पाता है। अचानक इस तरह का माहौल आ जाने से उसकी जान पर बन

आती है। जैसे अचानक से कभी भी कुछ भी हो सकता है लाईफ मे।

अर्चना के इस बात को अंकेष अपने दिमाग मे अच्छी तरीके से बैठाता है और फिर अर्चना को कुछ नही बोलता है।

अंकेष,सुक्खी से—और सुक्खी तुम तो खुद स्नान कर लेते थे, फिर अब माँ तुम्हे स्नान करा रही है। ये माँ

का प्यार है या तुम्हारा अपनी माँ से कराने वाला दुलार। अपनी माँ को थोड़ा आराम

करने दो, और अब तो तुम्हे उनकी मदद भी करनी होगी।

सुक्खी,अंकेष से—मै मम्मा को खाना बना कर खिलाउंगा।

अंकेष,सुक्खी से—कब ?

सुक्खी,अंकेष से—आज षाम को।

अंकेष,सुक्खी से—वॉव ! मुझे भी ईन्वाईट करना।

सुक्खी,अंकेष से—हम दोनो मिलकर बनायेंगे।

अंकेष,सुक्खी से—कौन दोनो ?

सुक्खी,अंकेष से—आप और हम।

अंकेष,सुक्खी से—ओ ! तो ये बात है।

अब अंकेष और अर्चना थोड़ा सा मुस्कुराते है और खाना खाने मे लग जाते है।

अर्चना,अंकेष से—खाईये आप खा कहां रहे है ?

अंकेष,अर्चना से—परेषानी मे खाना खाने का भी मन नही कर रहा है। एक परेषानी से निकले तो दुसरे गले पड़ गई। क्या करे ?

अंकेष—कहां मिलेगा तु कमल ? जो तुझे देखकर मै मुस्कुराऊ।

अर्चना,अंकेष से—इस तरह के केष मे चांस कम ही होता है आदमी के जीवित मिलने का। पर उम्मीद तो

रखनी पड़ेगी, और उसे (कमल) ढुंढना तो पड़ेगा ही इंसानियत के नाते , उस उपकार के

बदले जो उसने हमलोगो पर किए है। आज हमें भी मन कर रहा है उर्मिला से जाकर

मिलू और उसे संतावना दूँ कि वो ज्यादा हतास ना हो।

अंकेष,अर्चना से—जरूरी है ! ऐसा करने से भले ही उसका दुख कम ना हो ,पर दिल हल्का जरूर लगने

लगेगा उसका। तब तक मै जाकर कमल की चौहद्दी नापता हुँ।

अब अंकेष अपने घर से निकलकर कमल के मोहल्ले मे कमल के घर से थोड़े पुरब मे जाकर कुछ छोटे—मोटे दुकान करने वाली एक दो महिलाओ से कमल के बारे मे पुछ—ताछ करता है। जिससे एक महिला के बारे मे अंकेष को पता चलता है जिसके साथ कमल कभी—कभी चौराहे के चाय दुकान पर चाय की चुस्की के साथ चर्चित खबरो पर चर्चा किया करता था। जिस महिला का नाम दुराई नक्सी है। अब अंकेष उसके पास पहुँचता है और उसके सब्जि के दुकान के सामने खड़ा हो जाता है। दुराई एक 45—50 साल के बीच की उम्र की महिला है, जो देखने मे हल्के ष्यामली रंग की है, षरीर हल्का मोटा है पर हाईट थोड़ा कम है,ज्यादा पढ़ी—लिखी नही है पर अपना रोजगार अच्छे से चला रही है। चेहरे का पानी पतला है।

दुराई,अंकेष से—बोलिए क्या लेना है ?

अंकेष,दुराई से—आप कमल को जानती है।

दुराई,अंकेष से—कहां है वो फर्जी आदमी ?

अंकेष,दुराई से—नही मुझे नही पता है।

दुराई,अंकेष से—आप भी उसी को खोज रहे है क्या ? कही उसने आपसे भी टका तो नही ठगा है ।

अंकेष,दुराई से—नही, नही ऐसी कोई बात नही । बस उससे (कमल) मुलाकात करना था। कुछ नीजी काम

था उससे (कमल)।

दुराई,अंकेष से–वो जब भेट हो तो हमें जरूर बताईयेगा। हमें भी अपना हिसाब चुकता करना है उससे

(कमल) । वो (कमल) आपको ऐसे नही भेटायेगा, सबेरे–सबेरे 05 बजे उसके घर पहुँचिये

या षाम को दारू के अड्डे पर जाकर खोजिए वो मिल जायेगा।

अंकेष–(मन ही मन) बेचारा कही भी रहता तो मिल ही जाता। असल मे ये इन दोनो जगह क्या, किसी भी

जगह पर नही है।

अंकेष,दुराई से–हां वो तो अंतिम मे उसके घर पर तो जाना ही पड़ेगा, लेकिन सोचा ईधर ही कही मिल

जाता तो हम दोनो के लिए ठिक रहता।

दुराई के गोद मे बैठी उसकी पोती जब उसे तंग करने लगती है तो वो अपनी पोती को जोड़ से डांटती है और उसे घर के अंदर भेजती है।

दुराई,अंकेष से–जब से वो (कमल) मरघट्टा हमरा से रूपये उधार लिया है, (उंगगी दिखाकर) ईधर नही

आ रहा है। दुरबीन से देखने पर भी नजर नही आ रहा हैं।

अब अंकेष ये सब बाते जानने के लिए कि कमल ने दुराई से कब और कितने रूपये क्या कह कर लिए है, अंकेष दुराई से कमल के बारे मे कुछ उल्टे–सीधे बाते करने लगता हैं।

अंकेष,दुराई से–हां वो (कमल) जिससे भी रूपये लेता है, उसे लौटाने का नाम ही नही लेता है। उससे

(कमल) अपने ही रूपये लेने के लिए भींख मांगना पड़ता है। जैसे वो हमारे रूपये हमें

लौटाकर हम पर कोई उपकार कर देगा।

दुराई,अंकेष से–वो (कमल) इतना ध्रुत है कि क्या बताए ? अब क्या सही , क्या गलत ? उसने (कमल)

मुझसे रूपये यह कह कर मांग के ले गया कि ''उसके पड़ोसी मे कोई औरत जो जेल चली

गई है, और उसका एक छोटा सा बच्चा है जो उसके बिना नही रह सकता, कारण उस

पड़ोसी महिला को जेल से निकलना बहुत जरूरी है, नही तो उसके बच्चे को देखने वाला

कोई नही होगा, बच्चा माँ के बिना बिलट जायेगा''। उसके (कमल) इस बात पर तरस

खाकर मैने अपनी पोती से मिलने वाली प्यार और मोह–माया तथा लगाव को समझते हुए,

कि एक बच्चे को उसकी माँ मिल जाय और किसी तरह दुसरे का भला हो जाये । यह

सोचकर उसे–25000.00 (पच्चीस हजार) रूपये दिए। उसने कहा कि वो मझे एक दो

सप्ताह मे चुकता कर देगा और नही चुकता करेगा तो वह कोई ऐसा सामान हमको लाकर

देगा, जो उतने रूपयो के बराबर हो। पर ना सामान आया, और ना रूपये, और ना ही वो

(कमल)।

अंकेश,दुराई से–बहुत जल्दी आपने कमल पर विष्वास कर लिया।

दुराई,अंकेष से–अरे वो विष्वासी आदमी ही था। पर इस बार उसने विष्वास को डुबो दिया, दलदल मे।

अगर उसने किसी का भला किया होगा तो उसका भी भला होगा और अगर मेरे साथ

धोखा किया है तो उसे भी भला नही होगा। हमें तो ये भी पता नही की उसने जो काम के

लिए रूपये हमरा से लिया था , उनकी उसने मदद की या नही।

कमल के लिए इस तरह की बाते सुनकर अंकेष का दिमाग चकरा जाता है, वो मन–ही–मन सोचता है कि– कमल इतना गिरा हुआ तो नही हो सकता है, जब से मै उसे जान रहा हुँ। आखिर उसे ऐसा करके क्या मिलता है और ऐसा वो क्यो करता है ? उसके बारे मे कुछ भी पता करने पर कहानी कोई तीसरा ही मोड़ ले लेती है।

अंकेष,दुराई से–तो दो सप्ताह से वो आपके तरफ नही आया है।

दुराई,अंकेष से–रूपया लेल तो एक महिना हो गले।

अंकेष,दुराई से–रूपयाँ लिए हुए एक महिना हो गया।

दुराई,अंकेष से–कबल–कबल। पर आप कौन हुए ? और मैने तो बहुत ज्यादा बता दिया ।

अंकेष,दुराई से–बस आपके साथ जो हुआ है, इसी तरह का मामला मेरे साथ भी कर गया वो (कमल)। पर

मुझे भरोसा है कि वो मेरे साथ गलत नही करेगा।

दुराई,अंकेष से–हम भी कुछ दिन देख ही लेते है, तब तो उसके घर पर जाना ही होगा।

इससे आगे बगैर कुछ बोले अंकेष वहां से निकल जाता है ये सोचकर की दुराई को हमसे ज्यादा कुछ पता नही है, उसे जितना पता है उस हिसाब से उसे कुछ भी पता नही है। अब ये (दुराई) सही बोल रही है या गलत, ये तो कमल के मिलने से ही पता चलेगा ।

अंकेष,दुराई से–(जाते–जाते) फिर भी मुझे वो (कमल) मिला तो बताउंगा उसे आपके बारे मे।

अंकेष वहां से लंबी सांसे लेते हुए निकलता है और वो सीधे कमल के घर पर पहुँचता है ,जहां पर अर्चना पहले से पहुँची हुई रहती है। अंकेष दरवाजे के अंदर जाता है,देखता है कि अर्चना सुक्खी को गोद मे लेकर उर्मिला के बगल मे बैठी हुई है, उर्मिला एकदम से षांत है। अर्चना की नजरे जैसे ही अंकेष पर पड़ती है अंकेष उसे ईषारो मे (हाथो की हथेली को हिलाकर) कुछ पता नही चलने वाली फिलिंग कराता है। फिर उर्मिला की नजरे अंकेष पर पड़ती है और वो हताष भरी नजरो से अंकेष के तरफ देखने लगती है कि अंकेष उसे कुछ ऐसा बोले जिससे उसके दिल को तसल्ली मिल सके, पर अंकेष की झुकी हुई नजरे उर्मिला के बढते हुए आत्मविष्वास को तोड़ देती है। अब तक उर्मिला के आंगन मे तीन से चार लोग और जमा हो गए है जो उनके रिलेषन के है। जिसमे कोई यहां–वहां पता करने की बात कर रहा है, तो कोई पुलिस स्टेषन मे फिर से जाने की बाते कर रहा है, तो कोई उर्मिला को संतावना दे रहा है। फिर उर्मिला का एक रिष्तेदार अंकेष के पास पहुँचता है–

रिष्तेदार,अंकेष से–तो आप ही गए थे पुलिस स्टेषन पता करने के लिए। क्या बताया पुलिसवाले ने, और इतना समय हो चुका है अभी तक कुछ भी पता नही चला।

मानो वो उर्मिला का रिष्तेदार एक ही सांसो मे सारे सवालो के जवाब जानना चाहता हो। अंकेष वहां के

माहौल को जान चुका है कि यहां के लोग अभी बारी–बारी से उससे तरह–तरह के सवाल पुछेंगे,

इसलिए वो थोड़ी उँची आवाज करके जवाब देता है, ताकि सब लोग सुन ले ।

अंकेष,रिष्तेदार से–(आवाज को उँचा और मोटा करके) देखिये हमलोग गुमषुदगी का रिपोर्ट लिखाने के

बाद लगातार पुलिस के सम्पर्क मे है और आज सबेरे भी हमलोग थाने गए थे। लेकिन

पुलिस वाले का कहना है कि वे लोग लगातार सभी थाने से सम्पर्क साधे हुए है, और

हर तरह से प्रयास भी कर रहे है पता लगाने का। जैसे ही उन्हे कुछ पता चलेगा वो

तुरन्त हमें खबर करेंगे।

रिष्तेदार,उर्मिला से–ये (अंकेष) कौन है ?

उर्मिला,रिष्तेदार से–इसके (अर्चना की ओर ईषारा करते हुए) पति हैं।

रिष्तेदार,उर्मिला से–ओ ! पर इनको (अर्चना) नही पहचाने।

उर्मिला,रिष्तेदार से–(दबे आवाज से) पड़ोसी है। ८

रिष्तेदार,उर्मिला से–ओ अच्छा ! मैने उज्ज्वल को भी फोन कर दिया है, वो कुछ देर मे पहुँच रहा है।

उसके यहां कुछ जान–पहचान के लोग है, जिससे जाकर वह मिलेगा, और हमलोग

थोड़ी देर मे जायेंगे पुलिस स्टेषन। तुम घबराओ नही हौसला रखो।

इन सारी लोगो की एक दुसरे से हो रही बातो को अर्चना बहुत की इत्मीनान के साथ गंभीरता से देख रही होती है। साथ ही साथ अपने गोद मे बैठे सुक्खी को बारी–बारी से चुम भी रही होती है। बगल मे बैठी उर्मिला के कंधो पर हाथ रखकर उसे संतावना भी देने की कोषिष करती है। कमल की माँ जो आंगन मे चादर ओढे सोई हुई है ,जो बीच–बीच मे लोगो के तेज आवाज को सुनकर अपनी षरीर को हिला रही है। एक पल के बाद फिर अचानक से वो उठती है और अपने एक रिष्तेदार से–

कमल की बुढी माँ,रिष्तेदार से–रे बाबू , कमला का पता चला। तु लोग पता काहे ना करता है रे ? घर मे

चुकुर–मुकुर करने से का होगा। थाने हिलईबे, तब ना होगा कुछ, निकम्मो !

मेरा पैर चलता तो मै अभी थाने मे दरबार लगा देती , और थानेदार का

क्लास। जो बोलता है दरोगा सुनकर चले आवेत हो।

उर्मिला,कमल की माँ से–माँ आप कम बोली,, वरना सांसे अटक जायेगी। फिर घुमत रहेंगे हमलोग थाने से

हॉस्पिटल तक।

कमल की माँ,उर्मिला से–तु चुप कर सर्मिली कही की। तु बता नही रही है तेरे चलते ही कमला कही चला गया है।

कमल की माँ–(कमल को ध्यान मे रखकर) कम से कम हमे लेकर तो जाता।

कमल की माँ,उर्मिला से–तु क्या करेगी सोग मना कर,तु बस देखती रह।

ये सारी बाते उर्मिला एकदम से षांत होकर इसलिए सुनती रहती है कि उसकी सास की उम्र लगभग 75 वर्ष हो चुकी है, जिस कारण उर्मिला की सास उम्र के पड़ाव के कारण चिरचिरे स्वाभाव मे ढल चुकी होती है। इसलिए उसकी बात का उर्मिला पर कोई असर नही होता है। अचानक से कमल का एक भतीजा वहां पहुँचता है–जो सभी लोगो से कहता है कि हमलोग थाने का घेराव करेंगे, आखिर ये पुलिसवाले दो दिनो से कर क्या रहे है ?

कमल का भतीजा,अंकेष से–वैसे आने–जाने से नही होगा। वहां (थाने) जाकर बैठना पड़ेगा, तब वे लोग

एक्टिव होंगे।

अंकेष,कमल के भतीजे से–पर वे लोग (थानेदार) अपना काम कर तो रहे है।

कमल का भतीजा,अंकेष से–उसके (थानेदार) काम की ऐसी की तैसी। आग लगा देंगे थाने को, दिखा देंगे

जमाने को।।

अंकेष,कमल के भतीजे से–इस तरह से वहां (थाने) जाकर हंगामा किजिएगा तो सरकारी केष हो जायेगा।

रिष्तेदार,अंकेष से–सब सम्भाल लेंगे हमलोग।

रिष्तेदार,दुसरे रिष्तेदार और कमल के भतीजे से–चलिए।

यह सब कहते और देखते हुए अंकेष अपने आपको फिलहाल थाने जाने से रोकता है, और वहां से निकलकर अपने ऑफिस चला जाता है। सब के द्वारा थाने पहुँचने के बाद वहां कुछ देर रूक कर वहां से अर्चना सुक्खी के साथ अकेली वापस लौटकर अपने घर चली जाती है। जहां की आतबीती वो रात को अंकेष को सुनाने वाली है। जिससे कहानी एक नया मोड़ लेने वाली है,,,,,,,,। अंकेष ऑफिस से मदन को फोन करता है और उसे आज तक की सारी अपडेट बताता है और उससे सलाह मषवरा मांगता हैं।

मदन,अंकेष से–(फोन पर)मामला थोड़ा सुलझने क्या लगा, उससे ज्यादा तो उलझ ही गया, ऐसा लग रहा

है।

अंकेष,मदन से–(फोन पर) इसलिए तो तुम्हे खबर दे रहे है, बताओ कहां ढुंढा जाय उसे। एक बात तो तुम्हे

बताना भूल ही गए। बड़े–बड़े कांड करके रखे है इसने (कमल)।

मदन,अंकेष से–(फोन पर) अब क्या किया इसने (कमल),और क्या पता चला इसके बारे मे।

अंकेष,मदन से–(फोन पर) इसने तो अर्चना को जेल से छुराने के लिए किसी से झूठ बोलकर उधार तक ले

रखे है।

मदन,अंकेष से–(फोन पर) अच्छा ! ये कब पता चला ?

अंकेष,मदन से–(फोन पर) जब उसके बारे मे उसी के मोहल्ले के आस–पास पता कर रहे थे तब। एक

महिला बेचारी ने अपनी आपबीती बतायी उसको लेकर।

मदन,अंकेष से–(फोन पर) बड़े चतुर आदमी से जाकर हमलोगो ने अपना पल्ला सेट किया था ,क्या ? ये

तो चतुर ,चालाक, चापलुस और चौधरी टाईप का लोग निकला रे। किसके पल्ले मे तुम पड़

गए, हमारे साथ जाकर।

अंकेष,मदन से–(फोन पर) अब क्या किया जाय ? जैसे–जैसे उसकी बरामदगी मे देरी हो रही है, वैसे–वैसे

हमारे दिमाग का संतुलन बिगड़ सा रहा है।

मदन,अंकेष से–(फोन पर) कर भी क्या सकते हो, सिबाय उसे खोजने के ।

अंकेष,मदन से–(फोन पर) उसका पुरा घर उठकर थाने गया है, फुफा से लेकर मामा तक और भतीजे से

लेकर और रिष्तेदार तक।

मदन,अंकेष से–(फोन पर) सुकेष महाषय का क्या हाल है ? हमें तो बार–बार उसपर संदेह हो रहा है ।

अंकेष,मदन से–(फोन पर) पर उस साले कमिने से पुलिस को कहां कुछ पता चला, जिससे पुलिस किसी

चीज के ''तह'' तक पहुँच सके। उसके हाव–भाव से ऐसा लग तो रहा था कि उसे जहां

कमल मिलेगा वो उसे चीर–फार के बराबर कर देगा। लेकिन पुलिस के पुछने के दरमियां

उसके बातो के कॉन्फिडेन्स से ऐसा लग रहा था कि उसने ऐसा नही किया है।

मदन,अंकेष से–(फोन पर) हां ! ऐसा हो सकता है। वैसा न्यूज भी तो सुनने को नही मिल रहा है कि कोई

लावारिस आदमी कही पड़ा हुआ मिला। जो होष–हवाष मे ना हो और मरा हुआ भी ना

हो। फिर हमलोग जाये उसे देखने और वहां उसे देखकर कमल को पाये। तब तो जान मे

जान आये और तुम्हारा थोड़ा प्रेषर रिलिज हो। फिर भी संत को कहते है कही जाकर अंधेरे

मे तीर चलायेगा।

अंकेष,मदन से–(फोन पर) कहां है वो (संता) दो दिनो से उससे मुलाकात नही हुई है ?

मदन,अंकेष से–(फोन पर) वो भी कही ना कही लगा होगा तुम्हारे ही काम मे।

अंकेष,मदन से–(फोन पर) ठिक है देखो उसे बोलकर , फिर आगे तुमसे बात होगी।

अंकेष अब फोन कट कर देता है और ऑफिस मे कॉफी पीता है और अपने काम को निपटाते हुए षाम के कुछ बाद के समय मे अपने घर पहुँचता है। देखता है कि अर्चना अपने बिस्तर पर सुक्खी को लिटा कर उसे पढ़ा रही है, और प्यार भी कर रही हैं। सुक्खी बार–बार अपनी माँ से कहानी सुनाने की जिद कर रहा होता है,,फिर अंकेष कमरे के अंदर पहुँचता है।

अंकेष,सुक्खी से–कौन सी कहानी सुननी है आपको ? भुत वाला या दादी माँ वाली या जानवरो वाली

जिसमे एक आदमी के बच्चे को एक जंगली जानवर लेकर जंगल मे चला जाता है और

उसे उस आदमी के बच्चे से प्यार हो जाता है, जिससे वो कभी भी बिछड़ना नही चाहता।

जब वह बच्चे की माँ उसे ढुंढते हुए जंगल की ओर आती है तब उसे उसे भयानक से

दिखने वाले जंगली जानवर का सामना करना पड़ता है। अंत मे माँ की जीत होती है और

वह अपने बच्चे को लेकर वहां से वापस चली आती है।

अर्चना,सुक्खी से–लो इन्होने तुम्हे कहानी बताते–बताते कहानी सुना भी दी।

अर्चना,अंकेष से–तो पहले चाय बना दूँ, या खाना लगाऊ।

अंकेष,अर्चना से–चाय पीकर थोड़ा रिलेक्स करेंगे, उसके बाद डिनर।

अर्चना,अंकेष से–मै भी चाय पीने का बहाना ही ढुंढ रही थी , वो मिल ही गया आप से। लाती हुँ,,,,।

अर्चना चाय के लिए किचन मे चली जाती है, अंकेष सुक्खी के साथ थोड़ा दुलार–प्यार करने लगता है।

अंकेष,सुक्खी से–(सुक्खी को चुमते हुए) तो कैसी लगी मेरी कहानी ? मेरी जुबानी।

सुक्खी,अंकेष से–पर वो उस बच्चे को जंगल मे क्यो लेकर चला गया था, उसके माँ के पास से।

अंकेष,सुक्खी से–क्योंकि उस जानवर के तुम्हारे जैसे सुंदर और क्यूट बच्चे नही थे ना। तो खाना खा लिया

आपने।

सुक्खी,अंकेष से–आपके साथ भी एक और बार खायेंगे।

अर्चना चाय लेकर आती है, अंकेष जो बेड पर लेटा हुआ है, अपने षरीर को सरियाते हुए अर्चना से चाय की कप लेता है और खुद अर्चना भी बेड पर बैठती हुई चाय पीने लगती है।

अर्चना,अंकेष से–चेहरा हल्का सा Harassment जैसा लग रहा है। इतनी परेषान होने की क्या जरूरत है ? अब तो जो होना होगा वो तो होगा ही। आप तो कोषिष कर ही रहे हो। पर वहां थाने की बात तो मै आपको बताना भुल ही गई । जैसे वहां दुसरा महाभारत होने को माहौल तैयार हो रहा हो।

अर्चना अब फ्लेष बैक मे जाकर अंकेष को सारी बाते बता रही है।

वो थाने मे जब सारे लोगो के साथ पहुँची तब थानेदार षायद थाने मे नही था, ये लोग (उर्मिला के घर वाले) वहां जैसे ही पहुँचे फिर,,,,,,

कमल का भतीजा,एस0आई0 से–क्या ऐसे बैठ के रहने से काम होगा ? आप लोग कर क्या रहे है ?

एस0आई0,कमल के भतीजे से–क्या हुआ ? ऐसे क्यो बोल रहे हो ? क्या मामला है तुम्हारा ?

कमल का भतीजा,एस0आई0 से–क्यो आपको पता नही है ? कि तीन दिनो से मेरा आदमी नही मिल रहा

है।

एस0आई0,कमल के भतीजे से–ओ तो जिसके पास केष है उसके पास ना जाओगे बाबू , और थोड़ा

स्थिर से बतियाओ। हमलोग यहां अपने घर का काम करने के लिए नही बैठे है। पब्लिक का ही काम हो रहा है।

उर्मिला,एस0आई0 से–तनिक आप ही सोचिए sir , आपको अगर कुछ हो जायेगा तो आपकी पत्नी पर क्या

बितेगी ? हमलोगो के जगह पर रह कर सोचिये जरा।

एस0आई0,उर्मिला से–ये सब बाते हमको पता है, दिन – रात तो यही सब कामे हम करते है, और आपका

केष मेरे पास नही है। वहां मुंषी जी के पास जाकर पता किजिए।

कमल का भतीजा,एस0आई0 से–तो अब यही पता करे हमलोग कि केष किसके पास है ? और आप लोग

बैठ के यहां पर मटरगस्ती किजिए। बबाल करवा देंगे, आप लोग समझते

क्या है ?

एस0आई0,कमल के भतीजा से–स्थिर रहो, वरना हाजतवा मे बंद कर देंगे। हेकरी निकल जायेगा तुम्हारा।

कमल का रिष्तेदार,कमल के भतीजे से–आराम से, चलो वहां (थाना के मुंषी के पास) बात करते है।

मुंषी,कमल के रिष्तेदार से–आ रहे है वो (कमल के केष से संबंधी एस0आई0) रूकिये थोड़ा।

अब सब लोग मुंषी के टेबल के सामने जमावरा लगा कर के खड़े हो जाते है और एस0आई के आने का इंतेजार करने लगते है।

कमल का भतीजा,रिष्तेदार से–इन सबसे बात करके कुछ नही होगा, चलिए थानेदार से बात किया जाय।

मुंषी,कमल के भतीजे से–वो (थानेदार) अभी जाँच मे निकले है, वो भी अभी नही है, और आप लोग

इत्मीनान रहिए, पुलिस अपना काम कर रही है।

कमल का भतीजा,मुंषी से–क्या काम कर रही है ? जब अभी तक मेरा आदमी मिला ही नही है। रोज कुछ

ना कुछ बहाना कर देते है आप लोग की यहां खोज करवा रहे है, वहां खोज

करवा रहे है। लेकिन हो रहा है कुछ नही।

मुंषी,कमल के भतीजे से–आपके एस0आई0 आ रहे है बात कर लिजिएगा। वहां (बेंच की ओर ईषारा करते

हुए) बैठिये जाकर के।

कमल का भतीजा,रिष्तेदार से–आज तो थाना का घेराव करना पडेगा।

ये बाते बोलते हुए ये लोग बेंच पर जाकर बैठते है, अर्चना उर्मिला को सहारा देती हुई बेंच पर बिठाती है।

अर्चना,उर्मिला से–खुद को थोड़ा हौसला दिजिए।

उर्मिला,अर्चना से–सब हौसला तो मेरा खत्म हो रहा है।

थोड़े देर मे थानेदार आते है और थाने मे भीड़ देखकर उसी एस0आई के पास जाकर भीड़ के बारे मे पुछते है जिससे अभी कुछ देर पहले कमल के भतीजे की बाता–बाती हुई थी।

थानेदार,एस0आई से–इतनी भीड क्यो है ?

एस0आई,थानेदार से–अरे क्या बताये sir , ये लोग कुछ बुझता ही नही है। आ के एकदम से हल्ला उठा

दिया है।

थानेदार,एस0आई से–क्यो ?

एस0आई,थानेदार से–आदमी जो नही मिल रहा है वही केष है।

तब तक थानेदार उर्मिला को पहचान चुका होता है और समझ चुका होता है कि ये लोग कमल की तरफ से है और उन्ही के खोजबीन के लिए दोबारा यहां आये है। थानेदार अपने चैम्बर मे जाकर बैठता है, पीछे से ये लोग उसके चैम्बर मे पहुँचते है।

थानेदार,कमल के भतीजे से–क्यो भाई ? इतना षोर क्यो मचा रहे है ? हमलोग लगे हुए है ना कमल को

खोजने के लिए। हां,,,,,।

रिश्तेदार थानेदार से–वही पता करने आये है हमलोग sir, कि अभी तक क्या पता चला ?

थानेदार.रिष्तेदार से–अभी तक कुछ भी पता नही चला है पर पता लगाने की बंदोबस्त कर दिए है, लेकिन

जब तक वो (जिसने कमल का अपहरण किया है) एक्टिव नही होगा तबतक थोड़ा

परेषानी है उसे ढुंढने मे।

थानेदार,उर्मिला से–वैसे आप ये बताये कि अब तक आप लोगो के पास कोई फोन आया है कमल के बारे

मे या किसी ने यह कहा है उसके बारे मे कि वो मेरे पास है और उसके बदले मे उसे

कुछ चाहिए। कुछ भी वैसी बाते जिससे लगे की उसका किसी ने अपहरण कर लिया

हो।

उर्मिला थानेदार से–नही। लेकिन आप लोग उसे ढुंढीये।

कमल का भतीजा थानेदार से–आप कहना क्या चाहते है ?

थानेदार कमल के भतीजे से–वही जो अक्सर लोग सुनना नही चाहते है। पुलिस अपना काम कर रही है

उसके मोबाईल नंबर को सर्विलांस पर डाल दिया गया है लेकिन स्वीच ऑफ

होने के कारण कुछ पता नही चल पा रहा है। हम पुरी कोषिष कर रहे है,

अब आप लोग जा सकते है।

रिष्तेदार,थानेदार से–कैसी कोषिष कर रहे है जो अभी तक कुछ नजर नही आ रहा है।

थानेदार,रिष्तेदार से–आप भी रहिए मेरे साथ मे पता चल जायेगा कि कैसी कोषिष हो रही है। मै अभी वो

सब तहकीकात करने मे लगा हुँ कि वो इतने दिनो मे किस–किस से मिला और किस

कारण से मिला। अब हमे अपना काम करने दिजिए।

इतने मे कमल के एक दुसरे रिष्तेदार थानेदार को अपना मोबाईल थमाते हुए , , , , , , ,

दुसरा रिष्तेदार,थानेदार से–लिजिए sp साहब से बात किजिए।

अब थानेदार थोड़ा चौकते हुए उससे फोन लेकर बात करता है।

थानेदार ,sp से–जय हिन्द sir ।

Sp, थानेदार से–क्या कर रहे हो ? किसी का आदमी मिसिंग है और तुम उन सब से अच्छे से बात भी

नही कर रहे हो। क्या अपडेट है ?

थानेदार ,sp से–किसी ने अभी तक जिम्मेवारी नही ली है और ना ही बॉडी मिला है। नंबर सर्विलांस पर

डाले है और एरिया चेक कर रहे है।

Sp, थानेदार से–ठिक है कॉपरेट माइंड से काम करो। मै अपने स्तर से देखता हुँ।

अब फोन कटता है और थानेदार उस रिष्तेदार को फोन थमाते हुए

थानेदार,दुसरे रिष्तेदार से–ज्यादा डिस्टर्व मत किजिए आप लोग। ऐसे मे काम करने मे और लेट–लतिफ

होगा। जैसे कुछ पता चलता है आप लोगो को बतायेंगे। कृपा करके आप लोग

जाईये। हम पुरी कोषिष कर रहे है।

अभी वर्त्तमान मे

अर्चना अंकेष से–इतना माथा पच्ची करने के बाद हमलोग वहां से निकले और उर्मिला बहन रोते हुए घर चली गई और उसके साथ मे सब चले गए और मै यहां घर आई।

अब अर्चना एक लंबी सांसे लेते हुए अंकेष को पुरे इत्मीनान से देखती है ।

अर्चना अंकेष से–हमें लगता है आपके इतने परेषान होने से कुछ बदलने वाला नही है।

अंकेष अर्चना से–जैसे !

अर्चना अंकेष से–क्योंकि इतने दिन हो जाने पर हमें कुछ अनहोनी के जैसा लग रहा है जो नही लगना

चाहिए। ना किसी का फोन ना कुछ ईषारा किसी के द्वारा कुछ मांगने का और ना ही

कोई अपहरण का सुराग । ऐसे मे तो सिर्फ और सिर्फ एक ही बाते उजागर होती है कि वो (कमल) अब नही रहा।

अंकेष अर्चना से–ऐसा नही हो सकता। वो (कमल) अपने से मर नही सकता और कोई उसे मारने से पहले

कोई मांग तो रखेगा जरूर। जिससे पता चलेगा की उसका क्रिनेप किसी ने किया है।

अचर्ना अंकेष से–अगर इस तरह की कोई बाते हो ही ना सिर्फ और सिर्फ उसके (कमल) जान के बदले के

अलावे तो।

अंकेष अर्चना से–ये बात हमलोग कैसे पता कर सकते है कि किसी को हर हालत मे उसकी (कमल) जान

ही चाहिए। सिर्फ और सिर्फ सुकेष के अलावे जिससे पुलिस के द्वारा पुछने पर कुछ

भी पता ना चला।

अर्चना अंकेष से–मै जब जेल मे थी तो मुझे आहटे पता चल जाती थी तुम्हारे आने की और जब आहटे

पता चलती थी तो तुम जरूर आते थे। अभी इसी तरह की आहटे आ रही है।

अंकेष अर्चना से–फिर तो पुलिस का षक दो या तीन लोगो पर ही रहेगा। सुकेष पर और मेरे साथ संतो

पर।

अर्चना अंकेष से–इसके लिए परेषान होने की जरूरत नही है क्योंकि पुलिस कड़ी से कड़ी जोड़ेगी । जो

आप तक पहुचेंगी ही नही।

अर्चना के द्वारा कही जा रही इस तरह की बात पर अब अंकेष उसकी चेहरे पर नजरे गराकर उसकी सारी बाते ध्यान से सुनने लगता है । अंकेष अब ये सोचने पर मजबुर है कि आखिर अर्चना इस तरह की बाते बोल क्यो रही है ? वो उसके मंषे को स्पष्ट सूनना चाहता है।

अंकेष अर्चना से–हमें लगता है किसी औरत के चक्कर मे वो पड़ा और मरा।

अर्चना अंकेष से–वही ना कह रहे है कि माहौल के असर से पता चलने लगता है कि किसकी सांसे चल

रही है और किसकी रूकी हुई है। अब तो आपको भी ऐसा लगने लगा है।

अंकेष अर्चना से–पर तुम्हे अचानक से ऐसा क्यो लगने लगा कि अब वो (कमल) नही रहा ?

अब सुक्खी सो चुका है और अर्चना उसे चुमते हुए बिस्तर पर अच्छे से लिटा कर अंकेष के करीब आती है और उसके रूबरू होती है दोनो एक दुसरे से लिपट कर आपस मे एक से हो जाते है। फिर कुछ पलो के बाद अर्चना अपनी बालो को समेटते हुए अंकेष का हाथ पकड़कर अपने पड़ोसन के यहां जाने के लिए अपने दरवाजे से बाहर निकलती है।

अंकेष अर्चना से–इस चाची के यहां क्यो जा रहे है हमलोग ?

अर्चना अंकेष से–आईये तो सही।

अंकेष अर्चना से–तुमने खाना भी कहां लिया इन्हे देने के लिए ।

अर्चना अंकेष से–वो मैने इन्हे दे दिया है।

अंकेष अर्चना से–फिर क्यो जा रहे है ? उनका तबियत तो ठिक है ना या ज्यादा बीमार हो गई है वो।

अर्चना अंकेष का हाथ अभी तक नही छोड़ी है और वो षांत और गंभीर होकर पड़ोसन के घर के दरवाजे के अंदर पहुँचती है। जो एक बुढ़ी पड़ोसन है और जो अकेली रहती है जिसे दिखाई नही पड़ता है। जिसे अर्चना पहले खाना देने और खिलाने मे मदद कर चुकी होती है और अभी भी मदद कर रही है। इन दोनो के आने की आहट को वो पहचान चुकी है। यह जानने के लिए की वो अर्चना ही है उसका नाम पुकारती है।

बुढी अर्चना से–अर्चना।

अर्चना बुढ़ी से–हां मै ही हुँ। अब सो जाईये बहुत रात हो गई है।

बुढी अर्चना से–क्या तुम अपना सामान देखने आई हो ?

अर्चना बुढ़ी से–हां आप सो जाईये।

अब अर्चना एक रूम मे जाकर उसके कोने मे रखे एक फ्रिज बोक्स के तरफ अंकेष के साथ बढती है। अंकेष यह वाक्या देखते हुए अंदर ही अंदर परेषान सा हो रहा है कि आखिर अर्चना हमें दिखाने क्या वाली है। ऐसी क्या चीज है जो अर्चना बगैर कुछ कहे इतनी षांत दिख रही है। अर्चना उस फ्रिज बोक्स के पास जाकर रूक सी जाती है।

अंकेष अर्चना से–आखिर इसमे क्या है और तुम हमें क्या दिखाना चाहती हो ?

अर्चना अंकेष से–इसमे वो चीज है जिसे देखकर तुम्हे अच्छा नही लगेगा, लेकिन तुम्हारी सारी परेषानी दुर हो जायेगी

। किसी भी राज का अगर हमराज ना हो तो उसे छुपाया जा सकता है पर ये जानना

तुम्हारे लिए इसलिए जरूरी है कि तुम मेरे अभी सबसे करीब हो।

इस समय अंकेष का ध्यान कमल के मौत पर भी जाता है पर वो इस सोच को अनदेखा कर देता है। अर्चना अब दो जगह चाभी लगाकर के फ्रिज को खोलती है और अंकेष को ईषारा करती है देखने के लिए । जैसे ही अंकेष की नजरे फ्रिज के अंदर रखे कमल के डेड बॉडी पर पड़ती है जिस पर ठंडे वर्फ की परत जम सी गई है। उसे ऐसा लगता है मानो उसके पैरो के नीचे जमीन ही ना बची हो, उसका दिमाग सन्न सा रह जाता है, उसकी

आँखे चौधरा सी जाती है, उसके सर मे चक्कर आने लगते है, जैसे मानो वो तिलमिला कर जमीन पर गिर ना जाय। उसकी धडकने तेज हो चुकी गई है, और ऐसा लग रहा हो जैसे उसके षरीर को काटने पर खुन ना निकले। वो अचम्भीत है जैसे आष्चर्य की चरम सीमा पर पहुँच चुका हो। फिर वो हतास, और टुटे हुए दिल के साथ गुस्से भरी नजरो से अर्चना को देखता है।

अंकेष अर्चना से—क्यो ?

अब अर्चना की आँखे आंषुओ के बहाव से लबालब हो चुकी है। वो कमल के मौत से उतनी दुखी नही है जितनी अंकेष के अब तक के परेषानी से दुखी है। बस अर्चना उसे चुप रह कर सारी बाते समझाने की बे—इंतेहां कोषिष मे लग जाती है और अंकेष के गले से लिपटकर रोने लगती है। अंकेष उसके षरीर के वजन को अपने थरथराते हुए षरीर के कारण सम्भाल नही पाता और वो जमीन पर बैठ जाता है। अर्चना भी उसके साथ—साथ जमीन पर उसे पकड़ते हुए बैठ जाती है।

अर्चना अंकेष से—कुछ दिन पहले की बात है जब मै जेल मे थी और तुम हमसे बराबर मिलने आते थे। मुझे छुड़ाने के लिए जब तुम कमल के गवाही के लिए उसके पास जाया करते थे । उसी समय वो एक दिन मुझसे मिलने जेल आया था। जब मै मिलने के लिए खिड़की के पास पहुँची और उसे देखा तो उसे (कमल) पहचान नही पाई, लेकिन कुछ ही पलो के बाद उसके चेहरे को मैने पहचान लिया कि वो (कमल) कौन है?

बातो की षुरूआत पहले उसने (कमल) ही की। उसके सारी बातो को सुनना छोड़ मै बस एक ही बाते सोची जा रही थी कि आखिर ये (कमल) हमसे मिलने ही क्यो आया है ? क्योंकि वो सुकेष का लंगोटिया था। फिर उसने (कमल) मेरा हाल—चाल जानना चाहा, और हमसे बहुत सारी बाते पुछने के बाद वो चला गया। वो दुसरे दिन फिर हमसे मिलने आया। मैं आष्चर्य मे पड़ गई कि ये (कमल) हमसे बार—बार क्यो मिलना चाह रहा है ?

अब अर्चना यादो के फ्लेष बैक मे जाकर अंकेष को अपनी दर्द भरी और धर्म संकट वाली आपबीती सुनाती है। जो एक माँ के लिए एक तरफ खाई और दुसरे तरफ कुँए मे कुदने जैसा था।

कमल,अर्चना से—तो कैसी है आप ? मुझे बहुत तकलिफ है कि आप बेवजह ही यहां पर सजा काट रही है।

अर्चन,कमल से–अब काट ही रही हुँ , चाहे वो वजह से हो या बेवजह से। जो समय लिखा गया है मेरे

लिए उसे तो काटना ही पड़ेगा।

कमल,अर्चना से–हां वो तो सबका कटता है किसी का अच्छे से, तो किसी का इस तरह (जेल जैसा) से।

बहुत कठिन होता है यहां पर जेल मे समय काटना, मै समझ सकता हुँ आपके दुखो को।

अर्चना,कमल से–तो कैसे आना हुआ ? बेवजह इस ना आने वाली जगह पर।

कमल,अर्चना से–मुझे पता नही था कि उस साले कमिने (सुकेष) ने बाद मे आप पर केष करके आपको

यहां तक पहुँचा दिया। उसने तो ऐसा करने के बाद हमें जाने–अंजाने मे ये बाते बताई।

फिर मै भी करता तो करता क्या ? लेकिन देर से ही सही मेरे पास एक दिन वो (अंकेष)

आया था और उसने सारी बाते बताने के बाद हमसे मदद के तौर पर गवाही देने के लिए

गुजारिस करने लगा,लेकिन मै अपने प्यारे दोस्त सुकेष के खिलाफ कैसे जा सकता था ?

मैने बात को उतना गंभीरता से नही लिया।

अर्चना,कमल से–(उस पर से नजरे हटाकर) हां आपको क्या जरूरी है दोस्त को दुष्मन बनाने की ?

कमल,अर्चना से–लेकिन उस दिन जब आपका बच्चा मेरे पास आया तो मै उसकी बाते सुनकर दंग रह

गया।

अर्चना,कमल से–कौन ?

कमल,अर्चना से–वही आपका बचवा जो है।

अर्चना,कमल से–कौन ? सुक्खी।

कमल,अर्चना से–हां वही जो आपका 05–06 साल का लड़का है ।

अर्चना,कमल से–वो (सुक्खी) कब गया आपसे मिलने के लिए ?

कमल,अर्चना से–यही कुछ समय पहले, पर सोचने वाली बात तो ये है कि वो हमें पहचानता कैसे था ?

तब अर्चना अपने –आप मे सोचती है कि हो सकता है षायद अंकेष, मदन और संतो के द्वारा इसके (कमल) बारे मे बात करने को सुक्खी ने सुन लिया होगा, या उन्ही लोगो ने भेजा होगा।

अर्चना,कमल से–वो (सुक्खी) कभी मिला होगा आपसे अंकेष के साथ ।

कमल,अर्चना से–पर हमें लग रहा था कि उसे (सुक्खी) किसी ने छोड़ा था मेरे पास लाकर, ताकि बच्चे होने

के नाते उससे मै बहल सकुँ।

अर्चना,कमल से–तो वो (सुक्खी) आया आपके पास तो क्या बोला उसने आपको ?

कमल,अर्चना से–वही जो एक प्यारा सा बच्चा अपनी माँ के पास जाने के लिए हर कोषिष करने के लिए

तैयार रहता है। उसके हर बातो से लग रहा था जैसे किसी ने सिखा कर उसे (सुक्खी)

मेरे पास भेजा था, पर कुछ बाते वो अपने खुद से भी बोल रहा था। वो (सुक्खी) कहने

लगा आप ही है जो मेरी माँ को वापस ला सकते है। आप मेरी माँ का काम करके उसे

(अर्चना) ला दिजिए प्लीज।

अब कमल के द्वारा सुक्खी के बारे मे कही गई ये सारी बातो को सुनकर अर्चना के आँखो मे आंसु भर आते है।

कमल,अर्चना से–वो (सुक्खी) ये भी कह रहा था कि आपके बिना उसका (सुक्खी) मन नही लगता है। वो

आपके बिना रह ही नही पायेगा।

अर्चना,कमल से–उसने तो हमें सोचने पर मजबुर कर दिया कि वो ऐसा भी कर सकता है।

कमल,अर्चना से–फिर मैने सोचा, एक बच्चे को उसकी माँ से मिलाने के लिए मुझसे जो संभव हो, वो मै

करूंगा। ''पर ममता तो बलिदान मांगती है ये भी कही सुना था''।

कमल के द्वारा सुक्खी के बारे मे कही गयी ये सब बाते अर्चना के दिल को झकझोर के रख देती है और वो ये सोचने लगती है कि वो कब जेल से निकल कर खुली हवा मे सुक्खी को अपने गले से लगाये। अपने बच्चे के प्रति मोह,माया और ममता होने के कारण सुक्खी को पाने के लिए वो विचलित सी हो जाती है। पर वो कमल के द्वारा कही गई बाते ''ममता तो बलिदान मांगती है ''से अब तक अंजान है।

कमल,अर्चना से–बहुत चाहता है वो (सुक्खी) आपको।

अर्चना,कमल से–तो आपने क्या सोचा ?

कमल,अर्चना से–हां मै तो आपकी मदद करूंगा,और करना चाहता हुँ और क्यो ना करू ?, पर अब बात मुद्दे

की करता हुँ।

आगे कमल की बाते सुनने से पहले अर्चना की धड़कने तेज होने वाली थी। जो अब वो कमल के काले जुबान से सुनने वाली है।

कमल,अर्चना से–मेरी आदत ऐसी है कि मै जो भी बोलता हुँ एक सीरे से बोल देता हुँ, चाहे वो सामने वाले

को जैसा भी लगे। अच्छी लगी तो ठिक, वरना मै अपनी नजरे नीचे भी कर लेता हुँ।

अर्चना कमल की षर्तो को लेकर अंजान है और अपने मन मे मंथन भी कर रही है की ये (कमल) कहना क्या चाह रहा है ? अर्चना खिड़की मे लगी जाली मे उंगली फसाकर उसे कस के पकड़ी हुई है और कमल ईधर–उधर नजरे दौड़ाकर दिवाल के सहारे होते हुए अपनी नजरे झुकाकर,,,,,,

कमल,अर्चना से–**तो मै गवाही दे दुंगा। पर उसके लिए मै आपके साथ समय बिताना चाहुँगा, वो भी अकेले**

मे।

यह बाते बोलकर कमल अपनी नजरे झुका लेता है और काने खुली रखता है की इस बात का अर्चना क्या जवाब देती है। लेकिन अर्चना बगैर कुछ बोले उसकी तरफ लगातार देख ही रही है, और मन ही मन एक पल मे ही उसे हजारो तरह की गाली दे जाती है। बेषरम , बेहाया ,नीच ,कमिना ,मौकापरस्त और मरा हुआ जमीर वाला इंसान,,,। अब बगैर कुछ कहे अर्चना वापस हो जाती है। अर्चना की जाने की आहट सुन कर कमल अपनी झुकी

हुई नजरे उठाता है, और फिर एक बार हिम्मत करके अर्चना को जवाब लगाता है।

कमल,अर्चना से—तो मै फिर कल आउंगा, आप अपना फैसला बता दीजिएगा।

अब अर्चना कमल के आँखो से ओझल हो जाती है और सोचते हुए की कमल किस तरह का घटिया और नीच जैसी बाते करने चला आया था मेरे पास। कमल भी यह सोचते हुए जेल से निकलता है कि मैने तो तुक्का मारा है ,षायद वो (अर्चना) कही मान जाय, वरना मै तो उस बच्चे (सुक्खी) के लिए गवाही तो दुंगा ही।

वर्त्तमान मे,,,,,,,,,,

अर्चना,अंकेष से—(अभी वर्त्तमान मे) फिर मै पुरी रात सुक्खी को पाने और कमल के दरिंदगी वाली बातो को सोचती रही, सबेरे तक मै उसके (कमल) बातो को नकारती रही, पर अचानक फिर वो मुझसे मिलने आया। उसके चेहरे को देखकर साफ पता चल रहा था कि वो हमसे ''हां '' की उम्मीद लगाये बैठा था , और मेरे डर से वह (कमल) सहम भी रहा था। फिर परिस्थतियो और इंसानो के बीच होने वाले समय के सामंजस्य को मै नकार नही सकी। फिर तीसरी बार कमल मुझसे मिलने पहुँचा। वो जानना चाह रहा था कि मेरा जवाब क्या है ? मै उसके (कमल) चेहरे को टकाटक से देखे जा रही थी, पर उसकी नजरे झुकी हुई थी। फिर तुम्हारी परेषानी और सुक्खी के तरप को मै नजर अंदाज नही कर सकी।

अब फिर अर्चना यादो के फ्लेष बैक मे जाकर अंकेष को फिर से अपनी दर्द भरी बातो मे डुबो देती है।

अर्चना,कमल से—मुझे मंजूर है।

कमल,अर्चना से—(लंबी सांसे लेते हुए,जैसे उसने अपनी सांसे रोक रखी थी) ठिक है तो आप निकलने के लिए तैयार रहिए।

अभी वर्त्तमान मे,,,,

अर्चना की इतनी सी बाते सुनकर अंकेष के आँखो मे गमो के आंसू पानी की धारा की तरह बहने से लगते

है।

अर्चना,अंकेष से–(अभी वर्त्तमान मे) उस समय उसकी (कमल) हवस के नजरो को मै महसुस कर रही थी,

ऐसा लग रहा था कि मेरे षरीर के सभी खुन पानी बन चुके थे, पर दुसरी ओर खुषी का

ऐसा माहौल था, जैसे मानो वो (कमल) कोई युद्ध जीतकर आया हो और हमसे ईनाम

पाकर आनंदित हो उठा हो।

अंकेष,अर्चना से–(आँखो मे आंसूओ के साथ) इसका मतलब तुमने मुझे कुछ नही समझा, कि मै तुम्हारे और

कितने काम आ सकता था। ऐसा लग रहा है मैने तुम्हारे लिए कुछ किया ही नही, या

फिर तुमने मुझे कुछ करने दिया ही नही। षायद मै अब कितना भी रो लू ,अब दिल हल्का

होने से रहा। परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी भयावह हो, इंसान को अपने धर्म से भटकना

नही चाहिए, और परिस्थिति से लड़ना ही चाहिए। उसके अलावे कोई उपाय नही बचता

हमारे पास। तुम अपनी मजबूरी कहो या किसी की हवस की षर्ते ,लेकिन इसमे किसी की

जान चली गई। जो नही होना था। अगर ऐसा हुआ है तो मानो वक्त को करवटे लेने मे

देर नही लगेगी। सबकुछ पहले जैसा खराब हो सकता है और हमलोग फिर से वही पहुँच

जायेंगे जहां से हमलोग मेहनत करना षुरू किए थे।

अंकेष–(ऊपर देखते हुए)अगर इंसान अपने हिसाब से कुछ समय काट भी ले तो ऊपर वाले को क्या फर्क

पड़ता है हमारे इस नादानी से ?

अंकेष,अर्चना से–तुमने जरा भी इस बारे मे मुझे कुछ बताया होता , तो षायद परिस्थितियाँ कुछ और होती।

अर्चना,अंकेष से–मै तुम्हारे दिल को और ठेस पहुँचाना नही चाहती थी।

अंकेष,अर्चना से–पर तुम अपनी कोषिष मे नाकामयाब रही। क्या तुम मेरी इस याद्दाष्त को मिटा सकती हो ?

अर्चना,अंकेष से–कौन सी ? (कमल की डेड बॉडी की ओर ईषारा करते हुए) ये वाली ,या वो (कमन के

हवस) वाली।

अंकेष,अर्चना से–कोई भी जिससे तुम्हे लगे की मेरी तकलिफे कम हो रही हो। पर काष ऐसा हो !

अर्चना,अंकेष से–तुम्हे इस तरह से देखने के बाद , मै इस तरह इस बोझ को अपने दिलो पर नही रखना

चाहती थी।

अंकेष,अर्चना से–बोझ नही रख सकते, पर निर्णय खुद कैसे ले सकते हो ? फिर क्या होगा उस बच्चे का,

जब तुम फिर से वही (जेल) पहुँच जाओगी।

अर्चना,अंकेष से–क्या करे ? मेरी खुद की खुषी मुझसे देखी नही गई। क्योंकि ऊपर वाले ने इसकी

(कमल) मुक्ति जो मेरे ही हाथो से लिखी थी।

अंकेश,अर्चना से–इसके (कमल) तलबलाहट को षांत करने के लिए तुम इसे बेहोष भी कर सकती थी।

अर्चना,अंकेष से–पर वो (कमल) इतना मे मानने के लिए तैयार कहां था ? उसकी ज्यादा की चाहत ही

उसकी मौत की वजह बनी। वो उस चीज की कामना बार–बार करने लगा, जिसे मै

षायद एक बार भी पुरा करने मे कई बार अंदर ही अंदर मर चूकी थी।

अब अर्चना फ्लैस बैक मे जाकर उस समय को याद करके रोते हुए वो सब कहने लगती है, जो तीन दिनो पहले कमल उसके पास आकर उसके साथ वक्त बिताने के बाद फिर उससे दोबारा इस काम के लिए समय देने के बारे मे कहने लगा।

कमल,अर्चना से–तो मै ये चाहता हुँ कि और कुछ समय तक तुम मेरे साथ वैसा ही करो, जैसा पिछले दिनो मे तुमने मेरे साथ समय बिताकर किया।

अर्चना यह बाते सुनकर कमल की बाकी बची हुई जिंदगी की सारी सांसे खत्म कर देना चाहती है। लेकिन ना जाने कही ना कही वो भी सुक्खी और अपने प्यारे प्रियतम अंकेष के साथ भविष्य मे सुखद संयोग के लिए विवष है।

अर्चना,कमल से—(गुस्से से आंखे लाल करके) क्या ? तुम अपनी हदे पार कर रहे हो। इतनी लालच ठिक नही है। लालच इंसान को हर वो मोड़

पर पहुँचा देती है, जहां से उसके लिए सकुषल वापसी के सारे रास्ते बंद हो जाते है।

कमल,अर्चना से—मेरे वजह से तुम्हारा दुसरा जन्म हुआ है। इसलिए मेरे प्रति तुम्हे गुस्सा होने की कोई जरूरत नही है।

अर्चना,कमल से—निकल जाओ यहां से। वरना मुझे दोबारा जेल जाना पड़ सकता है तुम्हारे मर्डर करने के जुल्म मे।

कमल,अर्चना से— मै अगर पुलिस को सिर्फ ये जाकर के बता दुँ कि मुझे जान से मारने की धमकी देकर गवाही के लिए मजबूर किया गया है, तो सोच लो सच्चाई सामने आते देर नही लगेगी।

अर्चना,कमल से—तुम्हारे जैसा खुदगर्ज इंसान मैने कभी नही देखा।

कमल,अर्चना से—वो तो ठिक है, पर मेरी बात मानने मे तुम्हारे सब की भलाई है। सोच लो,,,,। चलो कोई बात नही, आज जो मैं सोच कर आया हुँ, उसे पुरा कर दो। बाकी आगे देखेंगे।

फिर अर्चना ना चाहते हुए भी विवष होकर उसके सामने अपने को ढिला छोड़ देती है।

कुछ पलो के बाद,,,,,,।

कमल,अर्चना से—तो मै कुछ दिन और तुम्हारे पास आउंगा। क्योंकि हमदोनो के बीच इसी तरह का सौदा हुआ था। पर इस बार तुम्हारे समय के हिसाब से मै आउंगा। अब बता दो कब आना है ?

कमल के इतना कहते ही,,,,,,,

अभी वर्त्तमान मे,,,,

अर्चना,अंकेष से—(अभी वर्त्तमान मे) मै उसकी (कमल) बातो की जहर की घुंट पीकर अपने — आप को नही रोक पाई। मैने तुरंत अपना मिजाज बदलते हुए दिखावटी चेहरे का इस्तेमाल किया, मैने उसे (कमल) कुछ पल आराम

करने को कहा। जिसका (परिणाम) अभी तुम्हारे सामने है। मै नही चाहती थी उसे मारने के लिए पर मै ऐसा करने से खुद को रोक भी नही पाई। मैने उसकी (कमल) धडकने रोक दी दवाई देकर। अब तुम मुझे जो सजा दे सकते हो।

अंकेष,अर्चना से–सजा तो तुमने खुद को दे ही दिया है। एक ही अपराध की दो बार सजा मै कैसे दे

सकता हु।

अर्चना,अंकेष से–तुम जानना चाहते हो उस रात गलियारे मे मेरे और सुकेष के बीच क्या बाते हो रही थी,

जब हमसे तुम पहली बार मिले थे। (अंकेष और अर्चना की पहली मुलाकात की रात, जब

अर्चना और सुकेष उस गली मे लड़ रहे थे।

अब एक अजीब और टसन भरी नजरो से अंकेष अर्चना की आँखो मे देखने लगता है, और मन ही मन सोचता भी है कि कितनी बार पुछे जाने पर ना बताने वाली वो बात अर्चना आज बिना कहे क्यो बता रही है ?

अर्चना,अंकेष से–सुक्खी सुकेष का बच्चा नही है।

अंकेष,अर्चना से–क्या ???

अर्चना,अंकेष से–हर किसी को ऐसे षॉक लग सकता है, जैसा तुम्हे लग रहा है। मैने सिर्फ एक राते

उसके (अर्चना का पहला प्यार) साथ मे बिताए थे। जिससे मेरी जिंदगी मे कभी ना खत्म

होने वाली ऐसी रिष्ते की बीज पड़ गई जिसे मै चाह कर भी छोड़ नही सकती। उस रात

को सुकेष सुक्खी को हमसे दुर करना चाहता था, और वह (सुकेष) उसे (सुक्खी) वैसी

हॉस्टल मे रखने के लिए हमें मजबूर कर रहा था, जहां यह एहसास होने लगे की वो

अनाथ है। मै सुकेष की सारी बाते मानने के लिए तैयार थी बगैर इसके की सुक्खी हमसे

दुर रहे। उसकी षर्तो को ना मानने के कारण वो सुक्खी को देखना ही नही चाहता था।

अब अंकेष अपने बैठे हुए दिलो के साथ लंबी सांसे लेते हुए अपने मुँह खोलता है,,,,,,

अंकेष,अर्चना से–तो क्या षर्ते थी उसकी (सुकेष) ?

अर्चना,अंकेष से–उसकी षर्ते ये थी कि वो तब एक वैसी कुआँरी लड़की से षादी करेगा जो पहले से

गर्भवती है, यानी मै, तो उस बच्चे को जन्म देने के बाद उसे किसी अनाथालय मे छोड़

देगा और उससे मै मिलुंगी भी नही, पर कभी–कभी सुक्खी से मिलने की षर्तो के साथ

मेरा उससे (सुकेष) विवाह हुआ। क्योंकि मेरी षादी कराने के लिए मेरे माँ–बाप नही थे,

जो मेरे मन–मुताबिक मेरे मन–पसंद लड़के से मेरी षादी कराते। मै बचपन से अपने

मामा–मामी मे पास रहती थी। मेरी माँ मुझे बचपन मे छोड़ गई, और मेरे पिता मुझे मेरे

मामा–मामी के पास छोड़ गए, उन्हे (पिता) लगता था कि वे मेरी परवरिस अकेले नही कर

सकते थे। अब बात थी मेरी मामा–मामी का अपने सर पर से बोझ हटाना। जो उन्होने

(मामा, मामी) कर दिया।

अंकेष,अर्चना से–(दबे जुबान से) ये जानते हुए की तुम षादी से पहले ही प्रेग्नेंट हो ,वो (सुकेष) तुमसे

ष्षादी के लिए तैयार कैसे हुआ।

अर्चना,अंकेष से–क्योंकि मेरी खुबसूरती उसे (सुकेष) घायल कर चूकी थी और मेरे मामा ने उसे अलग से

बहुत सारे रूपये भी दिए थे।

अंकेष,अर्चना से–तुम अगर चाहती तो बच्चे को Miscarriage करवाकर फिर से एक नई जिंदगी की षुरूआत

कर सकती थी, पर तुमने ऐसा नही किया क्यो ?

अर्चना,अंकेष से–क्योंकि सुक्खी को जन्म देना मेरे लिए एक चैलेंज था और इस बच्चे मे मै उसका (सुक्खी

का अपना पिता) रूप हमेषा देखना चाहती थी, जो मेरे दिल के बेहद करीब था। जिसके

एहसास को मै आज तक नही भुल पाई हुँ ,और ना षायद कभी भुल पाऊ। उसका जिक्र

तुम्हारे लिए तुम्हारे तकलिफ को बढाने के जैसा होगा । इसलिए तुम्हे मेरे द्वारा ना चाहते

हुए भी ये बताना जरूरी है कि वो (सुक्खी का अपना पिता) कौन था ?

अर्चना के द्वारा कही जा रही ये सारी बातो को सुनकर अंकेष का दिल बैठा जा रहा था और बीच–बीच मे उसके दिमाग मे कमल की मौत वाली बाते आकर उसे परेषान किए जा रही थी। वो सोच नही पा रहा था कि वो इस आपबीती सुनने के बाद कुछ करने लायक बचेगा भी या नही। उसकी धड़कने चिल्ला–चिल्लाकर अर्चना से कह रही थी की चुप हो जाओ अब बहुत हुआ, पर उसे अर्चना की राज जानने और अर्चना के द्वारा आज सारे राज पर से पर्दा उठाने की जिद् किसी को नही रोक पा रही थी।

''कहते है जब आँखो से आंसू निकलते है तो दिलो के बहुत सारे दरवाजे को तोड़ते हुए निकलती है''

यानी आंसू दिल के रास्ते से ही होकर गुजरता है।

अर्चना अपनी आँखे बन्द करके लंबी सांसे लेकर कुछ पलो के लिए स्थिर हो चुकी है, जैसे उसके दिमाग मे कोई बात का संघर्ष चल रहा हो। हालातो के मार से अंकेष डेड बॉडी के फ्रिज बाक्स से पीठ सटाये बैठे बेजान सा दिखने लगा है।

फ्लेस बैक सुक्खी के अपने पिता की कहानी,,।

अर्चना,अंकेष से–उसका (सुक्खी का अपना पिता) नाम जय था ,उससे मै अपने घर मे ही मिली थी,

जब मै घर मे अकेली थी। वो अचानक से मेरे घर मे दाखिल हुआ था। सबेरे जब मेरी

आँखे खुली और जब मै अपनी बिस्तर छोड़ रही थी तब मेरी नजर अचानक से उस

(जय) पर पड़ी, उसे देखने के साथ मै चौक सी गई और ये सोचने पर मजबूर हो गई की

इस बंद कमरे मे ये आदमी यहां कैसे आया और ये है कौन ? जैसे ही मै आवाज लगाने

वाली थी , फिर उसने मुझे षांत रहने को कहा। वो देखने मे लाचार सा लग रहा था,

उसके सर्ट पर कुछ लाल–लाल झिटे थे जो षायद खुन के थे। उजरे हुए बालो के साथ

उसका सफेद सा दिखने वाला चेहरा परेषानियो और चोट के कारण ष्यामला पर चुका

था। जिसे देख कर लग रहा था कि सही मे वो किसी तकलिफ मे था।

जय,अर्चना से–षांत रहिए मै यहां रात से हुँ , पर मैने आपको कुछ नही किया।

अर्चना,जय से–(अर्चना चादर से अपने षरीर को ढकते हुए) तुम कौन हो और यहां कैसे आये ? और यहां कर क्या रहे हो ?

अर्चना अपने कमरे मे चारो तरफ देखती है कि कही उसे क्रिनेप करके कही ले जाकर रख तो नही दिया गया है। जय उस खुली हुई खिड़की की तरफ देखता है जिससे वो घर के अंदर दाखिल हुआ था। फिर उस खिड़की के तरफ अर्चना की भी नजने जाती है जिसे देखकर उसे लगता है कि ये (जय) षायद यही से अंदर आया है। अर्चना जोड़ से अपने मामा–मामी को आवाज लगाने वाली ही होती है, इतने मे जय दोनो हाथ जोड़ कर घुटने के बल पर,,,,,,

जय,अर्चना से–05 (पाँच) मिनट के लिए अपने–आप को स्थिर रखिये और मेरी कष्ट के बारे मे सोचिए।

अर्चना,जय से–ऐसे अचानक से उत्पन्न होने वाले परिस्थिति मे कोई खुद को कैसे स्थिर रख सकता है ?

जय,अर्चना से–क्योंकि मै चाहता तो रात भर मे आपको कभी भी परेषान कर सकता था, पर ऐसा मैने नही

किया और ना ही अब कुछ गलत करने वाला हुँ आपके साथ। विष्वास एक दुसरे को

आपस मे खींचते है और पाप लोगो को विनाष की ओर ले जाता है। अभी मै एक बड़ी

मुसीबत मे हुँ। मुझे अभी आपके सिवा कोई नही समझ सकता

अर्चना,जय से–मै अभी अपने मामी को बुलाती हुँ।

जय,अर्चना से–मुझमे इतनी ताकत नही कि मै अपने पैरो पर खड़ा हो सकूं। आप चाहो तो दरवाजे पर

जाकर मुझसे बात कर सकती हो, ताकि मेरे कुछ गलत करने पर आप दरवाजे को बाहर से

बंद करके भाग सको।

अर्चना,जय से–तुम्हारे डर से मै अपने कमरे से ही क्यो भागू।

जय,अर्चना से–क्योंकि आप अपने–आप को सुरक्षित महसुस कर सको और हमारी बात भी सुन सको। अभी

आपके हाथो मे समय है मुझ बेसहारे की मदद करने की।

अर्चना,जय से–तुम अभी जितना जल्दी हो सके निकलो यहां से, वरना मैने अगर अपने मामा को बुला लिया

तो समझ जाना तुम्हे पुलिस के हवाले कर दिया जाएगा।

जय,अर्चना से–अगर मै पुलिस के हत्थे चढ चया तो कल आपको मेरी मौत की खबरे मिलेगी।

अर्चना,जय से–मै कैसे मान लू तम्हारी इस बात को, और तुम मेरे ही घर के अंदर क्यो आये ? तो ठिक है

रात भर तुम बच गए अब निकलो।

जय,अर्चना से–मेरे मरने के बाद तो मानोगी। लेकिन उस समय आपके पास ये सब बदलने के लिए

षायद वक्त ना बचा हो। बस मै आपसे यही चाहता हुँ कि कुछ दिनो मे जब मेरे जख्म ठिक

हो जायेंगे तो मै अपने आप चला जाउंगा। तब तक आप चाहो तो मुझ पर रहम कर सकती

हो। मै आपका ये ऐहसान कभी नही भुलूंगा। आपके लिए ये समय मुझपर विष्वास करने

लायक नही है, फिर भी आपको हम पर तरस खाकर विष्वास करना चाहिए। बस मुझे कुछ

समय दे दीजिए, मै अकेला हुँ इस दुनियाँ मे।

वर्त्तमान मे,,,,,,,,,,

अर्चना,अंकेष से–(अभी वर्त्तमान मे) उसे देखकर और उसके बातो से साफ–साफ लग रहा था कि वो किसी

ना किसी मुसीबत मे है और वो सही कह रहा था। बस कुछ ही क्षणो मे उसकी इस तरह

की बातो पर रहम खाकर मै ये सोचने पर मजबुर हो गई की इसकी मदद करनी चाहिए

या नही। षायद मैने कही पढा था ''वक्त रहते जो काम करने है कर लिजिए वरना वक्त

फिर लौट कर नही आता''। फिर मैने उसकी मदद करने की सोची।

फ्लेस बैक,,,,

अर्चना,जय से–ठिक है तो तुम खिड़की के पास रहो, ताकि कोई तुम्हे दरवाजे के बाहर से देखे नही, और

इस तरफ (बेड के इस ओर) आने के बारे मे सोचना भी मत। मै तुम्हारे इस सिचुएषन पर

रहम कर रही हुँ, इससे आगे और कुछ नही और इस मर्यादा को बनाए रखना।

जय,अर्चना से–आपके इस मेहरबानी पर मेरे इस तड़पते हुए मन को सुकून मिल रहा है। मुझे थोड़े गर्म

पानी की जरूरत है और साथ मे एक दर्द कम करने वाली दवा का, जो मुझे नींद से सुला

सके।

अर्चना ब्याकुल होकर नीचे किचन मे जाती है और मन ही मन सोचने मे लग जाती है कि वो सही कर रही है या गलत। वह किचन मे पानी गर्म करती है और गर्म पानी के साथ घर मे पड़े कुछ दर्द की दवाईयां से साथ जख्म ठिक होने वाली और कुछ दवाईयां लाकर जय को देती है। उसे पानी देकर अर्चना वापस दरवाजे को बाहर से बंद करके फ्रेस होने के लिए चली जाती है। कोषिष करती है कि उसके मामा मामी उसके दरवाजे की ओर ना जाय।

मामी,अर्चना से–तेरे मामा को चाय चाहिए, आज तुने लेट कर दिया जगने मे।

अर्चना,मामी से–हां रात को थोड़ा ज्यादा लेट तक पढाई हो गई।

मामा,अर्चना से–(थोड़े उँचे आवाज मे) अर्चना,,,!

अर्चना,मामा से–हां समझ गई , अभी लाती हुँ आपके लिए चाय को कप मे डाल कर।

अर्चना झट से चाय बनाकर मामा और मामी को देती है और नास्ता बनाने मे जुट जाती है। इसी दरमियां बीच–बीच मे वो अपने कमरे के पास जाकर उसके बंद दरवाजे को खोलकर जय को देखती है कि वो कर क्या रहा है और वो सही मे बीमाड़ है या ढोंग कर रहा है। वो देखती है कि जय गर्म पानी से अपने पेट और छाती पर हुए जख्म को धीरे–धीरे साफ कर रहा होता है। अर्चना फिर से किचन मे चली जाती है। अर्चना डर के कारण अपने कमरे मे नही जाकर वह हॉल मे ही बैठकर अपने समय को बिता रही होती है, पर दोपहर के समय मे वो कमरे मे जाती है, जहां जय उसका इंतेजार कर रहा होता है। अर्चना की आने की आहट पा कर ,,,

जय,अर्चना से–(करकराहते हुए) अगर कुछ खाने के लिए मिल जाता तो, ये ऐहसान हमेषा याद रखुंगा।

फिर अर्चना कुछ खाने के लिए लाकर उसे देती है, जिसे जय बड़े आराम से खाता है और अपनी भुख मिटाता है यह जानते हुए कि आगे कब खाने को मिलेगी। अब समय होने पर जय खुद अर्चना से खाना मांगता और अर्चना अपने मामा–मामी से छुपाकर उसे मजबूरी मे खाना लाकर देने लगती है, जब तक वो ठिक होकर यहां से चला नही जाता। दो दिन बीत चुके है और धीरे–धीरे जय की तबियत ठिक होने लगी है और उसका चेहरा भी पहले से साफ लगने लगा है। पर वो अभी तक खुद से चलने मे सक्षम नही है। अब अर्चना समय पर जय के खाना मांगने से पहले ही उसे खाने के लिए दे देती है। अर्चना सोचती है कि वह जल्द से जल्द ठिक हो जायेगा तो यहां से चला जायेगा।

अर्चना,जय से–तो क्या हुआ था तुम्हारे साथ ?तुम अगर नही बताओगे तो मै तुमपर इतनी रहम क्यो करू?

मुझे ये तो पता होना चाहिए कि मै किसकी मदद कर रही हुँ ?

यह बाते सुनकर जय अपने षरीर को थोड़ा हिलाता है और ना चाहते हुए र्अचना के आँखो मे आँखे मिलाकर बड़े षालिनता से ,,,,,

जय,अर्चना से–आपके द्वारा किए जा रहे हमपर इस असीम कृपा के पश्चात आपके सवालो के महत्त्व को मै

समझ रहा हुं। मै आपको जरूर बताउंगा की मै कौन हुँ और यहां कैसे पहुँचा ? तो पहले

आप क्या जानना चाहेंगे ?

अर्चना,जय से–तुम्हारे साथ अभी क्या हुआ ? जो तुम मेरे ही कमरे मे पहुँच गए।

जय,अर्चना से–इसे इत्तेफाक कहिए या मेरा नसीब जो मुझे यही खिड़की (खुली हुई खिड़की को देखते हुए)

दिखी और मै इसी मे आ गया।

अर्चना,जय से–यहां तक तो ठिक है , उसके बाद।

जय,अर्चना से–मेरे साथ वही हुआ जो दुनियां के कुछ ही लोगो के साथ होता है, अपनो के द्वारा दिया

गया धोखा। जहां मेरा कोई अपना नही रहा, और ना ही मै किसी का। मै किसी तरह

मुष्किल से अपने आप को बचा पाया। वरना मै आज तुम्हारे सामने भी नही होता।

अर्चना,जय से–ऐसा ना होता तो क्या ब्राह्मांड मे कोई हलचल हो जाती ? और मुझे क्या फर्क पड़ता जब

तुम मेरे रूबरू ही ना होते।

जय,अर्चना से–हां क्या फर्क पड़ता जब भिगी हुई जमीन फिर से भिग जाये, या प्यासे को फिर से पानी

पिलाया जाय या मरे हुए को ताना सुनाया जाय।

अर्चना,जय से–षायद मेरे सवाल के जवाब देने से तुम कतरा रहे हो।

जय,अर्चना से–कतराते वो है जो अपने अतीत को छुपाना चाहते हो, और हमें तुमसे अपना अतीत छुपाने से

कोई फायदा नजर आते नही दिख रहा है। बस मै उस याद को दोहराना नही चाहता,

क्योंकि अतीत दर्द के अलावे कुछ नही देती चाहे वो अच्छे हो या बुरे ?

अब जय अपने दुखःद फ्लैष बैक मे जाकर अपने साथ घटे घटना को याद करते हुए अर्चना से share करता हैं।

जय,अर्चना से–कुछ दिन पहले की वो भिगी हुई बारिष वाली रात जब मै अपने दोस्त गौतम के साथ अपने

तीसरे दोस्त प्रीतम की पत्नी और उसकी चार साल की बच्ची को उसके घर छोड़ने जा रहा

था। जिसका पति यानी मेरा दोस्त प्रीतम अब हम लोगो के बीच नही रहा, वो मर चुका था

और उसका परिवार बिखर चुका था पर हमलोग किसी तरह अपने किए हुए गलतियो का

प्रायष्चित करना चाह रहे थे, उस गुजरे हुए दोस्त की पत्नी को सहायता पहुँचा कर।

अभी वर्त्तमान मे जय अर्चना की ओर देखता है कि अर्चना उसकी बातो को सुन रही है या नही।

अर्चना,जय से–(जय के समय के वर्त्तमान मे) सून रही हुँ, आप कांटिन्यू रखिये।

जय,अर्चना से– क्योंकि मेरे और गौतम के द्वारा ही उसे एक आवष्यक डील के लिए बाहर भेजा गया था,

ना जाने कैसे उसका एक्सिडेन्ट किस बहाने से हो गया कि वो (प्रीतम) बचा ही नही।

जिसका खामियाजा सिर्फ और सिर्फ एक काम करके ही चुकाया जा सकता था वो था

प्रीतम के पीछे बचे हुए उसके अपनो का ख्याल रखकर। मै उसकी (प्रीतम की पत्नि) षादी

अपने छोटे भाई से कराना चाहता था ताकि उसे भी कोई देखभाल करने वाला मिल जाय।

जिसकी मनाही गौतम ने कभी नही की , और उसने ये भी नही कहा कि वो खुद प्रीतम की

पत्नी को पाना चाहता था। पर वो अंदर ही अंदर खफा था मुझसे।

अर्चना,जय से–प्रीतम की पत्नी क्या चाहती थी ?

जय,अर्चना से–वो वही चाहती जो हम चाहते थे, क्योंकि प्रीतम मेरे बारे मे उसे पहले ही बता चुका था चाहे

कुछ भी हो जाये ,वो मेरी बाते मानने से इन्कार नही करेगी। प्रीतम के नही रहने पर गौतम

का उसके तरफ झुकाव तो था पर उसका भविष्य सही नही लग रहा था मुझे। क्योंकि वो ये

सारी बाते अपने घर के लोगो के पास पहुचँने नही दे रहा था।

अर्चना,जय से–तुमने उससे षादी क्यो नही कर ली ?

जय,अर्चना से–क्योंकि मेरे दिमाग मे इस तरह का ख्याल नही आया ? और मै गौतम को अपना दुष्मन नही

बनाना चाह रहता था, इसलिए मैने प्रीतम की पत्नी से इस बारे मे पुछा था, पर उसने अपने

आपको गौतम के पास कॉम्फटेबल फील नही होने वाली बात कही। वो तो षादी भी नही करना

चाह रही थी ,पर प्रीतम के द्वारा मुझे कहे गए बातो को उसे सुनाने पर वो तैयार हो पाई षादी के

लिए।

अर्चना,जय से–तुमने तो ये अच्छा काम किया, फिर इसमे बुराई क्या है जो तुम इतना कुछ झेल रहे हो।

जय,अर्चना से–जिस तरह से तुम इस कहानी को देख रही हो, उस तरह से षायद गौतम इसे नही देख

सका। एक दिन अचानक से वो (गौतम) मेरे पास आया।

जय,अर्चना से–(अभी वर्त्तमान) मै एक गोदाम मे बैठकर सामान खरिदने वाले से बाते कर रहा था।

फ्लैष बैक,,,,

गौतम,जय से–(एकदम गुस्से मे आकर) तो निभा ली तुमने दोस्ती और कर दिया अपने दोस्त के अरमानो

को पुरा। वो (प्रीतम की पत्नी) मुझे पसंद नही करती कोई बात नही, पर तुम्हे उसे मेरे

विरूद्ध भरकाना नही चाहिए था। ताकि वो मुझे देखना भी पसंद ना करे। आखिर क्यो किया

तुमने ऐसा।

जय,गौतम से–(गंभीरता से) अच्छा ! तो इतने हड़बराये क्यो हो ? बैठो बात कर रहे है।

इनते मे गौतम जोड़ से टेबल पर अपने हाथ पटकता है, यह देख जय भयभीत हो जाता है और पहले से अपने सामने बैठे आदमी को वह जाने के लिए कहता है ं।

जय,उस आदमी से–आप जा सकते हैं।

वो आदमी माहौल को गर्म देखकर दबे पांव वहां से निकल जाता है।

जय,गौतम से–हां तो तुम इस तरह से क्यों बात कर रहे हो ?

गौतम,जय से–हमारी बाते तो इसी तरह से होती है, आज क्या नया हो रहा है जो ?

जय,गौतम से–वो तो नजर आ रहा है। तुम कहना क्या चाहते हो ?

गौतम,जय से–वही जो तुम सुनना चाहते हो ?

जय,गौतम से–फिर भी मै ये जानना चाहता हुँ कि तुम किस बारे मे बात कर रहे हो ?

गौतम,जय से–हममे तुममे कभी भी इस तरह से बाते हुई है,फिर आज जो हो रही है वो किस लिए हो रही

है ये तुम्हे पता है।

वर्त्तमान मे,,,,

जय,अर्चना से–मै समझ चुका था कि ये हो ना हो धंधे की बात तो नही हो सकती, ये (गौतम) षायद

उर्वषी की बात कर रहा है।

अर्चना को ये नाम पहचाना हुआ लग रहा है। पर वो ये सोच रही है कि षायद ये दुसरी उर्वषी हो मेरी सहेली नही हो सकती है।

अर्चना,जय से–तो प्रीतम की पत्नी का नाम उर्वषी था।

जय,अर्चना से–हां ! जानती है आप ।

अर्चना,जय से–तुम्हारी कहानी मे मुझे घुसने का षौक नही है मै उसे क्यो जानूंगी ?

जय,अर्चना से–नही ! बस हमें लगा।

अर्चना,जय से–हां तो फिर क्या हुआ ?

फ्लैष बैक,,,,

जय,गौतम से–तुम्हारे बारे मे मैने उससे (उर्वषी) पुछा था, पर उसने मना कर दिया। फिर मैने

अपने भाई के बारे मे पुछा तो वह (उर्वषी) मान गई। किसी भी तरह मुझे अपना

भार कम करना था, जो मैनें किया। तुम्हारा भी दोस्त था वो (प्रीतम) फिर तुमने क्या किया ?

गौतम,जय से–तुमने तो मौका ही नही दिया कुछ करने का, फिर कैसे भार उतारू मै ? दुष्मणी कहां से

षुरू होती है , जब एक दोस्त दुसरे दोस्त की खुषी मे खलल डालने लगते है तब से ?

जय,गौतम से–तुम्हे लगता है मैने भरकाया है उसे तुम्हारे बारे मे।

गौतम,जय से–तो मै ऐसे बेवजह क्यो कहुंगा ।

जय,गौतम से–कोषिष करो की दोस्त होने के नाते दोस्ती ना टुटे।

गौतम,जय से–(अपना आपा खोते हुए) तुम्हारी दोस्ती गई भीतरे मे, और तुम भी जाओगे भांड मे। साले

अपने भाई से उसकी (उर्वषी) षादी करवाकर उसे अपने घर मे रख कर उसके (उर्वषी)

साथ खुद मुँह काला करवाने की सोच रखे हो क्या ?

अब जय उसे जोड़ से डांटता है ,,,,,

जय,गौतम से–क्या बक रहे हो तुम ? तुम्हे पता है तुम अपना आपा खो रहो हो ,जो बर्दाष्त करने के

लायक नही है।

अब गौतम अपने कुर्सी पर से खड़े हो कर ,,

गौतम,जय से–तो तुम क्या कर सकते हो मुझे ? डरा रहे हो। ये मत भुलो की मै उसे (उर्वषी) ये नही बता

सकता कि तुमने ही उसे (प्रीतम) उस दिन जानबुझ कर डिल करने के लिए वहां भेजा था,

जो काम नही जाने से भी हो सकता था।

जय,गौतम से–उससे मेरा क्या होगा ?

गौतम,जय से–कुछ हो या ना हो पर मै तो बता सकता हुँ ना।

अब जय अपने कुर्सी पर से उठकर सभी जोड़ अपने हाथो मे लाकर गौतम को एक लगा देता है। अब क्या वहां का माहौल बदल चुका था।

गौतम,जय से–तो इतने दिनो की दोस्ती मे तुमने दरार ला ही दिया वो भी एक औरत के चलते, जिसका

भला हम दोनो करना चाहते थे। पर अफसोस तुम भी उसका भला नही कर पाओगे।

जय,गौतम से–इससे पहले की कुछ भी सूलह की गुंजाईस ना बचे, तुम यहां से अभी निकल जाओ।

गौतम,जय से–ये तुमने मुझे नही, अपने तकदीर को थप्पड़ मारा है, आगे क्या होगा ये मुझे भी पता नही।

वर्त्तमान मे,,,,

जय,अर्चना से–वो तलमलाते हुए वहां से निकला । मै उसी दिन समंझ चुका था ये कुछ ना कुछ जरूर

करेगा मेरे साथ। पर इतना भयानक वो (गौतम) मेरे बारे मे चाहता है ये मै नही जान सका।

अर्चना,जय से–क्या ?

जय,अर्चना से–और क्या ? उसने मेरे नाम की सुपारी दे दी और पुलिस मे जाकर ये रिपोर्ट दर्ज करा दी

की मैने उसे जान से मारने की कोषिष की, और उसपर गोली भी चलाई।

अर्चना,जय से–तो फिर तुमने उसे मार दिया और खुद को बचते–बचाते यहां पहुँच गए।

जय,अर्चना से–नही ! अभी मेरी कहानी पुरी नही हुई है और तुम्हे अभी अपना फैसला भी नही सुनाना

चाहिए। वो (गौतम) अभी जिंदा है और उसने मुझे मारने की कोषिष की, जिसका नतीजा

तुम्हारे सामने है ये मेरा दर्द से करकराहता हुआ षरीर। मैने नही सोचा था किसी का भला

मेरे लिए इतना बुरा साबित होगा।

अर्चना,जय से–सच या झुठ , पर तुम्हारी ये कहानी सुनकर मुझे काफी अफसोस हुआ।

जय,अर्चना से–मै जब उसकी (उर्वषी) षादी कराने की कोषिष कर रहा था, तो उसने (उर्वषी) भी मेरी

षादी कराने के बारे मे कही थी। उसने अपनी सहेली से मेरी षादी के बारे मे मुझसे चर्चा

की थी।

अर्चना के दिमाग मे अब ये बाते दौड़ने लगती है कि षायद ये मेरी उर्वषी (सहेली) तो नही, जिसका पति अब नही रहा। पर हो सकता है ये (जय) कोई और उर्वषी की बाते कर रहा होगा। फिर भी अर्चना अपने धड़कनो पर हाथ रखते हुए,,,,

अर्चना,जय से–उसकी (उर्वषी) सहेली का नाम क्या था ?

जय,अर्चना से–षायद अर्चना ! ऐसा ही कुछ।

इतनी सी बाते सुनते ही अर्चना की धड़कने तेज हो जाती है और वो अपने पलंग पर बैठ जाती है और अपने–आप मे खो जाती है यह सोचकर की ये मेरी ही उर्वषी है और उसने(उर्वषी) मुझे षायद इसी लड़के(जय) के बारे मे कहा था ,जो मुझसे मिलने आयेगा। मिलने तक तो ठिक है पर ये इस हालत मे मिलने आया है इसे मै क्या समझू ? क्या मै इसे बता दू कि मै ही अर्चना हुँ जिसके बारे मे मेरी सहेली ने इसे (जय) बताया था, या ये (जय) फिर जानता है मुझे।

अर्चना के इस तरह के बदलते व्यावहार जो एकदम से षांत लग रहे थे, को देखकर जय सोचने लगता है कि ये (अर्चना) सवाल पुछते–पुछते अचानक से स्थिर क्यो हो गई।

अर्चना,जय से–तुम चाहो तो पलंग पर बैठकर आराम कर सकते हो, मै वहां सोफे पर बैठ जाउंगी।

जय,अर्चना से–अचानक से इतनी ज्यादा मेरहबानी क्यो ? सजा मुकम्मल होते–होते ऐसा लग रहा है मै

सजा से बड़ी हो रहा हुँ।

अर्चना,जय से–क्योंकि तुम्हारी कहानी पुरी हो चुकी है ?और उस कहानी मे मुझे कुछ ज्यादा ही मिल गया।

जय,अर्चना से–जैसे।

अर्चना,जय से–जैसे किसी से ना मिलते हुए भी मिल जाना।

यह बाते सुनकर जय सोचने लगता है कि ''ये किससे नही मिलना चाहती थी, जो ये अब मिल रही है। इतने मे,,,,,

अर्चना,जय से–जैसे तुम्हारा किसी से मिलना।

अब जय पलंग पर आकर बैठ चुका है और पलंग पर से खड़ी हो चुकी अर्चना दोबारा पलंग पर जय से कुछ दुरी बनाकर बैठ जाती है।

अर्चना,जय से–तुम्हे जब किसी को देखना ही था तो तुम सीधे रास्ते से क्यो नही आये।

जय,अर्चना से–तुम किसकी बात कर रही हो ?

अर्चना,जय से–उसी कि जहां तुम अभी पड़े हुए हो।

जय,अर्चना से–क्या ? मै कुछ समझा नही।

अर्चना,जय से–बस तुम सिर्फ ये बाते बता दो कि तुम यहां जानबुझ कर आये हो या इत्तेफाक से।

जय,अर्चना से–दोनो मे से जो तुम समझो। जब मुझपर हमला होने वाला था तब मै इसी गली मे

था और जब भागने की गुंजाईष ना थी तो सामने तुम्हारी खुली हुई खिड़की थी। क्या तुम

वही हो जिसके बारे मे उर्वषी ने कहा था और तुम ही अर्चना हो। क्योंकि उसका भी घर

यहां आप–पास होना चाहिए।

अर्चना अपने दिलो–दिमाग को षांत करते हुए,,,

अर्चना,जय से–(सर हिलाकर) हां। अगर ये वही उर्वषी है तो मै वही अर्चना हूँ।

जय,अर्चना से–ये तो गजब हो गया। ऊपर वाला हमपर इतनी मेहरबान कैसे हो सकता है, अब तक तो

किस्मत लात मार रही थी।

अर्चना,जय से–पर ज्यादा खुष होने की जरूरत नही है, दुरी बनी रहेगी।

जय,अर्चना से–ये बार–बार दुरी बने रहने की बात तुम क्यो कह रही हो ? नजदिकियाँ तो तुम ही बढा रही

हो। तुमने ही तो नीचे पड़े आदमी को पलंग पर बैठने को कहा और खुद तुम भी पलंग पर

बैठी हो। इसे मै दुरी बढाना समझू या कम करने की कोषिष।

अर्चना,जय से–तुम्हे पता नही कि मै कितनी खतरनाक हूँ।

जय,अर्चना से–मै इस कातिल निगाहो से लड़ने को तैयार हूँ।

जय अपनी तरफ से जरा अर्चना की तरफ हल्का खिसकता है।

अर्चना,जय से–इसके बाद के परिणाम को तुम सहन नही कर पाओगे।

जय,अर्चना से–आग के दरिया मे डुब कर जाने से ज्यादा खतरनाक परिणाम और क्या होगा ?

अर्चना,जय से–(आराम से) तुमने हमारा पीछा किया।

जय,अर्चना से–क्योंकि तुमने ऐसा नही किया और हमें पता दिया गया था ?

अर्चना,जय से–तो तुम्हे दरवाजे से आना चाहिए था। ये गलत है हमदोनो का एक कमरे मे रहना।

जय,अर्चन से–फिर सही क्या है ?

अर्चना,जय से–तुम्हारा यहां मेरे साथ एक कमरे मे नही होना। क्योंकि हमलोग अभी तक एक दुसरे को

जानते तक नही, और एक दुसरे से अंजान है।

जय,अर्चना से–हर कोई एक दुसरे से मिलने से पहले एक दुसरे से अंजान ही होते है।

अर्चना,जय से–एक समय तुम्हारे बारे मे मेरे मन मे ख्याल आते थे, जब उर्वषी ने हमसे तुम्हारे बारे मे चर्चा

की थी। पर ये पता नही था कि ख्याल का परिणाम ऐसा होगा।।

जय,अर्चना से–जो भी हो, पर मै उस दिन की खुली हुई खिड़की को हमेषा याद रखुंगा ,और हमसे तुम्हे

डरने की कोई जरूरत नही।

अर्चना,जय से–डर तो मुझे खुद से लग रहा है कि मैने तुम्हे इतना नजदीक ही क्यो आने दिया ?

जय,अर्चना से–डर को खत्म करने का तुम्हारे पास एक रास्ता है, वो है मेरे जाने का इंतेजार करना।

इतनी सी बात सुनते ही अर्चना अपनी झुकी हुई नजरे उठाकर जय को देखती है, और अपने सर को हिलाकर हां कहती है,पर वो कहना नही चाह रही थी। क्योंकि उसके (जय) जाने की बातो से अर्चना खुष नही है ?

अर्चना,जय से–काष तुम मुझे इस तरह ना मिलते।

अब अर्चना की नजरे, जो जय को अपने पास और करीब आने देने के लिए तैयार है, यह देख जय और थोड़ उसकी तरफ बढता है पर थोड़ी दुरी

रखते हुए अपने को रोक लेता है। फिर अर्चना जय पर से नजरे हटाकर किसी एक जगह पर टिका देती है।

अर्चना,जय से–काष तुम दरवाजे से आते, तो सब कुछ ठिक रहता।

जय,अर्चना से–ठिक होने के बाद फिर दरवाजे से आ जाऊंगा, पर तुम्हारे मामा–मामी से क्या कहुंगा ?

अर्चना,जय से–तुम्हे कुछ नही कहना है, उन्हे (मामा,मामी) जो कहना है मै उन्हे बता दुंगी।

अर्चना की बातो से अब जय को लग चुका है कि इन दो चार दिनो मे अर्चना के दिलो मे उसके लिए कुछ हलचल जरूर हुंआ है, जो उसे अच्छी वाली फिलिंग दे रही हैं। अब जय बे–झिझक अर्चना से बात करने से पीछे नही हटता।

जय,अर्चना से–तो इस पलंग पर मै बैठ कर आराम करू या सोकर।

अर्चना,जय से–तो तुम्हारे कहने का मतलब है मै सोफे पर जाकर बैठू।

जय,अर्चना से–नही–नही , मेरा कहने का मतलब है कि एक पलंग पर हमलोग एक साथ कैसे बैठ सकते

है।

अर्चना,जय से–जैसे अभी बैठे हुए है।

जय अब धीरे–धीरे अर्चना की मनोदषा को भांपने लगा है जो उसके प्रति अर्चना की है। पर वो अपनी तरफ से कुछ भी करने से डर रहा है ताकि अगर अर्चना को खराब लग गई तो उसे हल्ला करके अपने मामा मामी को बुलाने मे तनिक भी देर ना लगेगी। जिससे इसके अभी तक के सुकुनं से बीते जख्म वाले दिन मे कोई रूकावट ना हो जाये।

जय,अर्चना से–बहुत–बहुत धन्यवाद आपका जो आपने इस पलंग पर मुझे बैठने देने के लायक समझा।

अर्चना,जय से–हो सकता है और भी कुछ की ईजाजत मिल जाय आपको। ईजाजत लेने का मन हो तो बता

सकते है।

अर्चना,जय से–हरेक बात मै समझा भी नही सकती।

जय,अर्चना से–ऐसा नही लग रहा है कि इस तरह की बाते बोलकर आप हमें बेचैन कर रहे है।

अर्चना,जय से–आप भी तो मेरे साथ यही कर रहे है।

जय,अर्चना से–तो क्या मै आपके जुल्फो से खेलने के लिए आपसे ईजाजत मांग सकता हूँ।

अर्चना,जय से–(सर हिलाकर) हां इजाजत है।

जय,अर्चना से–इतनी मेहरबानी क्यो ?

अर्चना,जय से–ये मेहरबानी नही , किनारे का कस्ती से मिलने की जरूरत है। जिसे कोई रोक नही सकता।

जय,अर्चना से–कस्ती भी तो अपनी बाहे फैलाकर किनारे से मिलने के लिए तैयार है।

अर्चना,जय से–किनारा तो हमेषा कस्तीयो का इंतेजार करती ही है, कभी कस्ती भी तो लहरे छोड़कर

किनाने के बाहो मे आये।

अब जय के रगो मे खुन तेजी से दौड़ने लगता है और उसकी धड़कने तेज हो चुकी है, वो अर्चना को स्पर्ष करना चाहता है पर वह डर भी रहा है। जबकि इसकी इजाजत उसे पहले ही मिल चुकी है।

जय,अर्चना से–(डरते हुए) तो क्या आप मेरी बांहो मे बिखड़ने के लिए तैयार है।

यह बात सुनकर अर्चना जय की तरफ देखती है और मन ही मन सोचती है कि ये आदमी बारह से देखने मे इतना डरपोक तो नही लगता जितना ये (जय) है। फिर अर्चना सोये हुए जय के माथे पर एक चुंबन लेकर झट से उठकर बाहर चली जाती है। अब के बाद जय को यह लगने लगता है कि अर्चना को अब वह अच्छा लगने लगा है। अर्चना के जाने के बाद वो अपने आप को बहुत ही मुष्किल से षांत करता हैं और उसके आने का इंतेजार भी करने लगता है। थोड़ी देर बाद अर्चना नीचे किचन से चाय बनाकर लाती है और जय को देती है और खुद अपने भी पीती हुई जय को देखती है। जय भी झुकी हुई नजरो से चाय का कप हाथो मे लिए हुए पी रहा है, कुछ पलो के बाद अर्चना भी जय के पास मे आकर बैठती है।

जय,अर्चना से–तारीफ नही कर रहा हुँ , पर चाय अच्छी हैं।

अर्चना,जय से–वो तो बगैर तारीफ के भी अच्छी है।

जय,अर्चना से–तो आप क्या चाहती है ?

अर्चना,जय से–मै एक अजनबी से भला क्या चाहुंगी ?

जय,अर्चना से–ये अजनबी इस चाय को आपके होठ से पीना चाहता है ,अगर आप चाहे तो मै बता सकता

हुँ इसे होठो से कैसे पीते है ?

अर्चना,जय से–तो चाय की तारिफ ऐसे हो रही थी, निगाहे आपकी कही और ही थी। ठिक है ईजाजत है।

अब अर्चना दरवाजे के पास जाकर उसे अंदर से अपने षरीर के सहारे धकेलकर बंद कर देती है और जय को देखने लगती है। फिर जय धीरे से उठकर उसके पास जाता है और दोनो एक दुसरे मे थोड़े देर के लिए समा जाते है और एक सुखद एहसास का अनुभव करते है। कुछ पलो के बाद अर्चना अपने हाथो के सहारे जय को अपने से थोड़ा दुर करती है।

अर्चना,जय से–ये सही नही है।

जय,अर्चना से–ये गलत भी तो नही है।

अर्चना,जय से–तुम्हारा क्या भरोसा ? खिड़की से आये हो और कब खिड़की से वापस चले जाओगे।

जय,अर्चना से–बिना भरोसे के तो इतना होना ही नही था। षायद ये समय की पुकार है कि हमलोग ना

रूके। चाहे परिणाम जो भी हो।

अर्चना,जय से–मै नही चाहती की कोई परिंदा हमारा दिल लेकर उड़ जाय।

जय,अर्चना से–परिंदा कितना भी उड़ ले वो वापस जमीन पर ही लौटता है। हम दोनो के बीच वो होने

दीजिए जो होना तय है।

अर्चना,जय से–अपना बनाने का ईरादा है।

जय,अर्चना से–इस बात का वादा है।

अर्चना,जय से–तो क्या तुम मुझे छोड़ के नही जाओगे ?

जय,अर्चना से–ऐसा ख्याल लाना मेरे लिए अच्छा नही होगा। जो आने वाले मेरे सुनहरे पलो को बर्बाद कर

दे।

अर्चना,जय से–ठिक है तो सब ऊपर वाले पर छोड़ देते है।

जय,अर्चना से–उसके बाद हमपर।

अब जय और अर्चना एक दुसरे को अपनी बांहो मे जकड़ लेते है और फिर वो सभी बाते हो जाती है, जो अभी फिलहाल होने की संभावना नही थी। जिस संयोग से आने वाले समय मे अर्चना को एक पुत्र के रूप मे सूक्खी जैसे बच्चे से मुलाकात होने वाली है। कुछ पलो के बाद षाम ढल चुकी है और ये दोनो एक दुसरे से लिपटे हुए पलंग पर जम से गए है।

अर्चना,जय से–कुछ भी होने से पहले हमलोग कुछ भी नही सोचते और हो जाने पर इतना क्यो सोचते है ?

जय,अर्चना से–क्योंकि जवान लोग जवानी के समय मे बुद्धि का उपयोग ना के बराबर करते है,

जब वो जवानी के चरम सीमा पर होते है तब।

रात को अर्चना अपने मामा–मामी को खाना खिलाती है और उनके सोने तक इंतेजार करके वो अपने कमरे मे जय के लिए खाना लेकर आती है । टेबल पर खाना लगाने के बाद वो जय को सहारा देकर खाना खाने के लिए कहती है।

अर्चना,जय से–खाने के लिए इतना देर तक इंतेजार करने के लिए माफी चाहती हुँ।

जय,अर्चना से–इस कमरे मे मै सिर्फ करता हुँ तो वो है बस आपका इंतेजार, इसके अलावे कुछ नही।

बताईये कैसे मै आपका षुक्रिया अदा करूंगा ?

अर्चना,जय से–बस दिल साफ रखियेगा मेरे लिए, यही इतना ही काफी है।

फिर दोनो खाना खाते है और ये दोनो अब एक ही पलंग जो उनके कमरे मे है उसपर सो जाते है और इन दोनो के बीच प्यार–मोहब्बत का सिलसिला दो–तीन दिनो तक यू ही जारी रहता है। तीन दिनो के बाद,,,,,।

जय,अर्चना से–तो क्यो ना मै सामने से आकर तुम्हारे मामा मामी से बात करू।

जय की ये बाते सूनकर अर्चना को बहुत अच्छा फिल होता है और वो मुस्कुराते हुए,,,

अर्चना,जय से–तो आग बराबर से लगी हुई है।

जय,अर्चना से–हां जिसे हमलोगो को बुझने नही देना चाहिए।

अर्चना,जय से–ठिक है तुम अगर ऐसा चाहते हो तो मै तुम्हे कैसे रोक सकती हुँ ? बाते तो दोनो की फायदे

वाली है।

जय षाम को वहां से निकलता है और अपने लिए कुछ अच्छे कपड़े खरीदता है फिर उसे अपना लिबास बनाते हुए दुसरे दिन षाम को वो फिर से अर्चना के घर पहुँचता है, पर इस बार वो दरवाजे पर जाकर नॉक करता है। अर्चना की मामी दरवाजा खोलती है।

अर्चना की मामी,जय से–कहिए।

जय,अर्चना की मामी से–मै हुँ जय, मुझे उर्वषी ने भेजा है और आप लोगो से कुछ बाते करनी है।

अर्चना की मामी,जय से–अच्छा ! आईये । तो कैसी है उर्वषी ? बैठिये।

जय,अर्चना की मामी से–ठिक है और मेरी कोषिष है कि वो ठिक ही रहे।

जय सोफे पर बैठता है और उसकी निगाहे अर्चना को ढुंढने लगती है।

अर्चना की मामी,जय से–मुझे बताया अर्चना ने, कि आप आने वाले है किसी काम से।

जय मन ही मन सोचता है कि लगता है इन्हे नही बताया गया है कि काम क्या है ? (मन ही मन) तो कहां से षुरू करू मै ?

जय,अर्चना की मामी से–हां मुझे उसने (उर्वषी) कहा कि एक बार चले जाने के लिए। तो मैनें भी सोचा की

क्यो ना एक बार चल कर देख ही लेते है। तो आपकी कोई लड़की है जिसके

लिए आप लोग उसे ढुंढ रहे है जिससे उसकी षादी कराई जाय।

अर्चना की मामी,जय से–हां पर आपके साथ और कोई नही आये।

जय,अर्चना की मामी से–मै यहां अकेला ही रहता हु और मेरे माता–पिता गांव मे रहते है। मै यहां रहकर

एक छोटा सा बिजनेस चला रहा हुँ। जिसमे उर्वषी का पति भी हमारा मदद करता

था।

अर्चना की मामी,जय से–ठिक है बैठिये मे इन्हे बुलाती हुँ।

किचन के बाहर से अर्चना की मामी अर्चना को नास्ता को तैयार करने को कहती है।

मामी,अर्चना से–अर्चना जरा नास्ता तैयार करना।

अर्चना पहले से ही किचन मे जय के लिए कुछ स्पेषल तैयार कर रही होती है।

अर्चना की मामी उसके मामा को पुकरती है जो अपने बेडरूम मे फ्रेस हो रहे होते है, फिर उसे जाकर सारी बाते बताती है कि अर्चना को देखने वही लड़का आया है जिसके बारे मे उर्वषी से उन लोगो की बाते हुई थी। दोनो जय के पास पहुँचते है , जय दोनो हाथो को जोड़कर अर्चना के मामा को प्रणाम करता है।

मामा,मामी से–लड़का तो संस्कारी लग रहा है। चाय नास्ता बनवाया तुमने।

मामी जोड़ से अर्चना को आवाज लगाती है,,,,

मामी,अर्चना से–अर्चना !

यह सूनकर,,,,,,,

अर्चना,मामी से–बस आ रही हुँ।

अर्चना ग्लास मे पानी लेकर आती है और दुर से ही जय से एक आंखो की पलके झपका कर अपने प्यार की उपस्थिति दर्ज कराती है।

मामा,जय से–तो यही है मेरी भांजी।

जय,मामा से–अच्छी है।

मामा,जय से–बाकी बाते तो तुम्हे उर्वषी ने बता ही दी होगी। लेकिन उर्वषी कैसी है ?

जय,मामा से–बहुत तकलिफ मे थी बेचारी । मैने हर वो कोषिष की जिससे उसकी (उर्वषी) तकलिफ कम

हो सके।

मामा,जय से–हां पता चला हमें , उसके तब के बारे मे और अब के बारे मे भी। अभी के समय मे कौन ऐसा

करता है ? जितनी मदद तुमने उसकी की। पानी लो।

जय पानी की ग्लास उठाकर पीता है साथ–साथ अर्चना के मामा भी पानी पीते है।

अर्चना का मामा,जय से–तो क्यो ना हमलोग खाना खाते हुए बात करे ?

अर्चना की मामी,जय से–आईये , डाईनिंग टेबल पर चलते है।

फिर तीनो चलकर डाईनिंग टेबल के पास जाकर उसकी कुर्सी पर बैठते है ,और कुछ पलो मे

अर्चना बारी–बारी से खाना लाकर पड़ोसती है। जय अंदर ही अंदर आंनदित होकर झुकी हुई नजरो से अर्चना को बारी–बारी से देखता है।

मामा,जय से–कुछ पुछना है तो पुछ सकते है इससे (अर्चना) ।

जय,मामा से–अगर ये हमसे बात ना भी करे, फिर भी ये (अर्चना) मुझे पसंद है।

ये बाते सुनने से पहले और बाद तक अर्चना खुद को स्थिर कर लेती है और बगैर किसी से नजरे मिलाये अंदर चली जाती है।

अब अचानक से दरवाजे के पार से नॉक की आवाज आती है।

मामी,जय से–आपके साथ और कोई आने वाला था।

जय,मामी से–नही , मै अकेला हुँ।

मामी,मामा से–तो अभी कौन हो सकता है ? कही तुमने काव्या के पति को ताष खेलने के बहाने साथ मे

षराब पीने तो नही बुलाया।

मामा,मामी से–क्यो मेरी बेईज्जती करा रही हो ?

अब तक दोबारा नॉक की आवाजे नही आयी है।

मामी,जय से–कभी–कभी पड़ोसी के गेस्ट भी हमारे दरवाजे खटखटा जाते है। फिर षायद नेम प्लेट देखने

के बाद उन्हे लगता होगा कि उसने गलत दरवाजे पर दस्तक दी है।

अर्चना फिर अंदर से कुछ लेकर आती है और बराबर से खाना पड़ोस रही है। जय अर्चना से पहली बार उसके मामा–मामी के सामने बोलने वाला है।

जय,अर्चना से–आप रहने दीजिए, मै ले लेता हुँ।

मामा,जय से–देने दीजिए। इसे (अर्चना) किसी को भी खाना खिलाने मे अच्छा लगता है। जब कोई मेहमान

हमारे यहां आते है तब।

अर्चना,मामा–मामी से–अब आप लोग षुरू कीजिए।

मामी,जय से–खाईये।

अब तीनो लोग जय, अर्चना के मामा और मामी बात विचार करते हुए खाना षुरू करते हैं। अर्चना दरवाजे खोलकर देखना चाहती है कि किसने दरवाजे पर नॉक किया था। पर दरवाजे खोलने पर देखती है कि दरवाजे पर कोई नही है। वह फिर दरवाजे को बंद कर देती है और फिर मामा, मामी के पास आकर,,,

अर्चना,मामा से–दरवाजे पर कोई नही है, और आप लोगो को कुछ चाहिए तो बताईयेगा।

मामा,अर्चना से–वही बात होगी , किसी पड़ोसी के गेस्ट ने गलती से दरवाजे खटखटा दिए होंगे।

मामा के द्वारा इतना बात बोलते ही फिर से दरवाजे पर से नॉक की आवाजे आती है। जो कुछ अजीब सा लगने वाला होता है और सब लोग एक दुसरे को देखने लगते है कि आखिर दरवाजे पर है कौन ?

अर्चना,मामा से–मै देखती हुँ , आप लोग खाईये।

अर्चना दरवाजा खोलती है, जिसके सामने तीन लोग है जो अपने चेहरे ढके हुए खड़े है। यह देखते हुए अर्चना डर जाती है और

वर्त्तमान मे,,,,

अर्चना,अंकेष से–(अभी वर्त्तमान मे) जब दुसरी बार मैने दरवाजा खोला तो मेरे सामने तीन लोग खड़े थे जो

अपने चेहरे को ढके हुए थे। जिससे बचने के लिए मैने जब दरवाजा बंद करनी चाही तो,

वे लोग मुझे पीछे ढकेलते हुए मेरे घर के अंदर घुस गए। उनमे से एक ने अपने हाथो मे

लिए गन को मुझे दिखाया और कहा–कोषिष किजिए की आप हल्ला ना करे, वरना मुझे

इसका (गन) सहारा लेना होगा। फिर वे लोग मेरे साथ अंदर आ गए और मैने चुपके से

अपने मामा को पुकारा,,,

अर्चना,मामा से–(सहमते हुए) मामा,,, देखिये ये लोग कौन है ?

फ्लेस बैक,,,,,,

मामा,मामी और जय देखते है कि अर्चना के पीछे तीन लोग हाथो मे हथियार लेकर घर मे घुस चुके है। अर्चना सीधे अपने मामा–मामी की ओर

बढती है। यह देख सभी हतप्रद रह जाते है। फिर क्या माहौल अचानक से बदल चुका था, खाने की षुरूआत के साथ ही खाना खाने का अंत हो चुका था। खुषी की जगह गंभीरता ने ले ली थी। ये लोग हैरान थे कि ये हो क्या रहा है ? अर्चना के मामा ,मामी कुर्सी को छोड़ खड़े हो जाते है।

अर्चना के मामा,बदमाषो से–कौन हो तुमलोग ? क्या बात है ?

जय एकदम से स्थिर होकर उन लोगो को देख रहा है, बगैर कुछ बोले।

उन तीनो बदमाषो मे से एक हेड होता है और दो उसके चेले है जिसमे एक चेला काफी तेज–तर्राक है जो इस तरह के कामो मे माहिर है। एक चेले का नाम जो इन सब कामो मे माहिर है उसका नाम कैथा है, और दुसरे का नाम मस्सो है। तीनो की कद काठी बराबर है, सिर्फ मस्सो थोड़ा मोटा है। गन सभी के पास है, कैथा के पास (दो) है, और हाथो मे सिर्फ कैथा ही गन निकाले हुए है।

कैथा,मामा से–हमें नही पता कि आपलोग हमारा स्वागत इस तरह खाने पर बैठ के करेंगे।

मामा,कैथा से–कहां घुसे आ रहे हो तुमलोग ?

कैथा,मामा से–आपके सारे सवालो का जवाब मिलेगा, घबराईये नही अभी तो हमलोग आये ही है। बस

आपलोग मोबाईल से दुरी बना के रखे। चार लोग और चार मोबाईल चारो लोग अपने–अपने

मोबाईल यहां रखे।

जय ,और अर्चना के मामा मामी तीनो अपने मोाबाईल टेबल पर रखते है।

कैथा,अर्चना से–तुम्हारा।

अर्चना,कैथा से–किचन मे ।

कैथा मस्सो को ईषारो मे किचन से मोबाईल लाने को कहता है और मस्सो किचन मे जाता है और वहां पड़े कुछ तैयार खाने मे से एक–दो निवाला अपने मुँह मे डालता है और अर्चना का मोबाईल लाकर डाईनिंग टेबल पर रखता है। हेड बदमाष एक कुर्सी खींच कर उसपर बैठते हुए जय को देखता है, जय भी उसके एक्टिविटी पर गौर करता है कि ये बोल क्यो नही रहा है कुछ, जो अभी तक षांत है। कैथा टेबल पर रखे खाने को

सुंघकर उसका स्वाद महसुस करता है और वो भी एक कुर्सी पर बैठ जाता है और कुछ–कुछ उठाकर खाने लगता है।

कैथा,मामा से–सबसे पहले मेरा सवाल ये है कि आप मे से सवाल कौन पुछेगा ?

मामा अपने गुस्से को निकालते हुए,.,.,

मामा,बदमाषो के हेड से–मेरे घर मे आकर तुम लोग मुझे ही डरा रहे हो। अभी एक आवाज लगाउंगा तो

सारा मुहल्ला जमा हो जायेगा और तुम सोच भी नही सकते हो कि तुम्हारा क्या

होगा ?

यह बात सुनते ही बदमाषो का हेड अपने पास रखे गन को निकाल कर अपने पास टेबल पर रखता है। यह देख अर्चना और उसकी मामी डरकर चिल्लाने लगती है जिसे जय षांत रहने को कहता है और ईषारो मे अर्चना के मामा को उसकी (बदमाषो के हेड) बात षांती से सुनने को कहता है।

मामा,कैथा से–ठिक है, मै पुछूंगा ।

कैथा,मामा से–पहला सवाल का जवाब देने के लिए धन्यवाद, और इस खाने के लिए भी। षर्त ये है कि

प्रत्येक सवाल के बीच पाँच मिनट का गैप होना चाहिए।

अब कैथा आस–पास दिवाल पर टंगी घड़ी खोजता है, जिसकी नजरे एक घड़ी पर पड़ती है।

कैथा,मामा से–प्रत्येक सवाल के बाद आप घड़ी देख सकते है। पुछिये अपने इस बदलते वातावरण के बारे

मे हमसे, कि क्या पुछना चाहते है ?

मामा,कैथा से–हमें लगता है आपलोग गलत जगह पर आ गए है। इस बारे मे आपलोग एक बार विचार

कर लीजिए उसके बाद खाना–पीना खाकर जा सकते है।

कैथा,मामा से–तो आपके सवाल का सही जवाब है कि हमलोग आपके पड़ोसी से पुछकर ही आये है,

क्योंकि पड़ोसी,पड़ोसी के बारे मे गलत नही बोतला है, तब जब कोई उसके पड़ोसी का पता

पुछ रहा हो और खाना तो हमलोग खायेंगे ही।

कैथा,अपने पार्टनर मस्सो से–उसे (अर्चना) मेरे सामने बैठने को कहो और तुम कोई कोना पकड़ो।

मस्सो अर्चना को ईषारो मे डाईनिंग टेबल के पास लगे कुर्सी पर बैठने को कहता है, फिर अर्चना अपने मामी के बगल मे जाकर कुर्सी पर बैठती है। उसकी मामी अर्चना को पकड़ती है और उसे हिम्मत बनाये रखने को कहती है।

कैथा,मस्सो से–(खाने की प्लेट देते हुए) ये लो ,घर का खाना है खा लो।

कैथा,मामी से–आप लोगो ने खा लिया।

मामा,कैथा से–हां।

कैथा,मामी से–सारा खाना तो पड़ा हुआ है, लगता है हमलोग गलत समय मे आ गये, तब जब आपलोगो

ने खाना खाना षुरू ही किया था। थोड़े देर के लिए सोच लीजिए कि हमलोग आपके यहां

मेहमान है और आपलोग हमलोगो को जि भरकर खाना खिलाना चाहते है और हमलोगो

के साथ खाना भी चाहते है। तो आप क्या करेंगे ?

यह बाते सुनकर अर्चना की मामी अपने पास पड़े प्लेट के खानो को सामने बैठे दोनो बदमाषो को पड़ोसने लगती है। कैथा घड़ी देखता है, देखता है कि सवाल पुछे पाँच मिनट हो चुके है।

कैथा,अर्चना के मामा से–अगला सवाल।

मामा,कैथा से–क्या चाहते है आपलोग ?

कैथा,मामा से–हां ! इस सवाल से याद आया कि आपने पहला सवाल ही गलत पुछ लिया था और षर्त

ये है कि आपको सिर्फ 05 (पाँच) सवाल ही पुछने है।

कैथा,मामा से–कभी आपने किसी संत के जीवन के बारे मे सोचा है कि वे लोग संत बनकर अकेले

जीवन जीने के रास्ते को क्यो अपनाते है ? क्योंकि जितने लोग साथ होते है समस्याए

उतनी ही ज्यादा होती है। कम लोग कम समस्या, एक लोग तो समस्या ही नही। कुछ

समय पहले आपके घर मे एक नये मेहमान का आगमण हुआ है , वही आपकी समस्या का

कारण है और उसी समस्या से आपलोगो को छुटकारा दिलाने के लिए हमलोग यहां आये

है।

मामा,मामी से–मेहमान ! ये लोग किस मेहमान के बारे मे बोल रहे है।

अर्चना के दिमाग मे ये बाते टकराती है और वो ये सोचती है कि कही ये लोग जय के तो दुष्मन नही, जिन लोगो ने उनपर हमला किया था। कही इसी (जय) के लिए तो ये लोग यहां नही आये है। अब मामा,मामी जय की तरफ देखते है और मन ही मन सोचते है कि हमारे सामने तो एक नया आदमी यही (जय) है जो आज ही हमारे पास आया है।

कैथा,मामा से–अगर दो भुखे आदमी मे से एक आपना खाना खा ले और दुसरे के थाली को लात मारकर

गिरा दे, और वो दुसरा आदमी आप हो, तो आप क्या करेंगे ? कभी सोचा है आपने।

मामा,कैथा से–ऐसा नही होना चाहिए, अगर किसी ने ऐसा किया तो मै उससे पुछना चाहुंगा कि उसने

ऐसा आखिर किया ही क्यो ?

कैथा,मामा से–षाबाष, समझदार लगते है।

मामा,मामी से–कही ये इसके (जय) बारे मे तो नही बोल रहे हैं।

अब अर्चना की मामी अर्चना को देखती है और ,,,

मामी,अर्चना से–षायद ये लोग इसके (जय) बारे मे बोल रहे है।

मामा,कैथा से–कही आप लोग इसके (जय) लिए तो नही आये है । अगर ऐसा है तो इससे (जय) क्या

चाहते है ?

जय अबतक षांत इसलिए था कि कही उसके चलते अर्चना के परिवार वालो पर कोई तरह की आंच ना आ जाये। अब जय अपने आपको मौन अवस्था से बोलने वाली अवस्था मे लाता है, और इन सब कॉन्फ्युजन से खुद को और अर्चना को और उसके मामा,मामी को दुर करना चाहता है।

जय,मामा से–मामा आप षांत रहिए। मै इन लोगो से बात करता हुँ।

अर्चना जय को देखती है और खौफ मे है कि कही ये लोग जय के साथ कुछ गलत ना कर दे। वह सहमी हुई है कि अगर ये लोग जय के लिए ही यहां आये है तो जय यहां इस समय ना ही बोले तो उसके लिए बेहतर होगा।

जय,कैथा से–तो अभी आप लोगो के हिसाब से इस फैमिली के लिए क्या ठिक रहेगा जो इन्हे करना

चाहिए।

इतनी सी बाते सुनते ही कैथा जय के सामने गन तान देता है, यह देख अर्चना अंदर से काफी डर जाती है, और जोड़ से चिल्लाने लगती है।

अर्चना,कैथा से–नही ऐसा नही होना चाहिए, आप लोग ऐसा क्यो कर रहे है ? ऐसा मत किजिए।

अर्चना के इस तरह के विहेव को देखकर कैथा अपने हेड बॉस की तरफ देखता है।

कैथा,जय से–सवाल करने का मौका तुम्हे भी मिलेगा। वरना यहां पर किसी भी तरह के परिणाम के

जिम्मेवार तुम ही होगे।

अब जय अपने आप को स्थिर करता है और बगैर इजाजत के किसी भी तरह की बातो के लिए वो परहेज करता है।

जय,कैथा से–ठिक है।

कैथा,मामा से–अगला सवाल।

मामा,कैथा से–अभी हमारी फैमिली को कुछ ना हो, इसके लिए हमें क्या करना होगा ?

कैथा,मामा से–मर्डर !

मामा,कैथा से–क्या ?

यह बातें सुनने के साथ ही मामा मामी और अर्चना की आंख और कान खुली की खुली रह जाती है और उन लोगो के पसीने छुटने लगतें है और चेहरे की रंगत उड़ सी गई है कि यहां पर कौन मरने वाला है ? अर्चना मन ही मन सोचने लगती है कि उनलोगो के सामने ये सब क्या होने लगा है जो नही होना चाहिए था ?

कैथा,मामा से–घबराईये नही। मौत के बारे मे सुनकर हर किसी का इसी तरह का रियेक्षन होता है। पर

वो ऐसी चीज है जो आज आये या कल, आयेगा ही। इस सवाल के बाद आपके पास दो

सवाल रह गए है । सवाल सोच–समझ कर पुछिये, वरना कुछ राज है जो राज ही रह

जायेंगे और आप पर्दा नही उठा पायेंगे।

अब कैथा मामा के सामने एक रिवॉल्वर रखता है।

सामने रिवॉल्वर रखने पर मामा का दिमाग षून्य हो चुका होता है।

कैथा,मामा से–कभी बंदुक चालाई है आपने, निषाना सही लगा सकते है। इसमे 01 (एक) गोली है जो एक

ही बार चलेगी। आप यहां पर किसी को भी मार सकते है, हमे, इसे (हेड बॉस) या उसे

(मस्सो)। पर ध्यान रखिये, मरने वाले आदमी पर डिपेंड करेगा की आपकी सजा क्या होगी ?

अर्चना,कैथा से–तुम्हारे हाथो मे बंदुक है तो तुमलोग ये मत सोचो की कुछ भी करके निकल जाओगे।

कैथा,अर्चना से–हां ,कुछ भी कर गुजरने का मौका हम नही छोड़ना चाहते, क्योंकि ऐसा कोई नही चाहता ?

कैथा,मामा से–आपके पास पुछने के लिए दो सवाल है, या तो गोली चलाने के बाद पुछ सकते है या

सवाल के बाद गोली चला सकते है।

कुछ पलो तक अर्चना के मामा के द्वारा किसी भी तरह की डिसिजन नही लेने के कारण कैथा थोड़ा गुस्से मे आ जाता है।

कैथा,मामा से–अगर आप ये सोच रहे है कि आप ये नही करेंगे तो हमे आप लोगो मे से एक को मारना

पड़ेगा।

मामा,कैथा से–तुम हमें मार दो वरना इस बंदुक से मै तुम्हे मार दुंगा।

कैथा,मामा से–ठिक है जैसी आपकी मर्जी।

अब कैथा अर्चना के मामा के सामने बंदुक तान देता है और उसे गोली मारने के लिए तैयार है,यह देख अर्चना और उसकी मामी रोने लगती है और घर के अंदर चीख–पुकार मच जाती है।

अर्चना की मामी,कैथा से–नही ऐसा मत करो। ये तुम लोग किस तरह का खेल, खेल रहे हो ? मारना है तो

हमें मार दो और तुम लोग चले जाओ। कुछ समझ ने नही आ रहा है आखिर

तुम लोग कौन हो और कर क्या रहे हो और करना क्या चाहते हो ?

कैथा,अर्चना के मामी से–ठिक है इन्हे छोड़ देते है।

अब कैथा अर्चना के मामा के पास से बंदुक वापस लेता है।

कैथा,मामा से–हां तो आपके चौथे सवाल का समय हो गया है। ध्यान रहे पाँचवा और आखिरी सवाल आप

सोच–समझ कर ही पुछना, क्योंकि उसके बाद ना हम बताने के लिए रहेंगे और ना ही आप

सवाल पुछने के लिए अपने होषो–हवाष मे होंगे।

मामा,कैथा से–तुम अगर इसके (जय) लिए आये हो तो यहां ही क्यो आये हो ? कही और क्यो नही ?

कैथा,मामा से–हमे उम्मीद नही है थी कि आप इस तरह के सवाल पुछकर सारे महाभारत को बीच मे ही

खत्म करना चाहते है। फिर भी आपके सवाल का मै सम्मान करता हुँ।

यहां जय तो पहले ही समझ चुका था कि ये गौतम का ही किया कराया हो सकता है, क्योंकि उसने उर्वषी की षादी उससे जो नही होने दी थी, पर वो सामने बैठे नकाब से चेहरा ढके उस आदमी की आवाज सूनने का इंतेजार कर रहा है जो अब तक एकदम से षांत बैठा हुआ है। जिसकी आवाज सुनकर वो ये समझ सके की मामला वही है जो वो समझ रहा था। अर्चना इन लोगो के आने के कुछ देर बाद ही जय के द्वारा अर्चना को गौतम, प्रीतम और उसकी पत्नी की सुनायी गई कहानी और जय के व्यावहार के साथ उसकी आंखो को देखकर अर्चना को लग चुका था कि ये लोग जय के लिए ही इस घर मे दाखिल हुए है। पर ये कहानी से अर्चना के मामा,मामी अंजान है, इसलिए वो इस माहौल को समझ नही पा रहे है।

.

कैथा,मामा से–तो इसका जवाब ये है कि आदमी जिस परिस्थिति ,जिस जगह जिन लोगो के कारण और

जिस लालच से अपने सफर की षुरूआत करता है, कहानी भी उसके ईद–गिर्द उसी माहौल

मे, उसी जगह और उसी लालच के परिणाम के अनुसार जाकर खत्म होती है। यही तो विधि

का विधान है जिसे टाला नही जा सकता। क्या किसी के जन्म होने और मरने के समय को टाला जा सका है ? हो सकता है इन सारे हरकतो से आप अंजान हो ,अगर अंजान है तो

मैने जो जवाब दिया वो आपके पल्ले नही पड़ी होगी। अगर ऐसा है तो घर की कुछ यादे

आपसे छुट रही है। बस अब एक सवाल है आपके पास, गलती से वो मत पुछ लिजिएगा।

वरना आप किसी के मरने के बाद उसके मरने के कारण को नही जान पायेंगे। परिस्थितियो

को कुछ समय के लिए टाला जा सकता है पर उसे बदला नही जा सकता। इसलिए जो

होना है वो होकर रहेगा, लेकिन आप आने वाले परेषानियो को कुछ समय तक रोक के रख

सकते है।

मामा,कैथा से–अगर टाला जा सकता है तो समय चक्र बदल भी सकता है, बोलो।

कैथा,मामा से–बहुत समझदार है आप , काष मेरे पापा भी इतने समझदार होते, तो मै यहां आपके पास बैठा

नही होता। खैर सबके जिंदगी मे एक कहानी है , और सबको यही लगता है कि उसकी ही

कहानी सबसे भयानक है। चलिए आप अपने जीवन मे घटने वाली वैसी कोई कहानी बताईये

जिससे आपको या किसी दुसरे को तकलिफ हुई होगी। षायद जिससे उबरने मे काफी समय

लगा होगा। यही आपके समय चक्र को टालने का एक पड़ाव है।

अब अर्चना की मामाी उसे देखकर सोचती है कि कोई भी उल्टी–सीधी कहानी सुना दे ये। अर्चना अपने मामा को देखकर सोचती है कि ये बेचारे अब क्या कहानी सुनायेंगे।

कैथा,मामा से–मै कैसे जानूंगा की आपकी कहानी सही है या गलत, बस सुना दीजिए। पर कहानी असरदार

होनी चाहिए। जो आपके या दुसरे के व्यक्तित्त्व पर एक छाप छोड़ दे।

मामा,कैथा से–मैने अपने एक काम से एक बार अपने एक दोस्त को फोन किया था,जब उसने फोन उठाया

तो वो हॉस्पिटल मे था। उसकी खुद की ईलाज चल रही थी, मैने उसका हाल चाल जाना

और उसे कहने लगा की अचानक से ऐसे कैसे हो गया। वह कहने लगा मेरे बीमाड़ी मे बहुत

रूपये खर्च हो गए है, जो मैने कर्जे लेकर किए है, अगर आपके तरफ से कुछ मदद हो

सकता हैं तो बहुत मेहरबानी होगी। फिर मैने कुछ रूपये का इंतेजाम करके उसे भिजवा

दिया, फिर उसने मुझे धन्यवाद कहां। एक सप्ताह के बाद जब मैंने उसे दोबारा फोन किया

तो उसकी पत्नी से पता चला कि वो मर चुका था। जिंदगी मे मुझे किसी काम के लिए

उतना अफसोस नही हुआ था जितना उस दिन हुआ। उसे मुझसे जितने रूपये की उम्मीद

थी उतने रूपये मै उसे नही दे सका। जिसका मुझे हमेषा अफसोस रहेगा।

कैथा,मामा से–कहानी जो आपके कुछ वक्त को लेकर चली जाती है, पर नजरिया छोड़ जाती है देखने की

उस चीज को जो आपको वक्त रहते उस कहानी मे रहने के दरमियां करनी चाहिए थी। खैर

जो हुआ सो हुआ। अब सवाल ये है कि इन दोनो (अर्चना और जय) मे से पहले सवाल कौन

करेगा ? क्योंकि ये लोग (अर्चना और जय) बेचैन है यह जानने के लिए की यहां हो क्या

रहा है ? ये उनका हक है जानने का, और हमारा दायित्व है उन्हे ये बताने का। पर हम तय

नही करेंगे कि सवाल पहले कौन करेगा, ये परिस्थितिया तय करेगी ?

कैथा,मस्सो से—जाओ देख कर आओ कि बाहर मे तुम्हे पहले औरत दिखाई देती है या मर्दो की जात।

अब आराम से बैठा हुआ मस्सो चुपके से दरवाजे को ऐसे खोलता है जैसे उसके वहां के पड़ोसी भी उसे ना देखे, देखे तो सिर्फ मस्सो किसी को। मस्सो जैसे दरवाजे खोलता है देखता है कि एक पतला सा गरीब आदमी जो अपने पीठ पर बोड़े लेकर गीत गुनगुनाये जा रहा था। यह बात आकर वह अंदर मे कैथा से कहता है।

मस्सो,कैथा से—एक प्लास्टिक चुनने वाला आदमी जो पीठ पर बोड़े लेकर जा रहा है, और गीत भी गुनगुना

रहा है। मेरे ख्याल से सवाल अब इसका (जय) होगा।

कैथा,अर्चना और जय से—हां सवाल से याद आया कि दोनो को एक—एक सवाल ही पुछने है,और सवाल

सोच—समझ के पुछिये।

कैथा,जय से—तो षुरू करते है तुमसे।

जय,कैथा से—मुझे इस सामने बैठे हुए आदमी से बात करना है, जो कुछ बोल नही रहा है।

कैथा,जय से—क्यो अपने दुष्मण को जान कर खतरा मोल लेना चाहते हो ? यहां तुम्हे सिर्फ सवाल करने है

और जवाब हम देंगे। क्योंकि वक्त हमारा है ? अगर तुम्हे लगता है कि इसके (अर्चना पर

बंदुक तानते हुए) मौत का कारण तुम बनना चाहते हो तो तुम अपने षर्त पर अडिग रह सकते

हो।

यह देख अर्चना अपने आँखो को बंद कर लेती है और डर के मारे स्थिर हो जाती है। अर्चना को ऐसी हालत मे देखते हुए जय अपने बातो को वापस लेता है।

जय,कैथा से–ठिक है, मै सवाल करने के अलावे और कुछ नही कहुंगा। अपनी गलतियो की सजा मै खुद

भुगतना चाहता हुँ।

कैथा,जय से–ये तुम्हारी षर्ते है, सवाल नही।

जय,कैथा से–सवाल ये है कि इस परिस्थिति का निदान क्या है ?

कैथा,जय से–विकट परिस्थितियाँ तो बलिदान मांगती हैं। तब जाकर वो अपने सामान्य स्वाभाव मे लौटती

है। कहानी के अंत मे तुम्हे समझ आ जायेगा की किसका बलिदान किसको बचाने के लिए

होना है। बचने का मौका सबको मिलेगा, और बलिदार सबके सहमति से होगी।

कैथा,अर्चना से–अब तुम्हारी बारी।

अर्चना सहमी हुई सबको देखती है ,अब मामी,मामी को लगता है कि अर्चना अब क्या सवाल करेगी , जो हमलोगो को तसल्ली हो सके। इतने मे मस्सो डाईनिंग टेबल के पास पहुँचता है और,,,

मस्सो,कैथा से–तो मै कुछ और खाने के लिए ले लू।

वो बगैर कैथा के हां का इंतेजार किए खाने की एक प्लेट लेकर वापस वही जाकर बैठ जाता है जहां वो पहले से बैठा हुआ था, और खाने लगता है। यह देख अर्चना की मामी सोचती है कि कैसे है ये लोग 'जो हमारा जीना हराम करके हमारा ही खाना बड़े बेषर्मी के साथ मजे से खा रहे है''। अर्चना अब कैथा की आंखो मे देख रही है और कैथा भी अर्चना के पहले और आखिरी सवाल सुनने के लिए तैयार है। हेड बॉस पहली बार अपने द्वारा कोई हलचल कर रहा है अपने हाथो को टेबल पर रखते हुए अपने उंगलियो को तबले पर फेरने के समान फेरते हुए धीरे–धीरे अपने उंगलियो की गति बढा रहा है, जिससे कैथा को लग रहा है कि अब सवाल पुछने मे देरी हो रही है। कैथा अब अर्चना को ईषारो मे सवाल पुछने को कहता है।

अर्चना,कैथा से–क्यो ?

कैथा,अर्चना से–तुमने तो महाभारत का सार ही पुंछ लिया। इस 'क्यो' मे ही तो सारे सवालो के जवाब छिपे

हुए है। पर अपने जवाब से मै तुम्हे संतुष्ट अवष्य करूंगा। हमसब इस घटती हुई श्रृंखला

की कड़ी मात्र है, कोई परिपुर्ण नही है, सब एक दुसरे से जुड़े हुए है। जब किसी का किसी

के जीवन मे सही समय मे आगमन होता है तो उसे संयोग कहते है, और वही आगमन जब

गलत समय मे होता है तो उसे दुर्भाग्य कहते है। अगर किसी के आगमन से आपका समय

खराब हो जाए तो यही तुम्हारे दुर्भाग्य का कारण है। जिसका समापन करने का समय आ

चुका है।

कैथा,मामा मामी अर्चना और जय से–आप लोगो मे से कौन मरना पसंद करेगा ये तय किजिए। क्योंकि एक

का तो मरना तय है।

जय,कैथा से–तय तो ये भी होगा कि कौन मरेगा ? फिर ये षडयंत्र क्यो??

कैथा,जय से–तुम अपने लंबे जुबान खोलने से बाज नही आओगे। महाभारत तो सारा षड्यंत्र ही था,फिर भी

उसके हर चाल के आधार पर उसकी अगली घटना निर्धारित होती थी।

कैथा,अर्चना से–अब ना सवाल होगा और ना ही जवाब । अब सिर्फ षर्ते होगी ,वो भी हमारी और उसे

मानने के लिए तुमलोग तैयार रहो।

अब कैथा अपने सामने रखे बंदुक को अर्चना के सामने बढाता है , यह देख अर्चना अब अस्मंजस मे पड़ जाती है कि अब ये हम से क्या करवाना चाहता है ? वह षॉक मे है कि अब कैथा उसे क्या बोलेगा करने के लिए और उसके बाद वो क्या करेगी।

कैथा,अर्चना से–सबसे पहले तो तुम्हे ये बता देना चाहता हुँ कि इसमे एक ही गोली है जो सबसे पहले ही

चलेगी। ये सिक्सर के जैसी नही है जिसे एक बार चलाने के लिए छः बार ट्रिगर दाबने की

जरूरत हो।

अब बदमाषो का हेड जो षुरू से ही षांत बैठा हुआ था वह अपनी पिस्तौल अर्चना के सामने बढाता है, और कैथा के बंदुक को वापस उसके

सामने रख देता है । यह देख सारे लोगो के दिमाग चकरा जाते है। जय सोच मे पड़ जाता है कि ये अपनी पिस्तौल से आखिर किसकी जान लेना चाहता है। पर ये नही जान पाता कि बदमाषो का हेड जो अपनी पिस्तौल से जय को मरवाकर अपने उबलते हुए खुन को षांत करना चाहता है। जो पैतरा अभी आजमाना बाकी था।

कैथा,अर्चना से–पिस्तौल उठाओ और इन तीनो (मामा,मामी और जय की ओर ईषारा करते हुए) मे से किसी

एक को मार दो।

अब मामा,मामी और जय तीनो अर्चना की आँखो मे देखने लगते है, अर्चना का दिमाग काम नही कर रहा है कि ये लोग उससे ऐसा क्यो करवाना चाह रहे है ? और इस बात को लेकर उसके दिमाग मे कई सवाल है पर यहां तो सवाल पुछने पर भी पावंदी है। इस धर्म संकट से वो कैसे निकले ? उसे लगता है की अगर तीनो मे से सही मे किसी एक को मारना पड़े तो वो किसे चुनेगी। उसे जो मामा–मामी ने बचपन से एक अच्छी जिंदगी देकर उसके हरेक खुषियो को पुरा किया, या उस जय को जो कुछ दिन पहले उससे मिलकर उसके आने वाले दिनो को खुषियो से भरने वाला था। वो परेषान होकर अपनी नजरो को टेबल पर झुकाकर स्थिर हो चुकी है और रोने लगती है।

कैथा,अर्चना से–अपनो को मारने मे बहुत कष्ट होता है, चलो मै तुम्हारी कन्फ्युजन दुर कर देता हुँ। तुम

इसे (जय के तरफ ईषारा करते हुए) मार दो। वरना मै इन दोनो (मामा और मामी) को मार

दुंगा। सोच लो ! एक जान लेकर दो जान को बचा सकती हो या दो जान देकर अपनी

एक जान को बचाओगी।

वर्त्तमान मे,,,,

अर्चना,अंकेष से–(अभी वर्त्तमान मे) अब मेरे और उसके (जय) सामने तस्वीरे आईये की तरह साफ हो चुकी

थी कि वे लोग किसे मारने आये थे, जिसका कारण हमलोग पहले जान चुके थे। पर

यकिन तब हुआ जब उस बदमाष (कैथा) ने उसे (जय) मारने को कहां। जय के काम का

जय को ऐसा परिणाम भुगतना पड़ेगा ये नही पता था।मै तय नही कर पा रही थी की इस

धर्म संकट से कैसे निकला जाय ? जब भी मै उसके (जय) आंखो मे देखती, मुझे उसके

साथ बिताये हुए पल याद आने लगते। पल भर मे परिस्थितियां कैसे बदलती है मैने उस

वक्त जाना। जिस पल को जीना मेरे लिए बहुत ही कठिन था।

अंकेष,अर्चना से–तो तुमने क्या फैसला किया ?

अर्चना,अंकेष से–मुझे अजनबी के साथ अजनबी बनना पड़ा, वो भी अपनो को खोने के डर के कारण।

फ्लेष बैक,,,,

कैथा,अर्चना से–तो कोई दस तक गिनता है तो कोई तीन तक गिनता है, मै कुछ नही गिनुंगा। सीधे इन

दोनो (मामा,मामी) के माथे मे गोली मार दुंगा, यह देखकर की तुम इसे (जय) गोली नही

मारने वाली हो।

जय,अर्चना से–मेरे साथ ऐसा होना किसी को फायदा पहुँचाने के कारण हैं या किसी को तकलिफ होने के

कारण, मै नही जानता। पर मेरे वो पल बहुत ही अच्छे थे जो बीत गए। मै तुम्हारे हाथो से

मरना चाहुंगा। मै नही चाहता कि तुम खुद को गोली मारो या किसी अपने को, वो भी मेरे

कारण।

कैथा,अर्चना से–रूको,रूको,रूको। षर्त मे थोड़ा सा बदलाव है। तुमने अगर गलत किया या खुद को गोली

मारी तो मै उसके बाद इन दोनो (मामा,मामी की ओर पिस्टल दिखाते हुए) के सिर मे गोली

मार दुंगा।

अब अर्चना रोते हुए उस भारी पिस्तौल को अपने हाथो मे उठाती है, जिसे उठाने वक्त उसके हाथ थर–थराने लगे है। इसी बीच जय मरने से पहले सबको बचाने की एक अंतिम कोषिष करना चाहता है। वह झट से उठकर कैथा के सामने रखे बंदुक की तरफ लपकता है,, लेकिन कैथा उस बंदुक को उससे पहले अपनी तरफ लपक लेता है और दुसरी हाथ मे लिए बंदुक के बट से जय के सिर पर जोड़ से चोट कर देता है। इसके साथ ही अर्चना चिल्लाने लगती है और उसकी मामी उसे पकड़कर रोने लगती है। चोट के कारण जय का सिर चकराने लगता है और वो कुर्सी पर स्थिर होकर बैठ चुका है और फिर कैथा जय के सर पर बंदुके तान देता है। अब जय के सर से खुन की बुंदे टपकने लगी है। वो लाचार सा दिखने लगा है, वो कुछ भी करने से पहले सौ बार ये सोचने लगता है कि उसके किसी गलती के कारण यहां किसी की मौत ना हो जाए।

कैथा,जय से–बहुत मजा आता है ना तुझे दुसरे को चोट देने मे, तुझे ऐसा चोट दुंगा की मरने के बाद भी

तु नही भुलेगा।

जय लाचार होकर उसे देखते हुए उसके बातो को सुन रहा होता है।

वर्त्तमान मे ,,,!

अर्चना,अंकेष से–(अभी वर्त्तमान मे) फिर वो मेरे तरफ देखने लगा। मै उस समय रोने और कल्पने के अलावे

कर भी क्या सकती थी ? खुन के दबाव के कारण उसकी पलके बंद हो रही थी। मै

उसके साथ वैसा करने के बारे मे कल्पना भी नही कर सकती थी। उसे कभी नही मारना चाहती थी,

लेकिन उसकी अंतिम इच्छा को ठुकराना भी नही चाहती थी, क्योंकि उसे मै नही मारती तो सामने वाला मार देता और इससे उसकी इच्छा अधूरी ही रह जाती। किसी भी तरह से वो मारा ही जाता। जैसे–जैसे देर हो रही थी, वैसे–वैसे वो (कैथा) उसे (जय) टॉचर करता ही जा रहा था। बस कुछ ही पल लिए थे मैने सोचने के लिए, इतने मे,,,,,,कैथा अचानक से उसके सर

को पकड़ कर टेबल पर पटक देता है और उसकी हथेली को टेबल पर रखकर उसमे

चाकू गार देता है जिससे जय तरपने लगता है। फिर उसके दुसरे हाथ को कुर्सी के पीछे

की तरफ बांध देता है। वो दृष्य देखकर ऐसा लग रहा था मानो मेरा कलेजा फटने वाला हो, समझ नही पा रही थी की वे लोग (कैथा उसका साथी और उसका बॉस) उसके (जय) साथ

ऐसा अन्याय कैसे कर सकते है ? अंत मे वे लोग उसकी हाथ की नषे काट देते है।

जय,अर्चना से—मार दो मुझे ,अब देर ना करो। अगर मेरी कोई निषानी तुम्हारे पास हो तो तुम उसे बचाकर

रखना।

अर्चना समझ चुकी है वो (जय) किस बारे मे बात कर रहा था।

कैथा,जय से—अब तु तो मरेगा ही, साथ—साथ ये दोनो (मामा,मामी) भी जायेंगे तुम्हारे साथ।

अर्चना,जय से—मुझे माफ करना।

जय,अर्चन से—तुम्हारी कोई गलती नही, अपना कर्म करो।

कैथा,अर्चना से—क्या तुम अपने होने वाले सनम को अपने हाथो से मुक्ति नही देना चाहोगी ? क्या चाहती हो ? कि उसे हम मुक्ति दे।

अब कुछ ही पलो मे कैथा ऐसी परिस्थिति क्रिएट कर देता है जिसे देखकर ऐसा लग रहा था कि कैथा अब या तब अर्चना के मामा—मामी को मार ही डालेगा। अब हेड बदमाष कैथा को अर्चना के मामा—मामी को मारने के लिए ईषारा करता है। यह देख,,,,, अब अचानक से अर्चना के हाथो से गोली चल चूकी होती है ,गोली लगने के बाद जय की धड़कने हमेषा के लिए बंद हो चुकी है और उसकी आंखे मानो अर्चना को ही देख रही हो। उसकी मौत देखने मे एकदम से अकारत सी लग रही है। उसकी मौत होने के बाद जैसे कैथा, मस्सो और उसके साथ आये उसके हेड बॉस को सुकुनं मिल गया हो। यह देख अर्चना बेहोष हो चुकी है, उसकी मामी उसके मामा को पकड़कर रो रही है। उसके मामा का दिमाग सन्न हो चुका है और वो कोई भी बात बोलने और सुनने के हालत मे नही है। माहौल एकदम से षांत हो चुका था। अर्चना होष मे आने के बाद फिर से बेहोष हो रही थी। अब कैथा और उसके साथी लोग जय का फोटो अपने मोबाईल मे खींचते है।

कैथा,मामा से–तो आपका आखिरी सवाल जो मेरे ख्याल से ये होना था कि आखिर इसे (जय) हमलोगो ने आपलोगो के घर मे आपलोगो के द्वारा ही क्यो मारवाया ? जवाब है – कि इसने (जय) अपने बसे हुए घर को फिर से बसाने के लिए किसी के बसने वाले घर को उजाड़ दिया और इसके (हेड बदमाष की ओर ईषारा करते हुए) साथ इसी तरह की घटना घटी, कितना मुष्किल होता है वो लम्हा जीना जब कभी गोद मे खेलने वाला बच्चा उसी गोद मे आखरी सांसे लेते हुए दम तोड़ दे। क्या कभी जीया है आपने उस लम्हे को ?

गौतम जो कुछ दिन पहले जय के साथ लड़ाई मे घायल हो गया था और अब हॉस्पिटल मे मर चुका था, यही कारण से आज गौतम का बड़ा भाई (हेड बदमाष) अपने साथ कैथा और मस्सो को लेकर यहां जय को मारने के ईरादे से यहां आया था। पर सीधे तौर पर कैथा ये बाते अर्चना के मामा–मामी को नही बताता है, ताकि आगे की पुछ–ताछ ना झेलनी पड़े।

कैथा,मामा से–तो यही था आपके आखिरी सवाल का जवाब।

अब तीनो लोग वहां से निकलते है और दरवाजे को बाहर से बंद कर देते है।

वर्त्तमान मे,,,,

अर्चना,अंकेष से–(अभी वर्त्तमान मे) कुछ पलो के बाद मेरे होष मे आने पर मैने देखा की मेरे घरो मे पुलिस

वालो उसके (जय) षरीर को प्लास्टिक के बैग मे भरकर ले जा रहे थे। जिसका अंतिम

बार मै चेहरा भी नही देख पायी। मामा पुलिस वाले को, कि वे लोग कौन थे ? और जय

की हत्या मेरे हाथो से करवाई गई, इन दोनो घटनाओ को छोड़कर सारी बात बता रहे थे।

उन बदमाषो की पहचान की बाते इसलिए छुपाई गई की वे लोग इतने खतरनाक थे जो

आगे हमलोगो के साथ भी कुछ कर सकते थे। कुछ दिन बितने के बाद ऐसा लग रहा था

कि कुछ दिनो पहले उसके (जय) साथ बिताए गए अच्छे पलो का जुर्माना हमें परेषान

होकर ब्याज सहित भरना पड़ रहा था। जो मेरे साथ अचानक घटने वाली एक अजीब सी

घटना थी। मुझे फायदा क्या हुआ और मेरा नुकसान क्या हुआ, मै तय नही कर पा रही

थी। ऐसा लग रहा था कोई भयानक सपना देखकर अभी–अभी जगी हुँ ,जिसे भुल जाना

ही अच्छा होगा। जैसे वक्त मेरे साथ करवटे नही अंगराईयाँ ले रहा हो जो बहुत जल्दी से

बदल रहा था।

अंकेष,अर्चना से–समय का चक्र कुछ इसी तरह चलता है।

अर्चना,अंकेष से–करीब एक महिने बाद मै 'मै' नही रह गई तब ,जब मुझे लगा कि सुक्खी मेरे कोख मे है,

यानी मै माँ बनने वाली हुँ उस आदमी के बच्चे की जो अब मेरे लिए सपना हो चुका था

और हमारे बीच रहा ही नही। जो मुझे एक पाप करने जैसा लग रहा था और मेरे लिए

अभिषाप से कम नही था। मै सोच भी नही सकती थी कि मेरे साथ ऐसा हो चुका था।

एक औरत के लिए माँ बनना सबसे खुषी का पल होता है, लेकिन उस पल को जीते हुए

मै सिर्फ और सिर्फ अपने आप को कोष रही थी।

अंकेष,अर्चना से–आगे की कहानी मै अपने अनुभव से तय कर सकता हुँ , तुम्हे बताने की जरूरत नही।

तुमने वो किया जो तुम्हे सही लगा और करना भी यही चाहिए था।

अर्चना,अंकेष से–फिर मैने तय किया कि अगर ऊपर वाले ने मेरे लिए यही सोचा है, तो मैने भी जय की

निषानी (सुक्खी) को उसकी परछाई समझ कर उसे अपनाने की ठान ली। लिखा हुआ

कहां जायेगा, देर से ही सही लौट कर जरूर आएगा। किसी से कोई दुर्भाग्य से बिछड़

जाता है और किसी को कोई सौभाग्य से मिल जाता है। पर मेरे जीवन मे ये दोनो घटनाएँ

एक साथ घटी।

अंकेश,अर्चना से–ये बात सही है कि तुमने अपने से कुछ नही किया, सब तुम्हारे साथ लगातार से होता

चला गया,पर ये सब घटनाएँ पुलिस और कानून नही समझेंगे कि तुमने ऐसा क्यो किया ?

इसलिए अब सुझ–बुझ से काम लेना होगा। (गंभीरता से गुस्से मे) पर अब इतना बात

ध्यान रखना कि तुमने जितना भी सही गलत किया, हमने तुम्हे उससे निकालने के लिए

उसका भरसक सामना किया। लेकिन आगे इस तरह की गलती होने पर मै और सहन

नही कर पाऊंगा मै तुम्हे भुल सकता हुँ , या तुम मुझे भुल जाना।

इतनी सी बाते सुनते ही अर्चना के आंखो मे रूकी हुई आंसू माले की मोती जैसे टुटने के समान गिरने लगते है। वह सोच मे पड़ जाती है षायद मेरे साथ जो हो रहा है इसमे मेरी ही गलती है।

अंकेष,अर्चना से–क्योंकि जरूरत अगर है तो हमदोनो को एक दुसरे की, वरना नही। तुम हमे कोई बात

बताकर परेषान नही करने के चलते अंत मे इतनी परेषानी मे डाल देती हो, जिससे उबर

पाना षायद संभव नजर नही आता। अगर वो बात तुम सोचती तो हमलोग इसके (कमल) लाष

के पास पड़े ना होते।

अर्चना,अंकेष से–तुम्हे कभी परेषानी ना हो इसलिए सारी बीती हुई कहानी बता दी, कुछ छिपा के नही

रखा। क्योंकि अब मै नही चाहती की मै जानबुझ कर तुम्हे परेषान करू ? इसके लिए

तुम मुझे जो सजा देना चाहते हो दे सकते हो।

अंकेष,अर्चना से– क्या सुक्खी से तुम्हारा मन भर गया, क्या तुम उसके पास अब नही रहना चाहती।

अर्चना,अंकेष से–(अपनी आंखे बंद करके) मैने ऐसा कभी नही सोचा ।

अंकेष,अर्चना से–पर ऐसा कर दिया। क्यो अर्चना ? जब भी मै तुम्हारे पास आने की कोषिष करता हुँ ,

ऐसा लगता है किसी ना किसी बहाने से मै तुमसे दुर हो रहा हुँ। क्या मै तुमसे पुछ

सकता हुँ इसमे मेरी क्या गलती है ? और अभी इस समस्या से कैस निकला जा सकता है?

अर्चना अपने आंचल लेकर अपने आंसू पोछती है।

अर्चना,अंकेष से–षायद मै अपने अतीत मे गुजारे हुए बुरे समय की करवाहट को भुल गई थी, इसलिए

मैने ऐसा किया, वरना ऐसा नही करती।

अंकेष,अंर्चना से–कमल के घरवाले को अगर ये बाते पता चली तो वो लोग हमलोगो का क्या करेंगे, इसका

अंदाजा लगाना बहुत ही कठिन है। जैसे ऐसा लगता है कि हमलोगो ने उसके पीठ मे

खंजर घोपा है। तुम मुझे ये बाते बता देती तो मै उसे (कमल) दो थप्पड़ लगा कर उसे

रास्ते पर ला देता, पर तुमने इस लायक भी नही छोड़ा हमे। अब यहां से तुम्हे सम्भालना

पड़ेगा सुक्खी को, खुद को और हमें भी।

अर्चना,अंकेष से–तुम्हारा गुस्सा पुरा जायज है, पर मै नही चाहती थी कि अब मुझपे तुम्हारे अलावे किसी

और की परछाई परे। जो परछाई पड़ने वाली थी उसे मैने हमेषा के लिए ही खत्म करना

सही समझा। क्योंकि उसके (जय) बाद तुम ही थे जिसने मुझे समझा, और जिसे मैने अपने

पास पाया। इसबार मै सुराग मिटाउंगी और तुम्हे कुछ नही करना है।

अंकेष,अर्चना से–तो तुम क्या करोगी ?

अर्चना,अंकेष से–दो दिनो के बाद होलिका दहन है, और इसी दहन के साथ इसका (कमल) दहन होगा,

पर खुदा ना करे कि पुलिस अगर हमारे पास पहुँच जाती है तो मै तुम्हारे बारे मे

कुछ नही बताउंगी।

अंकेष,अर्चना से–(गुस्से मे) और तुम फिर जेल चली जाओगी, और हम झाल बजाते रह जायेंगे और फिर मै

तुमसे जेल मे मिलने जाऊंगा । कैसे करोगी तुम ये सब ?

अर्चना,अंकेष से–आओ मेरे साथ तुम्हे कुछ दिखाती हुँ।

अर्चना अपने आषन को त्यागती है और चलंत अवस्था मे चलते हुए अपने चाची के घर के पीछे की तरफ बगीचे की ओर चलती है, साथ मे अंकेष भी चल रहा है। घर के पीछे छोटे से बगीचे मे पहुँचने पर अंकेष देखता है कि बहुत सारी सूखी लकड़ियां किसी परपस से एक साथ जमा करके रखी गई है। अर्चना वहां पर जाकर रूक सी जाती है । यह देख अंकेष को सारी बाते समझ मे आ चुकी है कि कमल के लिए अर्चना ने क्या सोच के रखा है ?

अर्चना,अंकेष से–दो दिनो बाद जब सबके घरो के दरवाजे पर सड़को पर बगीचो मे या और कोई जगहो

पर षोर–षराबो के बीच होलिका दहन हो रहा होग, उसी समय हम अपने चाची की

उपस्थिति मे कमल का दहन करेंगे और भगवान से अपने गलती के लिए उचित सजा की

मांग करेंगे।

अंकेष,अर्चना से–हमें तो लगता है तुमने तो ये सारी तैयारियाँ बहुत पहले से करके रखी हो। क्या तुमने

पहले ही सोच रखा था कि तुम्हारे हाथो से ये सब होने वाला है।

अर्चना,अंकेष से–सोच के कौन क्या रखता है ? बस होते–होते हो जाता है। अब हमें चलना चाहिए, क्योंकि

अब दिवालो की जगह हवाओं ने ले ली है, जो पहले से ज्यादा खतरनाक है।

दोनो वहां चाची के यहां से वापस होकर अपने कमरे मे पहुँचते है । जहां सुक्खी को सोए हुए देख अंकेष,,,,

अंकेष,सुक्खी से–(सोए हुए सुक्खी से) सुक्खी, सुक्खी, सुक्खी। नाम तुम्हारा सुक्खी है, पर तुम्हारी माँ तुम्हे

सुखी से रहने देना नही चाहती।

अर्चना,अंकेष से–उसे (सुक्खी) कोसने से कोई फायदा नही।

दो दिनो के बाद आज षाम को जब होलिका दहन का समय हो चुका है, आस–पड़ोस के सारे लोग अपने–अपने घरो मे आग जला चुके है। ईधर अर्चना ने कमल के मृत षरीर को लकड़ी की षैय्या पर लिटा कर फिर उसके षरीर पर ऊपर से हल्की लकड़ी का परत बिछाकर अपने–आप को पीछे हटकर समेट लेती है। फिर बारी आती है उसकी ना देखा पाने वाली चाची की। जो दबे कदमो से जाकर उस जमा किए हुए लकड़ी के ढेर को आग के हवाले कर देती है। जिससे कमल का षरीर अग्नि मे प्रवाह होते ही कुछ पलो मे राख मे तब्दील हो जाता है। फिर अर्चना वापस लौटती है, जो अपने पीछे अंकेष को खड़ा पाती है। अर्चना उसके पास पहुँच कर उसके गले से लिपट जाती है।

अर्चना,अंकेष से–(रोते हुए) मुझे माफ करना, क्योंकि इसके अलावे मुझे और कोई रास्ता दिखाई नही दी।

अंकेष बहुत गुस्से मे है और बहुत तरह की बाते उसके दिमाग मे चल रही है, लेकिन चाह कर भी वो कुछ नही बोल पा रहा है । बार–बार उसके दिमाग मे एक ही ख्याल आ रहा है कि अगर पुलिस को पता चल गया तो फिर क्या ,,,,,,? फिर भी अंकेष उसे गले लगाकर उसकी पिठ थप–थपाकर उसके सारी गलतियो के साथ फिर से उसे स्वीकार करता है। अंकेष के आंखो से उस पल के लिए अभी आंषु निकल पड़ते है जो षायद भविष्य मे अर्चना के साथ घट सकती है। जिस कारण कही फिर ना अर्चना अंकेष से जुदा हो जाय।

अंकेष,अर्चना से–आज मुझे पता चला कि एक माँ उस बच्चे के लिए जिसे उसने जन्म दिया है , क्या कर

सकती है ?

अर्चना,अंकेष से–मैने वही किया जो एक माँ की अपने बच्चो के लिए फितरत होती है।

अंकेष,अर्चना से–काष तुम्हारा बच्चा भी बड़े होकर तुमसे इतना ही प्रेम करे। जिसके लिए तुमने इतना

किया है।

अर्चना,अंकेष से–ये उसका (सुक्खी) कर्म होगा। मैने तो अपना कर्म कर दिया।

अंकेष,अर्चना से–भगवान तुम्हारी इस तपस्या को सफल करे।

अर्चना,अंकेष से–तुमने भी तो हमारे लिए बहुत तपस्या की है। मै चाहती हुँ कि मै हमेषा तुम्हारी दासी

बनकर रहुँ।।

इधर कमल की पत्नी उर्मिला एवं उसके घर वाले उदास और सहमे हुए से है। जिसके घर के लोग और रिष्तेदार सब पुलिस स्टेषन मे बराबर से जाकर यह पुछने की कोषिष मे लगे है कि कमल का कोई सुराग मिला या नही। कुछ दिनो बाद अर्चना उर्मिला के घर पहुँच कर उसके पास जाकर बैठती है और उसे संतावना देने की कोषिष करती है। अर्चना उर्मिला के कंधे पर हाथ रखते हुए मन ही मन सोचती है–काष मै तुम्हारे पति को वापस तुम्हे सौप पाती ,वह अब तुम्हारे पास कभी नही आयेगा। हो सके तो मुझे माफ करना और इसके लिए भगवान मुझे जो भी सजा दे, इसके लिए मै किसी को नही कोसुंगी।

उर्मिला,अर्चना से–वो (अंकेष) नही आये। उन्हे कुछ पता चला इसके (कमल) बारे मे।

अर्चना,उर्मिला से–उसकी (अंकेष) कल रात से तबियत खराब है, उसे किसी बात का गहरा सदमा लगा है।

उसे लगता है कि उसके कारण ही कमल के साथ ऐसा हुआ है, इसके लिए वो खुद को

ही कोस रहा है और परेषान भी रहता है।हमलोग ऊपर वाले से प्रार्थना करते है कि सब

कुछ ठिक हो जाय। अपना ख्याल रखिये। अर्चना वापस अपने घर आती है और सुक्खी

को गोद मे उठाकर उसे दुलारने लगती है। फिर अंकेष घर पहुँचता है और माँ बेटे के

प्यार को देखकर खुद मुस्कुराना चाहता है पर मुस्कुरा नही पाता।।

अंकेश,सुक्खी से–कभी हमें भी प्यार कर लिया करो सुक्खी। जब से तुम्हारी माँ आयी है तुम तो हमें प्यार

करना भुल ही गये हो। क्या मै तुम्हे अच्छा नही लगता। क्या तुम्हारी माँ ने तुम्हे हमसे

प्यार करने के लिए मना कर दिया है।

सुक्खी,अर्चना से–मुझे पप्पा के पास जाना है।

अंकेष,सुक्खी से–सिरियस मत लेना, मै मजाक कर रहा हुँ।

अर्चना,अंकेष से–ले लो ये तुम्हारे पास जाने के लिए परेषान है।

सुक्खी,अंकेष से–आपको कितने पप्पी चाहिए। अब आप मुझे अपने गोद मे ले लिजिए। मै आपको पप्पी देता

हुँ।

अब अंकेष सुक्खी को गोद मे उठाते हुए उसे पप्पी लेने लगता हैं।

अर्चना,अंकेष से–तो क्या कही हमलोग घुमने चले ।

अंकेष,अर्चना से–क्यो नही चलो आज की चलते है।

अर्चना,अंकेष से–कल सबेरे। रामेष्वरम्।

सुक्खी,अंकेष से–हां मै भी जाउंगा घुमने आप दोनो के साथ। मजा आयेगा।

अब अगले दिन अर्चना अंकेष और सुक्खी के साथ बाहर निकल जाती है घुमने के लिए। अर्चना के मन मे यह ख्याल है कि अगर पुलिस को कुछ भी मेरे बारे मे पता चला तो वो सुक्खी के साथ कभी वापस नही लौटेगी और अपनी पहचान बदल कर हमेषा के लिए कही गायब हो जायेगी। ईधर अंकेष अर्चना के साथ ज्यादा से ज्यादा वक्त बिताने के ख्यालो मे खोया हुआ है। सुक्खी भी माँ के साथ समय बिताकर बहुत खुष है।

सुक्खी,अर्चना से–(ट्रेन की सीट पर) हम कहां जा रहे है मम्मा।

अर्चना,सुक्खी से–जहां राम जी युद्ध करने गए थे और सीता मैया को वापस लाये थे।

सुक्खी,अर्चना से–क्यो सीता मैया उनके साथ नही रहती थी ?

अर्चना,सुक्खी से–रहती थी ,लेकिन कोई उसे उनसे दुर लेकर चला गया था।

इस कहानी का सुखद अंत यही है।।।।।

जब तक आप किसी चीज को खोते नही है,
तब तक आप उस चीज को पाते नही है।।

VIKRAM KUMAR RAY